छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

पंचम विधान सभा **सप्तदश सत्र**

शुक्रवार, दिनांक 21 जुलाई, 2023

(आषाढ़ 30, शक सम्वत् 1945)

[अंक 04]

Web copy

छत्तीसगढ़ विधान सभा

शुक्रवार, दिनांक 21 जुलाई, 2023

(आषाढ़-30, शक संवत् 1945)

विधान सभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई

{अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए}

तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार अविश्वास प्रस्ताव में बहस शुरू होने के पहले हार गयी है ।

अध्यक्ष महोदय :- अभी प्रश्नोत्तर चलने दीजिये न ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप उपस्थिति को तो देख लीजिये । न तो समर्थन करने वाले बैठे हैं, न जिनको समर्थन चाहिए वह बैठे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- तैयारी में लगे होंगे । माननीय रामपुकार जी ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रश्नकाल है । जिसका प्रश्न होगा वही आयेगा ।

श्री अजय चंद्राकर :- आजकल तो आप हमारी ओर हैं । समझ रहे हैं न ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सरकार के परमानेंट आईटम ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय रामपुकार जी ।

पत्थतलगांव विधानसभा क्षेत्र में रेडी टू ईट फूड बनाने का कार्य

[महिला एवं बाल विकास]

1. (*क्र. 540) श्री रामपुकार सिंह ठाकुर : क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) जशपुर जिले के पत्थमलगांव विधान सभा क्षेत्र में किस-किस महिला स्वे सहायता समूह को रेडी टू ईट फूड बनाने का कार्य दिया गया है ? (ख) प्रश्नां श (क) के तहत प्रतिमाह उन्हें‍र कितनी-कितनी राशि का भुगतान किया जाता है ? विकास खंड वार जानकारी दें‍वे ?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती अनिला भेंडिया) : (क) जशपुर जिले के पत्थलगांव विधानसभा क्षेत्र में रेडी टू ईट बनाने का कार्य महिला स्व सहायता समूहों को नहीं दिया गया है। (ख) प्रश्नांश (क) के प्रकाश में जानकारी निरंक है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रामपुकार सिंह ठाकुर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का उत्तर महिला एवं बाल विकास विभाग से मिला है उस जवाब से मैं सहमत हूं । परंतु जानकारी के तौर पर मेरा एक छोटा सा प्रश्न है कि रेडी टू ईट का सामान कहां से सप्लाई किया जाता है और पत्थलगांव विधानसभा या जशपुर जिले के लिये कौन व्यक्ति है जो उसकी सप्लाई करता है इसकी जानकारी दे दें ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रेडी टू ईट का निर्माण राज्य बीज एवं कृषि विकास निगम के द्वारा किया जाता है और उन्हीं के वेण्डर के द्वारा सप्लाई भी किया जाता है ।

अध्यक्ष महोदय :- राज्य बीज विकास निगम । बताईये ।

श्री रामपुकार सिंह ठाकुर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानना चाह रहा था कि जिले के अंदर वह कौन सा व्यक्ति है जो वहां उसकी सप्लाई करता है, वितरण करता है ?

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, क्या आपको व्यक्ति का नाम मालूम है ? आप व्यक्ति का नाम बता देंगे ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वेण्डर का नाम गुड्डू सेल चीर, बगीचा जशपुर का है ।

अध्यक्ष महोदय :- गुड्डू ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गुड्डू सेल करके है ।

अध्यक्ष महोदय :- यह आपके ही क्षेत्र बगीचा-जशपुर का है ।

श्री रामपुकार सिंह ठाकुर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी जो नाम बता रही हैं वह शायद हमारे छत्तीसगढ़ से बाहर का ही कोई व्यक्ति होगा ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लेकिन उनका एड्रेस बगीचा का ही है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह दुर्भाग्य की बात है ।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट । पहले उनका तो हो जाने दीजिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- जी । आप क्या कहना चाहते हैं ?

श्री रामपुकार सिंह ठाकुर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानना चाह रहा था कि यह व्यक्ति कहां का है, कौन है ?

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी ने वह तो बता दिया कि बगीचा के नाम से है, जशपुर जिले का है । अब उनका जन्मस्थान कहां है उसको कहेंगे तो वे बता देंगी ।

श्री रामपुकार सिंह ठाकुर :- ठीक है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय रामपुकार जी सबसे वरिष्ठतम् सदस्य हैं । ये जो जानना चाहते हैं कि कहां के हैं, नहीं हैं, स्वत: भाव से उनके सम्मान के तहत् बताना चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी तो बता रही हैं ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- मैंने बताया तो है, आपने सुना है कि नहीं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां बताने की बजाय तो सब चीजों को घर पहुंचाकर बताना चाहिए ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- मैंने तो बताया न, मैंने नाम तो बता दिया । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे वरिष्ठ सदस्य प्रश्न कर रहे हैं । (व्यवधान)

श्रीमती अनिला भेंडिया :- उनका स्थायी एड्रेस बता दिया ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इससे दुर्भाग्यजनक स्थिति नहीं हो सकती । (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- इनके लिये आप क्यों परेशान हैं ? (व्यवधान)

श्रीमती अनिला भेंडिया :- आप लोगों को हर प्रश्न में खड़े होना जरूरी है । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन के सबसे वरिष्ठ सदस्य को प्रश्न करना पड़ रहा है ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- वरिष्ठ सदस्य हमारे आदरणीय हैं । वे संतुष्ट हैं, मैंने उनको नाम बता दिया है ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री लखेश्वर बघेल ।

श्री रामपुकार सिंह ठाकुर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जवाब से संतुष्ट हूं। मेरा आगे कोई प्रश्न नहीं है ।

श्री अजय चंद्राकर :- आप सदा संतुष्ट हैं ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना । (हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बस्तर एवं सरगुजा क्षेत्र की आदिवासी संस्कृति के संरक्षण, संर्वधन एवं विकास हेतु संचालित योजनायें

[आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास]

2. (*क्र. 456) श्री बघेल लखेश्वर : क्या आदिम जाति विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) छ0 ग0 राज्य में आदिवासी संस्कृति, लोक कलायें व धार्मिक-सांस्कृतिक, रीति-

रिवाजों के संरक्षण, सर्वधन एवं समूह बनाने हेतु क्या प्रयास किए जा रहे हैं? (ख) प्रश्नांश ''क' ' के परिपेक्ष्य में बस्तर व सरगुजा (आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र) संभाग में क्या-क्या कार्यक्रम/योजनायें व कार्य किये जा रहे हैं? कृपया बतावें? (ग) प्रश्नांश ''ख' के परिपेक्ष्य में इस हेतु वर्ष 2021-22 एवं 2022-23 में स्वीकृत कार्य एवं व्यय की गई राशि बतावें?

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री मोहन मरकाम) :(क) विभाग में आदिवासी संस्कृति, लोक कलायें व धार्मिक-सांस्कृतिक, रीति-रिवाजों के संरक्षण, सवर्धन एवं समूह बनाने हेतु क्रमशः अनुसूचित जनजाति के श्रद्धा पूजा स्थलों पर देवगुड़ी निर्माण, आदिवासी सांस्कृतिक दलों को सहायता योजना, पो.मै. आदिवासी छात्रावासों में शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति कार्यक्रम योजना, शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति लोक कला महोत्सव योजना, राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव योजना, मुख्यमंत्री आदिवासी परब सम्मान निधि योजनाएं संचालित हैं। आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा जनजातीय क्राफ्ट मेला, राष्ट्रीय जनजातीय साहित्यिक महोत्सव, चित्रकला प्रतियोगिता, जनजातीय समुदायों में प्रचलित तीज त्यौहारों का अभिलेखीकरण, जनजातीय व्यंजन का अभिलेखीकरण कार्य किया गया है, उक्त कार्यक्रम में संस्थान द्वारा वर्तमान राज्य की जनजातियों में प्रचलित लोक वाद्ययंत्रों का अभिलेखीकरण एवं जनजातीय समुदायों में प्रचलित वाचिक पररंपराओं के संकलन हेतु 03 दिवसीय राज्य कार्यशाला का आयोजन किया गया। (ख) प्रश्नांश ''क' ' के परिप्रेक्ष्य देवगुडी निर्माण/सांस्कृतिक दलों का सहायता/पो. मै. आदिवासी छात्रावासों में शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति कार्यक्रम/शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति लोक कला महोत्सव/राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव का संचालन कार्य किये जा रहे हैं। (ग) जानकारी संलग्न प्रपत्र[1] अनुसार है।

श्री बघेल लखेश्वर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे माननीय मंत्री जी से पहली बार प्रश्न पूछने का अवसर मिला है और इनके द्वारा विस्तृत विवरण दिया गया है ।

श्री शैलेश पाण्डे :- सरल-सरल प्रश्न पूछना ।

श्री बघेल लखेश्वर :- पूरा सरल ही है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा कि देवगुड़ी संरक्षण-संवर्धन की योजना कब से शुरू हुई? दूसरी बात बस्तर-सरगुजा संभाग में देवगुड़ी की कितनी-कितनी संख्या है और कितने पंजीकृत किये गये हैं ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे वरिष्ठ सदस्य ने लोकहित और एक व्यापक प्रश्न किया है । छत्तीसगढ़ में लगभग 60 प्रतिशत भू-भाग अनुसूचित क्षेत्र में आता है । यहां के निवासियों की आस्था श्रद्धा का केंद्र देवगुड़ी के निर्माण के लिये माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने ऐतिहासिक निर्णय लिया और लगातार काम हो रहे हैं । रही बात आदरणीय सदस्य ने जो प्रश्न किया है,

---

[1] परिशिष्ट "एक"

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वर्ष 2006 से पिछली सरकार में यह योजना चालू हो गयी थी लेकिन उस समय संख्या बहुत कम थी, उस समय मात्र 38 करोड़ रूपये की राशि पिछली सरकार ने 12 सालों में खर्च किया । हमारी सरकार आने के बाद 82 करोड़, 96 लाख रूपये के देवगड़ी का निर्माण किया । दूसरे प्रश्न की बात कि कहां-कहां...।

श्री अजय चंद्राकर :- उसको आपने बढ़ाया ।

श्री मोहन मरकाम :- मात्र साढ़े 4 साल में। आपने 12 साल में उतना किया, मगर हमारी सरकार गंभीर है और इन साढ़े 4 सालों में 83 करोड़ रूपया खर्च किया है। दूसरा प्रश्न का माननीय अध्यक्ष महोदय, बस्तर में 2021-22 में 13 कार्य थे, वो 13 कार्य पूर्ण हो गये। वर्ष 2022-23 में 28 कार्य, जिसमें 10 कार्य पूर्ण हुए हैं। नारायणपुर में वर्ष 2021-22 में 10 कार्य थे, 10 कार्य पूर्ण हुए। दंतेवाड़ा में 16 कार्य थे, जिसमें 13 कार्य पूर्ण हुए, 3 कार्य अपूर्ण हैं। वर्ष 2022-23 में 16 कार्य थे, 5 कार्य पूर्ण हुए। 11 कार्य पूर्ण नहीं हुए। इस तरह से बस्तर संभाग में 119 कार्य वर्ष 2021-22 में थे, जिसमें 116 कार्य पूर्ण हुए हैं, 3 कार्य पूर्ण नहीं हुए हैं। वर्ष 2022-23 में 416 कार्य स्वीकृत हुए, जिसमें 248 पूर्ण हुए, 168 अपूर्ण हैं। उसी तरह सरगुजा में वर्ष 2021-22 में 232 कार्य स्वीकृत हुए, जिसमें 229 कार्य पूर्ण हुए, 3 कार्य अपूर्ण हैं। उसी ढंग से वर्ष 2022-23 में 1210 कार्य सरगुजा संभाग में स्वीकृत हुए हैं, जिसमें 664 कार्य पूर्ण हैं, 556 कार्य अपूर्ण हैं।

अध्यक्ष महोदय :- यह आपका पहला दिन है। पहला प्रश्न है। आपने बहुत अच्छे उत्तर दिये हैं। मैं आपको बधाई देता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री मोहन मरकाम :- जी, धन्यवाद।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, इन्होंने बहुत अच्छा उत्तर दिया है या बहुत अच्छा पढ़े हैं। दोनों में आप थोड़ा सा क्लियर कर दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत अच्छा पढ़े हैं। मगर पहली बार है। अभी तो 2 दिन हुए हैं। आपकी तरह कहां से याद करके आयेंगे?

श्री बघेल लखेश्वर :- बहुत अच्छा पढ़े, लेकिन ये आंकड़ा कहां से लाये, नहीं मालूम। लेकिन मैं संख्या पूछा था कि बस्तर संभाग में और सरगुजा संभाग में कितने-कितने देवगुड़ी पंजीकृत हुए थे? आपने जिस संख्या अथवा आंकड़े का उल्लेख किया है, वह गलत है। सिर्फ मेरे बस्तर संभाग में प्राधिकरण से मैंने 5575 देवगुड़ी पंजीकृत हुए हैं, जिसमें 3 हजार हमारे कार्यकाल में ही हैं। 2-4 साल के कार्यकाल में लगभग 3 हजार का निर्माण किया है, लेकिन आपके द्वारा जो आंकड़ा दिया गया है, वह किससे लिया गया है? मैं आपसे यह जानना चाहूंगा कि घोटुल को हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं माने हैं क्या ? जिसके कारण आपने इसमें घोटुल का उल्लेख नहीं किया है। हमारे बस्तर संभाग में कितने घोटुल हैं? इसे आप बता दीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- देखिए, आपने घोटुल के बारे में पूछा नहीं था। घोटुल के बारे में पहली बात तो यह कि आपने पूछा नहीं है और आपने कहा कि मेरे बस्तर संभाग में। उनका भी बस्तर संभाग है, इसका भी ख्याल रखिए।

श्री बघेल लखेश्वर :- जी-जी।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आदिवासी समाज का संस्कृति केन्द्र घोटुल के निर्माण के लिए भी हमारी सरकार ने विभागीय मद में किया है। नारायणपुर में 104 घोटुल जो वर्ष 2022-23 में, जिसमें 75 पूर्ण हो गये हैं, 9 अपूर्ण हैं। कोण्डागांव जिले में प्राधिकरण, जिसके आप अध्यक्ष हैं, जिसमें 2021-22 में 25 स्वीकृत हैं, जिसमें 16 पूर्ण हैं, 9 अपूर्ण हैं। माननीय अध्यक्ष जी, उसी ढंग से कांकेर जिले में वर्ष 2021-22 में 126, जिसमें 65 पूर्ण हैं, 61 अपूर्ण हैं। वर्ष 2022-23 में कांकेर जिले में डी.एम.एफ. मद में 45 कार्य स्वीकृत हुए थे, जिसमें 12 पूर्ण हैं, 33 अपूर्ण हैं। ये प्राधिकरण से मेरे कोण्डागांव जिले में आपने ही इस घोटुल की जानकारी को स्वीकृत किया है।

श्री बघेल लखेश्वर :- लेकिन आप आंकड़ा सुधार लेंगे। मतलब प्रदेश में यह आंकड़ा नहीं है। टोटल 652 घोटुल हैं, जिसमें 57 घोटुल का निर्माण हो चुका है और 110 प्रगति पर है। यह आंकड़ा सुधार लेंगे।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, टोटल 149 है। प्राधिकरण मद और डी.एम.एफ. मद में अलग-अलग मदों में 149 है, जिसमें से 87 पूर्ण हैं। 42 अपूर्ण है।

श्री बघेल लखेश्वर :- 149 नहीं हैं। संभाग में 652 घोटुल हैं। जिसमें 257 घोटुल का sanction दिये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- ये तो दोनों क्षेत्र पड़ोस में हैं। आप दोनों कक्ष में चर्चा कर लीजिए।

श्री बघेल लखेश्वर :- अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी को नॉलेज होना चाहिए न, जो टोटल आंकड़ा दिये हैं, वह गलत है। ये कितने द्वारा एकत्रित किया गया है? किनके माध्यम से आया है? हमने संभाग स्तर पर जो काम किया है, उसको बता रहा हूं, लेकिन प्रदेश स्तर में यह आंकड़ा नहीं है, यह बड़े ही दुख की बात है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, अभी अध्ययन कर रहे हैं।

श्री लखेश्वर बघेल :- हम लोगों ने इतने काम किये हैं और प्रदेश स्तर पर आंकड़ा नहीं है यह चिंता का विषय है । इसीलिए मेरा निवेदन है कि प्रदेश स्तर पर आंकड़ा सुधार लेंगे । हमने बस्तर विकास प्राधिकरण के जरिये हमने 5960 देवगुड़ी में से 3600 की स्वीकृति की है, 2181 शेष हैं, 1197 पूर्णता पर है, इसको थोड़ा दिखवा लेंगे और किन-किन मदों से गुड़ी और घोटुल का निर्माण किया जा रहा है, यह बताएंगे ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा, माननीय मंत्री जी आप ऐसा करिये । आप नये-नये मंत्री बने हैं, संभवत: पूरी जानकारी नहीं होगी । आप उनको अपने कक्ष में चाय पर बुलाइए और उनके आंकडों को संशोधित कर लीजिए ।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से जानना चाहता हूं कि बस्तर संभाग में देवगुड़ी हमारी आस्था का केन्द्र है और इनके लिए हमारी सरकार के द्वारा जो भूमि आवंटित की गई । इन देवगुड़ियों के स्थल का पट्टा हमारे ग्रामवासियों को कब तक मिलेगा ?

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, जहां-जहां देवगुड़ी स्थल है, उनके लिए कौन सी भूमि है, उसका चिह्नांकन करके प्रशासन निर्धारित करता है कि उनको वन अधिकार पत्र दें या अन्य योजना में दें । प्रशासन चिह्नांकित करके उस जगह को संरक्षित करता है ।

श्री राजमन बेंजाम :- देवगुड़ी हमारे पुरखों की सम्पत्ति है और पूर्वजों ने उसके लिए जो स्थल निर्धारित किया है, आज कई लोग उन स्थलों पर कब्जा करने जा रहे हैं । मैं इसलिए आपसे चाहता हूं कि इसको जल्द से जल्द संरक्षित किया जाए ।

अध्यक्ष महोदय :- देवगुड़ी में किसी तरह का बेजा कब्जा न हो इसका आप विशेष ख्याल रखें ।

<u>प्रदेश में संचालित गोठानों के संबंध में जानकारी</u>

[कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी]

3. (*क्र. 463) श्री नारायण चंदेल : क्या गृह मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** प्रदेश में वर्ष 2019 से प्रश्नांकित अवधि तक कितने गोठान स्वीकृत किये गये हैं ? स्वीकृत गोठानों में से कितने गोठान पूर्ण एवं कितने किन कारणों से अपूर्ण हैं? वर्षवार, जिलेवार जानकारी उपलब्ध करावें। **(ख)** प्रश्नांश 'क' के संचालित गोठानों में से कितने गोठानों को आदर्श गोठान घोषित किया गया है ? आदर्श गोठान में अन्य गोठानों की तुलना में क्या-क्या अतिरिक्त सुविधाएं प्रदान की जाती हैं अथवा आदर्श गोठान घोषित करने के क्या मापदंड निर्धारित हैं? **(ग)** प्रश्नांश 'क' के संचालित गोठानों से प्रश्नांकित अवधि तक कितनी मात्रा एवं कितनी राशि की गोबर खरीदी की गई ? खरीदी गई गोबर से कितनी मात्रा में वर्मी कम्पोस्ट एवं अन्य उत्पाद निर्मित एवं बेचे गए ? कितनी-कितनी राशि प्राप्त हुई ? वर्षवार जानकारी उपलब्ध करावें। **(घ)** गोठानों के निर्माण में प्रश्नांकित अवधि में अनियमितता/भ्रष्टाचार की कितनी शिकायतें प्राप्त हुईं? प्राप्त शिकायतों पर क्या-क्या कार्यवाही की गई ? वर्षवार जिलेवार जानकारी उपलब्ध करावें।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) : (क) प्रदेश में 01जनवरी, 2019से30जून, 2023 तक कुल 10,336 गोठान स्वीकृत किये गये हैं,जिनमें से 10,240गोठान पूर्ण एवं 84 गोठान विभिन्न कारणों से

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अपूर्ण हैं । 12 गोठानों का कार्य अप्रारंभ है । जिसकी **जिलेवार, वर्षवार जानकारी संलग्न [2]प्रपत्र-अ अनुसार है। (ख)** प्रश्नांश''क''अनुसार संचालित गोठान में से कोई भी गोठान आदर्श गोठान घोषित नहीं है। आदर्श गोठान हेतु घोषित मापदण्ड अनुसार इसका क्षेत्रफल 3 से 4.50एकड़ होना चाहिये,जिसमें पशुओ हेतु छायादार आश्रय स्थल,पशु शेड,पशुओं हेतु चबूतरा निर्माण, पानी की व्यवस्था, कोटना निर्माण, पानी टंकी, कम्पोस्ट टांका, मार्ग की सुविधा, चारे की व्यवस्था, सी.पी.टी.निर्माण/फेंसिंग इत्यादि सुविधा होना चाहिए। **(ग)** प्रश्नांश ''क'' में उल्लेखित गोठानों से 01 जनवरी 2019 से 30 जून 2023 तक कुल 1,23,19,845.64 क्विं.गोबर का क्रय राशि रू. 24,639.69लाख में किया गया है। क्रय गोबर से वर्मीकम्पोस्ट तथा अन्य उत्पादों केनिर्माण एवं विक्रय से प्राप्त राशि की **वर्षवार जानकारी संलग्न प्रपत्र-ब अनुसार है। (घ)** प्रश्नांश "क" की अवधि तक गोठान निर्माण में अनियमितता/भ्रष्टाचार की कोई शिकायत एवं उन पर की गई कार्यवाही का वर्षवार, जिलेवार जानकारी संलग प्रपत्र स अनुसार है ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा मूल प्रश्न गौठान से संबंधित है, गोबर से संबधित है, जो इस सरकार का ड्रीम प्रोजेक्ट है । अब इसमें मेरा आग्रह है । अभी जितने उत्तर सभी विभागों से आ रहे हैं, या तो यह आ रहे हैं कि जानकारी एकत्र की जा रही है । दूसरा, इतने गलत-सलत उत्तर आ रहे हैं । मैं आपको पढ़कर बताता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपने प्रश्न के बारे में बताइए ।

श्री नारायण चंदेल :- हां बता रहा हूं, उसी तरफ तो बढ़ रहा हूं । मैंने जो पूछा था उसके उत्तर में बताया गया है कि अपूर्ण गौठानों की संख्या 84 है, जबकि संलग्न परिशिष्ट-2 में जिला कोरबा में, जहां से आप सांसद रहे हैं । वहां स्वीकृत गौठानों की संख्या 53 तथा पूर्ण की संख्या 90, स्वीकृत 53 है और पूर्ण 90 बताया गया है एवं अपूर्ण गौठानों की संख्या 20 । 53 स्वीकृत है, 90 पूर्ण है और 20 अपूर्ण है । गौठान के मामले में इस सरकार का यह हाल है । यह मैं कोरबा जिले का बता रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपने जांजगीर जिले में जाओ ना, कोरबा में कैसे पहुंच गए ।

श्री नारायण चंदेल :- मैं आ गया हूं जांजगीर की तरफ । उसी तरह 2023-24 में 30 जून 2023 तक स्वीकृत गौठानों की संख्या 77, जबकि पूर्ण हो गए 101 । अब उसके बाद 43 अपूर्ण बता रहे हैं । परिशिष्ट-दो में जांजगीर चांपा जिले में 2023-24 में स्वीकृत 10 गौठानों में से केवल 1 पूर्ण हुआ और 9 अपूर्ण हैं । यह जो विसंगति है । क्या आपने पूर्ण कम बताया है और स्वीकृत ज्यादा बताया है ? पहले तो इसको सुधारें, इस तरह का उत्तर देने के लिए कौन दोषी है ? अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात यह है कि आपने बताया कि 10 स्वीकृत हैं, 01 ही पूर्ण हैं तो 09 अभी तक अपूर्ण क्यों हैं ? इन दोनों बातों की जानकारी माननीय मंत्री जी पहले दे दें ।

---

[2] परिशिष्ट "दो"

Uncorrected and unedited/Not for Publication Friday, July 21, 2023

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी अभी नये-नये आए हैं, पड़ोस वाले मंत्री से पूछ सकते हैं (हंसी)।

श्री नारायण चंदेल :- सांझर-मिंझर करके दे दें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, संवैधानिक पदों पर बैठने वाले लोग नये पुराने नहीं होते । वो तो बैठे मतलब स्टार्ट लो । उसके बाद पहले मंत्री रह चुके हैं सभी सदन का अनुभव है ।

अध्यक्ष महोदय :- पूर्व मंत्री भी उनकी सहायता कर सकते हैं, मैं ऐसा कह रहा हूं ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने जो जानकारी क,ख,ग में पूछा है, उसकी जानकारी में जो आंकड़ा दिया गया है, वह बिल्कुल सही है, कहीं पर गलत नहीं है। प्रश्नावधि समय में 10336 गौठान स्वीकृत किये गये और 10240 गौठान पूर्ण कर लिये गये हैं। 84 गौठान विभिन्न कारणों से अपूर्ण हैं और 12 गौठानों का कार्य अभी प्रारंभ नहीं हो पाया है क्योंकि अभी वहां व्यवस्थाएं नहीं हो पायी है। जो अपूर्ण गौठान हैं, उसके कारण भी है, कहीं जमीन का विवाद है, कहीं कुछ है, इसलिए वह प्रारंभ नहीं हो पाया है।

अध्यक्ष महोदय :- वह विशेषकर कोरबा और जांजगीर जिले के बारे में पूछ रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- कोरबा और जांजगीर जिले के बारे में बता दीजिए। कोरबा माननीय अध्यक्ष जी का जिला है और जांजगीर हमारा जिला है।

श्री ताम्रध्वज साहू :- अध्यक्ष जी, कोरबा में जो आंकड़ा दिया है, मैं उसके बारे में बता देता हूं। 1 जनवरी 2019 से 31 मार्च 2019 तक एक भी गौठान स्वीकृत नहीं है, पूर्ण अपूर्ण नहीं है। वित्तीय वर्ष 2019-20 में 62 गौठान स्वीकृत हुए, 62 पूर्ण हो गए। वित्तीय वर्ष 2020-21 में 118 गौठान स्वीकृत हुए, 118 पूर्ण हो गए। वित्तीय वर्ष 2021-22 में 91 गौठान स्वीकृत हुए, 91 पूर्ण हो गए। वित्तीय वर्ष 2022-23 में 9 गौठान स्वीकृत हुए, 9 पूर्ण हो गए और वर्तमान में वर्ष 2023-24 में 30 जून तक 51 गौठान स्वीकृत हुए, 51 पूर्ण हो गए। कुल 331 गौठान स्वीकृत हुए 331 पूर्ण है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने परिशिष्ट में जो जानकारी दी है, मैंने उसी को पढ़ा है। अब दिक्कत यह है, मैं आपके विभाग को कहूं या सचिवालय को कहूं, सचिवालय के बारे में कहना उचित नहीं है। अध्यक्ष महोदय, जब मैं प्रश्न पूछने के लिए अभी खड़ा हो रहा था तब मेरे को संशोधित उत्तर प्राप्त हुआ। कृपया इस व्यवस्था को सुधारिए। यह विधानसभा के गरिमा और नियमों के खिलाफ है। दूसरी बात, मैंने पूरे प्रदेश के गौठानों के संबंध में प्रश्न किया था। मैंने दो जिले का आपसे विशेष रूप से उल्लेख किया। अव्यवस्था का जो आलम है, उसके बारे में बता रहा हूं। गोबर खरीदी में जो अनियमितता हो रही है, उसके बारे में बता रहा हूं। आपने प्रदेश में कुल गोबर खरीदी का भुगतान 286 करोड़ रूपये की जानकारी दी है और जब मैंने उसकी जानकारी ली तो आपने बताया कि उसके विरूद्ध निर्मित वस्तुओं की बिक्री 17 करोड़ रूपये आ रहा है। बिक्री 17 करोड़ रूपये की हुई है। आप मुझे यह

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बताईए कि 229 करोड़ रूपये बचा हुआ है, वह यहां पर कौन रखा है, यह बताईए। 229 करोड़ रूपये इसमें से किसी ने रखा है क्या ? आप मुझे उसके बारे में जानकारी दीजिए।

श्री ताम्रध्वज साहू :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने पूरे प्रदेश की जानकारी वर्षवार पूछा है, आपको जानकारी दे दी गयी है। जानकारी कल ही प्रेषित कर दी गयी है। हम लोगों ने वर्ष 2019, 2020, 2021, 2022, और वर्तमान 2023 तक 1 करोड़ 23 लाख 19 हजार 845 क्विंटल गोबर की खरीदी की है।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी गलत पढ़ रहे हैं, वह एक करोड़ नहीं है, एक करोड़ गोबर खरीदी में 246 करोड़ का भुगतान कैसे हो जाएगा ?

श्री नारायण चंदेल :- आप हिसाब लगाईए।

श्री ताम्रध्वज साहू :- मैं आपको जो बता रहा हूं वह पूरी निष्ठा से पढ़ रहा हूं, रिकॉर्ड में आ रहा है, आप जो पूछेंगे उसकी जानकारी भी दे दूंगा। हम लोगों ने जो गोबर क्रय किया उसकी राशि भी बता देता हूं, 246 करोड़ 39 लाख का हम लोगों ने गोबर क्रय किया। हमने 291 करोड़ 70 लाख का गोबर बेचा, हमारे समूहों को कुल 45 करोड़ रूपये इस दरम्यिान फायदा हुआ। यह जानकारी मैंने परिशिष्ट में दी है, उसमें है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह महत्वपूर्ण विषय है, गौठान से संबंधित है, यह पूरे प्रदेश का विषय है। एक जिले तक सीमित नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- आपने प्रश्न पूछना बंद कर दिया।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने बंद नहीं किया है। मैं तो निरंतर हूं। मैंने बंद नहीं किया है।

अध्यक्ष महोदय :- निरंतर हैं। सौरभ सिंह जी।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 246 करोड़ रूपये गोबर का भुगतान हुआ। वह मंत्री जी के परिशिष्ट के जवाब में आया है। परिशिष्ट के जवाब में हम लोग हिसाब लगा रहे थे तो 17 करोड़ रूपये हिसाब लगाकर बोल रहे हैं, उनके हिसाब में तो कुल 86 लाख कुछ हो रहा है। उन्होंने जो टोटल बताया है। लेकिन हमने फिर से इसका हिसाब लगाया कि हमारा फीगर कहीं पर गलत न हो जाए तो वह 17 करोड़ रूपये है। हमारा मानना यह है कि आपने कुल 246 करोड़ रूपये का गोबर खरीदा। वेल्यू एडिशन करने के बाद ज्ञात हुआ कि आपने 17 करोड़ रूपये वेल्यू का सामान बेचा। उसका वेल्यू एडिशन हुआ है। आपने जो गोबर खरीदा है, उससे वर्मी कंपोस्ट बनाया, गोबर का पेन्ट बनाया। यह जो शासन की 229 करोड़ रूपये की राशि है, यह बैलेंस राशि कहां पर है? या तो फिर फर्जी गोबर खरीदी हुई है। गोबर खरीदी में किसी के भी डाटा में गोबर को चढ़ा दिया गया है। उतनी मात्रा में गोबर उपलब्ध नहीं है, जितनी मात्रा में उस गोबर की राशि का भुगतान किया गया है। यह गोबर घोटाला, चारा घोटाला से भी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बड़ा घोटाला है क्योंकि 229 करोड़ रूपये का क्लियर कट हिसाब नहीं आ रहा है। इनके पास 229 करोड़ रूपये का गोबर स्टॉक इन वेटिंग है। वह तो शासन की संपत्ति है। आपने 246 करोड़ रूपये का भुगतान करके गोबर खरीदा और 17 करोड़ रूपये का सामान बेचा। इसमें कुल 229 करोड़ रूपये का गैप है। हम आपसे यही जानना चाहते हैं कि यह 229 करोड़ रूपये का गैप कहां पर है?

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने खरीदी की मात्रा बताया है और जितनी राशि का गोबर खरीदा, उसकी मात्रा बताया है। जो सामान बेचा, उसकी जानकारी भी दी है। इसमें कहां से गैप आया, उसकी पूरी लिस्ट पटल पर रखी हुई है। आप उसको जोड़कर देख ले कि उसमें कहीं पर कमी जैसा प्रश्न ही नहीं है।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपके पास गोबर का स्टॉक तो होगा। यदि आपके पास गोबर का स्टॉक है तो फिर वह कहां है?

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, या तो फिर आपके पास 229 करोड़ रूपये का गोबर स्टॉक इन वेटिंग है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि आपके पास 229 करोड़ रूपये के गोबर का स्टॉक में है तो आप बता दीजिए कि वह स्टॉक कहां पर है?

श्री नाराण चंदेल :- मंत्री जी, 229 करोड़ रूपये का हिसाब दे दें।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 229 करोड़ रूपये कहां है?

श्री ताम्रध्वज साहू :- कौन से 229 करोड़ रूपये का हिसाब? मैंने आपको हिसाब दे दिया है।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी अपने जवाब में कह रहे हैं कि 246 करोड़ रूपये की गोबर खरीदी हुई।

अध्यक्ष महोदय :- 246 करोड़ रूपये की। जी।

श्री सौरभ सिंह :- जी। मंत्री जी ने तो 86 लाख रूपये का ही हिसाब बताया था। हम लोगों ने उसको जोड़कर 17 करोड़ रूपये कहा है। उनके उत्तर के परिशिष्ट में केवल 86 लाख रूपये का ही हिसाब है। लेकिन जब हमने हिसाब लगाया तो वह 17 करोड़ रूपये हुआ। 246 करोड़ रूपये में 17 करोड़ रूपये माइनस हुआ तो 229 करोड़ रूपये का गोबर कहां पर है? यदि 229 करोड़ रूपये का गोबर बिका नहीं या उससे उत्पादित वस्तु बिकी नहीं तो वह 229 करोड़ रूपये के गोबर का स्टॉक कहां पर है?

श्री शिवरतन शर्मा :- गोबर चूहा खागे का गा?

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक तो मंत्री जी गोबर का स्टॉक बता दें या यह बता दें कि गोबर पानी में बोहा गया।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह तो चारा घोटाला से भी बड़ा घोटाला है। क्या गोबर की फर्जी खरीदी हुई है?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- गोबर हा सूखा गे का?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रश्न का जवाब आना चाहिए क्योंकि गोबर की फर्जी खरीदी हुई है। या तो फिर एक डाटा मैं बता देता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- अभी तो आप इस पर चर्चा मांगेगे, उसमें इस पर चर्चा कर लीजिए।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको एक डाटा बता देता हूं कि अकलतरा विकासखण्ड के एक गांव में 3 महिलाओं से 2 लाख 82 हजार किलो गोबर खरीदा गया है। जिसका 5 लाख 65 हजार रूपये का भुगतान किया गया है और वह तीनों महिलाएं एक ही परिवार की हैं। लेकिन उनके घर में गाय नहीं है। (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, प्रश्न संख्या-4। अजय चंद्राकर जी।

श्री सौरभ सिंह :- यही तो 229 करोड़ रूपये का गोबर है। वह 229 करोड़ रूपये का गोबर कहां गायब हो गया?

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बड़ा विषय है।

अध्यक्ष महोदय :- आप उसको रख लीजिए। अभी इसके बाद वह आपके काम आएगा।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे आपको एक जानकारी देनी है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह 229 करोड़ रूपये बड़ी राशि है।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी अभी आपको जवाब देंगे। अभी आप लोग क्या करेंगे?

श्री शिवरतन शर्मा :- यह बड़ी राशि है। मंत्री जी इसका जवाब तो दे दें।

श्री सौरभ सिंह :- मंत्री जी 229 करोड़ रूपये का हिसाब दे दें। क्या वह 229 करोड़ रूपये का गोबर स्टॉक इन हैण्ड है या किस गौठान में कितना गोबर है?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी को यह बताना चाहिए कि 229 करोड़ रूपये का गोबर कहां गया? यदि वह गोबर स्टॉक में है तो कहां पर है? यदि उससे वर्मी कंपोस्ट बनाया गया है तो वह वर्मी कंपोस्ट कहां पर है?

श्री सौरभ सिंह :- यदि उससे वर्मी कंपोस्ट बनाया गया है तो वह वर्मी कंपोस्ट कहां पर है? मंत्री जी यह बताए कि उस गोबर से पेन्ट बना या क्या बना?

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग अविश्वास प्रस्ताव पर क्या चर्चा करेंगे?

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी प्रश्नकाल है और आप अविश्वास प्रस्ताव की बात कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- हां, जो जाना चाहते हैं, वह जाए।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- अविश्वास प्रस्ताव में तो हम बोलेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- अभी एक घण्टे का समय है। आप लोग इतना भी तो सोचिये कि आज आखिरी दिन है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनको प्रश्न पूछने दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गौठान के मामले में हमेशा प्रश्न हुए हैं। गौठान में जो राशि खर्च की गई है, वह राशि निरर्थक है। हमने इस बात को हमेशा कहा है।

अध्यक्ष महोदय :- आपने कहा होगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- हमने माननीय मुख्यमंत्री जी से व्यक्तिगत रूप से निवेदन किया था कि आप लॉट निकालकर हमको 5 गौठान दिखाने ले चलिये। मुख्यमंत्री जी ने हां कहा था। 2 साल में हमको गौठान दिखाने नहीं ले गये।

अध्यक्ष महोदय :- आप इस बात को कई बार बोल चुके हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गौठान के नाम पर पूरे छत्तीसगढ़ में गड़बड़ और घोटाला हो रहा है। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कृषि मंत्री बदल गये, लेकिन हमको गौठान नहीं दिखा पाये। अभी गृह मंत्री जी कृषि मंत्री बने हैं तो वह कहां से बता पाएंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 229 करोड़ रूपये के गोबर का स्टॉक कहां गया? यह बिहार के चारा घोटाला से बड़ा घोटाला है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, ठीक है। हम मानते हैं। आप बैठिये तो सही।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी का जवाब आ जाये। सदन जानना चाहता है और जनता जानना चाहती है। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- यह सरकार की फ्लैगशिप योजना है, उसके बाद भी चौबे जी और मुख्यमंत्री जी हमको 5 साल में एक भी गौठान नहीं दिखा पाये। यह गोबर खरीदी की स्थिति है। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गौठान इस सरकार का ड्रीम प्रोजेक्ट है। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लालू प्रसाद यादव के चारा घोटाला से बड़ा घोटाला है और आप इसको साबित कर रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- यह बड़ा घोटाला है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- आखिर 229 करोड़ रूपये का गोबर कहां गया?

अध्यक्ष महोदय :- मैं कह रहा हूं। शर्मा जी, मेरी बात सुनिये। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सौरभ सिंह :- यह जनता का पैसा है। क्या वह स्टॉक इन हैण्ड है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- गोबर खरीदी के नाम पर किसानों के साथ। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लोकधन है और हम इसका हिसाब जानना चाहेंगे। यह किसी के घर का पैसा नहीं है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- वर्मी कंपोस्ट के नाम पर गोबर की खरीदी की जा रही है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चंदेल जी, एक मिनट। प्लीज। (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप लोग गोबर पर इतना बहस क्यों करते हैं ? (व्यवधान)

श्री कुलदीप जुनेजा :- आदरणीय अध्यक्ष जी, 4-5 लोग एक साथ खड़े होकर पूछ रहे हैं । (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- यह जनता का पैसा है, हम जानना चाहते हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चंदेल जी, आप बैठिए । शर्मा जी, बैठ जाएं प्लीज़ । चंदेल जी, मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं । इसके बारे में चर्चा करने के लिए अभी आपको समय मिल जाएगा ।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इनके गोबर खरीदी के गौठान को देखने के लिए गया हूं । जैसे राऊत लोग चंडी का दूध देते हैं, तीन पाव, एक किलो, वैसे ही रजिस्टर बना हुआ है और उसमें चढ़ाते जाते हैं । गोबर नहीं आ रहा है, लेकिन रजिस्टर में रोज चढ़ा रहे हैं और उसके बाद में प्रदेश की ओर से जितना पैसा पंच लोग नहीं पा रहे हैं, उससे ज्यादा पैसा उनको दे रहे हैं । यह 420 और दो नम्बर की गड़बड़ी करने का बड़ा मामला है ।

श्री नारायण चंदेल :- गोबर को कोल्ड स्टोरेज में रखे हो क्या ?

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाईए । नेता जी, मैं खड़ा हूं, मैं खड़ा हूं । मैं कह रहा हूं कि यह आरोप लगाने के लिए आपको समय मिल जाएंगे, मगर विधान सभा का आज अंतिम प्रश्न दिवस है, बहुत सारे महत्वपूर्ण प्रश्न है, कुछ प्रश्न आने दीजिए, मेरा इतना निवेदन है ।

श्री नारायण चंदेल :- सदन की जांच कमेटी से जांच करवा दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- बाद में करवा देंगे न ।

श्री नारायण चंदेल :- आप घोषित कर दीजिए न ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सदन की कमेटी से जांच कराने की घोषणा कर दीजिए।

श्री नारायण चंदेल :- आप सदन की जांच कमेटी घोषित कर दीजिए, यह बड़ा मामला है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- गोबर को कोल्ड स्टोरेज में रखा गया है क्या, यह बता दें ।

अध्यक्ष महोदय :- चन्द्राकर जी, अपना प्रश्न करें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो खड़ा हूं ।

श्री सौरभ सिंह :- पूरा सरकार ह गोबर में समा गे हे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री नारायण चंदेल :- कहां पर स्टोरेज है, हम लोग देखने जाएंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज़, प्लीज़, ऐसा मत करिए । आज के दिन मत करिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक छोटा सा उदाहरण कह देता हूं, फिर प्रश्न करूंगा । माननीय मुख्यमंत्री जी ने सदन में कहा था कि गोबर बेचकर एक किसान करोड़पति बन गया । मुंगेली जिले में एक किसान ने अधिकतम 46-47 लाख रूपए का गोबर बेचा है और उन्होंने इसी विधान सभा में कह दिया कि किसान एक करोड़ को गोबर बेचा है । ये हाल है, अब क्या बोलेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- आपका गला बैठ रहा है, शाम तक उसको ठीक करिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चरवाहा गोबर बेचकर 35-40 हजार रूपए कमा रहे हैं, यह माननीय मुख्यमंत्री जी का कथन है । प्रदेश के कितने चरवाहा 35-40 हजार रूपए कमा रहे हैं, जरा बता तो दीजिए ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय मुख्यमंत्री जी ने मुंगेली जिले के बारे में कहा था कि भुगतान पर भुगतान कर रहे हैं । उस समय चौबे जी मंत्री थे । पर वहां अभी भी गोबर बेचने वालों का भुगतान नहीं हुआ है ।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है ।

मासिक बाल पत्रिका "किलोल" की खरीदी व उसकी सदस्यता

[स्कूल शिक्षा]

4. (*क्र. 29) श्री अजय चन्द्राकर : क्या पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) मासिक बाल पत्रिका "किलोल" का संपादक/प्रकाशक/मुद्रांक कौन-कौन है ? (ख) क्या प्रदेश की समस्त शालाओं, संकुलों व स्कूल शिक्षकों को उक्त पत्रिका की खरीदी हेतु कोई निर्देश जारी किया गया है? यदि हां, तो कब, और किस स्तर के अधिकारी के द्वारा जारी किया गया? निर्देश की कॉपी उपलब्ध करायें? छात्रों के लिये इस पत्रिका की उपयोगिता कितनी है? यह किस अधिकारी या समिति द्वारा, किन तथ्यों पर तय की गयी थी? (ग) 20 जून, 2023 की स्थिति में उक्त पत्रिका की किस दर पर, किस मद से, कितनी राशि की खरीदी की जा चुकी है? कितनी शालाएं/संकुल शिक्षकों को वार्षिक एवं आजीवन सदस्यता दी गयी है?

पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :(क) किलोल के संपादक डॉ. रचना अजमेरा, प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी एवं मुद्रक सलूजा ग्राफिक्स रायपुर है। **(ख)** दिनांक 24/01/2022 को प्रबंध संचालक समग्र शिक्षा रायपुर द्वारा जारी की गयी, प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति आदेश के पृष्ठ 02 पर CRC अनुदान राशि उपयोग करने के संबंध में जारी दिशा-निर्देश के आकस्मिक व्यय में उल्लेख किया गया था कि “सभी संकुलों में बाल पत्रिका की आजीवन सदस्यता

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ग्रहण की जाते हुए संकुल समन्वयकों द्वारा अपने संकुल की शालाओं में भ्रमण के दौरान प्रत्येक शाला में बच्चों को पत्रिका के विभिन्न गीत, कविता, कहानियों का वाचन करवाते हुए परीक्षण करवाया जाए। संकुल के बच्चों एवं शिक्षकों को पत्रिका में अपने आलेख भेजने हेतु प्रेरित किया जाए। इस हेतु राज्य में प्रकाशित मासिक पत्रिका "किलोल" की आजीवन सदस्यता रू. 10000.00 इस मद से व्यय करने हेतु निर्देशित किया जाता है।" निर्देश की प्रति संलग्न[3] प्रपत्र अनुसार है।किलोल पत्रिका में छत्तीसगढ़ के स्कूलों में पढ़ने वाले बालक-बालिकाओं तथा पढा़ने वाले शिक्षकों के कविता, कहानी लेख आदि सामग्री लगातार प्रकाशित होती है जो इस पत्रिका में विद्यार्थियों की अभिरूचि एवं पत्रिका की उपयोगिता को दर्शाता है इस आधार पर प्रबंध संचालक, समग्र शिक्षा द्वारा अन्य पत्रिकाओं के साथ-साथ किलोल पत्रिका की भी आजीवन सदस्यता लेने हेतु निर्देशित किया गया था। **(ग)** पत्रिका की शासकीय खरीदी नहीं की गयी है। 72 शालाओं ने शाला अनुदान मद से एवं 3233 संकुलों ने संकुल अनुदान मद से रू. 10000/- की दर से आजीवन सदस्यता प्राप्त की है। वर्ष 2020-21 में 1975 शालाओं द्वारा शाला अनुदान मद से रू. 600/- की दर से एवं वर्ष 2021-22 में 693 शालाओं द्वारा शाला अनुदान मद रू. 720/- की दर से वार्षिक सदस्यता ली गयी थी तथा वर्ष 2022-23 में 354 शालाओं द्वारा शाला अनुदान मद से तथा 556 संकुलों द्वारा संकुल अनुदान मद से रू. 720/- की दर पर वार्षिक सदस्यता ली गयी है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय विद्वान मंत्री इधर-उधर देख रहे हैं, मैं आग्रह करूंगा कि आपकी ओर देखें । सबसे परिशिष्ट में दो बातें लगी हैं, मैं उसके बारे में जानना चाहता हूं । परिशिष्ट में आकस्मिक व्यय और मीटिंग टी.ए. का उल्लेख है । इसके निर्देश क्या हैं, आकस्मिक व्यय और मीटिंग टी.ए. को किन-किन मदों में व्यय किया जा सकता है और उसके निर्देश में क्या पत्रिका, साहित्य खरीदना शामिल है या नहीं है ? एक और दूसरी बात परिशिष्ट तीन में 1 से 24 तक जिलों का नाम दिया गया है, उसके बाद क्रमांक 25-26 में जिले के नाम गायब है, उसके बाद फिर आपने क्रमांक 27-28 में जिले का नाम दिया है तो दो जिले को जानबूझकर गायब कर दिया गया है या टंकण त्रुटि है या क्या है ? इसे बता देंगे, फिर मैं अगला प्रश्न करूंगा ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य आकस्मिक व्यय के बारे में जानना चाहते हैं । भारत सरकार द्वारा इस मद में 20 हजार रूपए की राशि स्वीकृत की गई है । इसका उपयोग स्टेशनरी, बिजली देयक, मरम्मत, कम्प्यूटर सामग्री, पत्र-पत्रिकाएं, फाउण्डेशन लिटरेसी और न्यूमरेसी को ध्यान में रखते हुए सभी संकुल में बाल पत्रिकाओं की आजीवन सदस्यता ग्रहण करते हुए संकुल समन्वयकों द्वारा अपने संकुल की शालाओं में भ्रमण के दौरान प्रत्येक शाला में बच्चों को पत्रिका के विभिन्न गीत, कविता, कहानियां का वाचन करवाते हुए परीक्षण कराया जाये, यह आदेश है । संकुल

[3] परिशिष्ट "तीन"

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के बच्चों एवं शिक्षकों को पत्रिका में अपने आलेख भेजने हेतु प्रेरित किया जाये, इस मद हेतु राज्य में प्रकाशित मासिक पत्रिका "किलोल" की आजीवन सदस्यता हेतु जो राशि है, उसे व्यय करने का भी निर्देश किया गया है । यह आपके पहले प्रश्न का उत्तर है । दूसरा प्रश्न है कि दो जिले छूट गए हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मीटिंग टी.ए. का नहीं बताया है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष जी, इस मद में 20 हजार रूपए की राशि स्वीकृत की गई हे । इसका उपयोग संकुल के स्त्रोत केन्द्र में भवनों का रख-रखाव/रंग-रोगन/शौचालय मरम्म्त/सफाई आदि हेतु व्यय किया जाये, यह स्पष्ट आदेश है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें पत्रिका नहीं खरीदी जाती ?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पहले नम्बर के प्रश्न में बता दिया कि खरीदी जाये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मीटिंग टी.ए. में पत्रिका खरीदने का निर्देश नहीं है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपने जो दो व्यय बताया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप क्यों घूमा रहे हैं ? आप बता दीजिए कि आपने मीटिंग टी.ए. में पत्रिका खरीदने का निर्देश दिया है या नहीं दिया है ?

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, मैंने स्पष्ट कहा है कि सरकार ने नहीं दिया है, जहां से निर्देश निकला है, वह आपके पास है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास कुछ नहीं है। मंत्री जी स्वीकार कर रहे हैं कि मीटिंग टी.ए. पत्रिका खरीदने का कोई निर्देश नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- उन्होंने अभी स्वीकार नहीं किया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं पूछ रहा हूं कि मीटिंग टी.ए. में पत्रिका खरीदने के निर्देश हैं क्या ?

श्री रविन्द्र चौबे :- आकस्मिक व्यय में है, मैंने उत्तर दिया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं आकस्मिक व्यय का तो मान लिया, मीटिंग टी.ए. क्या निर्देश है, यह पूछा है ?

श्री रविन्द्र चौबे :- जो स्पष्ट उत्तर है, वह मैंने आपको बता दिया। आकस्मिक व्यय में लायब्रेरी के लिए पत्र-पत्रिकाएं खरीदने का स्पष्ट निर्देश है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह घोर आपत्तिजनक है। इसमें दो चीज है, मीटिंग टी.ए. और आकस्मिक व्यय है। आपने आकस्मिक व्यय का बताया। मीटिंग टी.ए. में राशि व्यय के क्या-क्या निर्देश हैं, मैं यह पूछ रहा हूं तो आप बोलते हैं कि मैंने आकस्मिक व्यय का बता दिया। आप मीटिंग टी.ए. का बताईये न ? मैं उसको भी पूछ रहा हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- मैंने पढ़कर सुनाया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं-नहीं, आप नहीं सुनाये हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं फिर से पढ़कर सुना देता हूं। मीटिंग टी.ए. इस मद में 20 हजार की राशि स्वीकृत की गई है। इसका उपयोग संकुल स्त्रोत केन्द्रों में भवन के रखरखाव, रंग-रोगन, शौचालय मरम्मत, सफाई आदि के लिए किए जाने के निर्देश हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- ठीक। माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक दूसरा प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय :- जल्दी-जल्दी प्रश्न कर लीजिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- साहब, आप सुनिये तो, इसमें जोरदार चीज है। आपने कहा है कि अन्य पत्रिकाओं के साथ-साथ किलोल पत्रिका की आजीवन सदस्यता लेने के निर्देश दिए गए हैं। तो आप अन्य कौन-कौन सी पत्रिकाएं खरीदते हैं ? किस प्रक्रिया के तहत खरीदते हैं ? सिर्फ किलोल पत्रिका के निर्देश दिया या अन्य पत्रिकाओं के लिए भी निर्देश दिए ? क्या मीटिंग टी.ए. मद से भी खरीदा गया है या खरीदने हेतु सदस्यता के निर्देश दिए गए हैं क्या ?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष जी, मैंने अपने उत्तर में स्पष्ट कहा है कि केवल किलोल के लिए आदेश नहीं है। सभी पत्र-पत्रिकाओं के लिए है। इसके पहले भी आदेश होते रहे हैं। जब इनकी हुकूमत थी, तो स्कूलों में श्यामा प्रसाद मुखर्जी और दीनदयाल उपाध्याय की तस्वीर खरीदने के भी आदेश हुए थे। इस प्रकार लगातार आदेश होते रहते हैं। पराग और बालमित्र जैसी पत्रिकाएं भी लगातार खरीदी जाती हैं। उसी के तहत इस प्रकार के आदेश हुए हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे समय या भा.ज.पा. के समय क्या खरीदी हुई आप उसकी जांच करवा लें, उसमें क्या आपत्ति है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप छोड़िये न।

श्री अजय चन्द्राकर :-देखिये साहब, आपसे अनुरोध है कि ..।

अध्यक्ष महोदय :- मैं कह रहा हूं कि आप जल्दी प्रश्न कर लीजिये, मैं और कुछ नहीं कह रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन साहब, पूरा उत्तर तो आ जाये।

अध्यक्ष महोदय :- ले ना अब हो गय, रहन दे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री महोदय, मैं जो प्रश्न पूछा हूं, उसको फिर से दोहरा देता हूं कि आप कितनी पत्रिकाएं सीधा खरीदते हैं या खरीदने के लिए निर्देश दिया ? सिर्फ किलोल के लिए निर्देश दिया गया। आप अन्य पत्रिकाएं भी खरीदे, मझे आपत्ति नहीं है। आप अन्य पत्रिकाएं खरीदे, आपने नाम से निर्देश दिया है क्या ? जिसको आप नहीं बताते हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं तो पढ़कर सुनाया हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आप तो पढ़कर मीटिंग टी.ए. की बात बताये हैं, जो आकस्मिकता के बारे में जो उत्तर में लिखा है, मैंने वह परिशिष्ट में पढ़ा था। मैं आपके उत्तर को पढ़ देता हूं। पत्रिकाओं के साथ-साथ किलोल पत्रिका की भी आजीवन सदस्यता लेने हेतु निर्देशित किया गया है। तो आप मुझे यह बता दीजिये कि अन्य पत्रिकाओं के खरीदने के नियम क्या हैं, आपके यहां प्रक्रिया क्या है ? या आप सीधे ऐसी आजीवन सदस्यता, या सदस्यता के लिए निर्देश देते हैं। टी.ए. मद से भी क्या किलोल पत्रिका खरीदी गई है ? दूसरे प्रश्न में ये 3 चीजें हैं, ये तीनों पाईंटेड है, आप पाईंटेड उत्तर दे दीजये, आप पॉलीटिकल उत्तर ना दें। यदि पॉलीटिकल उत्तर देंगे तो भा.ज.पा. शासन के साढ़े चार साल की जांच करवा लें। मैं भी स्कूल शिक्षा मंत्री था, मैं भी जेल चल दूंगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, जब नौबत आयेगी तो कहां जाना है, जहां जाना है, वह तो बाद में आयेगी। लेकिन जांच जैसी की बात नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप उदाहरण दिए, इसलिए मैंने कहा।

श्री रविन्द्र चौबे :- खरीदी हुई है, उसमें क्या है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- गलत हुआ है तो जांच करवा लो।

श्री रविन्द्र चौबे :- इसमें जांच करने की क्या बात है। आपने अपने समय में आदेश दिया, इस समय यह आदेश हुआ है। उसमें जांच करने की क्या बात है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं तो प्रक्रिया पूछ रहा हूं, उसको बता दीजिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैंने तो हां कहा, सारी पत्रकाओं को खरीदने का आदेश है। किलोल के सन्दर्भ में भी आदेश है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं खरीदी की प्रक्रिया पूछी है। क्या सभी पत्रिकाओं को नाम सहित आजीवन सदस्यता या वार्षिक सदस्यता के लिए निर्देश दिए गए हैं या सिर्फ किलोल के लिए निर्देश दिए गए हैं ? यदि नहीं दिए गए तो पत्रिका खरीदने की प्रक्रिया क्या है ? क्या टी.ए. मद से भी इसको खरीदा गया है या आजीवन सदस्यता दिलवाई गई है ? आज जितने बार कहेंगे, मैं उतने बार दोहराऊंगा। आप उत्तर दिलवा दीजिये। फिर मैं एक छोटा सा प्रश्न करूंगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, मैं बार-बार वही उत्तर दे रहा हूं। सभी पत्रिकाओं के सन्दर्भ में स्पष्ट निर्देश है। लायब्रेरी के लिए खरीदे ही जाते है।

श्री अजय चन्द्राकर :- खरीदने की प्रक्रिया क्या है, मैं यह पूछ रहा हूं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- समिति के लोग खरीदते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- ऐसा बोलेंगे तो बाजार से खरीदते हैं । बिना नियम के खरीदते हैं कि कोई निर्देश जारी करते हैं, लोगों के लिये आप लोगों ने निर्देश जारी किया है, यह पत्रिका खरीदे जायें करके

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

निर्देश जारी करते हैं, आश्चर्यजनक बात है कि खरीदने के साथ-साथ आजीवन सदस्यता और वार्षिक सदस्यता में इनके निर्देश हैं। यह भी जारी करते हैं क्या, यह भी बताईये ?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह तो बड़ा स्पष्ट हो गया है, मैंने पढ़कर सुनाया है कि किलोल के लिये आजीवन सदस्यता के लिये निर्देश जारी किया गया है । इसमें छिपाने की क्या बात है ? अन्य पत्रिकाओं के लिये भी निर्देश है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां पर गोल-गोल उत्तर है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें कौन-कौन से गोलगोल उत्तर है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- इस तरह खरीदा जाता है या उनके लिये भी आजीवन सदस्यता या सदस्यता के निर्देश हैं और केन्द्र शासन से जब पत्रिका टी.ए. मद से खरीदने के निर्देश नहीं है तो उस मद से क्यों खरीदा गया है ? यह निर्देश क्यों दिया गया है ? माननीय सदस्य इतने विद्वान है, उसका पाइंटेड उत्तर दे दें । आपने दो माननीय मंत्रियों को कहा है कि नये-नये हैं, माननीय भाई साहब हमारे खिलाड़ी आदमी हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- खिलाड़ी हैं तभी तो खेल रहे हैं, आपको क्या तकलीफ है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- यह उत्तर की अपेक्षा है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये आप थोड़ा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- उत्तर तो दिलवा दीजिए साहब ?

अध्यक्ष महोदय :- छोड़ो ना ?

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, इनका रिकार्डिंग वहां पर अटक गया है । उससे आगे बढ़ नहीं रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- उत्तर नहीं दिलवायेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- तबियत खराब है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- सही उत्तर दे रहा हूँ ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप बोल दीजिए कि उत्तर नहीं दिलवाऊंगा तो बैठ जाऊंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- दे रहे हैं भई, आप काहे को ? मैं यह चिन्ता कर रहा हूँ कि आप अपने गले को बचा कर रखो ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, कोई छिपाने का तथ्य नहीं है । हमने कहा है कि आदेश दिया है । मैंने समग्र शिक्षा के एम.डी. के आदेश को पढ़कर सुनाया कि किलोल के आजीवन सदस्यता के लिये आदेश हुआ है और लायब्रेरी के लिये सभी प्रकार की बाल पत्रिकाओं के संदर्भ में निर्देश जारी होते हैं और खरीदे जाते हैं । यह भी मैंने पढ़कर सुनाया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, यह भी कहा है कि बच्चों के रचना, कविता...।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- यह विषय नहीं है । बच्चों की योग्यता, यह विषय नहीं है । विषय एक लाईन का है, आपन कहेंगे तो उत्तर दूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बताईये क्या है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- अन्य पत्रिकाओं के लिये खरीदने की प्रक्रिया क्या है या सदस्यता आजीवन लें, वार्षिक लें, इसके लिये भी निर्देश समय-समय पर जारी किये जाते हैं क्या ? दूसरा, यदि नहीं किये जाते हैं तो पत्रिका खरीदने की प्रक्रिया क्या है? तीसरा, जब टी.ए.मद में पत्रिका खरीदना नहीं है, क्या उस मद से पत्रिका खरीदी गई?

अध्यक्ष महोदय :- आप इन तीनो प्रश्नों का उत्तर...।

श्री रविन्द्र चौबे :- तीनों उत्तर है, अध्यक्ष जी । उस मद से, जिस मद से पत्रिका खरीदी गई, उसका मैंने उत्तर दे दिया है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- उस मद नहीं, मैं टी.ए. मद बोल रहा हूँ । टी.ए. मद,

टी.ए. मद, बोल रहा हूँ ।

अध्यक्ष महोदय :- अगर किसी प्रकार की अनियमितता है तो जांच करा लीजिए ? उसमें क्या दिक्कत है ?

एक माननीय सदस्य :-आपको रात तक बोलनी है । जरूरत ही नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप फिर उत्तर दीजिए । आप उनको संतुष्ट करिये। एक मिनट मैं आपको संतुष्ट करने के लिये बोल रहा हूँ या तो आप संतुष्ट हो जाओ ।

श्री अजय चन्द्राकर :- उत्तर दिलवा दीजिए भई ?

अध्यक्ष महोदय :- उनको बोल तो रहा हूँ ?

श्री शिवरतन शर्मा :- आप जलेबी टाईप घुमा-घुमा के जवाब मत दो ना ?

श्री रविन्द्र चौबे :- इसमें घुमाने टाईप बात नहीं है अध्यक्ष जी । अगर संतुष्ट होने की प्रवृत्ति हो तो मैं उनको संतुष्ट करूं, लेकिन अजय चन्द्राकर जी अपने जीवन में भी संतुष्ट नहीं हो सकते । मैं उत्तर बिल्कुल सही दे रहा हूँ । किस मद से खरीदा गया है, यह मैंने कहा । एम.डी. समग्र शिक्षा का आदेश हुआ है, यह भी मैंने कहा है। इस प्रकार की पत्रिकायें स्कूलों में लायब्रेरी के लिये खरीदी ही जाती है, यह भी मैंने स्वीकार किया । इसमें काहे की जांच की बात हो रही है ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप दूसरा प्रश्न कर लीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक सेकण्ड, उन्होंने मुझे आकस्मिकता मद का उत्तर दिया, मैं इसे स्वीकार करता हूँ । मैं टी.ए. मद का पूछ रहा हूँ, उनको वह नहीं बता रहे हैं, मुझे असंतुष्ट बता रहे हैं । दूसरा, कौन-कौन सी पत्रिकाओं के लिये आजीवन सदस्यता या वार्षिक सदस्यता के लिये आपने निर्देश जारी किये ? उसको नहीं बता रहे हैं, सिर्फ किलोल भर का बता रहे हैं, अन्य पत्रिकाओं का नहीं बता रहे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हैं । अन्य पत्रिकायें खरीद सकते हैं तो कौन सी प्रक्रिया से खरीदते हैं, यह नहीं बता रहे हैं, मुझे असंतुष्ट बता रहे हैं । इसके अतिरिक्त, एक धंधा और चल रहा है, आपको बता दूं कि शिक्षकों की संख्या कितनी है ? यह तो 22 करोड़ है । अभी 3600 संकुल में पहुंचे हैं । इस प्रदेश में 5500 संकुल हैं । मैं उसके बाद इसे रख देता हूँ । यह निजी लोगों को दबाव डालकर भी सदस्य बनवा रहे हैं । यह आपका सबूत है । यदि 10 हजार की सदस्यता नहीं लेगा तो संकुल प्रभारी और बीईओ उसके ऊपर कार्यवाही करेगा । यह धंधा बन गया है क्या ? यह कौन सी क्वालिटी का है, यह कौन छापता है, क्या लेख छपे हैं, बच्चों के कितने लेख उसमें छपे हैं ? माननीय मंत्री जी बतायें कि उसमें बच्चों के लिये कितने लेख छपे हैं ? यह बतायें कि क्या यह धंधा कर रहे हैं ? यह प्रदेश को क्यों घूमा रहे हैं ? (व्यवधान)

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनकी लैंगवेज ऐसी है (व्यवधान) ।

संस्कृति मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- आपको कौन से आर्टिकल में इंट्रेस्ट है, यह बता दीजिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी ओर देख रहा हूं। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आप कौन-सी पत्रिका बेचवाना चाहते हैं, आप पहले यह बताईये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- [xx][4] (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- (व्यवधान) आपके लिये भी मदद की जरूरत है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- और यह यहां पर हल्ला कर रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक और दो खड़े हुए हैं, तीसरे का खड़े होना बाकी है।

श्री अमरजीत भगत :- आप कौन-सी पत्रिका बेचवाना चाहते हैं, आप यह बता दीजिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जो आखिरी प्रश्न करने वाला था, उसको मैं आपके विवेक में छोड़ूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- हां, छोड़िये ना।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी ने कहा कि किलोल में बच्चे..।

अध्यक्ष महोदय :- चन्द्राकर जी, आप मेरी तरफ देखिये, प्लीज।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, हां, मैं आपकी तरफ ही देख रहा हूं।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, यह भी तो किलोल ही कर रहे हैं। यह कौन-सा अच्छा काम कर रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह पूरे विधान सभा के लिये [xx][5] है।

---

[4] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, आपने उत्तर दिया कि इसमें बच्चों के लेख, सुलेख, पत्र, कहानी, कविताएं छपती हैं। वह सदस्यता को तो जायेगी ही लेकिन छत्तीसगढ़ में शिक्षा विभाग सदस्यता करवाने के अतिरिक्त कितनी पत्रिकाएं खरीदती है ? और कितने बच्चों ने आज तक उसमें लेख या किसी तरह के कॉलम भेजे हैं ? माननीय शिक्षा मंत्री जी सिर्फ एक-आत बच्चे का नाम ही बता दें।

अध्यक्ष महोदय :- देखिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने ही कहा है कि पूरक प्रश्न बनता है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मेरी बात तो सुन लीजिये। यह भी तो नये-नये शिक्षा मंत्री बने हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह नये-नये नहीं बने हैं। वह तो पूरे 24 विभागों का का उत्तर दे देंगे। उनमें इतनी क्षमता है।

अध्यक्ष महोदय :- आपके प्रश्न से किलोल सहित अन्य पत्र-पत्रिकाएं खरीदने का जितने उत्तर उद्भुत है, मुझे विधान सभा में इसको एक हफ्ते के अंदर उपलब्ध करवा दें। बात खत्म।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, एक सेकंड मेरी बात सुन लीजिये। आप उसको उसी में शामिल कर लीजियेगा। शिक्षा विभाग, आजीवन सदस्यता, वार्षिक सदस्यता के साथ इसके और कितनी अतिरिक्त प्रति खरीदती है ?

अध्यक्ष महोदय :- सब जानकारी उपलब्ध करवा देंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- जी, दूसरा, कितने लोगों के लेख या अन्य कॉलम छपे हैं ? उसमें से 10 नाम मुझे बता दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- वह तो मुझे बतायेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, खुलेतौर पर बता दीजिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मेरा इसी में एक छोटा-सा प्रश्न है। आपने किलोल पत्रिका को स्कूल में भेजने का निर्णय लिया। हर स्कूल से एक हजार रूपये और दो हजार रूपये सदस्यता शुल्क लेने का निर्णय लिया गया। यहां हजारों स्कूल हैं, उससे करोड़ों रूपये इकट्ठे हुए होंगे। मान लीजिये कि पत्रिका निकालने वाले ने किलोल पत्रिका को छापना बंद कर दिया तो उन स्कूल के बच्चों के पैसे का क्या होगा ? क्या इसमें कोई सिक्योरिटी डिपॉजिट है ? अब वह जो किलोल पत्रिका निकाल रहा है, वह निश्चित रूप से डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के समकक्ष का ही आदमी होगा, तभी तो उसका चयन यहां हुआ है। यह सब क्रिमिनल प्लान नहीं होना चाहिए। इस तरह से आपराधिक कृत्य को करने का और उन्हें अमली जामा पहनाने का काम नहीं होना चाहिए। उन बच्चों के एक-एक हजार सालाना फीस का क्या होगा ? उसमें सिक्योरिटी डिपॉजिट है या नहीं है ? यदि वह कल छापना बंद कर देगा तो वह

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

---

[5] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

वैधानिक रूप से एक-एक हजार रूपये वसूल करके चले जायेगा और आप उसका कुछ नहीं कर सकते। यह सब गलत है, लूट-खसोट करने का नया-नया तरीका इजात हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- इसीलिये मैंने कह दिया है और अब बात खत्म हो गयी है। आपको मैंने प्रश्न पूछने के लिये खड़ा कर दिया।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, यह एक हजार रूपये की सदस्यता नहीं है, 10 हजार रूपये की आजीवन सदस्यता है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, वह मुझे बतायेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, वह 10 हजार रूपये के आजीवन सदस्य है और यदि कल वह पत्रिका छपनी बंद हो गयी और वह ताला लगाकर भागकर चले गये, तब क्या कर लेंगे। उसकी क्या गारंटी है कि वह बंद नहीं होगी ?

अध्यक्ष महोदय :- मुझे इस संदर्भ में जानकारी चाहिए। मुझे इस संदर्भ में जानकारी चाहिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ है। एक स्कूल की सदस्यता 10 हजार रूपये की है। अब आप पूरे प्रदेश का हिसाब निकालिये।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने निर्देश जारी कर दिया है, मुझे एक हफ्ते में जानकारी चाहिए। बात खत्म हो गयी।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, उसमें एक और प्रश्न है कि उसमें सिक्योरिटी डिपॉजिट कितना है ? एक स्कूल का 10 हजार रूपये है तो पूरे प्रदेश में कितने स्कूल है ?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सत्यनारायण शर्मा जी, प्रश्न क्रमांक-5।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अजय चन्द्राकर जी ने बहुत किलोल कर लिया है, अब मेरा मौका है।

अध्यक्ष महोदय :- जी करिये।

<u>शिक्षा के अधिकार के तहत शाला प्रवेशित बच्चों की समस्याओं का निराकरण</u>

[स्कूल शिक्षा]

5. (*क्र. 461) श्री सत्यनारायण शर्मा : क्या पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत यदि वांछित शाला में किसी बच्चे को प्रवेश नहीं मिलता है तो उसे किसी अन्य शाला में प्रवेश प्रदान करने के लिए क्या प्रावधान है? **(ख)** झुग्गी में निवासरत् गरीब परिवार को उनके निवास स्थान से दूर विस्थापित किये जाने पर गरीब परिवार के बच्चों को अधिनियम के तहत अन्य शाला में प्रवेश दिये जाने का क्या प्रावधान

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है? **(ग)** शाला के बंद हो जाने पर शिक्षा के अधिकार के तहत प्रवेशित बच्चों को अन्य शाला में प्रवेश दिये जाने का क्या प्रावधान है?

पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :(क) कोई प्रावधान नहीं है, अपितु पालकगण स्वयं सहमति से समीपस्थ शासकीय एवं अनुदान प्राप्त अशासकीय विद्यालयों में प्रवेश करा सकते हैं। **(ख)** शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत प्रवेश का अवसर केवल एक बार के लिए ही है। अधिनियम में विस्थापित गरीब परिवार के बच्चों को शासकीय एवं अनुदान प्राप्त अशासकीय विद्यालयों में प्रवेश का प्रावधान है। **(ग)** प्रवेशित बच्चों को शासकीय एवं अनुदान प्राप्त विद्यालयों में पालकों की सहमति से प्रवेश दिलाया जाता है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने मुझे बताया है कि शिक्षा के अधिकार के अधिनियम के तहत स्कूल में प्रवेश का एक बार अवसर मिलता है, वह ठीक है। लेकिन कभी-कभी कोई स्कूल बंद हो गया, या स्लम एरिया में रहने वाले लोगों को विस्थापित कर दिया गया तो आप उन बच्चों के लिये अशासकीय अनुदान प्राप्त विद्यालयों में उसकी फीस की क्या व्यवस्था करेंगे ? यह मेरी चिंता है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा के अधिकार के तहत नवप्रवेशी कक्षाओं में पहली में और छठवीं में एडमिशन होते हैं। लेकिन जो आदरणीय सत्तू भैया प्रश्न कर रहे हैं कि कोई ट्रांसफर हो गया तब क्या होगा। अध्यक्ष जी, इसमें स्पष्ट मान्यता है कि शासकीय एवं अनुदान प्राप्त स्कूलों में उन बच्चों का एडमिशन हो सकता है। निजी स्कूलों में केवन नवप्रवेशी कक्षाओं में एडमिशन हो सकता है। अन्य कक्षाओं में सीट की उपलब्धता के आधार पर होते हैं। यदि उन स्कूलों में उनका एडमिशन होता है तो जो शिक्षा के अधिकार के तहत नियम है शासन को जो देय फीस है, वह देय होगी।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय मंत्री जी धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- आपको धन्यवाद्।

<u>लोरमी विधानसभा क्षेत्रान्तर्गत भवन-विहीन एवं जर्जर शालायें</u>

[स्कूल शिक्षा]

6. (*क्र. 474) श्री धर्मजीत सिंह : क्या पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** विधानसभा क्षेत्र लोरमी अंतर्गत कौन-कौन से प्राथमिक शाला, पूर्व माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी स्कूल भवन-विहिन एवं जर्जर अवस्था में हैं, विस्तृत विवरण देवें? **(ख)** कंडिका "क" के भवन- विहिन स्कूलों के लिए कब तक नवीन स्कूल भवन स्वीकृत कर निर्माण

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

किया जाएगा एवं जर्जर स्कूलों का मरम्मत कब तक पूर्ण कर लिया जाएगा, विस्तृत विवरण देवें ? **(ग)** कंडिका "क" के क्षेत्र में विगत 4 वर्षों में कहां-कहां पर नवीन प्राथमिक शाला, पूर्व माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूल खोले गए हैं/ उन्नयन किया गया है, विस्तृत विवरण देवें?

पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) : (क) जानकारी **संलग्न**[6] **प्रपत्र** अनुसार है। **(ख)** निश्चित समय-सीमा बताया जाना संभव नहीं है **(ग)** जानकारी निरंक है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय,मैंने माननीय मंत्री जी लोरमी विधान सभा के प्राथमिक शाला, पूर्व माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं हायर सेकेडरी स्कूल भवन-विहिन एवं जर्जर अवस्था के बारे में पूछा है? उन्होंने 16 भवन-विहिन एवं जर्जर भवनों की जानकारी दी है। आगे मैंने जो भी प्रश्न पूछा है कि आपने कंडिका "क" के क्षेत्र में विगत 4 वर्षों में कहां-कहां पर नवीन प्राथमिक शाला, पूर्व माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूलों को बनाने का आदेश दिया ? तो उन्होंने जानकारी दी है कि निश्चित समय-सीमा बताया जाना संभव नहीं है। मतलब आपने एक भी जर्जर स्कूल के लिए पैसा नहीं दिया और आपने विगत 4 वर्षों में लोरमी विधानसभा क्षेत्र में एक भी मिडिल स्कूल, हाई स्कूल और हायर सेकेण्डरी स्कूल कुछ खोला हो तो आप बता दीजिए ? आप प्रश्न क्रमांक "ग" के उत्तर में कह रहे हैं कि जानकारी निरंक है तो यह निरंक नहीं हो सकता । आप यह बोलिए कि हमने 4 सालों में एक भी स्कूल नहीं खोला। अब मैं इसमें क्या प्रश्न पूछूं, जब आपने बोल दिया और जर्जर स्कूलों की लिस्ट दे दी। आपने आगे न स्कूल बनाने का पैसा दिया, न हाईस्कूल, न मिडिल स्कूल और न ही प्रायमरी स्कूल खोलने का पैसा दिया। अब मैं क्या प्रश्न पूछूं सिवाए इसके मैं यही बोल सकता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- आप माननीय मंत्री जी को धन्यवाद् देकर बैठ जाईये।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह बोलकर बैठूंगा कि आपकी सरकार लोरमी और मुंगेली जिले से नफरत करती है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय धर्मजीत भईया को यह गलतफहमी है कि यह सरकार लोरमी और मुंगेली जिले से नफरत करती है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी, आप इसमें कुरूद भी जोड़ लीजिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय,जर्जर का मतलब है माननीय धर्मजीत भईया को जिन स्कूलों की लिस्ट दी गई है। उन स्कूलों के बारे में है कि यह शाला अति जर्जर है, लेकिन हमने सरकार के द्वारा जो शाला जतन योजना शुरू की है पूरे प्रदेश के लिए लगभग हजार करोड़ रूपये की योजना है। यहां विभिन्न शालाओं की मरम्मत के लिए राशि खर्च की जा रही है। आपके यहां भी 203 शालाओं के लिए लगभग 65 करोड़ रूपये की राशि स्वीकृत की गई है।

---

6 परिशिष्ट "चार"

अध्यक्ष महोदय :- क्या 03 शालाओं के लिए लगभग 65 करोड़ रूपये की राशि स्वीकृत की गई है?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हां, 203 शालाओं के लिए लगभग 65 करोड़ रूपये की राशि स्वीकृत की गई है। मैं पूरे प्रदेश का बता रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- आप 203 शालाएं कह रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें लगभग 183 काम अपूर्ण हैं और बाकी काम मरम्मत के चल रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो आपने मुझे परिशिष्ट में जानकारी दी है मैं इसी को देखकर ही प्रश्न पूछूंगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको पूरी लिस्ट दे दूंगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नहीं। वह तो मेरे पास है।

अध्यक्ष महोदय :- आपके दोनों के संबंध बहुत अच्छे है। माननीय मंत्री जी आपको पूरी लिस्ट दे देंगे। नये सदस्य का पहला प्रश्न है उसे आने दीजिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप यह बोल दीजिए कि एकाध नया स्कूल मिडिल स्कूल तो खोल दीजिए। आपके कार्यकाल में आप एक स्कूल तो खोल दीजिए?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धर्मजीत भईया कह रहे हैं कि आप मेरे विधान सभा क्षेत्र में एक स्कूल तो खोल दीजिए। मैं इधर कृषि विभाग संभालता था, एग्रीकल्चर और हर्टीकल्चर कॉलेज जैसी संस्थाएं आपको दी हुई हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने आपको धन्यवाद् दिया। मैं आपका आभारी हूँ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लोरमी विधान सभा क्षेत्र की कोई उपेक्षा नहीं है और माननीय धर्मजीत भईया इस सदन के सम्मानीय सदस्य है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए। आप दोनों के संबंध अच्छे है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप यह बोल तो दीजिए कि एक मिडिल स्कूल खोलेंगे? वहां आप एक मिडिल स्कूल तो खोल दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- आप उन्हें बोल दीजिए। वह खोल देंगे। मैं कह रहा हूँ वह एक मिडिल स्कूल खोल देंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ठीक है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय शिक्षा मंत्री जी, मैंने कहा था कि याचिका समिति के उसमें चर्चा करवा दीजिए। मैं एक स्कूल के लिए 5 सालों से याचिका लगाता हूँ, उसमें कुछ नहीं हुआ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, याचिका समिति में आपने जो याचिका दी है।

प्रश्न संख्या :- 07 XX XX

भानुप्रतापपुर वि.स. क्षेत्र में महिला एवं बाल विकास विभाग में महिला पर्यवेक्षक के स्वीकृत/रिक्त पद

[महिला एवं बाल विकास]

8. (*क्र. 447) श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी : क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** भानुप्रतापपुर विधान सभा के विकासखंड चारामा, भानुप्रतापपुर एवं दुर्गुकोंदल में महिला पर्यवेक्षक के कितने पद स्वीकृत एवं रिक्त हैं ? **(ख)** रिक्त पद कब तक भरे जावेंगे ?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती अनिला भेंडिया) : (क) भानुप्रतापपुर विधानसभा के विकासखंड चारामा, भानुप्रतापपुर एवं दुर्गुकोंदल में महिला पर्यवेक्षक के स्वीकृत एवं रिक्त पदों की जानकारी **प्रपत्र अनुसार संलग्न**[7] **है। (ख)** रिक्त पदों की पूर्ति के लिए छ.ग. व्यावसायिक परीक्षा मण्डल, रायपुर (छ.ग.) के द्वारा दिनांक 05.07.2023 को विज्ञापन जारी किया जा चुका है। रिक्त पदां की पूर्ति हेतु समय-सीमा बताया जाना संभव नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- नयी सदस्य हैं उनका पहला प्रश्न है। माननीय वोरा जी आप बैठ जाएं।

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री महोदय का जो उत्तर आया है मैं उससे हूँ। मैं केवल यह जानना चाहती हूँ कि जो रिक्त पद हैं वह कब तक भरे जा सकेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- मैं आपको इतना संरक्षण दे रहा हूँ आप इतने में भी संतुष्ट हो गए।

श्रीमती अनिला भेड़िया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भानुप्रतापपुर विधान सभा के विकासखंड चारामा, भानुप्रतापपुर एवं दुर्गुकोंदल में महिला पर्यवेक्षक के रिक्त पदों का विज्ञापन व्यापम के द्वारा निकाला गया है। यह अतिशीघ्र प्रक्रिया में है उसमें भर्ती हो जाएगी।

अध्यक्ष महोदय :- आप संतुष्ट हैं ?

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

---

[7] परिशिष्ट - "पांच"

तृतीय श्रेणी कार्यपालक अधिकारी व उच्च अधिकारी के स्वीकृत, भरे व रिक्त पद

[महिला एवं बाल विकास]

9. (*क्र. 361) डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी : क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** जनवरी, 2020 से जून, 2023 तक महिला एवं बाल विकास विभाग में तृतीय श्रेणी कार्यपालक अधिकारी व उच्च अधिकारी के स्वीकृत, भरे व रिक्त पद कितने हैं, रिक्त पदों की पूर्ति कब तक की जावेगी? **(ख)** कंडिका 'क' अनुसार पदस्थ अधिकारियों में किसके विरूद्व विभागीय या अन्य विभाग द्वारा जांच की जा रही है, उसके क्या कारण है ? जांच एजेंसी व अधिकारी की जानकारी देवें।

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती अनिला भेंडिया) : (क) प्रश्नांक 'क' की जानकारी **संलग्न**[8] **प्रपत्र अ** अनुसार है। **(ख)** प्रश्नांक 'ख' की जानकारी **संलग्न प्रपत्र-ब** अनुसार है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री महोदया से यह जानना चाहता हूँ कि महिला एवं बाल विकास विभाग में लगभग 522 पद रिक्त हैं। यह पद कैसे भरे जाएंगे ? यह कब तक भरे जाएंगे ? क्योंकि यह सरकार चला चली की बेला में है। आप इन 522 पदों को कब तक भर लेंगे ? या आप पदोन्नति से भरेंगे ? या नियमित भर्ती करेंगे ? क्योंकि नियमित भर्ती तो हो नहीं पाएगी ? यह बता दीजिए।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 522 के विरूद्ध में जो पर्यवेक्षक के 116 पद तथा 05 नवीन जिलों के पद स्वीकृत हुए हैं जिसके कारण यह नये जिलों के कारण 522 पद रिक्त हैं। रिक्त पद के लिए पिछले उस में बताई हूं कि पर्यवेक्षकों की भर्ती का विज्ञापन जारी हो गया है और प्रक्रिया में है। जितनी जल्दी हो जाये, उतनी जल्दी भर्ती हो जायेगी।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चली-चला के बेरा में प्रकिया में डाल दिये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, धरमलाल कौशिक जी।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- काहे कि चला-चली की बेला कह रहे हैं। हम 71 हैं, 75 की सरकार बनायेंगे, कोई चला-चली की बेला नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय टी.एस.बाबा साहब उप मुख्यमंत्री बनने के बाद इस सत्र में पहली बार जैकेट पहन-पहनकर आ रहे हैं। सदन यह जानना चाहता है कि माननीय टी.एस.बाबा साहब से उप मुख्यमंत्री बनने के बाद कितने सारे जैकेट सिलवायें हैं?

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न क्रमांक-10 श्री धरमलाल कौशिक जी।

---

[8] परिशिष्ट -"छः"

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री महोदय से एक प्रश्न और जानना चाहता हूं।

(माननीय उप मुख्यमंत्री श्री टी.एस.सिंहदेव जी के बाहर जाते हुए देखने पर)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, आप कहां जा रहे हैं? सब आपके जैकेट को देखना चाहते हैं, आप थोड़ी देर बैठिये। जैकेट को देख लेने दीजिये, फिर चले जाईयेगा।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय मंत्री जी, कितने अधिकारियों पर जांच चल रही है? आपने बताया कि 34 अधिकारियों पर विभागीय जांच चल रही है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय हो गया न। प्रश्न क्रमांक-10।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरा प्रश्न है, कृपया आप मुझे बोलने दीजिए। मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया न।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस पर आर्थिक अनियमिताएं हैं, माननीय मंत्री महोदय आप यह बता दीजिए कि आपके विभाग के कितने अधिकारियों के ऊपर आर्थिक अनियमितायें की जांच चल रही है और उस पर आपने क्या कार्रवाई की ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 34 अधिकारियों के ऊपर विभागीय जांच चल रही है और जांच के बाद जो भी रिपोर्ट आयेगी, उसके ऊपर कार्रवाई की जायेगी।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय मंत्री जी, मैं यही तो पूछना चाहता हूं कि जिन-जिन अधिकारियों ने जांच किया है, कितने अधिकारियों ने आपको जांच प्रतिवेदन प्रस्तुत किया ?

अध्यक्ष महोदय :- उनको जांच प्रतिवेदन क्यों प्रस्तुत करेंगे ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- प्रतिवेदन अभी अप्राप्त है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- जो जांच अधिकारी नियुक्त किया गया था, 34 में से कितने की जांच की और जांच प्रतिवेदन प्रस्तुत किया ?

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री को जांच प्रतिवेदन थोड़ी प्रस्तुत करेंगे।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अभी जांच प्रतिवेदन अप्राप्त है। जांच प्रक्रिया चल रही है, अभी सभी का जांच प्रतिवेदन अप्राप्त है।

अध्यक्ष महोदय :- धरमलाल कौशिक जी।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जितनी आर्थिक अनियमिततायें हुई हैं, उसके जांच प्रतिवेदन अभी अप्राप्त हैं तो जांच प्रतिवेदन कब तक प्राप्त हो जायेंगे ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अतिशीघ्र।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- अतिशीघ्र।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

<u>जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. शाखा, तोरवा में किसानों के खाते में जमा राशि के गबन की जाँच</u>

[सहकारिता]

10. (*क्र. 209) श्री धरम लाल कौशिक : क्या पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** क्या जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित शाखा तोरवा में किसानों के खाते में जमा धन राशि का बैंक कर्मचारी/अधिकारी द्वारा छलपूर्वक गबन व आहरण कर लेने की शिकायत बैंक प्रबंधन, शासन एवं प्रशासन से किस-किस के द्वारा की गई है एवं शिकायतों पर क्या कार्यवाही की गई है? क्या शिकायत के आधार पर जांच हेतु कोई समिति बनाई गई है ? यदि हॉ, तो जांच समिति के क्या निष्करष है एवं क्या-क्या कार्यवाही की गई है? **(ख)** कंडिका 'क' अनुसार किन-किन किसानों के खाते से कितनी राशि का, किन बैंक कर्मचारियों/अधिकारियों के द्वारा किस उच्च अधिकारी के संरक्षण में धनराशि का गबन किया गया है एवं जांच उपरांत किन-किन किसानों की राशि वापस खाते में जमा की जा चुकी है? किसानवार जानकारी देवें ? **(ग)** कंडिका 'ख' अनुसार किसानों के खाते में गबन राशि को यदि वापस नहीं किया गया है तो क्यों व कब तक वापस जमा किया जावेगा?

पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) : (क) जी हाँ, श्री धीरेन्द्र दुबे, भारतीय किसान संघ, श्री मणिशंकर कौशिक, पीड़ित किसान समिति एवं कृषक खातेदारों के द्वारा शिकायत की गई है। प्रकरण के संबंध में बैंक द्वारा 03 सदस्यीय जाँचदल का गठन किया गया है। जाँच समिति से प्राप्त अंतरिम प्रतिवेदन में शिकायत प्रमाणित पायी गयी है। अंतरिम जाँच प्रतिवेदन के निष्कर्ष के आधार पर दोषी कर्मचारी श्रीमती खुशबू शर्मा, लिपिक सह कम्प्यूटर ऑपरेटर को निलंबित किया जाकर, सिटी कोतवाली, थाना-बिलासपुर में प्राथमिक सूचना रिपोर्ट दिनांक 09.12.2022 दर्ज करायी गई है तथा 07 अन्य कर्मचारियों को बैंक प्रबंधन द्वारा आरोप पत्र जारी किया गया है। प्रकरण में विशेष अंकेक्षण हेतु सनदी लेखाकार नियुक्त किया गया है तथा फोरेन्सिक ऑडिट भी करायी जा रही है। **(ख)** किसानवार खातों में गबन की राशि एवं दोषी अधिकारी/कर्मचारी की जानकारी शिकायत की जाँच, विशेष अंकेक्षण एवं फोरेन्सिक ऑडिट पूर्ण होने पर ही ज्ञात हो सकेगी। अब तक फोरेन्सिक एक्सपर्ट से प्राप्त रिपोर्ट पश्चात् किसानवार राशि वापसी की जानकारी संलग्न संशोधित प्रपत्र अनुसार प्रेषित है।

क्रमांक	किसान का नाम	वापस की गई राशि
01.	शांति बाई निषाद/तिजराम	1,87,000
02.	घनश्याम साहू/समेलाल साहू	1,92,000
03.	ईश्वर प्रसार साहू/फागूराम	1,10,000
04.	ओम प्रकाश गुप्ता/द्वारिका प्रसाद	1,04,000
05.	भगत राम दर्वे/रामभरोस	1,01,000

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

06.	मनराखन एवं शैलेंद/गौरशंकर	48,000
	कुल योग	7,42,000

(ग) प्रकरण में विशेष अंकेक्षण तथा फोरेन्सिक ऑडिट की रिपोर्ट पूर्ण होने के पश्चात् नियमानुसार किसानों के खाते में गबन की राशि वापस करने के संबंध में निर्णय बैंक द्वारा लिया जावेगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी को बताना चाह रहा हूं बिलासपुर कोऑपरेटिव बैंक में अभी बहुत सारे लोग मनोनीत किये गये हैं, अध्यक्ष भी बनाये हैं और उसके बाद में बिलासपुर कोऑपरेटिव बैंक में घोटाला शुरू हो गया। किसानों का बैंक है और किसान बड़े विश्वास के साथ में वहां पैसा जमा करते हैं जमा करने के बाद में वहां के अधिकारियों के द्वारा उस पैसे को निकाल करके खा जा रहे हैं। यह प्रमाणित है और प्रमाणित होने के बाद में इसमें खूशबू शर्मा, लिपिक के खिलाफ में रिपोर्ट हुई। वह जेल गई और जेल जाने के बाद में वह वापस आ गई। लेकिन किसानों का पैसा नहीं मिला। अभी जब प्रश्न लगाया है तो 6 किसानों के पैसे वापस हुए हैं और इसमें 7,42,000 रुपये वापस हुए हैं। हर्दी, महमन, सिलपहरी, धूमा, कोरमी, बसिया ऐसे बहुत सारे 5-6 गांव के किसान हैं, 100 से ऊपर किसानों की संख्या हैं। एक साल हो गया, मैंने कलेक्टर साहब से बात की, वहां बैंक में जो अध्यक्ष बनाये हैं, मैने उनसे बात की, सी.ई.ओ. से बात की। लेकिन अभी तक किसान बैंक का चक्कर लगा रहे हैं, उनका पैसा जो गबन हो गया है, उनको पैसा वापस नहीं मिल पा रहा है। मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाह रहा हूं यह पैसे उनको कब वापस करा देंगे ? बैंक के ऊपर में विश्वास खत्म हो जायेगा। पिछले बार दुर्ग का हुआ था, आपकी जानकारी में है। यदि बैंक के अधिकारी ही पैसा निकाल कर खा जायें तो किसके ऊपर विश्वास करेंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह महत्वपूर्ण प्रश्न है, उनके पैसे वापिस कब तक करायेंगे ? आपने एक के खिलाफ में कार्रवाई की है, लेकिन मुझे नहीं लगता है कि एक ही व्यक्ति के द्वारा संभव हो कि पूरे 6-7 गावों के 100 किसानों का पैसा निकाल करके गबन कर जाये। इसमें आप बताने का कष्ट करें कि उनके पैसे की वापसी सुनिश्चित करें।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, माननीय धरम भैया ने जो प्रश्न किया कि नई नामजदगी हुई है, नया पदाधिकारी बने हैं, उसके बाद से करप्शन है। ऐसा नहीं है। यह प्रकरण वर्ष 2015 से है। हम तो वर्ष 2018 में सरकार बनाये हैं । आप यह पहली बात समझ लीजिये, नंबर वन। नंबर दूसरा, यह 109 किसानों का प्रकरण है। एक खुशबू शर्मा के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज हुआ, वह जेल गई। 7 अन्य लोगों के खिलाफ भी आरोप पत्र जारी हुए हैं। आपने कहा 9 किसानों का पैसा आ गया।

श्री धरमलाल कौशिक :- वे जेल से तो वापस आ गई, मैंने किसानों का पैसा का पूछा है, वह सुनिश्चित करें।

श्री रविन्द्र चौबे :- ठीक है। वह माननीय न्यायालय का मामला है। वह जमानत में क्यों आई, कैसे आई, वह न्यायालय बतायेंगे, लेकिन उसकी जमानत हुई है। 7 अन्य कर्मचारियों के खिलाफ भी

कार्रवाई चल रही है और शेष किसानों का जो पैसा है, चूंकि अभी फारेंसिक जांच है ,उसके बाद ऑडिट होगा, उसके बाद राशि बैंक से जारी होगी, उसमें तीन-चार महीने का वक्त लग सकता है। लेकिन हम लोग प्रयास में लगे हुए हैं। अभी 9 किसानों का पैसा वापिस हुआ है और बाकी किसानों का भी पैसा वापिस कराया जाएगा।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी बताने को तैयार नहीं है। आखिर उसकी फारेंसिक जांच चल रही है। जब आप सारी जांच करा सकते हैं। आप समय-सीमा तय करेंगे तो सारी रिपोर्ट आ जायेंगी। लेकिन यदि आप समय-सीमा तय नहीं करेंगे। वह लगभग साल भर से घूम रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल का समय-सीमा 12 बजे तक है। एक गरीब विधायक बैठे हैं। उसको भी प्रश्न पूछने दीजिये। (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, पूरे चार दिन में मेरा पहला प्रश्न है। प्रश्न रोज है, लेकिन मेरा नंबर ही नहीं आया। मेरा 10वां प्रश्न भी नहीं आया।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अब एकाध उनके लिए छोड़ दीजिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह किसानों का मामला है, यह मामला मेरा कोई व्यक्तिगत मामला नहीं है। यह किसानों के हित का मामला है, बैंक के हित का मामला है। सरकार के विश्वास का मामला है। वे लोग अपने आप को किसानों की सरकार कहते हैं। माननीय मंत्री जी आप यह सुनिश्चित करें कि दो महीने, तीन महीने ..।

श्री अजय चंद्राकर :- उनसे कृषि विभाग छीन लिया गया।

श्री धरमलाल कौशिक :- उनसे कृषि विभाग छीन लिया गया। अब आप गोबर से बच गए।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये न, जाने दीजिये। प्लीज।

श्री धरमलाल कौशिक :- मंत्री जी, कृपया आप यह सुनिश्चित करें कि किसानों की पैसे की वापसी कब तक हो जायेगी?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष जी, मामला गंभीर है। यह 109 किसानों का मामला है।

श्री अजय चंद्राकर :- इससे ज्यादा गंभीर मामला आपके कृषि विभाग से छीनना है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये न, प्लीज।

श्री रविन्द्र चौबे :- इन्वेस्टिगेशन चल रहा है। 420, 467, 468 जैसे प्रकरण हैं। वक्त तो लगेगा, लेकिन हम कृतसंकल्पित हैं कि किसानों का पैसा वापिस किया जायेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- मंत्री जी, मैं तो यह कह रहा हूं कि आप इस महीना पैसा मत दीजिये। फारेंसिक जांच में कितना समय लगेगा? आप जांच करायेंगे तो तुरंत हो जायेगा और यदि जांच नहीं करायेंगे तो नहीं होगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- आदेश हो गया है और जांच जारी है।

अध्यक्ष महोदय :- रामकुमार यादव जी। प्रश्न संख्या 11।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी तारीख बतायेंगे, महीना बतायेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज-प्लीज।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप महीना तो बता दीजिये। दो महीना, तीन महीना, मंत्री जी कुछ तो बतायेंगे।

कलमा बैराज के डुबान क्षेत्र के प्रभावित कृषकों को पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति प्रदाय

[जल संसाधन]

11. (*क्र. 484) श्री रामकुमार यादव : क्या पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) विधानसभा क्षेत्र चंद्रपुर के अंतर्गत कलमा बैराज के अंतर्गत कितने ग्राम प्रभावित हुए हैं, विवरण देंवे। (ख) विधानसभा बैठक दिनांक 15.3.2023 में प्रश्नकाल के दौरान मेरे ध्यानाकर्षण पर माननीय जल संसाधन मंत्री कलमा बैराज की डूबान क्षेत्र के किसानों को शीघ्र पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान करने की बात कही थी, ताकि मुआवजा राशि प्रदान की जा सके, परंतु प्रक्रिया लंबित है, क्यों? विवरण दें ? (ग) प्रश्नांक "ख" के अनुसार किसानों को शीघ्र पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति के पश्चात ब्याज देने की बात कही गई थी, परंतु आज पर्यन्त तक कार्यवाही लंबित है? क्यों? विवरण देवें। (घ) क्या किसानों को मुआवजा प्रदान करने हेतु प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की जाएगी? यदि हां तो कब तक?

पंचायत एवं गामीण विकास मंत्री(श्री रविन्द्र चौबे) : (क) विधानसभा क्षेत्र चन्द्रपुर के अंतर्गत कलमा बैराज के अंतर्गत 26 ग्राम प्रभावित है। जानकारी **संलग्न[9] प्रपत्र** अनुसार है। (ख) कलमा बैराज योजना की पुनः पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति दिनांक 19.06.2023 द्वारा जारी की जा चुकी है। मुआवजा भुगतान की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। (ग) प्रश्नांश की जानकारी कंडिका ''ख'' अनुसार है। (घ) प्रश्नांश की जानकारी कंडिका ''ख'' अनुसार है।

[9] परिशिष्ट "सात"

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री जी ला पूछे रहें कि कलमा बैराज ग्राम पंचायत में कतका ग्राम पंचायत प्रभावित हें अउ ओमन ला जो मुआवजा नइ मिले हे, ओहर कब तक मिल जाही? ओहर पुनरीक्षित हो हे तेखर खातिर मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हौं।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, यह बहुत बड़ा मामला है। यह किसानों का मामला है। माननीय मंत्री जी समय-सीमा तो सुनिश्चित करें। तीन महीना सुनिश्चित करें।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय कौशिक जी, मेरी बात सुनिए न। आप अध्यक्ष रह चुके हैं। एक गरीब विधायक हैं, उसको भी पूछने दीजिये। आप स्वयं अध्यक्ष रह चुके हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महादेय, मैं इसीलिए चाह रहा हूं कि मंत्री जी सुनिश्ति कर दें।

अध्यक्ष महोदय :- चह कर लेंगे। आपके उनसे अच्छे संबंध है। वह सब कर लेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय चौबे जी, हम बाकी से उम्मीद करें या न करें, लेकिन हम आपसे तो उम्मीद करते ही हैं । मैं समझता हूं कि आप उसको सुनिश्चित कर दीजिये। तीन महीना भी करें तो भी कोई दिक्कत नहीं है। एक बार उसको सुनिश्चित कर दीजिये।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर ले ज्यादा तो मोर प्रश्न हा गंभीर हे। भइगे बइठा तो। तुंहरे ला मैं पूछत हावव।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, हम उम्मीद करते हैं। हमने निर्देश दिया हुआ है कि तीन महीने के अंदर जांच पूरा करें।

श्री धरमलाल कौशिक :- ठीक है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय पंचायत मंत्री जी, कलमा बैराज में अइ मन ओ समय पानी देहे बर कंपनी ला बैराज ला बनाय रिहीस हे। ओकर किसान मन ला मुआवजा नइ मिले हे। आप पुनरीक्षित आदेश करे हौ। कब तक मुआवजा मिल जाही, ओइ ला बस बता देवं। मोर प्रश्न भी थोड़ा जल्दी हे। ये हर जम्मो समय ला सोझेच घाल दिस।

श्री रविन्द्र चौबे :- रामकुमार भैया, आपको जल्दी क्यों है? आपको दोबारा भी यहां चुनकर आना है। इस प्रकार से प्रयास करते रहना है।

श्री रामकुमार यादव :- मंत्री जी, मुआवजा ला जल्दी दिला देवा। मंत्री जी, ओला घोषण कर देवा। तुंहर पाव परत हौं।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, हमारी तो शुभकामनाएं हैं। ये जो 71 सदस्य चुनकर आए हैं वह पूरा चुनकर आए और ये जो 13 सदस्य चुनकर आए हैं, उसमें 1-2 कम हो जाएगा तो चलेगा। (हंसी) तो आप इसमें गंभीर रहिये। इसमें मिलेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, ऐसा है कि 1984 में (व्यवधान) थी, उसके बाद बहुमत नहीं आया। उसी स्थिति को आप लोग प्राप्त करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- यादव जी, आप संतुष्ट हैं? प्लीज। शर्मा जी, उनका समय खराब मत करिये।

श्री रामकुमार यादव :- मंत्री जी, आज सत्र के अंतिम दिन हे। आप घोषण कर देवा कि सबला एक महीना के अंदर मिल जाही। हमन सब ताली बजाबो।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, लगभग कार्रवाई पूर्ण है। 137 किसानों का अभी लगभग 7.82 करोड़ रूपये का भुगतान शेष है। हम लोग कोशिश करेंगे कि उन सब को इस माह में भुगतान हो जाये।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- चंदन कश्यप जी, जल्दी पूछिये।

<u>नारायणपुर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत आश्रम/छात्रावासों में सोलर लाईट सिस्टम की स्थापना</u>

[आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास]

12. (*क्र. 520) श्री चंदन कश्यप : क्या आदिम जाति विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि:- (क) जनवरी, 2019 से जून, 2023 तक नारायणपुर विधानसभा क्षेत्रान्ततर्गत कितने आश्रम/छात्रावासों में सौर उर्जा से विद्युत व्यवस्था हेतु सोलर लाईट सिस्टम लगाया गया है ? विकासखण्डजवार स्वीकृत वर्ष एवं कार्य में व्यय हुई राशि की जानकारी देवें? (ख) प्रश्नां श "क" अंतर्गत कितने आश्रम/छात्रावासों में सोलर लाईट सिस्टम पूर्ण रूप से क्रियाशील हैं तथा कितनी संस्थाओं में अक्रियाशील/बंद पड़े हैं? जिलेवार आश्रम/छात्रावासों के नाम सहित सूची उपलब्ध करावें? (ग) प्रश्नांश "ख" अनुसार अक्रियाशील/बंद पड़े सोलर सिस्टम को प्रारंभ/क्रियाशील बनाये जाने हेतु क्या कार्यवाही की गई है तथा कितनी राशि, किस-किस मद से व्यय की गई है ?

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री मोहन मरकाम) : (क) से (ग) जानकारी संकलित की जा रही है।

श्री चंदन कश्यप :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने जो प्रश्न किया था, उसके संबंध में मुझे गलत जानकारी मिली है।

अध्यक्ष महोदय :- हाँ, बोलिये।

श्री चंदन कश्यप :- मैं माननीय मंत्री महोदय जी से जानना चाहता हूं कि नारायणपुर में वर्ष 2021-22 में स्वीकृत कार्य की कुल लागत कितनी है तथा कार्य को पूर्ण करने की समय-सीमा क्या है?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय मंत्री जी, जल्दी उत्तर बता दीजिये।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो 139 काम स्वीकृत हुए हैं, उसमें 4 करोड़ 99 लाख 95 हजार की राशि स्वीकृत की गई है।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल समाप्त । आप उनको कक्ष में बुलाईये, उनको जानकारी दीजिये।

(प्रश्नकाल समाप्त)

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :

12.00 बजे **पत्रों का पटल पर रखा जाना**

(1) दिनांक 31 मार्च, 2022 को समाप्त वर्ष के लिये भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का राज्य वित्त पर लेखा परीक्षा प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, वर्ष 2023 का प्रतिवेदन संख्या-1

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भारत के संविधान के अनुच्छेद 151 के खण्ड (2) की अपेक्षानुसार दिनांक 31 मार्च, 2022 को समाप्त वर्ष के लिये भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का राज्य वित्त पर लेखा परीक्षा प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, वर्ष 2023 का प्रतिवेदन संख्या-1 पटल पर रखता हूं ।

(2) दिनांक 31 मार्च, 2021 को समाप्त वर्ष के लिये भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का अनुपालन लेखापरीक्षा पर प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, वर्ष 2023 का प्रतिवेदन संख्या-02

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भारत के संविधान के अनुच्छेद 151 के खण्ड (2) की अपेक्षानुसार दिनांक 31 मार्च, 2021 को समाप्त वर्ष के लिये भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का अनुपालन लेखापरीक्षा पर प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, वर्ष 2023 का प्रतिवेदन संख्या-02 पटल पर रखता हूं ।

(3) भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का अवैध खनन गतिविधियों पर बल देते हुए गौण खनिजों के खनन पर निष्पादन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, वर्ष 2023 का प्रतिवेदन क्रमांक-3

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भारत के संविधान के अनुच्छेद 151 के खण्ड (2) की अपेक्षानुसार भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का अवैध खनन गतिविधियों पर बल देते हुए गौण खनिजों के खनन पर निष्पादन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ शासन, वर्ष 2023 का प्रतिवेदन क्रमांक-3 पटल पर रखता हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

(4) छत्तीसगढ़ पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड का 10वां वार्षिक लेखा प्रतिवेदन वर्ष 2020-2021

गृहमंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कंपनी अधिनियम, 2013 (क्रमांक 18 सन् 2013) की धारा 395 की उपधारा (1) के पद (बी) की अपेक्षानुसार छत्तीसगढ़ पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड का 10वां वार्षिक लेखा प्रतिवेदन वर्ष 2020-2021 पटल पर रखता हूं ।

(5) छत्तीसगढ़ राज्य अल्पसंख्यक आयोग का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2022-2023

पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास मंत्री (श्री मोहन मरकाम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ राज्य अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, 1996 (क्रमांक 15 सन् 1996) की धारा 13 की अपेक्षानुसार छत्तीसगढ़ राज्य अल्पसंख्यक आयोग का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2022-2023 पटल पर रखता हूं ।

समय :

12.02 बजे **ध्यानाकर्षण सूचना**

अध्यक्ष महोदय :- आज की कार्यसूची में 32 ध्यानाकर्षण सूचनाओं को अध्यक्ष के स्थायी आदेश क्रमांक- 22 (6) के तहत् शामिल किया गया है । सूचनाओं के संबंध में प्रक्रिया यह होगी कि वे सूचनायें संबंधित सदस्यों द्वारा पढ़ी हुई मानी जावेगी तथा उनके संबंध में लिखित वक्तव्य संबंधित मंत्री द्वारा पटल पर रखा माना जावेगा । लिखित वक्तव्य की एक-एक प्रति सूचना देने वाले सदस्यों को दी जावेगी संबंधित सदस्यों की सूचनाएं तथा उन पर संबंधित मंत्री का वक्तव्य कार्यवाही में मुद्रित किया जावेगा ।

मैं समझता हूं सदन इससे सहमत है ।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

समय :

12.02 बजे **नियम 267- "क" के अधीन शून्यकाल सूचनाएं**

अध्यक्ष महोदय :- निम्नलिखित सदस्य की शून्कयल की सूचना सदन में पढ़ी हुई मानी जायेगी तथा इसे उत्तर के लिये संबंधित विभाग को भेजा जायेगा :-

1. श्री अजय चंद्राकर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :

12.03 बजे **नियम-239 के अंतर्गत विचाराधीन सूचनाएं**

अध्यक्ष महोदय :-

1. माननीय सदस्य, श्री अजय चंद्राकर एवं श्री बृजमोहन अग्रवाल द्वारा माननीय श्री अमरजीत भगत, खाद्य मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन एवं माननीय श्री रविन्द्र चौबे, कृषि मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 19/2020 दिनांक 19.08.2020 ।
2. माननीय सदस्य, सर्वश्री अजय चंद्राकर, शिवरतन शर्मा एवं सौरभ सिंह द्वारा माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 33/2022 दिनांक 21.07.2022 ।
3. माननीय सदस्य, सर्वश्री अजय चंद्राकर, शिवरतन शर्मा एवं सौरभ सिंह द्वारा माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 34/2022 दिनांक 21.07.2022 ।
4. माननीय सदस्य, सर्वश्री अजय चंद्राकर, शिवरतन शर्मा एवं सौरभ सिंह द्वारा माननीय विधि मंत्री मो. अकबर के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 35/2022 दिनांक 21.07.2022 ।
5. माननीय सदस्य, श्री अजय चंद्राकर द्वारा माननीय सदस्य, श्री मोहन मरकाम के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 36/2022 दिनांक 10.11.2022 ।
6. माननीय सदस्य, सर्वश्री अजय चंद्राकर, बृजमोहन अग्रवाल, शिवरतन शर्मा एवं सौरभ सिंह द्वारा माननीय मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव एवं सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग, छत्तीसगढ़ शासन के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 37/2023 दिनांक 13.03.2023 ।
7. माननीय सदस्य श्री मोहन मरकाम द्वारा न्यूज पोर्टल पब्लिक स्वर के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 38/2023 दिनांक 13.07.2023

मेरे समक्ष विचाराधीन है ।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभिभाषण वाले विषय को छोड़कर, जिसमें हमने माननीय मुख्यमंत्री, सी.एस. और संसदीय कार्य मंत्री के विरूद्ध विशेषाधिकार भंग की सूचना दी थी, इन 5 सालों में एक भी विशेषाधिकार में न तो चर्चा हुई और न ही कोई विशेषाधिकार समिति भंग हुई, अब आपसे विनम्र आग्रह है कि आखिरी सत्र है, मैं सारे विशेषाधिकार को लगाने वाला हूं, तो आप निरस्त की दीजिए। मेरा आग्रह है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, धन्यवाद।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- क्योंकि अब लंबित रखेंगे, उसका क्या मतलब होगा? उसे व्यपगत कर दीजिए, घोषित कर दीजिए कि व्यपगत करता हूं। आपसे फिर से आग्रह है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है न। मैंने सुन लिया।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक आग्रह और है। आप शुरू करवाइए, लेकिन उससे पहले मेरा एक छोटा सा आग्रह है। आप आसंदी से व्यवस्था देते हैं। यदि सरकार के द्वारा उसका पालन नहीं होता है तो उस संबंध में आप क्या कहना चाहेंगे? इसमें अगर कोई व्यवस्था देना चाहेंगे तो मैं फिर उदाहरण दूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- मैं व्यवस्था देख लेता हूं कि क्या दे सकता हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं-नहीं, उसमें आपके समय में आपके निर्देशों का पालन सरकार के द्वारा नहीं किया गया, क्योंकि आज आखिरी दिन है, इसलिए यदि आप बताएंगे तो फिर मैं उदाहरण दूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- सत्र का आखिरी दिन है। मेरा आखिरी दिन नहीं है। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- तो हम लोग उस विषय को नहीं जानेंगे..।

अध्यक्ष महोदय :- तो जानेंगे न।

श्री अजय चन्द्राकर :- हम लोग उस विषय को नहीं जानेंगे कि आपका मान हुआ या आपका अपमान हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा का अध्यक्ष तो रहूंगा भाई। चुनाव आते तक रहूंगा, आप परेशान मत होइए।

श्री अजय चन्द्राकर :- सत्र नहीं होगा।

अध्यक्ष महोदय :- सत्र नहीं होगा तो जानकारी दे दी जायेगी।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभा को आपके प्रति सरकार के व्यवहार के बारे में जानना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्योंकि इससे परंपरा सुदृढ़ होगी।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है न प्लीज।

श्री अजय चन्द्राकर :- और मैं कई उदाहरण दे सकता हूं कि आपने निर्देश को शासन ने नहीं माना।

अध्यक्ष महोदय :- आज का आपका एक-एक पल कीमती है।

श्री अजय चन्द्राकर :- कीमती नहीं है, आपका सम्मान भी हमारे लिए कीमती है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप इतनी चिंता क्यों कर रहे हैं?

अध्यक्ष महोदय :- अविश्वास प्रस्ताव पर..।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी..।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष जी, जो अजय जी बोल हैं, आपके कुछ स्थायी आदेश हैं। उस स्थायी आदेश में आपने समय-समय पर चेयर पर बैठकर निर्देश दिया है और उन आदेशों का पालन शासन के द्वारा नहीं किया गया तो आपकी तरफ से चूंकि आज संभवत: यह अंतिम सत्र होगा और इसके बाद कोई सत्र नहीं होगा, इसलिए इसे आप..।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज।

श्री अजय चन्द्राकर :- प्लीज, परसों एक व्यवस्था आयी थी कि माननीय मुख्यमंत्री जी के अधूरे प्रश्नों को आज तक रखा जायेगा। हम लोग प्रश्न के खाने में चले गये, अभी तक नहीं रखा गया है। मैं ऐसे और भी उदाहरण दे दूंगा कि ब्यूरोकेसी चढ़ी हुई है या सरकार चढ़ी हुई है।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज-प्लीज।

श्री अजय चन्द्राकर :- कि आपके अथवा आसंदी के निर्देशों का पालन नहीं हुआ है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं दूसरी बात कर रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप दूसरी बात कर रहे हैं तो इस बात का तो पहल कर दीजिए।

समय :
12.07 बजे

मंत्रिमंडल के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव

"यह सदन मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल एवं उनके मंत्रिमंडल के विरूद्ध अविश्वास व्यक्त करता है।"

अध्यक्ष महोदय :- अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा शुरू होने के पूर्व नेता प्रतिपक्ष द्वारा आरोप-पत्र सदन के पटल पर रखा जाता है। चर्चा के पूर्व माननीय नेता प्रतिपक्ष महोदय, आप पटल पर रखेंगे या नहीं रखेंगे? उस हिसाब से बात हो।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सदन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी एवं उनके मंत्रिमंडल के विरूद्ध अविश्वास व्यक्त करता है। माननीय अध्यक्ष जी, मैं अविश्वास प्रस्ताव से संबंधित आरोप-पत्र, सभा के पटल पर रखता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष एवं उनके अन्य सदस्यों की ओर से दिनांक 20 जुलाई, 2023 को डॉ. शिवकुमार डहरिया, नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री के विरूद्ध आरोप लगाने की अनुमति की सूचना दस्तावेजों के साथ प्राप्त हुई है। परीक्षणोपरांत मैं उसे प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं देता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी..।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- मेरी बात सुन लीजिए न।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप मुझे जरा ऐसा नियम बता दें। यह कभी नहीं होता है कि आप अनुमति न दें। अगर हम कोई आरोप आपको सौंपते हैं, उसका यह नियम है कि हमें आपको जानकारी देनी चाहिए। संबंधित सदस्य को आपको भेजनी चाहिए। आज तक कभी भी इतिहास में आरोप को प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं देता हूं, यह कभी नहीं हुआ है। अविश्वास प्रस्तावों में यह है कि जिसके विरूद्ध आप आरोप लगाना चाहते हैं, उसे पहले आपको प्रस्तुत करना होगा, उसको सूचना देनी होगी।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। मैं दे दूंगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अगर कभी ऐसा हुआ हो तो आप मुझे बता दें।

अध्यक्ष महोदय :- बता देंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- क्योंकि नहीं परंपराओं की शुरूआत नहीं होनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- जी-जी, बिल्कुल। अब मंत्रिमंडल के विरूद्ध प्रस्तुत..।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज किसी भी व्यवस्था के प्रश्न पर आसंदी की ओर से व्यवस्था नहीं आई । जैसा कि बृजमोहन जी से प्रश्न उठाया, उस पर मैं भी बोल सकता था ।

अध्यक्ष महोदय :- मेरी बात तो सुन लो । अविश्वास प्रस्ताव ज्यादा महत्वपूर्ण है । मैं उसकी भी जानकारी दे देता हूं । अब मंत्रिमंडल के विरूद्ध प्रस्तुत अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा प्रारंभ होगी । चर्चा प्रारंभ होने से पहले मैं आप सभी से विनम्रतापूर्वक यह निवेदन करना चाहता हूं कि स्वस्थ लोकतंत्र का यह ऐसा विशिष्ट उदाहरण है कि अविश्वास प्रस्ताव द्वारा सरकार की कमियों एवं चूकों के संबंध में लोकतंत्र के इस पवित्र मंदिर के माध्यम से अपनी बात रखने का अवसर प्रतिपक्ष को मिलता है । संसदीय प्रक्रिया की यह अच्छी और सराहनीय परम्परा है । मेरा आप सभी से सादर अनुरोध है कि अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा में जब आप आपने भाषण में अपने विचार रखेंगे तो व्यक्तिगत एवं अनावश्यक आरोपों से बचें एवं स्वस्थ संसदीय परम्परा के अनुरूप शालीन एवं संसदीय भाषा में अपना पक्ष रखें । आपके द्वारा आरोपों की पुनरावृत्ति न हो इसका भी ध्यान रखें । सदन की गरिमा का ध्यान रखते हुए अपनी बात कहते समय शिष्टता, शालीनता, गरिमा अनुरूप तथा संसदीय शब्दावलियों का उपयोग करें। मैं दोनों पक्षों से यह अनुरोध करता हूं कि पंचम विधान सभा का यह अंतिम सत्र है, अंतिम दिवस है, जिसे हम बिदाई सत्र मान सकते हैं । हम इस सत्र का समापन एक दूसरे के प्रति सौहार्दपूर्ण सदाशयतापूर्ण व्यवहार एवं सम्मान के भाव के साथ करें तो संसदीय लोकतंत्र के साथ-साथ छत्तीसगढ़ विधान सभा के लिए यह एक उत्तम उदाहरण होगा । इस पंचम विधान सभा का यह अंतिम सत्र, पक्ष एवं विपक्ष के बीच आपसी सद्भाव एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण के साथ सम्पन्न हो, ऐसी मेरी निजी मान्यता एवं विश्वास है । मैं मानता हूं कि आप सभी मेरी इच्छा अनुरूप यहां व्यवहार करेंगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, आपकी अपील तो ठीक है । लेकिन आपकी उपस्थिति में इस विधान सभा में सारी उत्तम परम्पराएं नष्ट कर दी गई हैं। आप बोलने की अनुमति देंगे तो उसी से बहस की शुरूआात करेंगे ।

श्री बृहस्पत सिंह :- इसीलिए तो अध्यक्ष महोदय ने आपको बोलने का मौका दिया है । अब इससे क्या है, आप बोलो जितना बोलना है ।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, आप लोग शुरू मत करिये यार । माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी बहस की शुरूआत करेंगे । (मेजो की थपथपाहट)

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक ऐसी सरकार, भूपेश बघेल जी जिस सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं । नवजवान जब सड़क पर (xx) होकर घूमते हैं तो नवजवान (xx)[10] नहीं होते हैं, यह भूपेश बघेल जी की सरकार (xx) होती है । पूरे देश में छत्तीसगढ़ (xx) होता है । ऐसी (xx) सरकार के विरूद्ध हम अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाएं तो क्या लाएं ? इस सरकार को तो (xx) नहीं आती ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष जी, (xx) को (xx) ही दिखता है ।

श्री अरूण वोरा :- अध्यक्ष महोदय, इसमें सरकार का क्या दोष है ? इसमें सरकार क्या करेगी ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- और नंगी सरकार के विरूद्ध, माननीय अध्यक्ष जी, आपने स्वयं हमको कहा कि ऐसा विषय है, उस समय आप उठकर चले गए ।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है । 109 बिंदुओं पर इन्होंने आरोप पत्र दिया है । आप उससे शुरूआत करिये। सरकार के बारे में इस प्रकार के शब्द, यह आपकी गलत मानसिकता का परिचय देता है । ऐसे शब्दों का उपयोग सदन में नहीं होना चाहिए । सरकार कैसे (xx) हो सकती है । मणिपुर में क्या हुआ है । दिल्ली में पहलवानों के साथ क्या हुआ है । है आपके पास इसका उत्तर ।

श्री शिवरतन शर्मा :- कोंडागांव में क्या हुआ, आपकी सरकार में एक लड़की को (xx) करके घुमाया गया । क्या किया आपने ?

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मणिपुर में महिलाओं के साथ क्या हुआ और केन्द्र सरकार आंख बंद करके बैठी है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आराम से, आराम से ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मणिपुर में जो हुआ उस पर मोदी जी का बयान भी दुर्भाग्यपूर्ण है । मोदी जी ने अपने बयान में छत्तीसगढ़ को समेटा है ।

---

[10] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, इस तरह की बातों को विलोपित करना चाहिए ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा भी व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री अजय चंद्राकर :- अभी एक व्यवस्था के प्रश्न को तो निपटने दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा पहले उन्हीं को बोलने दीजिए, वे क्या व्यवस्था का प्रश्न कर रहे हैं।

श्री अरूण वोरा :- हां, मैं व्यवस्था का प्रश्न कर रहा हूं। अविश्वास प्रस्ताव पर आप सरकार की कामकाजों के बारे में बोल सकते हैं लेकिन आपने सरकार [XX][11] है कहा है, इससे हमको आघात पहुंचा है। सरकार जो काम कर रही है, आपने 15 सालों में कोई काम नहीं किया है।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने जो व्यवस्था का प्रश्न उठाया है, उसमें आप हमारी बात भी सुनिए ना।

अध्यक्ष महोदय :- सुनिए ना, अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है। आप उन पर अविश्वास बताईए, वे आप पर अविश्वास बताएंगे। इसमें मुझे कुछ नहीं कहना है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, आपने उनकी व्यवस्था के प्रश्न को सुना है तो हमारी भी व्यवस्था के प्रश्न को सुन लीजिए या यह व्यवस्था दे दीजिए कि व्यवस्था के प्रश्न में विपक्ष नहीं बोल सकता। यह व्यवस्था दे दीजिए।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- क्यों उत्तेजित हो रहे हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- अविश्वास प्रस्ताव में क्यों चर्चा हो रही है ?

श्री अजय चंद्राकर :- आपने व्यवस्था का प्रश्न उठाया था। अध्यक्ष महोदय, आपने उनकी व्यवस्था के प्रश्न को सुना। हम भी बोलना चाहते हैं, यदि आपको नहीं सुनना है तो बोल दीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपने उनकी व्यवस्था के प्रश्न को सुना है, हमारी भी सुन लीजिए ना।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने उनकी व्यवस्था को नहीं सुना, मैंने उनकी व्यवस्था के प्रश्न को इस दिमाग से नहीं सुना कि मुझे व्यवस्था देना है। आपका अविश्वास प्रस्ताव है, उसमें आप चर्चा करिए ना, क्या दिक्कत है।

श्री अजय चंद्राकर :- आप उसमें हमको नहीं सुनेंगे ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमारी बात भी सुनिए ना।

अध्यक्ष महोदय :- उसमें क्या व्यवस्था देनी है ?

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसे आप हिदायत दे रहे थे कि सौहार्द्र से रहना है, प्रेम से रहना है, हम बिल्कुल संयमित भाषा का उपयोग करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग शुरूआत ही गलत कर रहे हो।

---

[11] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी उपस्थिति में चापा में एक सामूहिक विवाह में गया था, वहां एक अतिथि बोल रहे थे कि विवाह तो करत हस लेकिन जिंदगी भर तुमन ला भाई बहनी कस रहना हे। वैसी ही आप हम लोगों को हिदायत दे रहे थे। (हंसी)

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- अध्यक्ष जी, [XX][12] विलोपन होना चाहिए। यह शब्द उचित नहीं है। आप बिल्कुल विलोपित कीजिए। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- यह सरकार [XX] है। आप किस-किस बात को विलोपित करेंगे।

संसदीय सचिव, महिला एवं बाल विकास विभाग से संबद्ध (डॉ. रश्मि आशिष सिंह) :- यह बोलना, आप लोगों का प्रायोजित था। यह प्रायोजित किया था, इससे साबित होता है।

श्री मोहम्मद अकबर :- पूरा विलोपित होगा। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने किसी को [XX] नहीं कहा।

श्री मोहम्मद अकबर :- सरकार के खिलाफ है, अविश्वास प्रस्ताव में बात करिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपके मंत्री के गाड़ी के सामने [XX] होकर घूम रहे हैं। छत्तीसगढ़ में [XX] हो रहा है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाईए।

श्री शैलेश पाण्डे :- आपने 15 साल कुछ नहीं किया है।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने सब बातें सुन ली है, मैं सब विलोपित करूंगा, आप परेशान मत होईए। पाण्डे जी, प्लीज बैठिए। जब मैं अपने स्थान पर खड़ा हूं तो आपको नहीं उठना चाहिए, ना बोलना चाहिए।

श्री शैलेश पाण्डे :- अध्यक्ष महोदय, क्षमा चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आप नये सदस्य हैं, बाकी सब लोग सुन लीजिए। मैंने कहा था कि आप लोग सौहार्द्रपूर्ण तरीके से चर्चा शुरू कीजिए और आप लोगों से निवेदन है, मैं उसको पुन: दोहरा रहा हूं। अविश्वास प्रस्ताव में आप आरोप लगायेंगे, उधर से जवाब आएगा, उसमें इतना विचलित होने का सवाल नहीं है। इसमें विचलन मुझे भी हो सकता है।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- अध्यक्ष महोदय, लेकिन इन लोग गलत-सलत बोलेंगे तो क्यों नहीं बोलेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- आप क्यों खड़े हो गए ? मंत्रियों को यह अधिकार नहीं है कि मैं खड़ा रहूं तो खड़े होकर बात करें।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करके खड़ा हुआ हूं।

---

[12] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- मैं सभी सदस्यों के लिए कह रहा हूं, जब अध्यक्ष खड़े रहते हैं तो कोई बात नहीं हो सकती, आप सबको बैठना पड़ेगा। आज अंतिम दिवस है, शांति से चर्चा करिए, सब सुन रहे हैं, हम भी सुन रहे हैं, उपर वाले भी सुन रहे हैं, नीचे वाले भी सुन रहे हैं। अंतिम दिवस को अच्छा बनाईए, अपने अच्छे मन, मस्तिष्क का उपयोग करिए। कोई गलत बात मत करिए, मेरा निवेदन है। बाकी जो विलोपित करने योग्य है, मैं विलोपित कर दूंगा।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- मीठा-मीठा बोल प्यारे, मीठा-मीठा बोल।

समय :
12.20 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम सुनते हैं। हम जानते भी हैं कि यदि कोई निर्वस्त्र होता है तो अपने बाथरूम में होता है या अपने बैडरूम में होता है। अब मैं इस सरकार को क्या बोलूं? सड़कों पर नवजवान निर्वस्त्र होकर घूम रहे हैं। वह किन परिस्थितियों में घूम रहे हैं?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- ऐसा लगता है कि यह सब आप लोगों ने ही करवाया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यदि हम लोगों ने यह करवाया है तो आप कार्रवाई कीजिए।

श्री अरूण वोरा :- यह भा.ज.पा. का षडयंत्र है। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- तूही मन तो जम्मो ला करे हो। ए तुहरे करम हरे। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं [XX]नहीं बोलना चाहता हूं। क्या पूरा इंटेलिजेंस [XX]हो गया? क्या सरकार को इसकी सूचना नहीं मिली है? वहां 100 से ज्यादा नवजवान थे और आपने 29 नवजवानों को गिरफ्तार किया है। वह मुख्यमंत्री जी की गाड़ी के सामने दौड रहे थे। मैं आपको वीडियो दिखा देता हूं। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप फालतू बात कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- यह तो बिल्कुल असत्य बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- पूरी पार्टी असत्य पार्टी है। यह असत्य बोल रहे हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग शांत रहिये। इनकी बात आने दीजिए। (व्यवधान)

श्री राजमन वेंजाम :- गलत शब्द बिल्कुल नहीं। (व्यवधान)

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरू रूद्र कुमार) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरी भी काली कारकेट है। वह लोग मेरी कारकेट के सामने आये थे, मुख्यमंत्री जी की कारकेट के सामने नहीं आये थे। आप ठीक से देखियेगा।

उपाध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह असत्य बोल रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय अग्रवाल जी। अभी सबको आधा-आधा घण्टा बोलना है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब कोई सरकार [XX] हो जाती है, [XX]हो जाती है, [XX] हो जाती है, लोकतंत्र की [XX] करती है, जब किसी नवजवान को लगता है कि मेरे पास कोई चारा नहीं है तो क्या यह कोई आसान काम है कि कोई नवजवान सार्वजनिक रूप से निर्वस्त्र हो जाए। ज़रा आप अपने ऊपर सोचिये। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मणिपुर में क्या हो रहा है? मणिपुर जल रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह [XX] [XX] सरकार, यह लोकतंत्र की [XX] आज से 95 साल पहले इस देश की नेशनल असेम्बली में आजम भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बम फेंका था और 95 साल बाद आजाद भारत में नवजवान को किसी सरकार के विरोध में [XX]होना पड़ रहा है। (शेम-शेम की आवाज) यह ऐसी [XX] सरकार है। ऊपर से यह सरकार बड़ी-बड़ी बातें करती हैं। (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह माफी मांगने वाली बात कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जिन बच्चों को गिरफ्तार किया गया है, उनके चरित्र के बारे में सारी चीजें आ गई हैं। जिस तरह से यह उनके चरित्र का प्रदर्शन कर रहे हैं और उनके पक्ष में बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- वह लोग अपराधी प्रवृत्ति के थे। उन लोगों ने कितने अपराध किये हैं। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- उन्होंने किन कारणों से प्रदर्शन किया? उस पर आप कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्रीमती संगीत सिन्हा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यही वह लोग हैं जो छत्तीसगढ़ में मणिपुर जैसी स्थिति पैदा करना चाहते हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- नेता जी, एक मिनट। नेता जी बोल रहे हैं। आप बोलिये।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी आसंदी से निर्देश हुआ है। अध्यक्ष जी ने निर्देश दिया है कि अविश्वास प्रस्ताव में हम अपनी बात को रखेंगे। यह हमारा अधिकार है। यह विपक्ष का अधिकार है। यह प्रजातांत्रिक, लोकतांत्रिक और संवैधानिक अधिकार है। जब हमारे वरिष्ठ सदस्य अविश्वास प्रस्ताव पर बोलने की शुरूआत कर रहे थे, उसके बाद मंत्रियों द्वारा इस प्रकार से टोक-टाकी करना उचित नहीं है। आप इनको निर्देशित कीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय :- ठीक है। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यही वह लोग हैं जो मणिपुर जैसी स्थिति यहां पैदा करेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाइये। अभी अग्रवाल जी बोलेंगे। आपकी बारी आएगी। अग्रवाल जी, आप बोलिये। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है।

उपाध्यक्ष महोदय :- जी, बोलिये।

श्री उमेश पटेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी दो दिन पहले जो भी घटना हुई है। मैं उन नवजवानों के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता, लेकिन उनके ऊपर पहले से जो धाराएं लगी हुई हैं, यदि उनकी तुलना हम अपने शहीद ए आजम भगत सिंह जी से करेंगे तो यह बहुत गलत बात है। इसको विलोपित किया जाए। शहीद-ए-आजम भगत सिंह जी तुलना नहीं करनी चाहिए । (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- उनके ऊपर धारा लगी है, इस सरकार ने धारा लगाई है। इस सरकार के खिलाफ कोई भी बोलेगा तो वह अपराधी हो गया ?

श्री उमेश पटेल :- जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी है, हमको आजादी दिलाने के लिए अपना योगदान दिया, फांसी चढ़ी, आप उनसे तुलना नहीं कर सकते।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, चूंकि आपने प्वाइंट आफ आर्डर के तहत अनुमति दी थी । पहली बात यह है कि यह प्वाइंट आफ आर्डर का विषय ही नहीं है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने प्वाइंट आफ आर्डर के तहत माना ही नहीं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन उन्होंने कहा तो माननीय बृजमोहन जी ने शहीद-ए-आजम के लिए तुलना नहीं की है । उन्होंने यह कहा कि एक घटना सरकार को जगाने के लिए की गई थी, वे बम फोड़कर भागे नहीं थे ।

डॉ. विनय जायसवाल :- यह तो तुलना हुआ न ।

श्री अजय चन्द्राकर :- वैसे ही इस सरकार को जगाने के लिए छत्तीसगढ़ के नौजवानों को वस्त्र उतारना पड़ा ।

श्री उमेश पटेल :- यही तो तुलना हुआ न । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आपस में सीधे वार्तालाप नहीं करेंगे । अग्रवाल साहब, आप बोलिए न । मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आपसे में सीधे बात न करें ।

श्री धनेन्द्र साहू :- प्रजातंत्र में अपनी बात रखने का अधिकार सबको है, पर यह तरीका ठीक नहीं है, इसको किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जा सकता ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं तो यही कहता हूं कि वे गोरे अंग्रेज थे, जिनके खिलाफ नौजवानों ने संसद में बम फेंका था, ये काले अंग्रेज हो गए हैं, जो छत्तीसगढ़ की नौजवानों को निर्वस्त्र कर रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष जी, बहुत घोर आपत्तिजनक बात है। बृजमोहन जी को अपने शब्दों पर लगाम लगाना चाहिए । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाईए ।

श्री राजमन वेंजाम :- बहुत ही अनुचित बात कर रहे हैं ।

श्री नारायण चंदेल :- उपाध्यक्ष जी, सदन को नियंत्रित करिए ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए, फिर मुझे खड़े होकर बोलना पड़ेगा । मैं उन्हें बोलने के लिए मौका दिया है, वे अभी बोलेंगे । आप लोग बैठ जाईए । (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- इस प्रकार से व्यवधान करना नियम-प्रक्रियाओं में नहीं है ।

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन अग्रवाल जी जिस प्रकार से अपने भाषण में **(XX)** का प्रदर्शन कर रहे हैं ।

(श्री अरूण वोरा के खड़े होने पर)

उपाध्यक्ष महोदय :- वोरा जी, प्लीज़ आप बैठिए । माननीय अग्रवाल जी को बोलने दीजिए । आपस में सीधे वार्तालाप नहीं करेंगे ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ का माहौल खराब करने का प्रयास कर रहे हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैडम, प्लीज़ बैठिए । अग्रवाल साहब, आप बोलिए । काफी वरिष्ठ सदस्य बोल रहे हैं । आप लोग बैठिए ।

(श्री पुन्नूलाल मोहले के खड़े होने पर)

उपाध्यक्ष महोदय :- मोहले जी, आप बैठिए । फिर उधर के सदस्य भी बोल रहे हैं तो मैं उनको टोकूंगा नहीं । आप बैठिए ।

श्री बृहस्पत सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, वरिष्ठ सदस्य होने का मतलब यह नहीं है कि सदन में कुछ भी **[XX]**[13] बोलते रहें । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिए, सदन की गरिमा है । उनको बोलने दीजिए । आप लोग बैठ जाईए । मैं जिनको बोलने की अनुमति दे रहा हूं, वे अपना सीधा भाषण देंगे । आप लोग बैठिए, आपस में ऐसा

---

[13] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नहीं चलेगा । माननीय अग्रवाल साहब, आप बोलिए । किसी की बात रिकार्ड मत करिए । आप बोलिए । किसी की बात रिकार्ड में नहीं आएगी ।

श्री अमरजीत भगत :- **[XX]**[14]

श्री अरूण वोरा :- **[XX]**

उपाध्यक्ष महोदय :- आप बोल रहे हैं या नहीं ? आप बोलिए, मैं किसी की बात नहीं सुनूंगा ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- **[XX]**

श्री अमरजीत भगत :- **[XX]**

उपाध्यक्ष महोदय :- वोरा जी, मंत्री जी, आप बैठिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह अनुसूचित जाति से जुड़ा हुआ मामला है (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- इसमें आपका नम्बर है, आप बैठिए ।

श्री अरूण वोरा :- उपाध्यक्ष महोदय, हम उनकी बात सुनेंगे, लेकिन इतना असत्य बोलेंगे तो कैसे डिफाईन कर सकते हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- विरोध करने का तरीका ठीक नहीं है, कुछ भी बोलेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप बैठिए । अग्रवाल साहब, आप बोलिए । मेरा यह कहना है कि आपस में सीधे बात मत करिए ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- इनके भाषणों के शब्दों का चयन उचित होना चाहिए।

श्री कवासी लखमा :- ये वरिष्ठ हैं तो कुछ भी बोलेंगे । ये कुछ भी बोलेंगे तो हम नहीं सुनेंगे । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप अच्छे शब्दों का चयन कीजिए ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, जो [XX] होते हैं, वे उसी तरह [XX] जैसी बात करते हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिए, अगर आप लोग ऐसा ही करेंगे तो सदन कैसे चलेगा । अग्रवाल साहब, आप बोलिए ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मेरा यह कहना है कि अध्यक्ष महोदय ने व्यवस्था दी है कि सदन में शांति से सुने । मेरा यह कहना है कि हम आरोप लगाएंगे, हमने सूचना दी है । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आसंदी का जो आदेश होता है, उसका पालन आप सभी लोग करिए । अग्रवाल साहब, आप बोलिए, मैं आपको ही सुनूंगा ।

श्री अमरजीत भगत :- छत्तीसगढ़ विधान सभा में इस तरह की बात होगी ।

---

[14] [XX] आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, जब भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम फेंक रहे थे, तब उन्होंने कहा था कि हम [XX] को आवाज सुनाने के लिए बम फेंक रहे हैं और उनके बम फेंकने के बाद उनके ऊपर में कोई एफ.आई.आर. दर्ज नहीं हुआ था । बोले कि नौजवान बच्चे हैं, इनमें असंतोष है, पर यह अंग्रेजों से भी बदतर सरकार है । अभी मंत्री खड़े होकर बोल रहे हैं कि उनके खिलाफ अपराध है। (व्यवधान)

श्री धनेन्द्र साहू :- जो लोग **[XX]** प्रदर्शन कर रहे हैं, आप उसका समर्थन कर रहे हैं। (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- छत्तीसगढ़ सरकार का विरोध करने के लिए अंग्रेजों की तारीफ कर रहे हैं, आप अंग्रेजों की प्रशंसा कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री कुलदीप जुनेजा :- जिसने देश के लिए बलिदान दिया, उसके लिए (व्यवधान)

श्री धनेन्द्र साहू :- आप नैतिकता विहीन बच्चों के कृत्यों का का समर्थन कर रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- पूरा अनुसूचित जाति समाज सजा देगा। आप उनको नैतिकता विहीन बोल रहे हो। (व्यवधान) नैतिकता विहीन बोल रहे हो। (व्यवधान) पूरे सतनामी समाज का अपमान कर रहे हो। (व्यवधान)

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, आप बताईये कि ऐसे में चर्चा कैसे होगी ? (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाईये। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- ऐसे में हमारे सदस्य कैसे बोलेंगे ?

उपाध्यक्ष महोदय :- मेरा तो कहना है कि बृजमोहन अग्रवाल जी ने खुद ही उसको उठाया है। ऐसे में तो आपकी तरफ से भी आ रहा है। ऐसा नहीं होगा। आप लोग बैठिये। मैं तो मौका दे रहा हूं। आप खुद भी खड़े करवायेंगे तो कैसे अच्छा होगा।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप इस चर्चा को लाइव करवा दीजिये, जनता देख लेगी।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने देखा कि माननीय अग्रवाल जी ही खुद उनको मौका दे रहे हैं। ऐसा नहीं चलेगा। अग्रवाल जी खुद उनको खड़े करवा रहे हैं, ऐसा नहीं चलेगा। मैंने विपक्ष को मौका दिया। चलिए, माननीय अग्रवाल जी, आप बोलिये। आसंदी का जो आदेश होगा, उसको पालन करना पड़ेगा। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ..

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इनका आचरण ठीक नहीं है। इनका भाषण बंद करवाईये, दूसरे को मौका दीजिये। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- हम आसंदी से व्यवस्था देंगे। आपको बोलने की जरूरत नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, क्या है कि ऐसी घटनाएं निरंतरता की है। ना चेतावनी, ना प्रताड़ना, ना कोई बात। आपको सीधे निर्देश दे रहे हैं। हम लोग देख रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं माननीय सदस्यगणों से यह कहूंगा कि अगर आप लोग आपस में इस प्रकार से सीधा संवाद करेंगे तो अच्छा नहीं है। बोलने वालों की सूची लंबी है। तो आप से आग्रह है कि आप अपनी बात जारी रखें।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगर ऐसी स्थिति रहेगा तो हम बातों से मारेंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम तो आसंदी की बातों को शिरोधार्य करते हैं। माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं जिस घटना का उल्लेख कर रहा हूं, जिस घटना से इनको मिर्ची लग रही है, यह घटना सामान्य घटना नहीं है। क्या देश के इतिहास में ऐसी घटना घटित हुई है ? जिस घटना के बारे में राज्य की कांग्रेस सरकार अंग्रेजों की सरकार से भी ज्यादा अत्याचार करने पर उतरी हुई है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- मणिपुर में क्या स्थिति है, इसमें मोदी क्या का रहे हैं ? दिल्ली में क्या हो रहा है ? मणिपुर में क्या हो रहा है ? (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाईये। हल्ला मचा रहे हैं, बैठिये।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, हम लोग बोले या नहीं बोले, यह बताईये ? आप व्यवस्था दीजिये। अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है, ऐसे माहौल में कैसे चर्चा करें। आप निर्देशित करिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, इनको बोलिये कि सम्मानपूर्वक बोलें।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप बैठिये। मंत्री जी बैठिये। मैं माननीय मंत्रियों से अनुरोध करूंगा कि हस्तक्षेप ना करें। माननीय अग्रवाल जी का भाषण जारी है, आप बोलिये। कृपया कम से कम मंत्री लोग हस्तक्षेप ना करें।

श्री अमरजीत भगत :- लेकिन शब्दों की मर्यादा का ध्यान रखें। शब्दों की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए। शिष्टाचार की बात करिये।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने स्पष्ट निर्देश दिया कि कृपया मंत्री लोग हस्तक्षेप ना करें।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, आप मंत्रियों को प्रताड़ित करें, ये बार-बार डिस्टर्ब कर रहे हैं। आप जब तक प्रताड़ित नहीं करेंगे तो चर्चा कैसे चलेगा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप भी खड़े होकर करते हो।

उपाध्यक्ष महोदय :- कृपया मंत्री लोग हस्तक्षेप ना करें। (व्यवधान) ऐसे में सदन कैसे चलेगा। आप लोग बैठिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रामकुमार यादव :- आप लोग [XX][15] नहाय क्या धोयेगा क्या, बोले थे।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आप लोग लाज-शर्म करिये, आप शर्म करिये। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- तुमन [XX] कहे रहा।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, अग्रवाल साहब आप बोलिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- पूरा भड़काकर आतंकवादी बनाना चाह रहे हो।

उपाध्यक्ष महोदय :- सभी माननीय सदस्यों से आग्रह है कि सूची लंबी है। माननीय सदस्य को अपनी बात कहने दीजियेगा और मंत्रीगण हस्तक्षेप ना करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, युवा आखिर ऐसा करने को मजबूर क्यों हुये ?

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- उन लोगों को तुम्हीं लोगों ने उकसाकर भेजा है ? व्यवधान

सुश्री शकुंतला साहू :- इनके 15 साल के शासन की वजह से उनको सड़क पर आज [XX]होना पड़ा है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- युवाओं पर बलवा...।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- युवाओं को भड़का कर इन्हीं लोगों ने भेजा है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पूरा [XX][16] इन्हीं लोगों का है । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- परन्तु यह सरकार ...। (व्यवधान)

श्री धनेन्द्र साहू :- आप क्या चाहते हैं, उनको फूलमाला पहनाया जाये क्या ? ऐसे (X X) काम करेंगे तो क्या उनको फूलमाला पहनाया जायेगा ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जिनके जीवन के साथ में, इनके भविष्य के साथ में खिलवाड़ किया गया है...।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- फर्जी नियुक्ति तो 15 साल में आपके शासनकाल में ही हुई है ? (व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- जांच के लिये आदेश दे दिये हैं । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- बैठ जाईये, बार-बार खड़े मत होईये । वोरा जी, बार-बार खड़े मत होईये । आप लोग बैठ जाईये । चलिये अग्रवाल साहब । माननीय वोरा जी, माननीय रामकुमार जी । प्लीज, प्लीज ।

श्री अरूण वोरा :- एक तो फर्जी प्रमाण देना । युवाओं को उकसाना...।

---

[15] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

[16] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह सरकार भ्रष्ट्राचार में **[XX]** हो गई है, शराब बिकवाने में, कोयले के भ्रष्ट्राचार में.... ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- इसीलिए तो रमन सिंह ने कहा था कि एक साल **[XX]** मत लो, भ्रष्ट्राचार तो तुम्हीं लोग करते थे...।

श्री अजय चन्द्राकर :- तुम्हीं लोग करते थे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अपमानजनक शब्दों का चयन करेंगे ? (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी ने मुझे कहा तो मैंने एप्रिशियेट किया । अध्यक्ष जी ने ...। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिये, खुद का सम्मान होता है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- वो लोग कुछ भी बोल लें । एप्रिशियेट भी नहीं करेंगे ना...। व्यवधान

श्री शिवरतन शर्मा :- संसदीय कार्यमंत्री जी, माननीय मुख्यमंत्री जी बैठे हैं, अपने मंत्रियों को...। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी भी कुछ नहीं बोलेंगे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- इनकी सहमति से सब कुछ हो रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सदाशयता हमको ...।

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिये, मंत्रीगण कृपया शब्दों का चयन करें और शिष्टाचार में बात करें ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- आपके मुख्यमंत्री रमन सिंह ने कहा था कि इतना भ्रष्ट्राचार मत करो, **[XX]**[17] मत करो, आनलाईन कहा था, उसी को तो बता रहा हूँ ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज जो संविदा कर्मी हैं, **[XX]** प्रदर्शन करने के लिये तैयार हैं और प्रदर्शन कर रहे हैं । ऐसे ही सरकार रहेगी तो ...।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने विलोपित कर दिया है । अब बोलिये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- जो बोला है, चलेगा ?

उपाध्यक्ष महोदय :- विलोपित कर दिया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप आसन्दी से प्रताड़ित नहीं करेंगे ?

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने असंसदीय शब्द को विलोपित कर दिया है ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- आप लोग गलत कहेंगे तो हम आपको जवाब देंगे। उपाध्यक्ष महोदय :- विलोपित कर दिया ।(व्यवधान)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- गलत बोलेंगे तो विरोध करेंगे ।

---

[17] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- अरे ठीक हे ना, निपट लेबे, आ जाबे । ए कोति आजा ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- शब्दों को नहीं सुन रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- उपाध्यक्ष महोदय, आसंदी से फटकार लगाईये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- हम जब चलेंगे तो ज्यादा गंभीर शब्दों में बोलेंगे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- सदन की मर्यादा है, इसमें बात करेंगे तो अच्छा रहेगा ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- । आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय जी, हमारे मंत्रीगणों द्वारा अपशब्दों का प्रयोग किया जाता है, हम कैसे बर्दाश्त करेंगे ? (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- अग्रवाल साहब, जारी रखिये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह नवजवानों की कैरियर किलर सरकार है । नवजवानों को क्यों ऐसा करना पड़ रहा है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- इससे उठकर थोड़ा आगे बढ़िये ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- सोची समझी चाल ?

उपाध्यक्ष महोदय :- इसी में कब तक बोलेंगे, आधा घंटा इसमें हो गया है ? अग्रवाल साहब इसमें आगे बढ़िये । इसमें मजा नहीं आ रहा है । आपको बहुत सारा विषय बोलना है भई, आप केवल इसी में लगे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, इससे बड़ी शर्मनाक बात दूसरी नहीं हो सकती । छत्तीसगढ़ के नवजवानों को **[XX]**[18] होकर सड़कों पर उतरना पड़े । (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उपाध्यक्ष महोदय, पुनरावृत्ति हो रही है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, प्लीज ।

श्री रामकुमार यादव :- बृजमोहन जी के रील हा फंस गे हे, वोला आगे बढ़ावव भई ।

श्री रविन्द्र चौबे :- (व्यवधान) ले गये हैं। उनके ऊपर कई सारी धाराएं लगी हैं। (व्यवधान)

श्री राजमन वेंजाम :- इन्होंने 15 साल युवाओं का शोषण किया है। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उपाध्यक्ष महोदय, पुनरावृत्ति हो रही है।

उपाध्यक्ष महोदय :- प्लीज, प्लीज।

श्री रामकुमार यादव :- उपाध्यक्ष महोदय, बृजमोहन अग्रवाल जी के रील हा फंस गे हे। ओला आगे बढ़ावा भई।

उपाध्यक्ष महोदय :- आगे बढ़वा देते हैं। (व्यवधान)

---

[18] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, यह 40 मिनट से उसी विषय में बात रहे हैं। उससे आगे बढ़ ही नहीं रहे हैं। यह 40 मिनट से पूरा **[XX]** कर रहे हैं। वहीं पर खड़े हुए हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- अग्रवाल साहब, इस विषय से आगे बढ़िये। मैंने बोल दिया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, अब छत्तीसगढ़ का नौजवान इस सरकार के ऊपर केस लगा रहा है। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, यह फिर वहीं आ गये। (व्यवधान) इनके पास कोई मुद्दा नहीं हैं। (व्यवधान) इनको बंद करवाईये और दूसरे से बोलवाईये।

उपाध्यक्ष महोदय :- 20-25 मिनट हो गये हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उपाध्यक्ष महोदय, आधे घण्टे से वही चल रहा है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह 40 मिनट से केवल **[xx]** कर रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय अग्रवाल साहब, 20-25 मिनट हो गये हैं, एक ही विषय में बात हो रही है। आप आगे बढ़िये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, इनके पास कोई मुद्दा नहीं है। यह 40 मिनट से **[XX]**[19] कर रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- अब वह दूसरे सब्जेक्ट में आ रहे हैं।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, ज्यादा हो रहा है तो इनको खाना खिला के घर ले जाये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, इस सरकार ने 10 जुलाई को नौकरियों पर प्रतिबंध का आदेश जारी कर दिया है। अभी 03 फरवरी, 2022 को सरकार ने क्लर्क की, तृतीय श्रेणी और चतुर्थ श्रेणी के पदों के ऑर्डर निकाले। उसमें लिखा कि उनको टाइपिंग पास की परीक्षा जरूरी है। छत्तीसगढ़ के किसी भी इंस्टिट्यूशन में, हायर सेकेण्डरी बोर्ड में, सरकार की तरफ से टाइपिंग परीक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। पिछले 5 सालों से टाइपिंग परीक्षा नहीं हुई है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप 15 साल तक कहां गये थे ? 15 सालों में क्यों नहीं किये ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप क्या कर रहे हैं ? उपाध्यक्ष महोदय, अब मंत्री बैठे-बैठे कमेंट करेंगे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं खड़े होकर बोल देता हूं। आपने 15 साल तक क्या किया ? इन्होंने 15 साल तक कुछ किया नहीं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, अब किसी चीज की व्यवस्था नहीं नहीं है।

श्री रामकुमार यादव :- यह बैंगन की टोकरी में सो रहे थे।

---

19 [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यदि ऐसा नहीं होगा तो नौजवान क्या करेगा ?

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिये, हमारे पास 5.30 बजे तक का समय निर्धारित है और हमारे पास 30 वक्ता है। अगर आप ऐसे ही खड़े होकर टोकेंगे तो फिर मैं रात के 4.00 बजे तक चर्चा करवाऊंगा।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- उपाध्यक्ष महोदय, जो खड़े होकर टोक रहे हैं, आप उनको प्रताड़ित करिये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, इनके पास कोई मुद्दा ही नहीं है। यह एक ही बात को 40 मिनट से बोल रहे हैं।

श्री अरूण वोरा :- उपाध्यक्ष महोदय, हम टोकेंगे नहीं, लेकिन इनकी सुई अटक गयी है।

श्री कुलदीप जुनेजा :- उपाध्यक्ष महोदय, आप सीमा तय कर दीजिये। आप सबको 10-10 मिनट बोलने का समय दीजिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, इनको जिसमें **[XX]**[20] लगे, उसको दो घण्टे बोलूंगा क्योंकि मैं बोल ही रहा हूं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपके पास कोई मुद्दा तो है ही नहीं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, यह कांग्रेस सरकार को निर्वस्त्र करने के लिए, उनको **[xx]** लगाने के लिए ही मैं बोल रहा हूं। विपक्ष उनको रबड़ी खिलाने के लिए नहीं है।

श्री अरूण वोरा :- **[xx]** तो आपको लग रही है। कांग्रेस पार्टी अपने रास्ते से जा रही है और आपको **[xx]** लगी तो हमारा क्या दोष है ? (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे पुलिस विभाग में 05 हजार से अधिक सशस्त्र बल के पद खाली है, उनकी भर्ती नहीं हो रही है। 6 नये जिले बने हैं, वहां के लिये भर्ती नहीं हो रही है। पी.एस.सी. में क्या हुआ, वह पूरा प्रदेश जानता है कि पी.एस.सी. में नेताओं के बेटे, अधिकारियों के बेटे (व्यवधान)।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इनके 15 साल के कार्यकाल में पी.एस.सी. में सिर्फ 3 साल भर्ती हुई और 12 साल यह केवल **[xx]** करते रहे। यह हमको बोलते हैं। (व्यवधान) से कुर्सी आती थी।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, बैठिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, पहले इन्हीं का भाषण करवा लो।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं जवाब दे रहा हूं।

---

[20] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- उपाध्यक्ष महोदय, बार-बार यह नहीं चलेगा या तो फिर इन्हीं से बोलवा लीजिये।

उपाध्यक्ष महोदय :- सभी माननीय सदस्यों से मेरा आग्रह है कि आप आसंदी का जो सम्मान है, उसको बनाकर रखिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गांव, गरीब, किसान, आदिवासी, मजदूर, दलित, उनका बच्चा पी.एस.सी. में सलेक्ट नहीं हुआ। इतने मंत्री बैठे हैं, आप थोड़ी तो लज्जा करिये कि लोग इतना आरोप लगा रहे हैं, बच्चे सड़कों पर उतर रहे हैं, [xx] होकर प्रदर्शन कर रहे हैं। यह सरकार को लज्जा नहीं आती।

श्री रामकुमार यादव :- उपाध्यक्ष महोदय, एकर रील हा फंस गे हे।

सुश्री शकुंतला साहू :- उपाध्यक्ष महोदय, इनके पास कोई मुद्दा ही नहीं बचा है।

श्री रामकुमार यादव :- जैसे कैसेट में रील फंस जाथे, ऐसे ही एकर रील हा फंस गे हे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, इस सरकार में नई-नई चीजें होती है।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे अनुमति लेकर बोलना चाह रहा हूं। पी.एस.सी. में हायर एजुकेशन में सहायक प्राध्यापक की भर्तियां हुई। उसमें एक प्रीतम पटेल नाम क व्यक्ति का सलेक्शन हुआ तो लोगों ने यह कहा कि प्रीतम पटेल नंदेली गांव का है और उसकी नियुक्ति हो गयी । उन्होंने मेरे ऊपर आरोप लगाया। मुझे मिडिया वालों ने फोन किया। भाई, प्रीतम पटेल आपके गांव का है वह नंदेली गांव का निवासी है और उसका चयन हुआ है। मैंने कहा कि हां, उसका चयन हुआ है। आप जाईये उससे साक्षात्कार ले लीजिए। तो मिडिया वाले लोग साक्षात्कार लेने गये। उन्होंने उसे बहुत ढूंढा तो एक प्रीतम पटेल नाम का व्यक्ति मिला। तो उन्होंने उसका साक्षात्कार लिया तो उसने कहा कि मैं तो केवल 12 वीं कक्षा पास हूँ। मुझे सहायक प्राध्यापक क्या होता है, क्या पता? (हंसी) तो ऐसे भी आरोप लगते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस सरकार में तुगलकी राज चलता है। आपकी भर्ती हो जाएगी। पहले प्रोग्रेशन पिरयड 2 सालों के लिए होता था। सेवा के पहले साल आपको 70 प्रतिशत वेतन मिलेगा। दूसरे साल आपको 80 प्रतिशत वेतन मिलेगा। तीसरे साल आपको 90 प्रतिशत वेतन मिलेगा। यह कौन सा तुगलकी शासन है। ऐसा कहीं पूरे देश में नहीं है।

श्री अमरजीत भगत :- आदरणीय, एक मिनट। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय बृजमोहन जी के बारे में यह पूरी चर्चा है कि इनके सरकार में इनकी नहीं चलती थी, लेकिन अगर हमारी सरकार में किसी को काम कराना है तो बृजमोहन जी से संपर्क करते हैं। इसके बाद भी इन लोगों को अविश्वास है, आप बताईये?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मंत्री जी, ऐसा है मैं व्यक्तिगत मामलों में बोलता भी नहीं हूँ। मैं बात भी नहीं करता हूँ। जब आप अकेले में मिलेंगे तो सब बातें बता दूंगा। जरा आप सदन में व्यक्तिगत मामलों में कमेंट न करें तो ज्यादा बेहतर होगा। **[XX]**[21] **।** (हंसी)

श्री अमरजीत भगत :- अभी आपने सही शब्द बोला। (हंसी)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए। हमारे संसदीय कार्य मंत्री जी बोल रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय बृजमोहन जी को बोलते 47 मिनट हो गया। यह जिस पवित्र शब्द का बार-बार उपयोग कर रहे हैं। वह लगभग 47 बार उपयोग कर चुके हैं। अब इनको बोलिए कि वह पहले लाऊड स्पीकर होता था तो सुई अटक जाती थी। आप थोड़ा आगे बढ़ें।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने पहले ही कहा कि आप थोड़ा आगे बढ़े।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय चौबे जी, माननीय बृजमोहन जी बोल रहे हैं कि अकेले में होगी अकेले की बात।

श्री रविन्द्र चौबे :- देखिए, आदरणीय नारायण जी, इस सदन में हम और बृजमोहन जी 35, 40 सालों से बैठे हैं। वह हमारे बहुत परम मित्र हैं। अकेले में हमारे और उनके क्या रिश्ते हैं, यह आपको नहीं मालूम है। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह सरकार अंतर द्वंद की सरकार है। यह सरकार छत्तीसगढ़ का विकास नहीं कर सकती। पहले ढाई-ढाई साल कहा । पूरे छत्तीसगढ़ की जनता, अधिकारी, कर्मचारी इंतजार करते रहे कि क्या मालूम प्रदेश का मुख्यमंत्री कब बदल जाये। हम किसकी बात माने या किसकी नहीं माने। वाह रे राजा, वह कहां गये हैं उनको बुला लीजिए।

श्री कवासी लखमा :- वह जैकेट बदलने गये हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यहां सदन में जितने बैठे हैं, सब राजा हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी को अपनी पार्टी के अध्यक्ष पर विश्वास नहीं है। वाह रे, माननीय मोहन मरकाम जी। हम तो आपको सीधा-सादा, सरल समझते थे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप ऐसा मत बोलिए। हमने उनको सम्मानपूर्वक मंत्री बनाया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम तो आपको मानते थे कि आप गुरू जी हैं आप बच्चों को पढ़ाने वाले हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

---

[21] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप सुनिए। वह पीछे की पंक्ति में बैठते थे। हमने उनको सामने की पंक्ति में लाकर सम्मान दिया। आप क्या बात करते हैं ? आप लोगों ने एक व्यक्ति को उधर से हटाकर इधर कर दिया। यह मूंछ ऐसा-ऐसा करते थे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम मध्यप्रदेश में मंत्री रहे हैं। इतने सीनियर हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उनका भी पूरा सम्मान है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अनुसूचित जनजाति के बंधु को ले जाकर पीछे में बैठा दिया।

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम आज भी सदन में हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यही सम्मान है ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- वह तो आज भी सदन में हैं। आप देखिए।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वह मंत्री थे मंत्री हैं और मंत्री रहेंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप उनके मन, दिल, परिवार और बच्चों से पूछिए। उनके

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम:- मैं दिल से और मन से भी हूँ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप दिल से है या मन से हैं या मजबूरी में है। मुख्यमंत्री का मंत्रियों पर विश्वास नहीं है। मंत्रियों का मुख्यमंत्री पर विश्वास नहीं है। राजा साहब, हम लोग तो सोचते थे कि राजा जो है उनमें कुछ **[XX]**[22] होती है, उनमें कुछ सम्मान होता है, उनमें कुछ वजूद होता है। कोई राजा इतना गिर जायेगा, यह हमने कभी नहीं सोचा था। मैं जिस शब्द का उपयोग करना चाहिए, वह शब्द का उपयोग नहीं कर रहा हूं। जो लोग ऐसे होते हैं उनके बारे में..। साढ़े 04 साल तक मुख्यमंत्री को गरियाते रहे।

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन भैया, आप हमारे राजा को गिरे हुए बोल रहे हैं, इस बात को हम स्वीकार नहीं करेंगे। आप सम्मान के साथ बात करिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- राजा को सबसे ज्यादा इल्ली आप ही फंसाये हो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, क्या साढ़े 04 साल तक इसीलिए गरिया रहे थे क्योंकि आपको उप मुख्यमंत्री पद चाहिए था या छत्तीसगढ़ का भला होना चाहिए। आपको छत्तीसगढ़ के भले की चिंता नहीं है। इनको चिंता है है तो खाली अपने स्वयं के हितों की चिंता है। आखिर राजा साहब ने पंचायत विभाग क्यों छोड़ा था ? हमारे रविन्द्र चौबे जी बोल रहे हैं कि मैं फंस गया। आपने 4

---

[22] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पेज का पत्र क्यों लिखा था ? उस 4 पेज के पत्र का क्या हुआ ? क्या 07 लाख लोगों को मकान मिल गया ? आज भी मोहन मरकाम जी आप भले मंत्री पद लेकर खुश हो रहे हों पर आपके लोग कितने नाराज हैं कि जिनके मन में आशा थी कि हमको टिकट दिलवायेंगे। आपको क्यों हटाया गया ? **[XX]** उनका क्या होगा ? (हंसी)

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- वह तो मोहन मरकाम जी को खोज रहे हैं। वह हवाला डायरी खुलेगी न तो वह दिक्कत में आयेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय :- वह सूची दादी के पास है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस लाईन को डिलीट कराईये। वह एडवांश की बात कह रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- क्यों आपने एडवांश नहीं लिया है क्या ? (हंसी)

श्री राजमन बेंजाम :- बृजमोहन भैया, एडवांश आपकी बी.जे.पी. में चलता है, हमारे कांग्रेस में एडवांश नहीं चलता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, पहले तो मोहन मरकाम जी ने डी.एम.एफ. के भ्रष्टाचार का आरोप लगाया था। क्या हुआ, उसकी जांच हो गई क्या ? क्या उसमें कार्रवाई हो गई ?

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- उसका हिसाब-किताब हो गया, बाकी बात की बात है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हिसाब-किताब हो गया। प्रेमसाय टेकाम जी, योजना आयोग में 03 महीने में क्या होगा ? आपने कुछ हिसाब-किताब देख लिया या नहीं?

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- हम आपकी पूरी पार्टी को निपटाने की प्लानिंग करेंगे। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, हमको चिंता इस बात की नहीं है। किस प्रकार से इस सदन के वरिष्ठ सदस्यों का अपमान किया जा रहा है। क्या माननीय मुख्यमंत्री जी, उप मुख्यमंत्री जी, डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम जी इन सब व्यवस्थाओं से खुश हैं ? आखिर हो क्या रहा है ? छत्तीसगढ़ के हितों को तिलांजलि देकर खाली कुछ लोगों को खुश करने के लिए यह सब किया जा रहा है। क्यों भैया, क्या ताम्रध्वज साहू जी उप मुख्यमंत्री नही बन सकते थे ? वह पिछड़ा वर्ग से हैं। रूद्र कुमार गुरू जी उप मुख्यमंत्री नहीं बन सकते थे, वह अनुसूचित जाति से हैं।

संसदीय सचिव, आदिम जाति विकास मंत्री से संबंद्ध (श्री द्वारिकाधीश यादव) :- आप भी घोषणा पत्र समिति के संयोजक बन सकते थे, लेकिन आप पहली बार सदस्य नहीं बनाये गये। पहली बार भारतीय जनता पार्टी में ऐसा हो रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह क्या हो रहा है ? इस प्रदेश में क्या हो रहा है ? हम कहते हैं कि यहां पर 30 प्रतिशत वनवासी, आदिवासियों की आबादी है और उन्हीं को ताश के पत्तों की तरह फेंका जा रहा है। उनको आपस में लड़वाने की कोशिश की जा रही है। अंग्रेजों ने भी जो काम नहीं किया, वह

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

काम कोई कर रहा है तो भूपेश बघेल जी कर रहे हैं। आपस में एक दूसरे को लड़वाने का, वर्ग संघर्ष पैदा करने का कार्य कर रहे हैं। आखिर इससे छत्तीसगढ़ का भला होगा क्या ? क्या इससे छत्तीसगढ़ का विकास होगा ? अभी खड़े होकर बडी-बड़ी बातें कर रहे थे। माननीय सदस्यगण जरा अपने दिल पर हाथ रखकर पूछिये कि 36 लोगों का टिकट कटने वाली है। (हंसी)

श्री कुलदीप जुनेजा :- आप लोगों का तो 14 लागों का सीट नहीं बचेगी बोल रहे हैं। यहां पर तो आपके 14 लोगों का भी नहीं बचने वाला बोल रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, इसका बनता है या नहीं। माननीय बृजमोहन जी, लोग बोलते हैं कि आपको लोक सभा भेजने वाले हैं। आपका टिकट कटने वाला है। यह सही बात है क्या? आपको लोक सभा में भेजने वाले हैं, यह सही बात है?

श्री धर्मजीत सिंह :- आप ही लोग तो बोलते हैं कि 36 लोगों का टिकट कटेगी। हम थोड़ी बोल रहे हैं। हम तो चाहते हैं कि आप 71 के 71 आ जाओ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम अविश्वास प्रस्ताव क्यों नहीं लायेंगे? लोगों की मूलभूत आवश्यकता होती है कि उनको भोजन मिले, उनको सर छुपाने के लिए छत मिले, पीने के लिए पानी मिले, पढ़ने के लिए स्कूल मिले और स्वास्थ्य के लिए अस्पताल मिले। आप जरा बाताईये। अब तो आप ग्रामीण विकास विभाग के मंत्री हो गये। प्रधानमंत्री जी ने लोगों का 12 हजार करोड़ रूपये भेजा। 7 हजार करोड़ रूपये छत्तीसगढ़ सरकार को देनी थी। गरीबों के सर से छत छीनने वाला, इसका पाप करने वाला दोषी है तो यह भूपेश बघेल और उनके मंत्री मंत्रिमण्डल के साथी हैं। इन्होंने पाप किया है। व्यक्ति का सपना होता है कि मेरे जीवन में मेरा एक घर बन जाये। माननीय गुरू जी बैठे हैं। आपके हाथ में बहुत सारी चीजें नहीं हैं। कैसे टेंडर होगा, किसको काम दिया जायेगा। यह कहां से तय होता है? क्या हाऊस से? हाऊस क्या कोई संवैधानिक स्थान है? किसी भी अधिकारी को फोन करो तो कहते हैं कि सर, जरा हाऊस से फोन करवा दीजिये। हाऊस से खबर आई है। आपने परसो अपने जवाब में बताया है कि 10,000 गांवों में सिर्फ 1600 गांवों में जल जीवन मिशन का काम पूरा हुआ है। केन्द्र सरकार पैसा दे रही है।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरू रूद्र कुमार) :- माननीय, पूरे प्रदेश स्तर पर आपका ध्यानाकर्षण भी लगा है। मैं इसमें दो बात बोलना चाहूंगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम लोग दिसंबर में जवाब देंगे।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- आप रहेंगे या नहीं रहेंगे, पहले यह तो तय कर लीजिये। हम लोग तो रहेंगे। आप विभाग की बात सुन लीजिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- दिसंबर में अब आपको जवाब देने का अवसर तो मिलेगा नहीं । अगर आपको इधर प्रश्न करने का अवसर मिल जायेगा तो आप प्रश्न कर लेना।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रामकुमार यादव :- गुरू देव खड़ा होहे। शराप दे दिही। बइठ जावा।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- हम लोग दिसंबर में शपथ लेंगे। पूरा मंत्रिमण्डल। आप लोग चिंता मत करिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- गुरू जी, आपको टिकट मिलेगी या नहीं मिलेगी, पहले यह सोचिये।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- आप अपना देखिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपका नाम पहले ही लिस्ट में है।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, प्वाइंट में बात करिये।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- कांग्रेस की टिकट आप बांट रहे हैं? उपाध्यक्ष महोदय, माननीय बृजमोहन जी ने जो कहा, उसका जवाब मैंने अपने बजट में ही दिया है। जब मैंन अपना बजट पेश किया था, उस समय भी कहा था कि जो 5 हजार करोड़ रूपये तक का टेंडर होता है। कलेक्टर लेवल पर समिति बनी हुई है, वहां डिसाईड होता है कि टेंडर किसको एलॉट होता है। रही मुख्य बात की तो 15 साल इनकी साल रही। 15 साल में इन लोग पूरे प्रदेश में महज सिर्फ 7 प्रतिशत यानी जनता को शुद्ध पेयजल उपलब्ध करा पाये और हमने महज साढ़े चार साल में, आज की तारीख में मैं यहां जिम्मेदारी के साथ बोलता हूं कि हमने छत्तीसगढ़ में 53 प्रतिशत नल कनेक्शन दिया है। (मेजों की थपथपाहट)

श्रम मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- समझ गये, भाई।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- समझ गय हौं। ठीक से समझ गय हौं। कतेक **[XX]**[23] चलत हे, ओला भी समझ गय हौ। मैं हर गुरू जी के सम्मान करथौं, एखर खातिर मैं आरोप नइ लगात हौं। काबर कि गुरू जी तो दु:खी कि ओखर समाज के मन ला कपड़ा उतारे बर पड़िस। गुरू जी वैसे ही परेशान हे, वैसे ही दु:खी हे। गुरू जी ला ये सरकार प्रताड़ित घलो करत हे। ओकर काम कोनो नइ करत हे।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने कहा कि लोगों को सर छुपाने के लिए छत नहीं दे पा रहे हैं, पीने के लिए पानी नहीं दे पा रहे हैं। मेरे प्रश्न के उत्तर में कहा है और यह इनकी योजना नहीं है। अगर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी जल जीवन मिशन दिल्ली से नहीं भेजते, उनके भेजने के बाद भी [XX] के चक्कर में बार-बार टेंडर-टेंडर का खेल खेला जा रहा है। मेरे आदमी को टेंडर दे दो, मेरे आदमी को टेंडर दे दो, मेरे आदमी को दे दो, मेरे आदमी को दे दो । भैया, आप भी आदमी हो, कोई औरत को दिलवाते तो समझ में आता । खाली यह खेल खेला जा रहा है ।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगर हमारी सरकार के माननीय मुख्यमंत्री जी अगर 50 परसेंट स्टेट शेयर नहीं देते तो यह काम भी नहीं हो पाता । इसमें 50 परसेंट हमारा भी लगा हुआ है । आप बार-बार जो टेंडर की बात कर रहे हैं, आप 15 साल मंत्री रहे हैं । मैंने पिछले प्रश्नकाल

---

[23] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में जवाब में ही कहा था कि जीरोकॉल या फिर जो सिंगल टेंडर होता है उसको रिटेंडर करना पड़ता है । खेल तो इनकी सरकार में हुआ है, भ्रष्टाचार तो इनके समय हुआ । हमने तो काम करके दिखाया है । 7 परसेंट से 53 परसेंट तक पहुंचना मतलब हमारी सरकार ने मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में काम किया है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, भोजन की व्यवस्था । माननीय मोदी जी ने कोरोनाकाल के लिये प्रतिव्यक्ति 5 किलो चावल 28 महीनों के लिये भेजा । उस चावल को खा गये, माननीय मंत्री जी ने स्वीकार किया कि 5000 करोड़ रूपये का घोटाला ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह आपत्तिजनक है । 28 महीनों का चावल भेजा उसको हमने बांटा है । आप 33 महीने का बोलते हैं, बिना सिर-पैर की बात करते हैं । ये आरोप लगाते हैं । (व्यवधान) 28 महीने का भेजते हैं और आप 33 महीने का बोलते हैं । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- कोरोनाकाल से अभी दिसम्बर तक है । मंत्री जी आपने बोला कि नहीं है करके । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- 28 महीने का भेजा है । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- अभी दिसम्बर तक है । (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- फोटो बताउं । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- उसको टोकरी में डाल दिया गया । (व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- अभी थोड़ी देर में केंद्र सरकार की चिट्ठी दे देंगे । (व्यवधान) केंद्र सरकार से चिट्ठी आ गयी है, आपको दिखा देते हैं । आप असत्य कथन कह रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- सेंट्रल की चिट्ठी आयी है, आप बोलें तो मैं दिखा दूं।(व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- अभी मैं चिट्ठी दिखा दूंगा । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- निराधार । (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- कोई नहीं बैठा है । (व्यवधान) आप किसी अधिकारी को भेज दो । (व्यवधान) मैं विधानसभा में बैठा हूं । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- जो भिजवाया था उसी को तो बांटेंगे । (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- अभी नहीं बांट रहे हो । 2-3 महीने से नहीं बांट रहे हो। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- 28 आया था तो 28 बंटा । (व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- अभी आपको थोड़ी देर में चिट्ठी दिखाते हैं । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- ननकीराम जी हा प्रश्न पूछ के प्रश्नकाल में नइ आए रिहिस हे । काबर नइ आये रहेच तेला बता ? तोर सेटिंग कइसे होगे ? तें हा प्रश्न पूछ के कइसे नइ आयेच ? तें हा सैंटिग कर लेच । (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- जितना करना है कर लो, 2-3 महीने भ्रष्टाचार कर लो।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अईसनहे करबे ता कइसे चलही ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गरीबों के अनाज में, उनके चावल में 5000 करोड़ रूपये का घोटाला । माननीय मंत्री जी ने इस सदन में स्वीकार किया है । आखिर गरीबों का राशन खाने वाला कौन है ?

श्री अमरजीत भगत :- असत्य कथन ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- महोदय जी, नान घोटाला आपके ही समय का है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य । आप थोडा बतायें कि कितने स्कूलों में एक शिक्षकीय स्कूल हैं ?

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन भैया, आपके समय में 36,000 करोड़ रूपये का घोटाला था जिसकी जांच कोर्ट से रूकी हई है । कोर्ट में आप लोग जाकर के रोकवाये हैं, क्यों जांच होने नहीं देते हैं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बच्चों के भविष्य के साथ में खिलवाड़ कर रहे हैं । स्वामी आत्मानंद स्कूल के नाम पर आप खोलिये । स्वागत है लेकिन उसमें व्यवस्था तो करिये । मैं आपको पढ़कर सुना सकता हूं । आज 74,000 बच्चों के स्कूलों में पद रिक्त हैं । आपने शिक्षा व्यवस्था के नाम पर लूटपाट मचाकर रखी है । स्कूलों में जाने के लिये रास्ता नहीं है, कमरों की छत गिर रही है । उनका मेंटेनेंस नहीं हो रहा है । ऐसा है कि शिक्षा के मामले में इस देश में 36 राज्य हैं । दादी, उसमें आप 34वें नंबर पर हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- 3000 स्कूल तो आप लोगों ने बंद किया था ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बड़ी-बड़ी बातें करते हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 24वें नंबर पर हैं । खाली बटोरने का एक ही काम है । शराब में बटोरो, कोयले में बंटोरो, रेत में बंटोरो, जंगल में बंटोरो, डी.एम.एफ. में बंटोरो।

श्री कवासी लखमा :- क्या बंटोरो? (हंसी)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय जी, 15 सालों में हमारा राज्य सबसे गरीब स्थिति में आ गया था, अभी हमारी स्थिति सुधरी है।

श्री ननकीराम कंवर :- और गरीब हो गये हैं।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- आप पिछले 4 साल का रिकॉर्ड निकलवाकर देख लीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अभी शिक्षा के क्षेत्र में किसान वर्ग सभी संतुष्ट हैं। इनके समय में 15 साल में किसानों ने सबसे ज्यादा आत्महत्या की है। ये इनके कार्यकाल में हुआ हुआ है। आज हमारे कार्यकाल में यशस्वी माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी के कार्यकाल में आज एक भी किसानों ने आत्महत्या नहीं की है।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- भैय्या, आपकी स्वामी आत्मानंद स्कूल में एडमिशन की अनुशंसा भी सोशल मीडिया में है।

श्रीमती इंदू बंजारे :- स्वामी आत्मानंद स्कूल में एडमिशन के लिए 20-20 हजार रूपये लिया जा रहा है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आत्मानंद में हमारा भी एडमिशन करवा दीजिए करके।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, स्वास्थ्य विभाग विभाग का हाल क्या है? माननीय मुख्यमंत्री जी का बजट भाषण चल रहा था। टी.एस.सिंहदेव जी खड़े हुए, आने वाले जून तक छत्तीसगढ़ के किसी भी सरकारी अस्पताल में कैश काउंटर नहीं होगा। क्या हुआ मुख्यमंत्री जी? क्या हालत है? क्या कैश काउंटर बंद हो गया? आखिर छत्तीसगढ़ की जनता को कितने भुलावे में रखोगे? यूनिवर्सल हेल्थ केयर लागू होगा। लोगों को घर नहीं, लोगों को पानी नहीं, लोगों के लिए शिक्षा व्यवस्था नहीं, लोगों के लिए स्वास्थ्य की व्यवस्था नहीं। माननीय मुख्यमंत्री जी, आपने बोला था कि शहरी भूमिहीन कब्जाधारी को पट्टा मिलेगा।

श्री कवासी लखमा :- नहीं मिला क्या?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जरा, आप बता दीजिए। रायपुर शहर में कितने लोगों को पट्टा मिला है?

श्री कवासी लखमा :- बहुत लोगों को मिल रहा है भैय्या, आपने देखा ही नहीं है तो क्या करेंगे? आपको इतने बड़े आदमी को थोड़े न मिलेगा? (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मुख्यमंत्री जी ने बड़ी-बड़ी घोषणाएं कीं। छत्तीसगढ़ की नई राजधानी में विश्व स्तर का स्कूल खोला जायेगा। क्या खुल गया? क्या हुआ? विश्व स्तर का अस्पताल खोला जायेगा। क्या हुआ? मुख्यमंत्री जी तो आजकल राष्ट्रीय नेता बन रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बन रहे हैं नहीं, बन गये हैं। पूरे देश में चल रहा है।

श्री कवासी लखमा :- आपका तो नंबर ही नहीं आ रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- तो हम तो प्रधानमंत्री बने, राष्ट्रीय अध्यक्ष बने, हमारी शुभकामनाएं हैं। छत्तीसगढ़ को मुक्त करें और छुटकारा दें। माननीय उपाध्यक्ष जी, इन्होंने कहा कि दिल्ली की जवान ज्योति को शिफ्ट किया जा रहा है तो छत्तीसगढ़ में भी शहीद स्मारक बनेगा। जवान ज्योति जलायेंगे। क्या हुआ? ये भूपेश नहीं, ये ठगेश है। केवल लोगों को सपने दिखाना। बड़ी-बड़ी बातें करना। इन्होंने कहा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कि हम वर्धा जैसा गांधी धाम बनायेंगे। सेवा ग्राम बनायेंगे। क्या हुआ? चला-चली की बेला में मुख्यमंत्री जी, आपकी घोषणाओं की सी.एस. ने समीक्षा ली। मुख्यमंत्री जी का वो गांव-गांव में क्या चल रहा है? भेंट मुलाकात। उसमें मुख्यमंत्री जी से लोग मांगते हैं कि मेरी शादी नहीं हो रही है। हो जायेगी। (हंसी) मेरी बीवी भाग गई है। दिलवा दूंगा। (हंसी) गजब है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय बृजमोहन जी, माननीय मुख्यमंत्री जी बलौदाबाजार में बिहाव के लिए एक घोषणा करके आये। आज तक ओहा पूरा नहीं होइस, कार्यकाल बीते बर आगे हे। अउ शादी के मुहूर्त के पीरियड भी निकल गे। बलौदाबाजार में तो सार्वजनिक रूप से माननीय मुख्यमंत्री जी मान कर आये हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नारायण चंदेल जी की दोबारा शादी करवा देते हैं। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हां, ओ नेता जी के यहां लोगन मन मुख्यमंत्री जी से नदी मांगिस। मुख्यमंत्री जी बोले कि बनवा दूंगा। (हंसी) यह क्या मजाक हो रहा है?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपको तो बधाई देना चाहिए कि ये विश्व के पहले मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने भेंट मुलाकात की है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हां, विश्व के पहले मुख्यमंत्री हैं । एक विकलांग जाता है वह बोलता है कि मुख्यमंत्री जी आप नौकरियां निकालिए, मुझे नौकरी दे दीजिए । तेरा बाप भी आया है मुख्यमंत्री से प्रश्न पूछने ।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय अग्रवाल जी, एक घंटा हो गया है और कितना समय लेंगे ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इतना गुरूर है कि नवजवानों के साथ अगर ऐसा व्यवहार होगा तो वह क्या करेगा ?वह निराश होगा, वह हताश होगा । जो काम 18 तारीख को सड़कों पर हुआ वह उसको करना पड़ेगा ।

श्री कवासी लखमा :- बृजमोहन भइया, हम लोग आज तक आपका प्रश्न और भाषण सुन रहे थे, उसमें जो दम था, आपके आज के भाषण में बिल्कुल ही दम नहीं है । क्या हो गया है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मुख्यमंत्री जी जो दिल्ली में है वह सब मैं छत्तीसगढ़ में ले आऊंगा । आपकी परिस्थिति क्या है ? आपके पास पैसा कितना है? आप क्या काम कर पाएंगे, क्या नहीं कर पाएंगे ? माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि वृद्धावस्था पेंशन 1000 रूपया कर दूंगा, 75 साल के ऊपर वालों का 1500 रूपए कर दूंगा । क्या हुआ उस 1000 और 1500 रूपए का ? मेरे पास कांग्रेस का घोषणा पत्र है । ये दिखा देता हूं यह है । 254 प्लस 36, 290 बिंदु हैं । ज़रा माननीय विधायक साथियों इसको पलटकर देख लीजिए । 200 बिंदुओं में कितने बिंदुओं पर काम हुआ, आप पलटकर देख लीजिए ।

श्री गुलाब कमरो :- हमारी जर्सी गाय हमको नहीं मिली ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- देख लीजिए, जनता आपसे जवाब मांगेगी । आप जवाब देने की स्थिति में नहीं रहोगे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- अग्रवाल साहब, कृपया समाप्त करें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बस 10 मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूं । सरकारी कर्मचारी सड़कों पर उतरे हुए हैं । रोज आंदोलन कर रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन भइया, कल कर्मचारियों का समूह आया था, उनका यूनियन आया था और मुख्यमंत्री जी का सम्मान करके गया है, गजमाला पहनाकर गया है, धन्यवाद् ज्ञापित करके गया है, आपको मालूम है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अमरजीत जी, वह वैसा ही समूह था जो भेंट मुलाकात में सिखा-पढ़ाकर खड़े होते थे, वैसे ही सिखाए-पढ़ाए कर्मचारियों का समूह आया था ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नक्सल पंचायतों को एक-एक करोड़ रूपया दिया जाएगा । उपाध्यक्ष जी, आपकी भी जानकारी में होगा, बहुत सारे साथी बैठे हैं इनकी जानकारी में होगा, मिल गया एक-एक करोड़ रूपया । कहां गया एक-एक करोड़ रूपया? कौन खा गया एक-एक करोड़ रूपया ? नवीं पास बच्चों का सायकिल दी जाएगी ।

श्री कवासी लखमा :- उपाध्यक्ष जी, इनके घोषणा पत्र में था कि आदिवासियों को जर्सी गाय दी जाएगी, गाय मिली है क्या ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभी जिलों में वृद्धाश्रम स्थापित किये जाएंगे, क्या हो गया ? माननीय गुरू जी, सुपेबेड़ा, आजकल वे माननीय उप मुख्यमंत्री हो गए । आजकल माननीय मुख्यमंत्री जी को बहुत शौक हो रहा है कि कहीं उप मुख्यमंत्री ज्यादा पावरफुल न हो जाएं तो उनकी सीट पर जाकर बार-बार बैठते हैं (हंसी) ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हमारे संसदीय कार्यमंत्री जी के पास बैठकर चर्चा कर रहे हैं भाई ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, (हंसी) बृजमोहन जी भी कभी-कभी गजब करते हैं, मैं अपने वरिष्ठ साथी के पास चला गया, आप जानते हैं कि परिस्थिति क्या है । उनको कष्ट मत हो, इसलिए मैं खुद चला जाता हूं। अब उसमें भी आप राजनीति देखते हैं। (हंसी) हद करते हैं बृजमोहन भइया ।

श्री नारायण चंदेल :- मुख्यमंत्री जी, राजा साहब फिर जैकेट बदलने गए हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- शायद मरहम लगाने जाते हों बार-बार । कृषि विभाग दे दिया हूं, सांत्वना देते हों बैठकर, ऐसा भी तो हो सकता है ना ।

श्री भूपेश बघेल :- चौबे जी हमारे वरिष्ठतम मंत्री हैं और उनके पास सारे विभाग हैं और वे सक्षम भी हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है, वे अपनी पीड़ा को व्यक्त नहीं कर पा रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- कौन, चौबे जी ?

श्री शिवरतन शर्मा :- चौबे जी। (हंसी)

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- शिवरतन जी, आपकी पीड़ा को हम लोग समझते हैं, आप दो-दो, तीन-तीन बार विधान सभा में पहुंचे हो, जो आपके सामने बैठते हैं, कभी आपकी तरफ ध्यान ही नहीं दिए हैं। आप हमेशा किनारे रहे हो और आने वाले समय में कितना किनारे जाने वाले हो पता चल जाएगा, भारतीय जनता पार्टी में अनुज शर्मा का प्रवेश हो चुका है। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, माननीय मुख्यमंत्री जी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं कि हम छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति को बचाने का काम कर रहे हैं। क्या मुख्यमंत्री निवास में मुख्यमंत्री जी गेड़ी में चढ़ जाएंगे, क्या मुख्यमंत्री निवास में मुख्यमंत्री जी भौंरा चला लेंगे उससे छत्तीसगढ़ की संस्कृति का विकास हो जाएगा? आज छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक कलाकार भूखे मरने की स्थिति में है। उनको रोजगार नहीं मिल रहा है।

श्री कुलदीप जुनेजा :- मुंबई से जो करीना कपूर आती थी, उसको बताईए ना।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- करीना कपूर को लाकर नचाएंगे तब संस्कृति बढ़ेगी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हां-हां, मैंने छत्तीसगढ़ के लोगों को करीना कपूर दिखाया था, आप नहीं दिखा सकते।

श्री अरूण वोरा :- क्या आप लोगों ने कभी बोरे बासी खाया था ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हां-हां, मैं वह नहीं कर सकता, मां कौशल्या के मंदिर को बनाने में साढ़े 6 करोड़ लगेगा और इवेंट कंपनी को 25 करोड़ रूपये दे दोगे। मैं ऐसी संस्कृति नहीं चला सकता। आदिवासी महोत्सव में दो करोड़ रूपये खर्च हो गए, इवेंट कंपनी को 11 करोड़ रूपये मिल जाएगा, मैं ऐसी संस्कृति नहीं चला सकता। जिस संस्कृति में गांव में किसान आत्महत्या करे और मुख्यमंत्री जी अपने बंगले में ढोल, बाजा बजवाए, मैं ऐसी संस्कृति नहीं चला सकता।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- पूरे देश में आदिवासी संस्कृति का विकास हुआ है। आप लोग तो आदिवासी लोगों को पूछते नहीं थे। ननकीराम कंवर जी, दौड़-दौड़ कर जाते थे, इनको कोई पूछता नहीं था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मुझे ऐसी संस्कृति चाहिए, जिस दिन बस्तर के गांव में महुए की महक हो और मांदर बाजे, लोग करमा, ददरिया करे, हमें ऐसी संस्कृति चाहिए। क्या मुख्यमंत्री के निवास में संस्कृति हो जाएगी ? मुख्यमंत्री के घर में हरेली हो जाएगी ?

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन जी, आप आदिवासी नृत्य महोत्सव का विरोध कर रहे हैं। आप रामायण महोत्सव का विरोध कर रहे हैं। आप लोक कला का विरोध कर रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष जी, यह तो महोत्सव का विरोध कर रहे हैं।

श्री राजमन बेंजाम :- आदिवासी महोत्सव में छत्तीसगढ़ के आदिवासी कलाकार विश्व विजेता हुए हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आदिवासी नृत्य को बुलाने का क्या औचित्य है ? क्या औचित्य है, यह मुझे समझाएं ? छत्तीसगढ़ के आदिवासी कलाकारों को पैसा दीजिए, आपने जितना पैसा आदिवासी महोत्सव में खर्च किया, अगर छत्तीसगढ़ के आदिवासी कलाकारों को एक-एक लाख रूपये दे देते तो उसके बाद भी आपके पास पैसा बच जाता। आप खाली चर्चा कर रहे हैं। समाचार पत्रों में छपूं, टी.व्ही में दिखूं, इसके लिए काम कर रहे हैं। आप कौन सी संस्कृति की बात कर रहे हैं। मैं भी छत्तीसगढ़ में बचपन से काम कर रहा हूं। मैं भी बस्तर घूमा है। मैं भी सरगुजा घूमा हूं। मुझे एक-एक चीज मालूम है।

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन जी, आपने भी राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव में नाचा था। आप उसी कार्यक्रम का विरोध कर रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- इनकी संस्कृति होटल बनाओ, मोटल बनाओ, दारू पिलाओ। (हंसी) यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति है, आपने कितना होटल, मोटल बनाया, आप पर्यटन मंत्री बने थे, एक भी होटल मोटल नहीं चल रहा है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, [XX][24] से खुदा भी डरता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, यह शासन कैसे चल रहा है?
शराब, मैं नहीं कह रहा हूं, हम तो आरोप लगाते थे, यह मानते नहीं थे, दो हजार करोड़ रूपये तो ऑफिसियल है, अगर हम देखेंगे तो दस हजार करोड़ रूपये से ज्यादा का घोटाला हुआ है। सरकार शराब की दुकानें चला रही है, उस पर आपका नियंत्रण है। आप कैसे उनको मना कर सकते हो। अगर एक पेटी सरकारी शरबा बिक रही है तो एक पेटी प्राईवेट शराब बिकेगी।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आज आपके बाजू वाले नहीं आये हैं। उन्होंने ही शराब नीति बनाई थी। शराब बेचने का काम तो आप लोगों ने ही किया है। घर-घर शराब परोसने का काम आप लोगों ने ही किया है।

श्री ननकीराम कंवर :- आपके अधिकारियों को जेल भेजा जा रहा है। आप बीच-बीच में क्यों बोलते हैं?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- चुप न। तैहा प्रश्न पूछ के [xx] खाके बइठ जथस। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शराब नहीं पीने वाले भी परेशान हैं और पीने वाले भी परेशान हैं क्योंकि शराब पीने वालों को लेवी के साथ ज्यादा रेट में शराब खरीदना पड़ रहा है।

---

[24] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सरकार से पूछो तो सरकार कहती है कि नहीं-नहीं, हमने रेट नहीं बढ़ाया है। तो फिर ऊपर का पैसा कौन ले रहा है? हर चीज में लेवी लगाई जा रही है। सीमेंट का उत्पादन सबसे ज्यादा छत्तीसगढ़ में होता है, लेकिन छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा सीमेंट बनने के बाद भी यहां पर सीमेंट का रेट ज्यादा क्यों है? मैंने प्लांट वालों से पूछा कि आप सीमेंट सस्ती क्यों नहीं देते हैं? उन्होंने कहा कि क्या आपको मालूम नहीं है? यहां [xx] लगा हुआ है। (शेम-शेम की आवाज)

श्री कवासी लखमा :- क्या उस समय [xx] लगता था? क्या आप टैक्स लगाना जानते हैं?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- [xx] लगता था।

श्री कवासी लखमा :- [xx] लगता था।

श्री धनेन्द्र साहू :- क्या आप भूल गये कि उस समय [xx] लगता था?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं आप लोगों के लिए जिन शब्दों का उपयोग करता हूं। मैंने कहा कि मैं इस सरकार को [xx] नहीं कहूंगा। आप साढ़े चार साल में कुछ नहीं कर पाये तो बड़ी बात क्या करेंगे? आप कार्रवाई करके दिखाइये। आपको कौन रोक रहा है?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कार्रवाई करते हैं तो आप लोग हाई कोर्ट क्यों जाते हैं और स्टे क्यों लगवाते हैं? फेस करो न। आपके बाजू वाले जाकर स्टे लगाते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मुख्यमंत्री जी, रेत महंगी क्यों हो गई?

श्री ननकीराम कंवर :- दिल्ली से आपके जो अधिकारी जेल जा रहे हैं, उनको रोकिये। आप उनको क्यों नहीं रोक रहे हैं? हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट जाइये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आज प्रश्न पूछे बर नहीं आएस ता कतका के [xx] मिलीस? आज कार नहीं आए रहेस।

श्री ननकीराम कंवर :- आप क्या बात कर रहे हैं? आपके राज में अधिकारी जेल जा रहे हैं। आपके अधिकारी जेल क्यों जा रहे हैं? (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आज तै प्रश्न पूछे रहे हस अउ नहीं आये रहे हस, तेखर तोला कतका [xx][25] मिलीस? तै ओला बता। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शिव डहरिया जी सम्मानीय सदस्य को लगातार कतेक [xx] पाएस, कतेक [xx] पाएस, चार बार बोल चुके हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- मैं तो तुमन ला बतात हो। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- तै खुद साढ़े [xx] खाए हस। खुद पइसा खाथस। बिना कहीं से पइसा ले...। (व्यवधान)

---

[25] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तोर बाजू वाले हा।...(व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- आप कौन से [xx] की बात कर रहे हैं?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यदि कोई सदस्य किसी कारण से नहीं आ पाये तो। (व्यवधान)

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, व्यक्तिगत आरोप नहीं लगाना चाहिए। (व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यदि कोई सदस्य किसी कारण से नहीं आ पाये तो उनपर इस तरह से आरोप लगा रहे हैं। एक बार, दो बार, तीन बार, चार बार हो गया। यह इतने वरिष्ठ सदस्य हैं। यह 1972 से चुनाव लड़ रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय शर्मा जी। (व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- आप उनकी उम्र की भी थोड़ी सी गरिमा रखिये। आप हम लोगों को बोलिये। आप उनको क्यों बोल रहे हैं?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- मुझे मालूम है। आप चिंता मत कीजिए। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- सौरभ जी, माननीय सदस्य के प्रति [xx] लेने संबंधी कथन विलोपित किया जाता है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आपने मुझे सीख दी है, इसलिए आज मैं चुप बैठा हूं। (हंसी) लेकिन आपके पक्ष के कुछ लोग [xx] ही ठीक होंगे क्योंकि बातों से भूत नहीं उतरते। (मेजों की थपथपाहट) जब आप अनुपस्थित थे तो वह इतनी गंदी-गंदी भाषा का प्रयोग कर रहे थे।

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह हमें [xx][26]। इनके मुंह से गंदी-गंदी बातें निकलती हैं, उसको विलोपित कीजिए। यह हमको [xx] और हम लोग इनको छोड़ देंगे। अभी आपको जनता मारेगी।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह किसको [xx] वाले हैं? (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप बोलिये। आप दो मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, क्या यहां पर कोई भी इनका [xx] के लिए आया है? यह [xx]। यह [xx] दिखाए। यदि यह [xx] तो हम [xx]।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की संस्कृति की बात कर रहे थे। छत्तीसगढ़ की संस्कृति में नदियों का महत्व है। यहां लोग नदियों की पूजा करते हैं। माननीय मुख्यमंत्री

---

[26] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जी भी शिवरात्रि में, पूर्णिमा में जाकर नदियों में डूबकी लगाते हैं। मुख्यमंत्री जी पुन्नी मेला नहाने के लिए जाते हैं।

श्री रामकुमार यादव :- गंगा ला साफ करबो करके घोषणा कर देहो। जावो देखो कि अभी गंगा कइसे हे।

उपाध्यक्ष महोदय :- एक मिनट।

सदन को सूचना

उपाध्यक्ष महोदय :- आज भोजन अवकाश नहीं होगा। मैं समझता हूं कि सभा इससे सहमत है। भोजन की व्यवस्था माननीय श्री कवासी लखमा, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री जी की ओर से माननीय सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है। कृपया सुविधानुसार भोजन ग्रहण करें।

श्री रामकुमार यादव :- नेता जी, धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप अपनी बात समाप्त करें। आपको एक घण्टे से भी ज्यादा हो गया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, नदियों के सीने को चीरा जा रहा है। अभी बिलासपुर में 3 बच्चियां।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री जी ने अरपा पैरी के धार को राज्य गीत घोषित किया है। हमारे मुख्यमंत्री जी ने नदियों का सम्मान किया है। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह एक घण्टे से प्रवचन कर रहे हैं, लेकिन कुछ आ ही नहीं रहा है। कोई मामला ही नहीं है। यह डेढ़ घण्टे से बोले जा रहे हैं और इनके पास कोई मुद्दा नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिए, अभी 30 वक्ता हैं । आपको बोलते हुए 1 घंटे से ज्यादा हो गया है । आप लोग सहयोग करिए ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने राज्यगीत घोषित करके नदियों का सम्मान किया है । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय रविन्द्र चौबे, उनका समय हो गया, अब आप बोलिए । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- डेढ़ घंटे से सदन का समय खराब कर रहे हैं, इनके पास बोलने के लिए कुछ नहीं है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, नदियां हमारी संस्कृति हैं, नदियां हमारी माता है, अपनी माता को कोई [XX][27] नहीं करना चाहता । उसकी बेइज्जती कोई नहीं करना चाहता ।

श्री रामकुमार यादव :- ओकर गला मा फंस गे हे । (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- फिर से उसी शब्द को रिपीट कर रहे हैं । (व्यवधान)

श्री राजमन वेंजाम :- इनको ऐसी बात करते हुए एक घंटे हो गए हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए, उनको बोलने दीजिए । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं बस पांच मिनट में समाप्त करूंगा । हमारी नदियों के सीनों को चीरा जा रहा है । छोटी-छोटी तीन बच्चियां थीं । आप लोग बहुत हल्ला कर रहे थे । उनके मा-बाप की क्या हालत होगी? रेत चोरों ने 12 फीट का गड्डा कर दिया, किनारे में 3 फीट था, वह बच्चियां नहाने चली गईं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- झलियामारी में आप लोगों ने क्या किया था ? हमारे प्रदेश की छोटी-छोटी आदिवासी बच्चियां थीं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप आसंदी की ओर देखकर बात करिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं आपकी तरफ ही देखकर बात कर रहा हूं ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- झलियामारी कांड में इन्हीं आदिवासी बच्चियों के साथ अन्याय हुआ था ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, ये छोटी बच्चियों की जान चली गई ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- खाली डेढ़ घंटा से सदन का समय खराब कर रहे हैं, इनके पास कोई मुद्दा है ही नहीं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उनकी जान ऐसे नहीं गई है, उनकी हत्या की गई है क्योंकि रेत चोरों को परमिशन दे दिया कि नदियों को चीर लो ।

श्री गुलाब कमरो :- बृजमोहन भैया, इससे पहले आपकी सरकार थी, जनकपुर के रेत को चोर लोग ले जाते थे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, 15 जून को रेत की खुदाई के उपर रोक लग जाती है । मुख्यमंत्री जी, आप घोषणा करेंगे कि आज के बाद जब तक बरसात समाप्त नहीं होती है, किसी भी नदी से एक बूंद भी रेत नहीं निकाली जाएगी। आप घोषणा क्यों नहीं कर सकते ? रोज पेपरों में छप रहा है कि आज 12 हाईवा पकड़ी गई ।

---

[27] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री कवासी लखमा :- रेत को बूंद नहीं बोलते, पानी को बूंद बोलते हैं (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- एमन पानी ला तौलने वाला हे, आलू ला लीटर कहने वाले हे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप बैठिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मुझे तो कई बार कोफ्त होती है कि जब वे बिजली के टॉवर काटकर ले जाते हैं, पुल के खम्बे के पास से रेत खोद लेते हैं तो हम कहते हैं कि एफ.आई.आर. करिए तो विभाग के लोग कहते हैं कि हम हम जांच कर रहे हैं, हम कार्रवाई करेंगे । वे लोग कौन हैं, उनके खिलाफ आप कार्रवाई क्यों नहीं कर सकते ? क्या कारण है ? यह मैं नहीं कहता, हमारे मोहन मरकाम जी ने कहा कि डी.एम.एफ. मद के 17 करोड़ रूपए की मेरी विधान सभा क्षेत्र में भ्रष्टाचार हुआ । वह सिर्फ 17 करोड़ नहीं है ।

श्री अमरजीत भगत :- उपाध्यक्ष महोदय, इनकी भाषण रिपीट हो रहा है । वही बात को बार-बार बोल रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, खाली वह 17 करोड़ नहीं है, वह 3 हजार करोड़ है । 3 हजार करोड़ का [XX][28] हो रहा है । मैं आपसे कहना चाहूंगा कि इस सरकार के राज में कोई भी खुश नहीं है, यह अंतरविरोधों से घिरी हुई सरकार है । तीन महीने के लिए इन्होंने मंत्रियों का विभाग परिवर्तित कर दिया । रविन्द्र चौबे जी हमारे मित्र हैं, वरिष्ठ मंत्री हैं, कृषि विभाग में अच्छा काम कर रहे थे। यह क्या हो रहा है ? कम से कम एक ऐसा व्यक्तित्व जो इस सदन में आज से नहीं, 40 साल से हैं, हम सब सम्मान करते हैं । वे थोड़े बहुत बीमार हैं, बीमारी की अवस्था में उनका उत्साहवर्धन करना चाहिए, उसकी बजाय इतनी [XX] के [XX] मैंने नहीं देखा कि उनका विभाग छीनकर दूसरे मंत्री को दे दिया गया। यह क्या है ?

श्री अमरजीत भगत :- उपाध्यक्ष महोदय, ये तो आपत्तिजनक है । [XX] कह रहे हैं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, इसको विलोपित किया जाये । इस तरह का बात करने का इनको अधिकार है क्या ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैंने व्यक्ति को नहीं कहा है, सरकार को कहा है ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- इनके पास बोलने के लिए कुछ नहीं है, जबरदस्ती का उल्टा-सीधा बोले जा रहे हैं । इनको बोलने से बंद करवाईए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मंत्री जी किस तरह की भाषा का उपयोग करते हैं, वे लगभग 50 बार इस तरह की भाषा का उपयोग कर चुके हैं । मैं विरोध नहीं कर रहा हूं।

---

[28] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, क्या आप इसी तरह की भाषा का उपयोग करेंगे ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बताईये ये इसी तरह की बात करेंगे ? यह कैसे चलेगा ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- परन्तु आप इन सब चीजों को प्रतिबंधित करिये, इसको विलोपित करिये, आप (सचिव महोदय) देख लीजियेगा। उन्होंने 50 बार उटपटांग शब्द कहा है। क्या उनको बोलने की छूट है ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष जी, आप इस तरह की बात थोड़े ही करेंगे ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, आप रिकार्ड निकालकर देख लीजिये, अकेले शिव डहरिया जी, बृजमोहन जी के भाषण के दौरान सौ बार से ज्यादा खड़े हुए हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सौ बार गलत बोलेंगे तो मैं 2 सौ बार उसको रिपीट करूंगा, इसमें कोई दिक्कत नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय अपना भाषण समाप्त करिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ..।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अउ का बाच गय, सब तो हो गय, अब कुछ नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह सरकार कितने अन्तर्विरोधों से घिरी हुई है। विधायक, मंत्री के ऊपर जान से मारने का आरोप लगाता है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कहां ?

श्री अमरजीत भगत :- कहां ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- जबर्दस्ती का कुछ भी बोले जा रहे हो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- विधायक थाने में लगवाता है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अब बोलेंगे तो बोलोगे कि टोक रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- विधायक टी.आई. को कहता है कि (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय बृजमोहन जी, आप समाप्त करें। बहुत समय हो गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आखिरी एक मिनट। मैं पहला वक्ता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- फिर भी एक घंटे से ज्यादा हो गया है। अभी 90 लोग हैं। अब आपको 2 मिनट से ज्यादा समय नहीं मिलेगा। (व्यवधान) आप लोग कोई भी बगैर अनुमति के खड़े नहीं होंगे। कृपया मैंने मंत्री लोगों को बार-बार निर्देशित किया हूं कि बगैर अनुमति के खड़े नहीं होंगे। एक बार सदस्य का चल जायेगा। आप एक मिनट में अपनी बात खत्म करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- विधायक टी.आई. को कहता है कि 5-7 हजार रूपये ले लेते तो ठीक है, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। पीड़ित महिला है, 50 हजार रूपये लिए हो, यह सही नहीं है, उसको वापिस करो। 5 विधायक, मंत्री के बंगले में घुसकर आरोप लगाते हैं कि ट्रांसफर के नाम पर भ्रष्टाचार हो रहा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है। एक कांग्रेस नेता कहता है कि गृह मंत्री की औकात नहीं है कि मुझे गिरफ्तार कर ले। विधायक, अपने सरकार के खिलाफ धरने में बैठता है। विधायक, एस.पी. को दंगाई कहता है। विधायक विधानसभा में डी.एम.एफ. में बंदरबांट का आरोप लगाता है। कांग्रेस के लोगों के द्वारा मुख्यमंत्री और सरकार के खिलाफ आरोप को देखकर इस सरकार को लाज नहीं आती ?

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये समाप्त करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह सरकार है या सर्कस है ? लोगों को जरा यह बताने की जरूरत है। मैं अंत में दो लाईनों के साथ अपनी बात समाप्त करूंगा। यह सरकार नवजवानों के भविष्य को सुरक्षित नहीं कर पा रही है और उसके कारण अनुसूचित जाति, जनजाति के नवजवानों को निवस्त्र होकर सड़कों पर कूदना पड़ रहा है।

श्री रामुकमार यादव :- रील ह फंस गय हे साहब।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह सरकार गरीबों को मकान नहीं दे पा रही है, यह सरकार गरीबों के घरों में नल नहीं लगा पा रही है। यह सरकार रेत में माफियाराज और भ्रष्टाचार कर रही है। कैम्पा मद में भ्रष्टाचार कर रही है, डी.एम.एफ. में भ्रष्टाचार कर रही है। स्कूलों में शिक्षक नहीं है, किसान परेशान हैं, उसको खाद और बीज नहीं मिल रहा है। इसलिए इस सरकार के खिलाफ :-

"लूट तूने भूपेश, लाखों बच्चों के सपनों को,
दिल्ली वालों को खुश करने लूटा तूने अपनों को,
करवट लेती है प्रदेश की जनता तेरे झूठे वादों से,
पुन: प्रदेश खुशहाल करेगी, भा.ज.पा. अपने मजबूत इरादों से। "

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, इस विधानसभा के आखिरी सत्र के आखिरी दिन प्रतिपक्ष के द्वारा अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है। आपने 109 बिन्दुओं पर आरोप-पत्र दिया है। लेकिन दुर्भाग्य है कि बृजमोहन जी ने अपनी बात शुरू की और उस 109 बिन्दुओं पर केवल 1 बिन्दु को टच किया। उन्होंने शराब के बारे में अपनी बात कही, मैं उस पर बाद में आऊंगा। बाकी यहां कुछ लोगों ने निर्वस्त्र प्रदर्शन किया, वह उसी पर लगे रहे, एक घंटा उसी पर बोले। यह उनकी मानसिकता है, भारतीय जनता पार्टी की मानसिकता है। आप ऐसे लोगों का समर्थन क्यों करते हैं ? कल हमने आपको सदन में देखा। आप हाथ में निर्वस्त्र महिला की तस्वीर लिए खड़े थे। आप निर्वस्त्र लोगों के पक्ष में अपनी बात कह रहे थे। जब हम पूछते हैं कि मणीपुर की घटना में आप और आपकी पार्टी चुप क्यों है तो आपके पास कोई जवाब नहीं होता है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, इस सदन में छत्तीसगढ़ की चर्चा होगी या मणीपुर की चर्चा होगी ?

डॉ.श्रीमती रश्मि आशीष सिंह :- आपका केन्द्रीय नेतृत्व छत्तीसगढ़ और राजस्थान की चर्चा कर रहा है । व्यवधान

डॉ. श्रीमती लक्ष्मी ध्रुव :- पूरे छत्तीसगढ़ का नाश किया है । व्यवधान

डॉ.श्रीमती रश्मि आशीष सिह :- आपका केन्द्रीय नेतृत्व आवश्यक रूप से चर्चा कर रहा है । आप सीमित नहीं कर सकते । व्यवधान

उपाध्यक्ष महोदय :- आप बैठ जाईये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ऐसा बोलकर छत्तीसगढ़ के अनुसूचित जाति, जनजाति युवाओं का अपमान कर रहे हैं, प्रकाशमुनि साहब का अपमान कर रहे हैं, उसके मुद्दे को हमने उठाया । इस सरकार में दम नहीं है कि वह कार्यवाही करके बताये ।

श्री अमरजीत भगत :- बार-बार अनुसूचित जाति और जनजाति का नाम लेते हैं, आरक्षण जो पारित किये हैं, उसमें दस्तखत क्यों नहीं करते हैं ? राज्यपाल जी ने आज तक अनुसूचित जाति और जनजाति के आरक्षण पर दस्तखत नहीं किये हैं ।

श्री रामकुमार यादव :- आर.एस.एस. के लोंगों का वह षड़यंत्र है । आर.एस.एस. के लोग भड़कावथे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय आपने मणिपुर की घटना का जिक्र किया । प्रधानमंत्री जी ने ट्विट किया तो माननीय मुख्यमंत्री जी का भी जवाब आया कि क्या छत्तीसगढ़ में मणिपुर जैसी घटना घटित नहीं हुई है । फोटोग्राफ्स और वीडियो अभी दे देता हूँ । कोंडागांव के उरदा थाना में जून वर्ष 2022 में घटना घटित हुई है, एक लड़की और लड़के को निर्वस्त्र करके हाथ में जुड़ा बांधकर पूरे गांव में घुमाया गया है।यह आपके राज में हुआ है । अगर प्रधानमंत्री जी ने ट्विट में छत्तीसगढ़ का जिक्र कर दिया तो क्या गलत कर दिया ? गलत हुआ है तो गलत हुआ है, चाहे वह ..(व्यवधान) कोंडागांव की घटना को पूरा पेपर कटिंग दे देता हूँ ।

श्री कवासी लखमा :- आदिवासी की बात कर रहे हैं ।(व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी मानसिकता की बात कर रहा हूँ । हमने देखा है, 15 साल आपकी हुकूमत थी, झलियामार में क्या हुआ था ? आदिवासी बच्चियों के साथ क्या हुआ था ? इसी सदन में हम लोग बैठे थे, हमने सब कुछ देखा है, लेकिन मैं कह रहा था । आपने 109 बिन्दुओं पर आरोप लगाये, उन बिन्दुओं पर चर्चा करना था । सरकार को कटघरे में खड़े करने की कोशिश करनी थी, लेकिन मैं समझता हूँ कि आज जितना नीरस भाषण आदरणीय बृजमोहन अग्रवाल जी ने दिया है,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आरोप पत्र के एक शब्द का भी उल्लेख नहीं कर पाये । अविश्वास प्रस्ताव का हश्र क्या होने वाला है, हम लोग देख रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- विधान सभा के नियमों में क्या उल्लेख है, हम खाली अविश्वास प्रस्ताव देने के बाद अपने मन की सब बातें बोल सकते हैं, आरोपपत्र पर बोलना ही आवश्यक नहीं है । आप तो पुराने संस्कृति मंत्री हैं, अगर हम आरोप पत्र नहीं देते तो भी हमें बोलने का अधिकार था । यह तो हमने आपकी सुविधा के लिये दे दिया कि आप जवाब तैयार करें ।

श्री मोहन मरकाम :- मन की बात बोलिये ना, फिर आरोप लगाने की क्या बात है ? आप 109 बिन्दुओं पर आरोप लगाये हैं, उसको बाहर कर दीजिए । उस पर चर्चा ही न हो । आप मन की बात कहते रहिये, आरोप बेकार है ।

श्री नारायण चंदेल :- मोहन जी, मन की बात हम बोलेंगे, आप प्रधानमंत्री के मन की बात सुना करें ।

श्री रविन्द्र चौबे :- उपाध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ में हमारा नारा है, यहां की जनता का विश्वास है, भूपेश है तो भरोसा है और भाजपा है तो धोखा है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- भूपेश है तो धोखा है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़िया संस्कृति का मान बढ़ाया है, छत्तीसगढ़ियों का मान बढ़ाया है..।

श्री अजय चन्द्राकर :- सर, आप ही को टोकूंगा, मैं दूसरे को नहीं टोकता। जाति-पाति आ जाती है, इस बात का नहीं है । आपने कहा है कि भरोसा है तो भरोसा तो आप ही के साथ टूटा है । पहले तो इसको बता दो । स्वेच्छा से छोड़े हो कि छोड़वाया गया है, गनपाईंट में । छत्तीसगढ़ की संस्कृति क्या है, छत्तीसगढ़िया का मतलब क्या है, आप बोलते हो तो थोड़ा परिभाषित कर दीजिए और नहीं तो उसका उपयोग मत कीजिए । मैं नहीं जानता, असल बात आप ही जानते हो, आप ही लोग उपयोग करते हो, छत्तीसगढ़िया होता क्या है, उसकी परिभाषायें क्या है और छत्तीसगढ़ी संस्कृति है क्या ? यह थोड़ा बताईये ।

श्री रविन्द्र चौबे :- फरियातेच हंव । उपाध्यक्ष जी, माननीय बृजमोहन जी ने और माननीय अजय जी ने मेरे लिये सहानुभूति के शब्द कहे हैं, उसके लिये आपको धन्यवाद देता हूँ । आपने मेरे विभाग के लिये पुरानी प्रशंसा की है, इसके लिये और धन्यवाद देता हूँ, लेकिन मंत्रिमंडल की जिम्मेदारी आदरणीय मुख्यमंत्री जी का विवेकाधिकार होता है । मेरे पास कोई जिम्मेदारी कम नहीं है । आप काहे के लिये इतना परेशान हो रहे हैं कि रविन्द्र चौबे जी का विभाग बदल दिया गया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपका भरोसा बना हुआ है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- उपाध्यक्ष महोदय, दूसरी बात, एक विभाग हटाये और दो विभाग मिले हैं, ऐसा आदरणीय ताम्रध्वज भैया बता रहे हैं। जहां तक छत्तीसगढ़ियों की बात है, मध्यप्रदेश की विधान सभा में बृजमोहन जी हमारे साथ बैठे थे। जब राज्य के निर्माण की बात हुई थी तो सदन में मैं और आप एक साथ अपनी बात कह रहे थे। हमने तब कहा था कि हमारा अपना छत्तीसगढ़ राज्य बनेगा, छत्तीसगढ़ियों का सम्मान बढ़ेगा, छत्तीसगढ़ियों में स्वाभिमान बढ़ेगा, यहां का विकास होगा, यहां की समृद्धि बढ़ेगी, हमारा छत्तीसगढ़ पूरे हिंदुस्तान का सबसे समृद्ध राज्य बनेगा। लेकिन दुर्भाग्य है कि 15 साल तक आपकी हुकुमत रही, आपने छत्तीसगढ़ियों का, हमारे गांव वालों का, गरीबों का और किसानों का सम्मान नहीं बढ़ाया। मैं तो आदरणीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को धन्यवाद दूंगा कि जिस दिन से यह सरकार बनी है, उस दिन से छत्तीसगढ़ियों के सम्मान में सबसे ज्यादा काम हुआ है। (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ी राज्यगीत बनाया गया, छत्तीसगढ़ी महतारी का सम्मान बढ़ाया गया, छत्तीसगढ़ के किसानों को स्वाभिमानी बनाया गया, उनको राशि दी गयी, छत्तीसगढ़ की बोली को, छत्तीसगढ़ के तीज-त्यौहार को, छत्तीसगढ़ के खान-पान को, छत्तीसगढ़ के बोरे-बासी को भी सम्मान मिला। आप 15 साल तक तो भूल गये थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- बोरे बासी, क्या यही आपकी संस्कृति है ?

श्री रविन्द्र चौबे :- आदरणीय अजय जी, हां, हमारे आदरणीय खूबचंद बघेल जी ने, माननीय सुंदर लाल शर्मा जी ने, मिनी माता जी ने, बिसाहु दास महंत जी ने और चंदूलाल चंद्राकर जी ने जो सपना देखा था, वे सारे सपने अब साकार हो रहे हैं। उन्होंने जो स्वाभिमान का सपना देखा था वह पूरा हो रहा है। इसलिये हम कहते हैं कि अभी हमारी 71 की सरकार है और जितने काम हो रहे हैं, आने वाले समय में छत्तीसगढ़ में 75 की सरकार बनने वाली है (मेजों की थपथपाहट)। यह अविश्वास प्रस्ताव का कोई मतलब नहीं है। उपाध्यक्ष महोदय, यह पूरे अविश्वास प्रस्ताव में ऐसा लगता है कि भारतीय जनता पार्टी अवसाद से ग्रसित है। इनका नेतृत्व कंफ्यूज्ड है। इनकी पार्टी में लगातार बदलाव किये जा रहे हैं। धरमलाल कौशिक जी को कब इधर बैठा दिया गया, इनके प्रदेश अध्यक्ष को कब बदल दिया गया, इनके राष्ट्रीय प्रभारी कितनी बार बदल जाते हैं। यह अपनी पार्टी की तरफ देखते नहीं है और हमारे अंतर्विरोधों के बारे में आरोप लगाते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि हमारे मुख्यमंत्री जी का चेहरा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- चौबे जी, आपने कहा कि बात करते हैं हमारे अंतर्विरोधों के बारे में, मतलब आपने स्वीकार कर लिया कि आपके दल में अंतर्विरोध है।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं आपकी पार्टी के बारे में बोल रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं, आपने कहा कि हमारे अंतर्विरोधों के बारे में कहा है।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैंने यह कहा कि यह आरोप आपने लगाया है।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन के में तो मार-पिटान हो जात हवे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- उपाध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव क्यों लाया गया ? यह अंतिम सत्र है। माननीय धरमलाल कौशिक जी नेता प्रतिपक्ष थे, अब नारायण चंदेल जी को नेता प्रतिपक्ष बना दिया गया है। इनका केंद्रीय नेतृत्व लगातार दबाव डाल रहा है। एक हण्टर चलाने वाली आयी, आपने उनकी बात नहीं सुनी, दूसरे जामवंत जी आये, आपने उनकी भी बात नहीं सुनी, तीसरे नितिन जी आये, उनकी बात चली नहीं, चौथे माथुर जी आये, पता नहीं कितने लोगों को बदलना है और आपके कितने प्रभारी आयेंगे। आपकी पार्टी का क्या अंतर्विरोध है। लेकिन दिखाने के लिये और पार्टी में आपके प्रति विश्वास हो, इसलिए आप यूं ही औपचारिकता करके आज का अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। जैसे बृजमोहन अग्रवाल जी ने कहा, मैं तो लगभग 35-40 सालों से विधान सभा में बैठा हूं, तीन-तीन बार प्रतिपक्ष में भी रहा हूं, लेकिन इतना खोखला अविश्वास प्रस्ताव, इस अविश्वास प्रस्ताव में कोई दम नहीं है, कोई आरोप नहीं है। इस प्रकार से मैं जो समझ पा रहा हूं भारतीय जनता पार्टी के द्वारा केवल औपचारिकता करने के लिये यह अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, 2 हजार करोड़, 5 सौ करोड़ का आरोप तो ई.डी. ने लगा दिये हैं। हम क्या आरोप लगायेंगे। आपके मोहन मरकाम जी ने डी.एम.एफ. में घोटाले का आरोप लगा दिया है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उसी आरोप को तो सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया है कि आप लोग भेदभाव कर रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, शैलेश पाण्डे जी ने आरोप लगा दिया है, तो हमको आरोप लगाने की क्या जरूरत है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नरेंद्र मोदी की सरकार, केंद्र की सरकार, कांग्रेस शासित राज्यों के साथ भेदभाव कर रही है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बृहस्पत सिंह जी ने आरोप लगा दिया है। जयसिंह अग्रवाल जी ने आरोप लगा दिया है। हमको आरोप लगाने की क्या जरूरत है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपकी जांच को सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है कि आप फर्जी जांच करवाते हो। यदि किसी में दम है तो सीधे आकर लड़ें। आप यह ई.डी. सी.डी. को क्यों भेजते हैं?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय,यह पूरे आरोप असत्य का पुलिंदा है । उन्होंने 2 हजार करोड़ का घोटाला, 5 हजार करोड़ रूपये का घोटाला उजागर किया। यह लोग कितनी सारी बातें कर रहे हैं। आपकी कभी दिल्ली की सरकार से बोलने की हिम्मत हुई कि आप छत्तीसगढ़ के हितों के बारे में बात करें। माननीय मुख्यमंत्री जी नीति आयोग की बैठक में कहते हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी लगातार मांग करते हैं। प्रधानमंत्री जी छत्तीसगढ़ के हिस्सेदारी का जो पैसा है, उसे आप क्यों रोकते हैं ? हमारा आप जी.एस.टी. की क्षतिपूर्ति 30-32 हजार करोड़ रूपए नहीं दे पाते हैं। कोयले की रायल्टी नहीं दे पाते

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हैं। माईनिंग की सेस की रायल्टी नहीं दे पाते हैं। आप चावल का पैसा नहीं दे पाते हैं। आप छत्तीसगढ़ के हकों को लगातार नुकसान करते हो। कभी दिल्ली की सरकार से एक अक्षर बोलने की हिम्मत है?

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय रविन्द्र चौबे जी हमें जो देना है हमने दे दिया।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, दिल्ली की सरकार के बारे में कहिहौ तो एमन भा.ज.पा. वाले मन के डर में चेथी के रूंआ खड़े हो जथे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हम जो देते हैं उसको वापस कर देते हो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मनमोहन सिंह जी की सरकार के समय छत्तीसगढ़ की सरकार को 5 सालों में 40 हजार करोड़ रूपये मिले थे और अभी माननीय मोदी जी की सरकार के साढ़े 4 साल आपकी सरकार आने के बाद आपको 1 लाख 5 हजार करोड़ रूपये मिला है। यह मेरे पास आंकड़े हैं यहां किस-किस विभाग को कितना-कितना पैसा मिला है। आपको 1 लाख 5 हजार करोड़ रूपये मिला है। आपको ढाई गुना मिला है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप जी.एस.टी. के बाद मूल ला ला देव। हमन ला 20 हजार करोड़ रूपये लेना है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय बृजमोहन जी यह बता दीजिए कि कौन से धर्म खाते में दे दिया है। उसके एवज में हमसे कोयला, बाक्साईट, एल्युमिनियम और सारे मिनरल्स लेते हैं उनके एवज में राशि देते हैं। केन्द्र सरकार कोई [XX] का नहीं देता है। जो मेरा हक है, वह देता है। छत्तीसगढ़ का जो हक है, वह देता है कोई फ्री में राशि नहीं देता है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप असत्य क्यों बोलते हैं?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने यह तो नहीं कहा कि हमें केन्द्र सरकार से राशि नहीं मिली है। हमारा यह हक है। हमें जो मिलना चाहिए था, वह हमें मिला है, लेकिन हमें और राशि मिलनी चाहिए थी। प्रोडक्टिव स्टेट में क्षतिपूर्ति की जी.एस.टी. की बात हुई थी कि हमको केन्द्र सरकार से 30-32 हजार करोड़ रूपये मिलने थे। आप उसके लिए क्यों नहीं बोलते हैं? हमें केन्द्र सरकार राशि क्यों नहीं देती है? हम लोग लगातार मांग करते हैं। अभी प्रधानमंत्री जी आये थे। वह हमारे देश के प्रधानमंत्री हैं। हम उनकी ईज्जत करते हैं, लेकिन सार्वजनिक मंच से प्रधानमंत्री से असत्य कथन आपने करवाया। प्रधानमंत्री जी यह कहते हैं कि केन्द्र सरकार छत्तीसगढ़ की धान खरीदी के लिए पैसा देती है। यह दुर्भाग्य है। आपने कभी पूछा कि केन्द्र सरकार कौन से मद से पैसा देती है ? कभी आपने जानकारी लेने की कोशिश की कि हिन्दुतान के प्रधानमंत्री छत्तीसगढ़ के रायपुर की धरती में आकर किसानों के साथ असत्य कथन करके चले गये। लगभग 32 हजार करोड़ रूपये आर.बी.आई. की लिमिट, बैंकों से कर्ज, हम ब्याज पर उठाते हैं और प्रदेश में धान की खरीदी करते हैं और जब हम चावल देते हैं तब

केन्द्र सरकार हमें पैसा देती है। हमें केन्द्र सरकार धान की खरीदी के लिए पैसा नहीं देती। आप लोगों ने लगातार प्रधानमंत्री जी से असत्य कथन करवाया है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कोई मोदी जी हा हमन ला कोई खेत ला बेचकर पइसा नइ देवय।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय चौबे जी, धान से ही चावल बनता है या आपने कोई नई चीज निजात की है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वह मोदी जी के खेत के पईसा न हरे ओ हा।

श्री बृहस्पत सिंह :- साहब, आप बाकी राज्यों में क्यों धान नहीं खरीद लेते। आपके पास उत्तर प्रदेश राज्य है वहां 12 रूपये किलो में धान बिकता है। आप वहां भी धान खरीद लेते।

श्री शिवरतन शर्मा :- उसमें एक सौ दो रूपये केवल आपकी मण्डी का टैक्स हो जाता है। आपने केवल मण्डी टैक्स लेने के लिए पैसा बढ़ा दिया। आप किसानों को वह लाभ नहीं दे रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी आपको मालूम है धान किस रेट में बिक रहा है? आपको मालूम है मुझे यह जानकारी है कि आपने एक साल के लिए कितना पैसा लेकर बाहर धान भेजने ऊपर में मण्डी टैक्स को समाप्त किया था। अभी आपने 13 तारीख से मण्डी टैक्स 5.2 लगा दिया है। उसके कारण छत्तीसगढ़ के किसानों का धान 2200 रूपये की जगह 2000 रूपये में बिक रहा है। आप किसानों का शोषण करने वाले हैं। उसमें 200 रूपये कम हो गया।

श्री शिवरतन शर्मा :- जिस दिन टैक्स लगा। सीधे 150 रूपये तक रेट कम हो गया।

संसदीय सचिव, आदिम जाति मंत्री से संबद्ध (श्री द्वारिकाधीश यादव) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के क्षेत्र में 1500-1600 रूपये है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राईस मिल वालों से सौदा चल रहा है। पहले उन्होंने 2 करोड़ रूपये दिया था । अभी उनसे मांगा जा रहा है कि आप चावल एक्सपोर्ट करने के लिए 5 करोड़ रूपये देंगे तो मण्डी टैक्स समाप्त होगा। किसानों की कीमत पर मंडी टैक्स 5.2 प्रतिशत करके 5 करोड़ रुपये के लिये किसानों का 200 करोड़ रुपये का नुकसान कर रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपके कृषि मंत्री बदल गये हैं इसलिए आपको मालूम नहीं है। ताम्रध्वज साहू जी को मालूम है कि 5 प्रतिशत मंडी टैक्स बढ़ा दिये हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय बृजमोहन जी को जानकारी नहीं है कि एक्सपोर्ट के लिए केन्द्र सरकार ने प्रतिबंध लगाया हुआ है। हमने जब एक्सपोर्ट करने वाली धान पर मंडी टैक्स समाप्त किया था, छत्तीसगढ़ से तीन गुना धान, चावल एक्सपोर्ट हुआ था। लोगों का लाभ हुआ इसलिए केवल एक साल में छत्तीसगढ़ में साढ़े 300 नई राईस मिले लगी हुई हैं। लोगों को रोजगार बढ़ा है, नई राईस मिल लग रही हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- एक्सपोर्ट करने के कारण, मंडी टैक्स के कारण राईस मिले बंद हो गई हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- कोई राईस मिल बंद नहीं हुई हैं। आप जिस 05 प्रतिशत की बात कर रहे हैं, आपको मालूम है कि पंजाब और हरियाणा में 12 प्रतिशत टैक्स केन्द्र सरकार देती है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- बृजमोहन जी, आपके भाई की राईस मिल है न, वह राईस मिल के अध्यक्ष हैं, उनसे पूछ लीजिए, आपको सब जानकारी मिल जायेगी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अभी दुर्ग में छाप पड़ा है, कुरूद में भी छापा पड़ा है। कितने पैसे वसूली होती है। लोगों ने एडवांश दे दिया, उनको पेमेंट का भुगतान नहीं हो रहा है, अरे, अभी ई.डी. इनकम टैक्स वाले वाले आये हुए हैं, अभी मत लो। किनके यहां छाप पड़ा है ?

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, अपने समय में तो बोल नहीं पाये, बीच-बीच में टोकना शुरू कर दिये। यह बीच-बीच में टोकने की बात करते थे कि बीच में मत टोका करो। अब यह क्या कर रहे हैं ? यह अपने समय में तो कुछ बोल नहीं पाये, उनकी बोलती बंद थी। अब बीच-बीच में खड़े होकर टोकने का काम कर रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ऐसा है हम उनके स्वास्थ्य की चिंता कर रहे हैं। हम उनको बीच-बीच में रेस्ट दे रहे हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष जी, जब जल संसाधन मंत्री थे, तब भी रमन सिंह जी की सरकार इनके विभाग में छापा मारती थी।

उपाध्यक्ष महोदय :- लगभग दो घंटे हो गये हैं। और भी वक्ता हैं, कृपया समाप्त करें।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष जी, धान के बारे में,, किसान के बारे में, धान खरीदी के बारे में भारतीय जनता पार्टी को बोलने का कोई अधिकार नहीं है। यह तीन बार लगातार हुकूमत में आये थे। 270 रुपये का, 300 रुपये का बोनस देंगे, 2100 रुपये में धान खरीदी करेंगे, किसानों के साथ असत्य बोला। यह छत्तीसगढ़ की सरकार है, आदरणीय भूपेश बघेल जी ने कहा कि 2500 रुपये में धान खरीदेंगे, इस साल 2640 रुपये में हमने धान खरीदा है। (मेजों की थपथपाहट) 107 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई है और आदरणीय अजय चन्द्राकर जी, आगामी वर्ष में हमने 20 क्विंटल धान खरीदी करने का निर्णय लिया है।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय आप यह बात बतला दीजिए, आप मेरी बात सुन लीजिए, यदि नहीं सुनते तो चले जाईये, लेकिन मैं बोलूंगा।

श्री अमरजीत भगत :- बिना काम की बात बोलते हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बोले बर आपके लिख के दें।

श्री ननकीराम कंवर :- आप यह बताईये कि आपने कितना धान का रकबा काटा है ? माननीय

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष जी होते तो मैं बतलाता। अब वह सुन रहे होंगे, कल बतला चुका हूं। उनके क्षेत्र में हर किसान से धान का रकबा काटे हैं। उनके क्षेत्र के लोग मेरे पास आये थे कि साहब पटवारी 5 हजार रुपये मांग रहा है। मैंने कलेक्टर को बोला कि आपने किससे रकबा काटा है, किसने कहा है कि धान का रकबा काटो ? और रकबा काटे तो एक गरीब महिला का धान का रकबा काटे और वह भी सक्ती क्षेत्र की महंत है। उसकी साढ़े तीन एकड़ जमीन है, उसका दो एकड रकबा काट दिया, उसने डेढ़ एकड़ रकबे की धान बिक्री की है। आप लोग मेरी बात सुन लीजिए और यदि नहीं सुनना है तो चले जाईये। मैं तो बोलूंगा, माननीय उपाध्यक्ष जी ने बोलने के लिए अनुमति दी है। वह महिला रोते हुए मेरे पास में आई। मैं कूटे चला गया था।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- ननकीराम जी, उम्र का ख्याल रखिये भाई।

श्री ननकीराम कंवर :- आप लोग सुन लीजिए, मैं कभी कभार तो बोलता हूं और गलत बोलता नहीं हूं। आप जैसे गलत काम नहीं करता। उसके 2 एकड़ धान के रकबे को काट दिया, डेढ़ एकड़ रकबे की धान बेचने के बाद में उसको कितना पैसा मिला होगा। माननीय मुख्यमंत्री जी इतना भी लोग समझें कि छत्तीसगढ़ में कोई जानकार आदमी होता, आपने पिछले वर्ष की बजाय ज्यादा धान खरीदी, यह पेपर में आया था। आप यह बताईये कि आपने किसानों का इतना धान का रकबा काटा है, हर क्षेत्र में किसानों के धान का रकबा काटा है, कोई भी विधायक कह दे कि मेरे क्षेत्र में किसानों के धान का रकबा नहीं काटा है, मैं अभी इस्तीफा दे दूंगा। आप क्या बात कर रहे हैं ? उसके बाद ज्यादा धान कहां से खरीदा है, इसका मतलब है कि व्यापारियों से खरीदा है। इसका उत्तर आप देंगे, क्योंकि आप कृषि मंत्री हैं।

समय :
1.55 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

श्रम मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- अध्यक्ष जी, आ गइस। प्रणाम कर ले अउ एक बात अउ बता दे।

श्री ननकी राम कंवर :- मैं उनको कल बताया।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तैं एक बात अउ बता दें। एक मिनट, सुन न ग। तोरेच बात ला सुनत हौ। हमरो मन के बात ला सुन ले न। तैं एक बार गृह मंत्री रहे ता ओ दारू वाले मन तोला कइसे धर के ले गय रिहीस हे, तोला बता? ओ दारू वाला मन हर लटपट दउड़त रहय अउ धर लेहे रिहीसे।

श्री ननकी राम कंवर :- सुनिये न। जब मैं गृह मंत्री बना था, तब इस प्रदेश में अपराध कम हुआ। आप जिस विभाग में हो, ऐसा कभी नहीं किये होंगे। मैंने माननीय मुख्यंत्री जी को उस समय भी बोला था। आप लोग गलत बोलते हैं इसलिए मैं तो बोलता हूं कि कांग्रेस का किसी भी प्रदेश में, गृह विभाग में 5 साल में अपराध में कमी हुई हो तो बता दीजिये, मैं उस मंत्री का पांव पड़ने जाऊंगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तैं गृह मंत्री जी करा जा।

श्री ननकी राम कंवर :- अभी लूट चल रहा है, मैंने बताया है और कार्रवाई नहीं हो रही है। आज भी क्या बोलते हैं कि मेरे पास में (व्यवधान) से आया था। साहब मैंने रिपोर्ट दिया है तो थानेदार क्या कहता है मालूम?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, ये श्यान जबरदस्ती के अंड-बंड बोलत हे।

श्री ननकी राम कंवर :- एक मिनट साहब, मैं उनको जवाब तो दे दूं।

अध्यक्ष महोदय :- करिये न, करिये। आप बोलने दीजिये न। वे बेचारे सीनियर आदमी हैं।

श्री ननकी राम कंवर :- पहले मेरी बात सुन लीजिये। आप लोगों के राज में आपके विभाग में कोई भी कार्रवाई नहीं हो रही है। मैं कम से कम दस अपराध बता दूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- मेरी बात सुनिये न।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अभी तोर नंबर नइ आहे।

अध्यक्ष महोदय :- चौबे जी, एक मिनट। महाराज।

श्री ननकी राम कंवर :- मैं नंबर से नहीं बोल रहा हूं। मैं उसका जवाब दे रहा हूं।

<u>जन्मदिवस की बधाई</u>

श्री ननकी राम कंवर, सदस्य

अध्यक्ष महोदय :- ननकी राम जी, आप सीनियर आदमी हैं। आज आपका जन्मदिन है। हम सब लोग आपको बहुत-बहुत बधाई देते हैं। (मेजों की थपथपाहट) आपने किसी को बताया नहीं? माननीय मुख्यमंत्री जी।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- अध्यक्ष महोदय, ननकी राम कंवर जी हर जो भाषण देवत रिहीस हे न त अमिताभ बच्चन हर बोलथे कि मैं जहां से खड़ा होथव, वहीं से लाईन शुरू होथे।

अध्यक्ष महोदय :- वह आपके सीनियर नेता हैं। बेचारे को बधाई दे दीजिये। हमारे माननीय सदस्य ननकी राम जी का जन्मदिन है।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- आपको जन्मदिन की बहुत-बहत बधाई। पूरे सदन की ओर से बधई। आप शतायु हो, दीर्घायु हो, स्वस्थ रहे और भाटो प्रणाम।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, ननकी राम जी कंवर इस सदन के शायद सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं। वह वर्ष 1977 में भी विधायक रहे हैं। वह 1972 से चुनाव लड़ रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- रामपुकार जी भी वरिष्ठ सदस्य हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम सब और आज भी वह सक्रिय हैं। आज भी वह खेत में जाकर हल जोतते हैं। हम सब उनके स्वस्थ होने की, उनके प्रसन्न रहने की, उनके दीर्घायु होने की कामना करते हैं। मैं चाहूंगा कि आप सब तालियां बजाकर उनका अभिनंदन करें, स्वागत करें। (मेजों की थपथपाहट)

नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम माननीय ननकी राम कंवर जी के स्वस्थ्य एवं दीर्घायु होने की कामना करते हैं। हम उनको बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं देते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आपको बधाई । चलिये, माननीय मंत्री जी।

मंत्रिमण्डल के विरूद्‌ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमश:)

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, बृजमोहन जी वरिष्ठ विधायक हैं। आपको पीछे करके इधर भाषण दे रहे थे। यह अच्छा लग रहा है क्या?

अध्यक्ष महोदय :- मेरे लिए जो रखा है, वही तो व्याख्या करेगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, मैं कह रहा था कि देश के प्रधानमंत्री रायपुर आए थे। वे प्रधानमंत्री जी हैं, हम उनका सम्मान करते हैं, लेकिन उन्होंने सार्वजनिक मंच में छत्तीसगढ़ के किसानों का अपमानित करने वाली बात कही है कि हम छत्तीसगढ़ के धान खरीदने के लिए हम पैसा देते हैं। (सत्ता पक्ष के सदस्यों द्‌वारा झूठ-झूठ की आवाज) इससे ज्यादा असत्य कोई बात नहीं हो सकती।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कृषि मंत्री जी, आप जरा बता दीजिये कि आपने बोनस के रूप में 25 हजार करोड़ रूपये दिया है और प्रधानमंत्री जी ने आपका जो चावल खरीदा है, उसके अगैंस्ट में सपोर्ट प्राइस में जो धान खरीदा है, उसके अगैंस्ट में 1 करोड़ 25 हजार रूपये दिया है। 1 लाख 25 हजार करोड़ रूपये दिया है। आपने सिर्फ 25 हजार करोड़ रूपये दिया है। उंगली कटा कर शहीद होने की बात करते हैं। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आज तक केन्द्र सरकार ने धान नहीं खरीदा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अगर केन्द्र सरकार 2184 में धान नहीं धरीदेगी तो आपकी यू-यू हो जाएगी। उसके खिलाफ धान नहीं खरीद सकते।

श्री अमरजीत भगत :- आज तक केन्द्र ने धान नहीं खरीदा है।

श्री रविन्द्र चौबे :- बृजमोहन जी, ऐसा है कि दो साल पहले केन्द्र सरकार ने चावल नहीं खरीदा। हमको 20 लाख मीट्रिक टन धान बाजार में बेचना पड़ा। डेढ़ से दो हजार करोड़ रूपये का नुकसान राज्य सरकार को उठाना पड़ा। (व्यवधान) आप क्या बात कर रहे हैं। धान खरीदी करने के लिए हम लोन लेते हैं। आर.बी.आई. का लिमिट लेते हैं। हम बैंकों से ब्याज में कर्जा लेते हैं।

श्री अमरजीत भगत :- मार्कफेड लोन लेता है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम 6 परसेंट से 8 परसेंट ब्याज चुकाते हैं तब हम धान खरीदी करते हैं, आपने तो नहीं किया न । 52 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी करते आप थक गये थे । इस साल 107 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी की गयी है । आने वाले साल में 125 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी करेंगे (मेजों की थपथपाहट)

श्री शिवरतन शर्मा :- आप पहली सरकार में संसदीय कार्यमंत्री थे और आपने धान खरीदी की शुरूआत की थी तो पहले साल आपने 3 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा था और वह भी किसानों का धान बोड़-बोड़कर । बदरा थोड़े हे कहिके । अब हम उसको 80 लाख मीट्रिक टन तक ले गये । क्या आप इसको भूल जाते हैं ? आपने जो बोला तो आप जो धान खरीदते हैं और सेंट्रल पुल को जो चावल देते हैं, उसमें कितने खर्चे जोड़ते हैं, मैं पूरा रिकॉर्ड लेकर आया हूं मैं यह भी बता देता हूं । सुतली, बारदाना, मण्डी टैकस, मण्डी टैक्स केवल इसलिये बढ़ा दिया गया कि सेंट्रल से पैसा लेना है । 2 परसेंट को बढ़ाकर आपने 5 परसेंट इसीलिये कर दिया । सेंट्रल का पैसा लेना है करके ।

श्री रविन्द्र चौबे :- वह हमारा हक है । केंद्र सरकार पंजाब को 12 परसेंट देती है, हमने 5 परसेंट किया है तो क्या गलत किया है ? आप एक चिट्ठी नहीं लिख सकते हैं । आप प्रधानमंत्री जी से इतना डरते हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- श्रीमान् जी, हम चिट्ठी लिखने की बात नहीं कर रहे हैं। हमारी सरकार भी आपकी सरकार के पीरियड में चावल देती थी तो 2 परसेंट टैक्स लेती थी, आपने 5.2 परसेंट कर दिया तो आपकी नीयत क्लियर होती है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- हां-हां, छत्तीसगढ़ के हितों के लिये फैसला करना हमारी नीयत है । यहां के किसानों की मदद करना ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं सब बताउंगा कि आप कितनी मदद कर रहे हैं ।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो शर्मा जी से केवल एक चीज पूछना चाहूंगा कि अभी रवी फसल में धान में किसान को कितना भाव मिल रहा है ? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तोला समझ नइ आवए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप तो अमितेश जी कल जो बात बोल रहे थे न कि 3 महीने पहले पापा जी के साथ क्या हुआ था, वह माननीय मुख्यमंत्री जी को बता दें । (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह पूछ रहा हूं कि आप कृपया यह बता दें कि रवी फसल में कितना भाव किसान को मिल रहा है ? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- आप खाली कल जो बोल रहे थे वह मुख्यमंत्री जी को बता दें कि 3 महीने पहले पापा जी को क्या मिला था । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- आपके लिये एक संस्थान भी नहीं बना ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी अनुसूचित जनजाति की बड़ी चिंता कर रहे थे । बच्चे निर्वस्त्र होकर दौड़ रहे हैं उसके बारे में एक घंटा आदरणीय बृजमोहन जी ने कहा । आपको मालूम है न कि माननीय विधानसभा अध्यक्ष जी ने आरक्षण के लिये विशेष सत्र बुलाया था । (मेजों की थपथपाहट) राज्य सरकार ने जो फैसला किया था, राजभवन में हस्ताक्षर नहीं हुए । आप राजभवन को राजनीतिक अड्डा बनाते हैं । राजभवन से हमारे कार्यों को रोकने का प्रयास करते हैं। राजभवन का इस प्रकार से दुरूपयोग नहीं होना चाहिए । हमारे आरक्षण के जितने भी प्रस्ताव थे, हमारे अन्य सारे विधेयक राजभवन में अटके हुए हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजभवन की चर्चा यहां पर नहीं हो सकती । आप नियम देख लें और इसको आपको डिलीट करना चाहिए क्योंकि माननीय राज्यपाल महोदय हमारे सर्वोच्च हैं । इस सदन के भी सर्वोच्च हैं । उनकी अनुमति से ही अधिसूचना जारी होती है इसलिये राजभवन के मामले में, इस सदन में राजभवन की चर्चा नहीं हो सकती है ।(व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय राज्यपाल जी ने अंग्रेजी में बोल दिया तो आप उसका विरोध कर सकते हैं ।(व्यवधान)

संसदीय सचिव, महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबद्ध (डॉ. रश्मि आशिष सिंह) :- स्वयं माननीय राज्यपाल की उपस्थिति में उनका अपमान आप लोगों ने किया था । (व्यवधान) लगातार टोका-टाकी किये थे । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- इनको बर्दाश्त नहीं हो रहा है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- थोड़ा सा शांत बैठिए ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे आरोप पत्र में कहीं राजभवन का जिक्र नहीं है और यदि आप आरोप पत्र का जवाब दे रहे हैं तो राजभवन कहां से आ गया । वह इस प्रदेश के संवैधानिक प्रमुख हैं, क्या हम उनके ऊपर इस सदन में आक्षेप लगायेंगे । इसको विलोपित किया जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- हां मैं कर दूंगा, जब जरूरत पड़ेगी ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल जी का पूरा सम्मान है । हम राजभवन का भी पूरा सम्मान करते हैं लेकिन जिस आरक्षण की बात हुई है । इस विधानसभा में माननीय मुख्यमंत्री जी ने विशेष सत्र बुलाकर के अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ा वर्ग के आरक्षण की बात, हमने प्रस्ताव पारित किया । राजभवन में रोकने के साजिश आपने की ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इन्होंने नहीं किया । सर्वसम्मति से पारित हुआ है । अगर पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति व जनजाति सबका आरक्षण कम करवाने और छीनने का कोई दोषी है तो भूपेश बघेल

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

और यह मंत्रिमण्डल है । लोगों को गुमराह किया । (व्यवधान) उनका आरक्षण कम कर दिया । (व्यवधान)

श्री राजमन बेंजाम :- अपने आपको आदिवासियों का हितैषी बताते हैं । (व्यवधान)

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- बृजमोहन जी, हिम्मत है तो राजभवन चलो । (व्यवधान) अभी साथ में चलो । (व्यवधान) हिम्मत है, कौन रोक रहा है । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- आप केवल यह बता दीजिये कि ओ.बी.सी. वर्ग को 27 परसेंट आरक्षण देने का निर्णय आपकी कैबिनेट ने किया और कैबिनेट के निर्णय के खिलाफ कुणाल शुक्ला हाईकोर्ट में गये, जिसमें वह स्टे हो गया और उसे आपने सरकारी पद में कहां बिठाया है ? आप यह बता दीजिए।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब हाथ कंगन को आरसी क्या? पिछड़े वर्ग की बात हो रही थी, आरक्षण की बात हो रही थी, पिछड़े वर्ग के प्रति इतनी विरोधी मानसिकता है, अभी आप रिकॉर्ड निकलवाकर देख लीजिए, ए भूपेश बघेल। मतलब मैं पिछड़े वर्ग से आता हूं, इसलिए आप ए भूपेश बघेल बोल रहे हैं। कोई दूसरे होते तो माननीय मुख्यमंत्री बोलते। बृजमोहन जी ये है पिछड़े वर्ग के प्रति आपकी और आपकी पार्टी की मानसिकता। (शेम-शेम की आवाज)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप ही जवाब दे दीजिए। आपकी कैबिनेट ने ओ.बी.सी. को 27 प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय किया। कुणाल शुक्ला उसके विरोध में हाईकोर्ट में गये और उसके बाद उन्हें आपने कबीर शोध विद्यापीठ का अध्यक्ष बना दिया। जो आपके निर्णय के खिलाफ हाईकोर्ट में गया, उसको आप उपकृत कर रहे हैं। मतलब, आप ओ.बी.सी. को आरक्षण नहीं देना चाहते।

श्री भूपेश बघेल :- यही प्रजातंत्र है। वे अकेले नहीं गये हैं। उसके पहले भी गये हैं और उसके बाद भी गये हैं। और कोई भी जा सकता है और अपनी बात रख सकता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- और जो हाईकोर्ट में गया, उसे आपने कबीर शोध विद्यापीठ का अध्यक्ष बनाया है। मतलब, आप आरक्षण नहीं देना चाहते थे। केवल आरक्षण देने का नाटक करना चाहते थे।

श्री भूपेश बघेल :- मतलब इसमें कोई बंधनकारी है क्या? कोई नहीं जा सकता है। क्यों आपके लोग नहीं गये हैं?

श्री शिवरतन शर्मा :- हम लोग कभी आरक्षण के खिलाफ कोर्ट में नहीं गये हैं।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, किसी को कोर्ट में जाने से कैसे रोका जा सकता है? हमारे इस देश में लोकतंत्र है। कोई चला गया हाईकोर्ट में या कोई सुप्रीम कोर्ट में चले गया तो।

श्री शिवरतन शर्मा :- जो सरकार के निर्णय के खिलाफ जाये तो उसे प्रताडित कर सकते हो या उसे उपकृत करके बैठा दोगे। केवल आरक्षण के नाम पर धोखा करने का काम कर रहे हैं।

श्री अमितेश शुक्ल :- कोई चले गया तो उसे कैसे रोका जायेगा? हमारे देश में लोकतंत्र है। जिसे जाना है, हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट, वह चले जायेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री कवासी लखमा :- आप चलोगे क्या हमारे साथ। बहस खत्म करने के बाद हमारे साथ आप चलोगे।

श्री अमितेश शुक्ल :- ये लोकतंत्र को मानते नहीं हैं और इनकी केन्द्र में लीडरशिप चल रही हे।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, मेरा कहने का आशय यह है कि इनकी मानसिकता है। आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि यहां के लाखों बेरोजगारी को रोजगार मिलेगा। हमने आरक्षण के लिए विशेष सत्र बुलाया था। राजभवन के माध्यम से आपने रोकने का प्रयास किया। माननीय न्यायालय ने हमें अंतरिम राहत दी। अभी भर्ती का काम उसके कारण शुरू हुआ है। आपकी इस मानसिकता को छत्तीसगढ़ का एस.सी., एस.टी. और ओ.बी.सी. वर्ग समझता है। आने वाले समय में आपको इसका जवाब देना होगा, अन्यथा आपको भुगतना होगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय बृजमोहन जी बड़ी-बड़ी वादाखिलाफी की बात कर रहे थे। कांग्रेस का घोषणा पत्र पढ़ रहे थे। अपने घोषणा-पत्र को क्यों नहीं पढ़ते? अपने वायदों को याद क्यों नहीं करते। 15 साल आप हुकूमत में थे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जनवरी, 2024 से हमारा घोषणा पत्र लागू होगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप गलतफहमी मत पालिए। इस देश में महंगाई कम करने का वायदा आपने किया था। बहुत हो गई महंगाई की मार, कहां गई मोदी सरकार। पेट्रोल की कीमत कहां जा रही है? डीजल की कीमत कहां जा रही है? रसोई गैस अपने गले में लटका कर एक केन्द्रीय महिला मंत्री सड़कों में घूमती थी। 1200 रूपये का रसोई गैस की कीमत हो गई है। क्या कोई इस देश में बोलने वाला है?

श्री शिवरतन शर्मा :- 4 सिलेण्डर ग्रामीण क्षेत्र में मुफ्त में देने की घोषणा आपकी थी। साढ़े 4 साल में आपने कितना दिया, आप यह बता दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग क्या हर बात में इस तरह से टोका-टाकी करेंगे?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- डीजल और पेट्रोल के वेट टैक्स को कम कर देते तो हो जाता।

श्री रविन्द्र चौबे :- अच्छा, दिल्ली की कीमत कम नहीं करेंगे? वेट कम करने की बात हमसे कहेंगे। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, लगातार वादाखिलाफी इनकी हुकूमत ने की है। भारतीय जनता पार्टी के पास क्या इसका जवाब है? महंगाई के बारे में जब बात करते हैं तो राष्ट्रवाद की बात करते हैं। यही राष्ट्रवाद है। केन्द्र में ओलंपिक पदक विजेता साक्षी मलिक और विनेश फोगाट झंडा लेकर अनशन करती हैं। केन्द्र सरकार की पुलिस के बूटों से उन दोनों पहलवानों को रौंदा जाता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, हम यहां पर चर्चा केन्द्र सरकार की कर रहे हैं या राज्य सरकार की कर रहे हैं? हमने अविश्वास प्रस्ताव राज्य सरकार के विरूद्ध में लाया है। अगर ये चर्चा करना चाहते हैं तो केन्द्र सरकार की सोनिया जी के बारे में, राहुल जी के बारे में, प्रियंका जी के बारे में हम भी बोलना शुरू कर देंगे। इसलिए मैं यह चाहूंगा कि आप इस अविश्वास प्रस्ताव मं राज्य

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सरकार की गतिविधि, उनकी गड़बडी, उनके घोटालों के विरूद्ध में हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है, इसलिए राज्य सरकार के बारे में बोले न। केन्द्र सरकार के बारे में यहां पर चर्चा नहीं हो सकती। क्या केन्द्र में बैठे हुए इनके जो सांसद हैं, उनमें दम नहीं है क्या? क्या उनके पास दम और ज्ञान नहीं है क्या कि वे वहां पर बोलें?

श्री सौरभ सिंह :- 3 प्योर छत्तीसगढ़िया सांसद जो आए हैं, वे वहां पर क्या करते हैं ? एक बार भी प्रश्न उठाते हैं वहां पर ? 3 प्योर छत्तीसगढ़िया आए हैं वे वहां पर बोलते हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- छत्तीसगढ़ की माटी का होगा तब तो दम रहेगा । छत्तीसगढ़ से सांसद बनकर गए हैं और गा रहे हैं दूसरी जगह का । वो कहां से बोलेंगे छत्तीसगढ़ के बारे में ?

अध्यक्ष महोदय :- आप इल्ड मत करिये, आप बोलते रहे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इस पर व्यवस्था चाहिए क्योंकि राज्य सरकार के विषय पर चर्चा हो रही है ।

अध्यक्ष महोदय :- हमने बता दिया, उनको इशारा कर दिया है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- केन्द्र सरकार पर चर्चा नहीं हो रही है । केन्द्र सरकार पर चर्चा करने के लिए इनके बड़े बड़े नेता दिल्ली में बैठे हैं, ये बोल दें कि हमारे नेता सक्षम नहीं है इसलिए हम यहां चर्चा कर रहे हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, इनके जो वायदे थे । उससे केवल छत्तीसगढ़ ही प्रभावित नहीं था । आपने कहा था किसानों की आय दुगुनी करेंगे, स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट लागू करेंगे, जनधन खाते में 15 लाख भेजेंगे, 2 करोड़ लोगों को रोजगार देंगे । एक भी वायदा पूरा हुआ और हमने वायदे का जवाब मांगते हैं । हमसे आप छत्तीसगढ़ के घोषणा पत्र की बात कहते हैं । कभी आप अपने घोषणा पत्र को पलटकर देखते हैं ? आदरणीय अध्यक्ष महोदय, 109 बिंदुओं का आरोप लगाया गया है । कभी दर्पण में अपना चेहरा देखा है, कितनी कालिख पुती हुई है ? अध्यक्ष महोदय, इसी सदन में नान घोटाले की चर्चा हुई है, 36 हजार करोड़ के नान घोटाले के आरोपी कौन हैं ? धान घोटाले के आरोपी कौन हैं, खदान घोटाले के आरोपी कौन हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- जो आरोपी हैं उसमें तो दो आपके गले के हार बने हुए हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग हर बात पर टोकेंगे तो कैसे काम चलेगा ?

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिनको गले का हार बोल रहे हैं सुप्रीम कोर्ट ने उनको दे दिया है ।

अध्यक्ष महोदय :- चौबे जी, आप हर बात पर बैठ जाते हैं, क्यों सुनते हैं आप इनकी बात ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, उनको थोड़ा थोड़ा बीच बीच में आराम देने की जरूरत है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- यदि आपको तकलीफ है तो आप बैठे-बैठे भी बोल सकते हैं, मैं आपको अनुमति देता हूं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं, नहीं, मुझे कोई तकलीफ नहीं है । मैं पूछ रहा था कि ये सारे घोटाले किसने किये थे, पनामा में किसका नाम आया था ? कवर्धा में किसका एड्रेस था ? कौन लोग पनामा के घोटाले में शामिल थे ? अगस्ता वेस्ट लैंड के घोटाले में किसका नाम आया था ? अपना नाम लेने से हिचक रहे हो । स्काय वॉक में कितना बड़ा घोटाला हुआ ? प्रियदर्शिनी बैंक में किसका किसका नाम है, जांच चल रही है, अभी पूछताछ हो जाएगी । केवल कमीशन का काम, चिटफंड घोटाला । आदरणीय धरम भइया आप भी चिटफंड कंपनियों का उद्घाटन करने गए थे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं कहीं उद्घाटन करने नहीं गया हूं । आप लोग रोज यह बोल रहे हैं कि कुर्की की गई है और रकम दे रहे हैं । एक भी चिटफंड में फंसे हुए लोग का पैसा वापस नहीं किया गया है । बल्कि उन जमीनों को औने-पौने में पता नहीं आप लोगों ने किसको दे दिया है ? एक भी व्यक्ति को पैसा वापस नहीं हुआ । इतना ही सुनते हैं कि कुर्की की गई और इतनी कुर्की करने के बाद वह पैसा है कहां । कहां है वह जमीन ?

श्री रविन्द्र चौबे :- इसी को बोलते हैं, चोरी और सीनाजोरी ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उद्घाटन करने नहीं गए थे, माला पहनने गए थे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- चोरी और सीनाजोरी वाली जो बात है, वह सामने बैठे हुए हैं । हम लोग नहीं है और खासकर मैं तो नहीं हूं ।

श्री अमितेश शुक्ल :- मैं खासकर नहीं हूं, मतलब दूसरे कौन लोग हैं उनका नाम बताइए ? कौन है, वह नाम बताएं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- छत्तीसगढ़ के लोगों का करोड़ों रूपया चिटफंड घोटाले में फंसा है । आदरणीय मुख्यमंत्री जी को मैं धन्यवाद दूंगा जिनके चलते गिरफ्तारियां हो रही हैं । पैसे वापिस हो रहे हैं, कितना पैसा वापस हुआ है यह मैं जवाब में बता दूंगा । रतनजोत का क्या हुआ था ?

श्री धरमलाल कौशिक :- जो सफेद मुसली का हुआ, वही हुआ ।

श्री कवासी लखमा :- न लंदन से न अब खाड़ी से, डीजल मिलेगा अब बाड़ी से। आपकी बाड़ी में मिल रहा है क्या, रमन सिंह जी की बाड़ी में डीजल मिल रहा है। झूठ बोल बोलकर पूरे छत्तीसगढ़ की जनता को लूट रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- धरम भइया के बाड़ी तो सुखा गे हे ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, अंबिकापुर जिले में रतनजोत इतना लगाया था कि टोटल जिले के रकबा से ज्यादा रतनजोत का प्लांटेशन हुआ था। कितना भयानक भ्रष्टाचार था। यह कौन करता था? 15 साल, 15 साल...।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- अच्छा सुनिए ना। मान लीजिए, हम आपके आरोप को लोग सही मान लेते हैं तो आप हाथ में हाथ धरे क्यों बैठे हो ? आपको कार्रवाई करने से किसने मना किया है ? आप तो उस विभाग में थे, आप सब फाईल खुलवाकर जांच करवा लेते।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप आरोप लगा रहे हो, आरोप लगाने के बाद कार्रवाई भी नहीं कर रहे हो। मतलब कोई सेंटिंग वगैरह हो गयी क्या ?

श्री अजय चंद्राकर :- आप जैसा जानकार आदमी भी उसी-उसी विषय को बार-बार बोल रहा है। इस विषय को इस हाउस में हम आपकी मुंह से कम से कम पांच बार सुन चुके हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- रतनजात को ?

श्री अजय चंद्राकर :- हां रतनजोत को। आपके पास नई चीजों की उपलब्धि बताने के लिए नहीं है। आप हमारी बात को कर रहे हैं, आपके पास गिनाने के लिए कुछ नहीं है। मैं आपकी उपलब्धि गिनाऊंगा और आप उसका खंडन कीजिएगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष जी, घोटालों की बात करते हैं तो मैंने कहा आईना में आपने अपना चेहरा देखा है या नहीं देखा है, कालिख से कितना पुता हुआ है, इसलिए मैं यह सारे आंकड़े दे रहा हूं। कमीशनखोरी की बात होती थी, रायगढ़ की मीटिंग में डॉ. रमन सिंह जी को कहना पड़ा था कि भारतीय जनता पार्टी के मेरे कार्यकर्ता मित्रों, 1 साल कमीशन खाना बंद कर दीजिए, दोबारा सरकार आएगी। टिफिन खरीदी हुई, केवल कमीशन का काम हुआ। मोबाईल खरीदी हुई, केवल कमीशन का काम हुआ, जूता, मोजा क्या-क्या खरीदे, केवल कमीशन का काम हुआ। इसीलिए जनता ने आपको 13 सीटों में बैठा दिया है।

श्री अजय चंद्राकर :- आप इधर या उधर किसी के उपर कार्रवाई करिए ना।

श्री ननकीराम कंवर :- आप कार्रवाई क्यों नहीं कर रहे हैं, यहां बैठकर घास छील रहे हैं। आप कार्रवाई करिए ना। आपको किसने रोका है।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, अब वे हटा तो सके नहीं हैं, अब हम लोगों को बोल रहे हैं कि कार्रवाई करिए। इसलिए यह उसी में लगे हुए हैं। इन लोग हटाने में लगे हुए थे, अब बोल रहे हैं कि कार्रवाई करिए, कम से कम पीछा छूटे। इसलिए अजय जी मांग कर रहे हैं।

श्री ननकीराम कंवर :- अध्यक्ष जी, मिल बांटकर चल रहा है, मैं एक केस बता रहा हूं, जिसको हमारी सरकार ने बचाया, उसको आप आज भी बचा रहे हैं। माननीय अध्यक्ष जी, इनको [XX][29] कहना चाहिए क्या ? आप काम नहीं कर सकते। आप कार्रवाई करिए ना, आपको किसने रोका है। मैं आपको अलग से मिलकर उनका नाम बता दूंगा जिसको आप बचा रहे हो, आपकी सरकार बचा रही है। मैंने

[29] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय गृह मंत्री जी को भी कार्रवाई करने के लिए कहा है। मैं आज शाम को आपको नाम बतला दूंगा। यह स्थिति है।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, इनके आरोपों में कोई तथ्यात्मक बातें नहीं थी। जहां तक छत्तीसगढ़ सरकार की उपलब्धियों का सवाल है, हमने छत्तीसगढ़ के किसानों से दो वायदा किया था। पहला कर्ज माफ किया जाएगा, लगभग 10 हजार करोड़ रूपये का कर्ज माफ आदरणीय भूपेश बघेल की सरकार ने किया। (मेजों की थपथपाहट) दूसरा, 2500 रूपये में धान खरीदी की जाएगी, हमने पहले साल 2500 रूपये में धान खरीदी की, केन्द्र सरकार ने लगातार आपत्ति की, आप समर्थन मूल्य से एक रूपया ज्यादा नहीं दे सकते, हमने छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए आदान-प्रदान करने के लिए राजीव गांधी किसान न्याय योजना लागू किया, इस पूरे चार, साढ़े चार साल के कार्यकाल में एक लाख 75 हजार करोड़ रूपया किसानों के खाते में हस्तांतरित किया गया। (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ के किसान राजीव गांधी किसान न्याय योजना से ना केवल लाभान्वित हुए, मैं ऐसा समझता हूं कि उनकी आर्थिक स्थिति भी सुधरी है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, हमने गोधन न्याय योजना लागू की। भारतीय जनता पार्टी के लोग लगातार गौठान के बारे में प्रश्न करते हैं, आपको जानकर खुशी होगी, छत्तीसगढ़ में डेड़ लाख एकड़ का गौठान बन चुका है, वह सरकार का एक लैण्ड पुल बन गया है। डेड़ लाख महिलाओं का वर्क फोर्स तैयार हो गया है, जिनको रोजगार मिल रहा है, लगभग 500 करोड़ से अधिक की राशि उनके खातों में हस्तांतरित किया जा चुका है, लगभग 31 लाख क्विंटल वर्मी कंपोस्ड खेतों में पहुंचाया जा चुका है। केन्द्र सरकार और केन्द्र सरकार के मंत्री लगातार इसकी तारीफ कर रहे हैं, लेकिन पता नहीं आपको क्या दिखता है। आज भी एक प्रश्न लगा था, आपको केवल शिकायत है। गोबर खरीदी में जब हमने पहले दिन निर्णय लिया तो अजय चंद्राकर जी को बहुत तकलीफ हो रही थी। लेकिन माननीय अजय जी, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, झारखण्ड और गुजरात ने भी इसको लागू किया है। छत्तीसगढ़ की गौधन न्याय योजना सारे हिंदुस्तान में चर्चित हो गई है। (मेजों की थपथपाहट) यह ऐसी योजना है, जिससे लोगों को सीधा लाभ मिल रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने भूमिहीन लोगों के लिए राजीव गांधी जी के नाम से खेतिहर मजदूर न्याय योजना शुरू की है। छत्तीसगढ़ में साढ़े 5 लाख से अधिक गरीब परिवारों को 7 हजार रूपये दिया जा रहा है। केन्द्र सरकार की प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि केवल 6 हजार रूपये है, लेकिन हम भूमिहीन गरीबों को भी 7 हजार रूपये दे रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) यह काम छत्तीसगढ़ में शुरू हो गया है। हमारे आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने इस अनुपूरक में ग्रामीण क्षेत्रों में आवास न्याय योजना शुरू की है। आप बार-बार केन्द्र सरकार की दुहाई देते हैं। इंद्रा आवास में पहले केन्द्र सरकार 90 प्रतिशत राशि देती थी। आपने प्रधानमंत्री आवास में कटौती क्यों कर दी? जब यह योजना प्रधानमंत्री जी के नाम से है

तो आपको पूरी राशि देनी चाहिए। जो लोग वंचित हैं, उनका सर्वे कराया जा रहा है और छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण के कार्य किये जाएंगे। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस आरोप पत्र में मैं स्वामी आत्मानंद स्कूल के बारे में भी आरोप देख रहा था कि आत्मानंद स्कूल घोटाला। भैय्या, क्या घोटाला हो गया? अंग्रेजी माध्यम के 738 स्वामी आत्मानंद स्कूल खोले गये हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मंत्री जी, आपने कल ही अधिकारी को सस्पेण्ड किया है। स्वामी आत्मानंद स्कूल के नाम पर शिक्षकों से कितने-कितने पैसे की वसूली की गई है? बिना सरकार की अनुमति के लोगों की मनचाही जगह पर पोस्टिंग की गई है। आपने कल ही सस्पेण्ड किया है।

श्री अमितेश शुक्ल :- बृजमोहन भैय्या, यह तो सरकार की जबरदस्त कार्रवाई है। आपको तो इसकी तारीफ करनी चाहिए कि सरकार ने उस पर कार्रवाई की है। आप कैसी बात कर रहे हैं?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उस कार्रवाई को तो हम विधान सभा में उठा रहे हैं। वह कार्रवाई पेपरों में छप रही है। वह कार्रवाई हमारे कारण से हो रही है। (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- आप उठा रहे हैं तो सरकार ने उस पर तत्काल कार्रवाई की। आप उसकी तारीफ कीजिए। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह तो एक संभाग का है। यदि आप पूरे छत्तीसगढ़ का देखेंगे तो उनकी नियुक्ति के नाम पर उनसे हजारों-करोड़ रूपये की वसूली की गई है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधान सभा की आज की बैठक में भाई रजनीश कुमार सिंह जी का प्रश्न लगा था। हमने उसकी जांच कराई और महसूस किया उक्त अधिकारी के द्वारा।

श्री अजय चंद्राकर :- आज जो प्रश्न लगा था, आपने उसकी जांच करवाई। आज तो मेरा प्रश्न किलोल में लगा था, लेकिन आपने तो उस प्रश्न का उत्तर ही नहीं दिया। आपने जांच कहां कराया है?

श्री रविन्द्र चौबे :- आपका किलोल में प्रश्न ज़रा प्रीज्यूडीज था, इसलिए उसमें जांच की जरूरत नहीं थी। लेकिन रजनीश कुमार सिंह जी ने जो प्रश्न पूछा था। हमारे पास 25 दिन पहले प्रश्न आता है, उस पर विभाग कार्रवाई करता है। बिलासपुर के ज्वाइंट डायरेक्टर और जो अधिकारी उसमें शामिल थे, उनको हमने निलंबित किया।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब किलोल की बात आई तो मंत्री जी इधर-उधर देखकर जवाब दे रहे थे। मंत्री जी की स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह उसके बारे में कुछ बोल सके। इसलिए आसंदी को यह निर्देश देना पड़ा।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल में गरीबों के बच्चे अंग्रेजी माध्यम में पढ़ रहे हैं। वहां नि:शुल्क शिक्षा दी जाती है और वहां मजदूर के बच्चे पढ़ रहे हैं क्योंकि वह निजी स्कूलों में फीस अदा नहीं कर सकते हैं। हमने छत्तीसगढ़ में 700 से अधिक स्वामी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आत्मानंद स्कूल खोले हैं। (मेजों की थपथपाहट) उनमें 3 लाख से अधिक बच्चों का एडमिशन हुआ है। हमने अखबारों में देखा है। माननीय बृजमोहन जी ने भी स्वामी आत्मानंद स्कूल में प्रवेश के लिए चिट्ठी लिखी है। केन्द्रीय मंत्री आदरणीय रेणुका सिंह जी ने भी स्वामी आत्मानंद स्कूल के लिए चिट्ठी लिखी है। आने वाले समय में स्वामी आत्मानंद स्कूल छत्तीसगढ़ के शैक्षणिक विकास में माइल स्टोन साबित होने वाला है। आपको इसकी प्रशंसा करनी चाहिए। आपने आरोप पत्र में जबरन लिख दिया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने नयी हार्टिकल्चर यूनिवर्सिटी स्थापित की है। इनके पूरे 15 साल के शासनकाल में 19 कृषि महाविद्यालय खोले गये थे। लेकिन हमने केवल 4 साल में 23 हार्टिकल्चर और एग्रीकल्चर कॉलेज खोले हैं। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम स्वास्थ्य के बारे में चर्चा करते हैं। हाट बाजार क्लिनीक कितना सफल है। दाई-दीदी क्लिनीक कितना सफल है। मेडिकल मोबाइल यूनिट कितना सफल है। बाजारों में हमारा मेडिकल यूनिट जाता है। गरीब वहां अपना चेकअप कराते हैं और उनको वहां नि:शुल्क दवाई दी जाती है। आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना लागू की है। खूबचंद बघेल योजना लागू की है, छत्तीसगढ़ में धनवंतरी योजना लागू हुई है । आप कभी इसकी प्रशंसा कर रहे हैं ? आप 15 साल कुछ नहीं कर पाये थे । अध्यक्ष जी, यह ऐसी योजनाएं हैं, जिससे यहां के गरीबों को सीधा लाभ हो रहा है ।

माननीय अध्यक्ष जी, हमने रूरल इंडस्ट्रियल पार्क बनाया है । छत्तीसगढ़ के हर विकासखण्डों में नये नौजवानों को, बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए यह काम हम शुरू करने जा रहे हैं । छत्तीसगढ़ में सी मार्ट बनाया गया है, छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़िया ओलम्पिक शुरू की गयी है । गांव की जो विस्तृत होती हुई खेल प्रतिभाएं थीं, उनके लिए बड़ा आयोजन किया जा रहा है और छत्तीसगढ़ के लाखों लोग हरेली त्यौहार के दिन से यह हमारे छत्तीसगढ़ ओलम्पिक में भाग ले रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय, ये लोग केवल राम की बात करते हैं । हमने राम वनगमन पर्यटन परिपथ न केवल बनाया, बल्कि उसके लिए राशि स्वीकृत की और काम शुरू हो गया है । चंदखुरी में माता कौशल्या धाम मंदिर का पुनरोद्धार किया गया है । हमने प्रदेश में राष्ट्रीय रामायण प्रतियोगिता शुरू की है । (मेजों की थपथपाहट) आप केवल बात करते रह गए ।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं चौबे जी से पूछना चाहता हूं कि किसी मंदिर में राम जी की अकेली मूर्ति होती है क्या ?

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, हम यही तो बोल रहे हैं कि जय श्री राम के बदले जय सियाराम बोलिए । हम लोग यही तो लगातार सीखा रहे हैं ।

श्री ननकीराम कंवर :- मेरी बात सुन लीजिए । जो नहीं होना चाहिए, वह कर रहे हैं इसलिए मैं यह बात पूछ रहा हूं । कहीं भी किसी मंदिर में राम जी की अकेली मूर्ति नहीं होती ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रामकुमार यादव :- कभु हनुमान के रूप में देखे रेहेव कि कईसे होथे, तेला।

श्री ननकीराम कंवर :- जब मालूम नहीं है तो बकबक मत करो ।

श्री रामकुमार यादव :- कभु हनुमान के रूप में देखे रेहेव कि कईसे होथे तेला। ओकरे बर गदा धरके तु मन ला खोजथे ।

श्री ननकीराम कंवर :- हनुमान जी भी साथ रहते हैं । आप इसमें क्या बोलते हैं, मैं वही पूछना चाहता हूं । आपने राम वनगमन की बात कही है इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूं । इसका जवाब दे दीजिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनकी सोच में और हमारी सोच में थोड़ा अंतर है । इनके राम चंदोखोरी के लिए, वोट के लिए, चोट के लिए, नोट के लिए हैं और हमारे राम शबरी के राम हैं, प्रेम बांटने वाले राम हैं, कौशल्या माता के गोदी में बैठे हुए राम हैं, दीन बंधु राम हैं, छत्तीसगढ़ के भांचा राम हैं । दोनों राम में यह अंतर है । जो राम की बात आदरणीय ननकीराम जी कह रहे हैं, वे धनुष-बाण लिये युत्तक राम की बात कर रहे हैं और हम जिस राम की बात कर रहे हैं, वह माता जानकी के साथ पूरा राम दरबार और राम जी कौशल्या माता की गोदी में हैं । (मेजों की थपथपाहट)

(सत्ता पक्ष द्वारा जय सियाराम के नारे लगाए गए)

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- क्या नजरिया है राम जी की परिभाषा का ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, आप जिस राम की बात कर रहे हैं । यह वास्तव में कालनेमि भी राम का नाम लिया करता था तो कालनेमि सरकार हो, नाम राम का लेते हो, पर राम के विरोध में काम करने वाले लोग हो । राम की कथा काल्पनिक है, यह शपथ-पत्र देने गए थे न । शपथ-पत्र देने कौन गया था ? मर्यादा पुरूषोत्तम राम के मंदिर निर्माण का काम रूक जाये, सुप्रीम कोर्ट में किसका आवेदन लगा था, आवेदन लगाने वाला कौन था, जरा यह भी बता दीजिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- शिवरतन जी, आपकी जानकारी है तो यह भी जानकारी होगी कि अयोध्या के राम मंदिर का ताला किसने खोला था ? (मेजों की थपथपाहट)

श्री शिवरतन शर्मा :- यह भी जानकारी बता दीजिए कि ताला किसने लगाया था ?

श्री सौरभ सिंह :- ताला किसने लगाया था और ताला लगाने के बाद कोर्ट में केस कैसे चला ?

श्री धरम लाल कौशिक :- यह किसी नेता का निर्णय नहीं है, कोर्ट का निर्णय है और कोर्ट के निर्णय से ताला खुला है । चौबे जी, आप अपनी जानकारी दुरूस्त कर लीजिए । जो ताला खुला है, वह कोर्ट के आदेश पर ताला खुला है । शायद चौबे जी धोखे में हैं ।

डॉ. विनय जायसवाल :- राम मंदिर तो कोर्ट के आदेश से बन रहा है ।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- कोर्ट में गया हुआ व्यक्ति कांग्रेस का था ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय चौबे जी, आपको खड़े-खड़े बहुत देर हो गया है, आपके पीछे बहुत अच्छे वक्ता हैं । उनको कागज दे दीजिए, आप आराम करिए । आप बैठकर बोलिये, हम सुनेंगे आपको खड़े-खड़े बोलते बहुत देर हो गया है।

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- कोर्ट में गया हुआ व्यक्ति कांग्रेस का था तो क्या हो गया ?

डॉ. विनय जायसवाल :- अभी नेता जी बोल रहे थे कि कोर्ट के आदेश से ताला खुला है तो नेता जी यह भी बताये कि राम मन्दिर कोर्ट के आदेश से बन रहा है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष जी, आदरणीय धरम भईया कह रहे हैं कि कोर्ट के आदेश से ताला खुला है तो भव्य राम मन्दिर भी कोर्ट के आदेश से ही बन रहा है, आप क्यों श्रेय लेने का प्रयास कर रहे हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- परन्तु आप लोगों ने कोर्ट के आदेश का रूकवाने का प्रयास किया। आपके सांसद इसके खिलाफ गये।

श्री सौरभ सिंह :- केन्द्र सरकार ने अर्जेंट हियरिंग क्यों लगाई ? केन्द्र सरकार ने कहा कि कोर्ट में जो प्रकरण चल रहा है, उसकी 15-15 दिन में हियरिंग की जाये। आपने 10 साल के यू.पी.ए. सरकार में क्यों नहीं लगाया ?

श्री रामकुमार यादव :- तुमन ला हनुमान हा गदा ला धरके खोजत हे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने कपिल सिब्बल के तर्कों को सुना है ? सुना है या नहीं सुना है ?

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- अभी कपिल सिब्बल कौन सी पार्टी में हैं ?

श्री सौरभ सिंह :- आपके लोग दारू घोटाले में जेल गये हैं, उनकी ओर से अभी 3 दिन पहले ई.डी. के खिलाफ खड़े थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा, एक मिनट। आपने कपिल सिब्बल के तर्को को सुना है ? सुना है या नहीं सुना है ? आपके गुरू तो शंकराचार्य जी है। कपिल सिब्बल जी ने रामजन्म भूमि के प्रकरण में क्या तर्क किये थे, वह आप बताईये, बाकी सब बात सही, चलिये, आप बताईये।

श्री रविन्द्र चौबे :-अध्यक्ष जी, तब पार्लियामेंट में जो उत्तर दिया गया था, अभी भी इनकी सरकार है। उसी रामसेतु का प्रश्न लगा था और आपके मंत्री ने वही जवाब पढ़ा।

श्री अजय चन्द्राकर :- फिर वही जवाब।

श्री रविन्द्र चौबे :- वही जवाब कि रामसेतु के अस्तित्व के बारे में पुरातत्व अनुमति नहीं देता है।

श्री अजय चन्द्राकर :- रामसेतु में अलग से बहस कर लेते हैं। अभी तो राम मन्दिर चल रहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- कपिल सिब्बल जी कोर्ट की सुनवाई को रोकने गये थे, अर्जेंट हियरिंग के खिलाफ गये थे।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप दोनों कपिल सिब्बल को भूल जाईये, आगे बढ़िये।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, चलिये आगे बढ़ता हूं। छत्तीसगढ़ में किसानों का स्वाभिमान जागा है। छत्तीसगढ़ में धान खरीदी में धान खरीदी केन्द्रों का विस्तार हुआ है, छत्तीसगढ़ में किसानों की सुविधाओं का विस्तार हुआ है। पहले छत्तीसगढ़ में नवजवानों का गांवों से शहरों की ओर माइग्रेशन होता था, अब छत्तीसगढ़ में लोगों का माइग्रेशन खेती की ओर हो रहा है। (मेजों की थपथपाहट) रकबा बढ़ा है। सबको स्वीकार करना पड़ेगा। पहले की तुलना में जब आपकी सरकार थी, उससे ज्यादा, डबल बीज वितरित कर रहे हैं। शार्ट टर्म लोन 3 हजार करोड़ रूपये का हुआ करता था, अभी 6 हजार करोड़ रूपया पार हो चुका है, दोगुने से ज्यादा पार हो चुका है। छत्तीसगढ़ में आपके समय में जितना धान खरीदी होता था, उससे ज्यादा, दोगुने से ज्यादा धान खरीदी हो रही है। (मेजों की थपथपाहट) हम कोदो की भी खरीदी कर रहे हैं। कुटकी और रागी की भी खरीदी कर रहे हैं। इसलिए छत्तीसगढ़ में लोगों का गांवों से शहरों की ओर पलायन हुआ करता था, वह लगभग परिवर्तित हो गया है। अब किसान शहरों से गांवों की ओर जाने लगे हैं। उत्पादन बढ़ने लगा है। किसान प्रसन्न है। (मेजों की थपथपाहट)

आदरणीय अध्यक्ष जी, छोटी-छोटी 2-3 और बातें हैं। वनोपज के बारे में वनमंत्री बतायेंगे। आप केवल 6 वनोपज की खरीदी करते थे, हम लगभग 65 वनोपज की खरीदी करते हैं। पूरे हिन्दुस्तान का 70 प्रतिशत से अधिक वनोपज की खरीदी छत्तीसगढ़ सरकार करती है। (मेजों की थपथपाहट) आप तेन्दूपत्ता का 2500 रूपया नहीं दे पाते थे, हम 4 हजार रूपया मानक बोरा देते हैं। (मेजों की थपथपाहट) इसमें मनरेगा की बड़ी चर्चा होती है। आपने अपने आरोप के भ्रष्टाचार वाले कालम में लिखा हुआ है। आपने कभी पढ़ा है ? एक दिन में 26 लाख मानव दिवस, इसके लिए केन्द्र सरकार के द्वारा पुरस्कृत किया गया है। (मेजों की थपथपाहट) हमने लाख, मछली पालन को कृषि का दर्जा दिया है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, अंत में माननीय मुख्यमंत्री जी के प्रति आभार और धन्यवाद, आपने माता कर्मा जयंती दिवस की छुट्टी घोषित किया। हरेली के दिन को छुट्टी घोषित किया। रानी अवंतिबाई के नाम से पुरस्कार घोषित किया। आदिवासी संस्कृति का सम्मान करने के लिए आदिवासी दिवस के दिन छुट्टी घोषित किया। हमारी छत्तीसगढ़ की अस्मिता का आपने सम्मान बढ़ाया, राज्य गीत घोषित किया, छत्तीसगढ़ महतारी हर जिले में स्थापित किया जा रहा है, तीज त्यौहार का सम्मान बढ़ाया, छत्तीसगढ़ की अस्मिता को आपने सम्मान दिया, बोरे-बासी का भी आपने सम्मान बढ़ाया, (मेजों की थपथपाहट) (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- एमन बासी ला चम्मच में खात रहिन ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, हम लोग इस बात को कहते हैं कि श्री भूपेश बघेल जी छत्तीसगढ़ अस्मिता और स्वाभिमान के प्रतीक हैं और भूपेश है तो भरोसा है, यह छत्तीसगढ़ की जनता जानती है, इसलिये आने वाले समय में मैंने 71 के बाद कहा कि अगली बार 75 के पार, लेकिन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अविश्वास प्रस्ताव का क्या हश्र होने वाला है, आप खुद जानते हैं, इस बार 13 और अगले बार दहाई तक भी आप नहीं पहुंच पायेंगे, इन आंकड़ों को आप समझ लीजिएगा । मैं इसमें आपसे कहना चाहता हूँ कि छत्तीसगढ़ की जनता आदरणीय भूपेश जी के ऊपर पूरा भरोसा करती है, इस अविश्वास प्रस्ताव का कोई अर्थ नहीं है । माननीय अध्यक्ष महोदय मैं इसका विरोध करता हूँ । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- धरमलाल जी कौशिक ।

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 5 साल के कुशासन, भ्रष्ट्राचार और जिस प्रकार से जंगल राज इस कांग्रेस की सरकार में लोगों ने देखा है, देखने के बाद में ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके भाषण की समाप्ति के बाद बोलूंगा, बोला था ।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपको बोलने नहीं देंगे । वहां थे तो भी आपको तंग करते थे, यहां हो तब भी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप कभी अपने राजनीतिक कैरियर में फ्लैटरर नहीं थे । आप तथ्यों में बोलने वाले आदमी थे । आप कब से फ्लैटरिंग करने लगे ? यह सब चीज आपके चरित्र और प्रभाव के विपरीत हो रही है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इतना असत्य, बेबुनियाद, तथ्यहीन, हल्केपन से आरोप पत्र और अविश्वास लाया गया है, उसका उत्तर और प्रतिउत्तर इसी शब्दों में दिया जा सकता है ।

अध्यक्ष महोदय :- मेरे ख्याल से दोनों तरफ से मुख्य वक्ता बोल चुके हैं, इसलिये आप लोग समय का ध्यान रखें । दूसरों को डिस्टर्ब न करें । कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा बात कहें ।

श्री धरमलाल कौशिक :- कल की तारीख में अविश्वास प्रस्ताव में मुख्यमंत्री जी का भाषण आयेगा । दो दिन के लिये निर्धारित है और दो दिन में एक दिन का समय चला गया है । आपने आसंदी से निर्धारित किया था कि आप यह मान लीजिए कि कल की तारीख में मुख्यमंत्री जी तारीख बदलने के बाद जवाब देंगे । हम लोग प्रयास करेंगे कि कम से कम शब्दों में उसको समेटे । मैं जो सरकार के कार्यकाल की बात कर रहा था, यदि इनके पांच साल के कार्यकाल को देखा जाये, मैं तीन शब्दों में सरकार को कहना चाहता हूँ कि यह तानाशाह सरकार है, झूठ और फरेब की सरकार है और घोटालों की यह सरकार है । यदि इसको स्लोगन के रूप में देखा जाये और यदि जनता इसका निर्णय करे तो मैं समझता हूँ कि लोग इसमें काफी सारे स्लोगन देंगे, यह सरकार के बारे में जो स्थिति है और जो अवधारणा है कि भ्रष्ट्राचार में फर्स्ट है और अपराधियों व षड़यंत्रकारी मस्त है, ईमानदारी पस्त है, जनता त्रस्त है, इसलिये कांग्रेस की सरकार अब अस्त है । पांच साल के कार्यकाल में जो सपने दिखाये गये, जो वादे किये गये, जो घोषणा पत्र जारी किये गये...।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, इसीलिए इधर से उधर गये ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, अब ज्यादा हो रहा है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- घोषणा पत्र जो आत्मसात किये गये, आत्मसात करने के बाद में पांच साल में जो स्थिति दिखाई दे रही है कि भ्रष्ट्राचार और कर्जा के दो बातों पर चर्चा करना चाहता हूँ ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं चाहता हूँ कि आपने जैसे कविता पढ़ी है, उसे कविता के रूप में एक-एक पेज में जब तक लिख लें । जब तक आप भाषण करें, जल्दी खत्म हो जायेगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी पूरे पांच साल में जो कर्जा लिया गया है, 86 हजार करोड़ रूपया का कर्जा है, इसमें 62 हजार करोड़ रूपया इस सरकार द्वारा लिया गया है । 27 हजार करोड़ से अधिक का कर्जा जो निगम मंडल के द्वारा लिया गया है, उसकी जमानत सरकार ने दे दी है । कुलमिलाकर पांच साल में 80 हजार करोड़ से अधिक का कर्जा इस सरकार द्वारा लिया गया है । आज यदि हम देखेंगे तो प्रति व्यक्ति के ऊपर 40 हजार का कर्ज थोपने का काम मुख्यमंत्री जी ने किया है । अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूँ कि 80 हजार करोड़ का इन्होंने जो कर्जा लिया है और इनके भ्रष्ट्राचार की बात मैं आगे । इसका आशय क्या हुआ ? इसका आशय यह है कि मुख्यमंत्री जी ने 5 साल का जो बजट प्रस्तुत किया, उसके 1 साल को आप केवल करप्शन में निकाल दीजिये और आप मानिये कि मुख्यमंत्री जी ने 4 साल के बजट को प्रदेश में प्रस्तुत किया है। आज हमने बहुत सारे मुद्दों को लेकर आरोप लगाये हैं और मैं उसमें सबसे पहले शराब के बारे में बात करना चाहता हूं। मुख्यमंत्री जी ने पूर्ण शराबबंदी के मुद्दे को रखकर महिलाओं का वोट लिया। यह घोषणा करने के बाद सरकार बन गयी और पूर्ण शराबबंदी की बात आयी और अब आपका 5 साल का कार्यकाल समाप्त होने वाला है लेकिन शराबबंदी नहीं हुई। हमने कभी सुना था कि दूध की नदियां बहती है लेकिन इस कलयुग में भूपेश बघेल जी के राज में शराब की नदियां बहने लगी है। ई.डी. ने साबित किया कि शराब में 2100 करोड़ रूपये का घोटाला हुआ है लेकिन बाद में वह बात अवैध शराब की बिक्री में पायी गयी। माननीय अध्यक्ष महोदय, जो ओवर रेटिंग का मामला आया है और ओवर रेटिंग में लगभग 20 हजार करोड़ रूपये का घोटाला सामने आया है। मैं आपको बताना चाहता हूं कि पहले और अब में शराब की बिक्री में क्या फर्क पड़ा है। 19 जुलाई, 2023 को विधान सभा में मेरे प्रश्न का जो उत्तर आया था, उस उत्तर में देशी शराब की बिक्री की वर्षवार जानकारी थी। उसके अनुसार वर्ष 2018-19 की तुलना में वर्ष 2019-20 में 1.22 करोड़ प्रूफ लीटर, वर्ष 2020-21 में 2.89 करोड़ प्रूफ लीटर और वर्ष 2021-22 में 3.19 करोड़ प्रूफ लीटर की कमी आयी। इसका मतलब शराब पीने वाले लोग हैं, शराब की बिक्री हो रही है लेकिन रिकॉर्ड में कमी आयी है। उसके बाद आप देखिये कि वर्ष 2022-23 में यह जो कमी थी उसमें 1.81 करोड़ प्रूफ लीटर की वृद्धि हो गयी और यह कब हुआ है, यह हुआ है ई.डी. के छापा पड़ने के बाद। मदिरा विक्रय वर्ष 2018-19 की तुलना में वर्ष 2019-20 में 124 करोड़ रूपये, वर्ष 2020-21 में 628 करोड़ रूपये और वर्ष 2021-22 में 662 करोड़ रूपये की कमी आयी थी। उसके बाद वर्ष 2022-23 का देखेंगे तो इस वर्ष 633 करोड़ रूपये की वृद्धि हुई है, यह वृद्धि ई.डी. के छापा मारने के बाद हुई है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मतलब यहां पर शराब पीने वाले तो उतने ही है, लेकिन उसकी बिक्री में अंतर आया है। हम लोग लगातार आरोप लगा रहे थे कि दुकान में दो पेटी रखी जा रही है, उसमें से एक पेटी सरकारी राजस्व की है और जो दूसरी पेटी है, उसका पैसा पता नहीं कहां जा रहा था। ई.डी. के छापा पड़ने के बाद से लगातार बिक्री में वृद्धि हो रही है।

मानसनीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसमें दुकानों की बात करना चाहता हूं। वर्ष 2018-19 में 08 प्रीमियम मदिरा की दुकानें थीं, अभी वर्ष 2023-24 में वह 27 हो गयी है। पहले जो कम्पोजिट दुकानें शून्य थीं, अभी 162 हो गयी है। पहले जो 106 बार थे, अभी यहां पर 154 शराब के बार चल रहे हैं। घर में जो अवैध शराब पहुंचाई जा रही है, वह अलग है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपका शराब में नॉलेज ज्यादा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- ई.डी. ने आपकी करतूत दिखाई है कि आपने बहुत बढ़िया नीति बनाई है। आपने शराब के माध्यम से प्रदेश को लूटने का काम किया है। (व्यवधान)

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- कौशिक जी, यह नीति तो आप लोगों ने बनाई थी, आपके नेता श्री रमन सिंह जी ने बनाई थी।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, यह वह नीति नहीं है।

श्री शैलेश पाण्डे :- कौशिक जी, यह वही नीति है जो राजेश मूणत जी ने बिलासपुर के राजेन्द्र नगर से बनाई थी, यह अलग नीति नहीं है।

श्री ननकीराम कंवर :- शैलेश पाण्डे जी, पंडित आदमी को क्या समझ में आयेगा। क्या आप भी जाते हैं ?

श्री शैलेश पाण्डे :- बाबा, आप बिलासपुर आओ। आपको भी पता चलेगा कि यह नीति कहां से बनी थी।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने अधिकारी-कर्मचारियों का जो डी.ए. का मामले में घोषणा की। छत्तीसगढ़ बनने के बाद में पहली बार यह स्थिति निर्मित हुई कि अधिकारियों को डी.ए. के लिए ऑफिस छोड़कर धरने में बैठना पड़ा। यह सरकार की आर्थिक माली हालत को दिखा रही है। अधिकारियों को जो डी.ए. का अधिकार है उसके लिए उनको धरने में बैठना पड़े। छत्तीसगढ़ बनने के बाद पहली बार इस सरकार के कार्यकाल में हुआ है। नहीं तो इसके पहले लगातार 15 सालों में जो सेन्ट्रल से एक स्लैब नीचे में डी.ए. देने का काम होता था और उसके पहले जब कांग्रेस की सरकार थी तो इस प्रदेश में धरना देने का काम नहीं हुआ। यहां अधिकारियों को ऑफिस से बाहर निकलने की जरूरत नहीं पड़े, लेकिन इस सरकार के आने के बाद यह स्थिति बनी है। उसके कारण लगभग मैं यह कह सकता हूँ कि कभी एक साल, छः महीने में डी.ए. दिया। जो 5 लाख कर्मचारियों को राशि जानी चाहिए। उन लोगों को 20 हजार करोड़ रूपये का घाटा हुआ

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

है यदि हम सारे अधिकारियों और कर्मचारियों को मिलाएंगे । उनके यह पैसे कहां चले गए? आज हम लोग छत्तीसगढ़ में विकास की बात करते हैं तो यहां विकास कहां पर है? यहां पंचायतों में कार्य नहीं हो रहा है। पंचायतें ठप्प पड़ी हुई हैं, इस प्रदेश में सड़कें नहीं बन रही हैं यहां लगातार आवाज उठ रही है कि सड़कें गड्ढों में तब्दील हो गई है। कोई रोपा लगा रहे हैं, कोई मछली डाल रहे हैं तो आखिर इस प्रदेश का पैसा कहां जा रहा है? मुझे एक संविदा कर्मचारी ने पत्र लिखा है उसने मुझे मोबाईल में वाट्सअप किया है। उन्होंने कहा कि इस सरकार के लिए लबरेज, ठगेश की उपाधि सही हो गई। अभी दो दिन पहले जो घोषणा की है कि वर्ष 2017 में संविदा कर्मचारियों को वृद्धि दी गई थी तो वर्ष 2019 से हर दो वर्ष में 20 प्रतिशत के हिसाब से लगभग वर्तमान में उनके वेतन में 48 प्रतिशत वृद्धि होनी थी, इसे घटाकर 27 प्रतिशत कर दिया गया है। इसलिए अभी वह लोग धरने में बैठे हुए हैं। इसी तर्ज पर अनियमित दैनिक, श्रमिकों का हर 5 सालों में वेतन वृद्धि देने का एक सामान्य नियम है और हम लोग लगातार देते आये हैं। वर्तमान में भा.ज.पा. सरकार द्वारा वर्ष 2017 में वेतन वृद्धि की गई थी। उसके पश्चात् जो उनको 8 हजार रूपये मिलना था उसके बजाए उनको 4 हजार रूपये दिया गया है। इसका परिणाम है कि वह संतुष्ट होने के बजाए असंतुष्ट हैं। वह 4 हजार रूपये में कैसे संतुष्ट होंगे। यह उनका अधिकार है और इसलिए वह लोग धरने में बैठे हुए हैं।

मानीय अध्यक्ष महोदय, कल माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो घोषणा कि उन स्वास्थ्य कर्मचारियों को लाभ ही नहीं मिला। जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत जो काम करने वाले हैं। जो यह बताया गया तो लगभग इसी बात की नाराजगी है। इनका वायदा नियमित करने का था। अभी जो इस सरकार का अंतिम अनुपूरक आया है तो इसमें लोगों को यह लगा। उन्होंने इस सरकार से जो उम्मीद रखी थी जो उनकी आशा की किरण थी, उनकी सारी आशाएं समाप्त हो गईं हैं। इसलिए आज वह लोग अर्द्ध [XX][30] प्रदर्शन की तैयारी में हैं। मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा कि वह लोग प्रदर्शन कर रहे हैं। इस प्रदेश में जो स्थिति बनी रही है। आखिर यह सरकार क्या कर ही है? यह प्रदर्शनकारियों से बातचीत क्यों नहीं कर रही है ? उनसे बातचीत करके रास्ता क्यों नहीं निकाल रही है ? माननीय चौबे जी यह बोल रहे थे कि यह आरोप है ये सिद्ध नहीं कर रहे है। इसी विधान सभा में चावल, चना और शक्कर का घोटाला 10 हजार करोड़ रूपये का उजागर हुआ था। जब उस अनियमितता को सत्यापन किया गया तो यह स्वीकार किया गया कि उसमें अनियमितता पायी गई है। अनियमितता पाये जाने के बाद कार्यवाही की बात आ रही है तब हाईकोर्ट का हवाला दिया जा रहा है कि हाईकोर्ट में 34 याचिकाएं लगायीं गईं हैं, लेकिन हाईकोर्ट ने निर्णय क्या दिया है ? हाईकोर्ट का क्या निर्देश है कि उन्होंने आपको कार्यवाही करने से कब रोका है ? बाकी सत्यापन करने से कब रोका है ?उसके बजाए...।

---

[30] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय कौशिक जी, आप बहुत विद्वान हैं। आप चन्द्राकर जी के चक्कर में कहां पड़े हैं। उन्होंने आपको वहां से यहां ला दिया। अभी भी वही बोल रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक माननीय विद्वान दूसरे माननीय विद्वान को बता रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जल जीवन मिशन के बारे में कहना चाहता हूँ। पूरी गर्मी का मौसम निकल गया। हमने लगातार अधिकारियों से बात की। जब टंकी बनी हुई है, पाईपलाईन बिछी हुई है और पाईपलाईन बिछने के बाद में घर में टेप नल में पानी क्यों नहीं जा रहा है? टेप नल में पानी पहुंचना चाहिए न। पूरे गर्मी में एक भी घर में पानी पहुंचाने की स्थिति, एक गांव में लोकार्पण कराने की इनकी स्थिति नहीं बनी। कलेक्टर अलग मॉनीटरिंग कर रहे हैं, अधिकारी मॉनीटरिंग कर रहे हैं, मंत्री जी मॉनीटरिंग कर रहे हैं। लोगों के घर में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था पहुंचाने के लिए जल जीवन मिशन योजना बनाई गई और योजना बनाने के बाद में पूरे छत्तीसगढ़ की रिर्पोटिंग देखेंगे तो हिन्दुस्तान में सबसे लास्ट में छत्तीसगढ़ का नंबर है। बाकी जगह पानी उपलब्ध हो गये हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ में यह सरकार के रहते पानी नहीं मिलेगा। 27 सितंबर इस योजना के पूर्ण होने की लास्ट तारीख है, लेकिन सितंबर निकल जायेगा, इसकी अवधि बढाने की मांग किये हैं, दूसरे प्रदेश का बढ़ा हुआ है, इस प्रदेश में कर ही नहीं पायेंगे चाहे जितनी अवधि बढ़ा लें। क्योंकि यदि पैसे करप्शन में जायेंगे। 10 हजार करोड़ रुपये के टेंडर में मुख्यमंत्री जी को हस्तक्षेप करना पड़ा और उन्होंने कहा कि प्रदेश में बदनामी हो रही है इसलिए जिले में दे दीजिए। केबिनेट के द्वारा खत्म करके अपनी बदनामी को जिला में थोपने का काम किया गया। जिले में जाने के बाद जो हमको जो सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है कि जितनी सी.सी. रोड गांव में बनवाये थे, वह सारी सी.सी. रोड को खोदने का काम किया गया है। लेकिन न वहां पानी पहुंचा, न योजना का क्रियान्वयन हुआ और न उस सी.सी. रोड को ही बनवाने का काम कर रहे हैं। यह स्थिति जल जीवन मिशन में है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मध्यान्ह भोजन घोटाला के बारे में इसी सदन में हम लोगों ने आवाज उठाई थी। जो सूखा राशन है, उस सूखे राशन में जिस प्रकार से यहां पर करप्शन का मामला आया। मैं कुछ जिलों का उदाहरण आपको देना चाहता हूं। आज भी वह अधिकारी निलंबित है। कोंडागांव, जगदलपुर, सूरजपूर ऐसे अनेक जिले हैं जो भंडार क्रय नियमों की अवहेलना कर, कानून, कायदे को ताक में रखकर जिस प्रकार से आदेश दिया गया, एन.सी.सी.एफ., नेकॉफ, केन्द्रीय भंडार व निजी स्व-सहायता समूह से बिना निविदा के जिस प्रकार से सूखा राशन में खरीदी की गई, उसमें लगभग 1 हजार करोड रुपये का घोटाला है। उसमें अधिकारी निलंबित है। अभी पूरी जांच नहीं हुई है। एक प्रकार से जब इस सरकार के बारे में घोटाले की बात करते हैं या जो आरोप लगाते हैं तो जो मंत्रियों का जवाब है, उन्होंने खुद निलंबित किया। यहां पर 2-3 घोटाले प्रचलित हैं। कोल घोटाला, रेत घोटाला, भूमि घोटाला। मैं

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कोयला के बारे में बताना चाहता हूं कि 500 करोड़ रुपये का ई.डी. के छापा मारने के बाद में प्रमाणित है। अभी जिस प्रकार से वहां पर अवैध कोयले की निकासी हो रही है, कोयले की गाड़ियों का जो काफिला है, आपके कोरबा, दीपका, हर्दीबाजार से अनेक जगह से अवैध कोयले की गाड़ियों का काफिला निकल रहा है और उस काफिले की अगुवाई सरकारी अधिकारी लोग कर रहे हैं। उस कोयले की कोई रायल्टी नहीं मिलती, उसको कोई पुलिस वाला रोकता नहीं है। उस कोयले का जिस प्रकार से अवैध रूप से परिवहन हो रहा है, इस सरकार के आने के बाद में लगभग 5 हजार करोड़ रुपये के कोयले के अवैध उत्खनन का मामला सामने आया है, जिसकी रायल्टी न केन्द्र सरकार को मिल रही है और रायल्टी को चोरी हो रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से कोयले के दाग लगे हुए हैं यह छत्तीसगढ कोयले के दाग से काला दिखाई दे रहा है, जिस प्रकार से यहां पर अवैध उत्खनन चल रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, रेडी-टू-ईट में एक निजी व्यक्ति को लाभ पहुंचाने के लिए रेडी-टू-ईट का काम छीना गया, उसमें 20 हजार महिलायें काम कर रही थीं और उन 20 हजार महिलाओं को काम से निकाला गया।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- रेडी-ई-ईट केवल भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता भेजा करते थे, आप गुणवत्ता देख लीजिए, अभी की रेडी-टू-ईट की गुणवत्ता और पहले की रेडी-टू-ईट कीगुणवत्ता के बारे में भी थोड़ा सा बोलिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- अब समाप्त करिये न।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको केवल यह बताना चाह रहा हूं कि रायगढ़ में रेडी टू ईट पंजीरी बनाने की जो मशीन लगी हुई है, उसका बिल पूरे छत्तीसगढ़ में 5 लाख से कम आया है। इसका मतलब यह हुआ कि रेडी टू ईट मिल पंजीरी रायगढ़ में नहीं बन रहा है बल्कि एक निजी व्यक्ति को लाभ पहुंचाने के लिए कहीं से भी लाकर आपने जो परोसने का काम किया है, उसका अंतर पड़ा है कि कुपोषण के लिए अतिरिक्त 500 करोड़ रूपये डी.एम.एफ. मद से दिया गया है और उसके बाद भी यहां पर परसों के प्रश्न में आया कि 39,000 नवजात शिशुओं की मृत्यु हुई हैं, जिसमें 8 महीने और 5 वर्ष से कम के शिशु हैं। जो 39,000 शिशुओं की मृत्यु हुई हैं, वह इस सरकार के आने के बाद में हुई है और जिस प्रकार से हम लोगों के सामने करप्शन के कारण कुपोषण का प्रभाव दिख रहा है । माननीय अध्यक्ष महोदय, कोविड काल में जिस प्रकार से दवा को लेकर, किट को लेकर और अन्य जो रेपिड टेस्ट को लेकर खरीदी हुई है, उसमें लगभग 1 हजार करोड़ रूपये का घोटाला हुआ है। उसी दवाई को जब हमारे मेडिकल कॉलेज में खरीदा गया और उसी दवाई को हमारे राज्य सरकार के द्वारा खरीदा गया है और खरीदी में जो अंतर आई है, मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह कैसे हुआ है? रेपिड टेस्टिंग कीट में 500 रूपये प्रति कीट के और बाद में उसी किट को 10 रूपये में खरीदी की गई है।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- माननीय, एक मिनट। आप बोल रहे हैं। मैं पीछे बैठा हूं तो मुझसे रहा नहीं जा रहा है। मैं भी शायरी से एक छोटी सी बात बोलना चाहता हूं। अपनी झूठी बातों से ..।

श्री अजय चंद्राकर :- आशीष जी, मेरी बात को सुनिये। मुख्यमंत्री जी यहां 1 मिनट के लिए बैठे तो यह प्रभाव हो गया। वह 5 मिनट बैठते जाते तो नहीं मालूम कि आप कितना उछल जाते। आपने पूरे चार दिन में एकाध लाईन बाला है?

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- मुझे मौका नहीं मिला न इसीलिये तो मैं बोल रहा हूं।

अपनी झूठी बातों से लोगों के दिलों में जहर घोलते हो।

श्री अजय चंद्राकर :- उनका यह प्रभाव है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोविडकाल में जो खरीदी हुई और यह विधान सभा का प्रमाणित है । मैं उसी बात को रख रहा हूं जिसको हमने प्रमाणित है और जिस बात को हम अविश्वास प्रस्ताव में लेकर आए हैं।

अध्यक्ष महोदय :- बाकी लोग क्या रखेंगे। महाराज, बाकी लोग क्या रखेंगे ?

श्री धरमलाल कौशिक :- बाकी सब लोग बोलेंगे। अध्यक्ष महोदय, हमारा एक बड़ा प्रोजेक्ट है - अरपा भैंसाझार योजना । अरपा भैंसाझार योजना में जो नक्शा बनाया गया, डिजाईन बनायी गई और काम शुरू होने के बाद में सुविधानुसार उसमें तब्दीली की गई कि किस जमीन को छोड़ना है, किसको लेना है। उसमें यह हुआ कि जिस जमीन का अधिग्रहण किया गया, उस जमीन का मुआवजा नहीं मिला, लेकिन जो जमीन अधिग्रहित नहीं की गई है, उस जमीन का मुआवजा दिया गया। जो जमीन उसमें प्रस्तावित नहीं है, उसमें नहर बना रहे हैं। मतलब अरपा भैंसाझार इतना बढ़िया प्रोजेक्ट है। 67 हजार एकड़ की सिंचाई हो गई है। जब मैं विधान सभा का अध्यक्ष था और डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री थे, उस समय इस योजना को हम लोगों ने प्रारंभ किया था और इस योजना को प्रारंभ करने के बाद में आज इसकी स्थिति दिखाई दे रही है, वह बन रही है। इससे हमारे किसान प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे किसानों के सिंचाई के लिए जो योजना बनाए गए हैं, यह भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। तो उस पर जांच होनी चाहिए और जांच के बाद में उस पर कार्रवाई भी होनी चाहिए। कमेटी बनाई गई है और कमेटी बनाकर कलेक्टर के द्वारा उसमें अभी जांच हो रही है। पी.एस.सी. और व्यापम घोटाला की बात सामने आई है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने देखा है कि जो अभी पी.एस.सी. के रिजल्ट आए हैं, उसमें जो गांव के लोग हैं और उसमें जो गांव के लोगों ने परीक्षा दिया है, उनकी उम्मीद थी कि हम परीक्षा में निकलेंगे। लेकिन जब उसका रिजल्द आया और रिजल्द आने के बाद में देखे हैं कि उसका कैसे सौदा किया गया और सौदा करने के बाद में पी.एस.सी. को भी इन्होंने भ्रष्टाचार में नहीं छोड़ा। उसमें जो अधिकारी बैठाये गये हैं, उस अधिकारी के ऊपर में पहले से कई प्रकरण दर्ज हैं। ऐसे अधिकारी को पी.एस.सी. का चेयरमेन बनाया गया। उनको चेयरमेन बनाने के बाद में उन्होंने जो कालिख पहले अपने विभाग में पोता

है। आज पी.एस.सी. में आने के बाद में सबसे बड़ी बदनामी पी.एस.सी. की हो रही है। जिस पर हमारे युवा विश्वास करते हैं कि पी.एस.सी. में कम से हम लोगों को अवसर मिलेगा।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद । आपने बहुत शांतिपूर्वक भाषण दिया ।

श्री आशिष कुमार छाबड़ा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी बात पूरी नहीं हुई थी । चूंकि हम लोगों को बोलने का अवसर कम मिलता है ।

अपनी झूठी बातों से लोगों के दिलों में जहर घोलते हो,
अपनी झूठी बातों से लोगों के दिलों में जहर घोलते हो ।
तुम यह तो बताओ ।
क्या कभी सच भी बोलते हो ? (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- यह सब विधानसभा के उत्तर का है । आपके मंत्री ने दिया है ।

श्री कवासी लखमा :- नेता जी, अच्छा उत्तर दिया ।

श्री धरमलाल कौशिक :- हमारे विधायक अच्छे हैं । उनको मालूम है कि हमारे मंत्री जी कितना असत्य बोलते हैं और उन्होंने उत्तर दिया है करके ।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- माननीय नेता जी, आपकी बात सुनकर रहा नहीं गया इसीलिये मैंने बोला ।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस विषय में मैंने विभाग में शिकायत की कि उन्होंने अपने-अपने रिश्तेदारों को लगा लिया । जबकि रिश्तेदार के लिये वे उसमें भी नहीं बैठ सकते । नामांकन देना तो अलग है, नियुक्ति देना तो अलग है लेकिन अपने-अपने रिश्तेदारों को चूंकि इसके लिये मैंने शिकायत की ।

अध्यक्ष महोदय :- कहां बैठा दिया ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, महादेव व रतन्य घोटाला आपने सुना है । आज स्थिति यह है कि सारे लोग उसी में लगे हुए हैं और जो आंकड़े आये हैं कि प्रति सप्ताह 10 करोड़ रूपये से लेकर 2 लाख तक के उपर से लेकर के नीचे तक बंटाई हो रही है ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय धरमलाल जी, पवार साहब मुंबई में कितना घोटाला किये थे । क्या आपकी पार्टी में जो घोटाला होगा वह खत्म हो जाता है ? यह घोटाला-घोटाला ऊपर से चलता है । बस्तर-सरगुजा में जो काम हो रहा है, उसके बारे में थोड़ा बताओ ।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपने शराब के बारे में तो बताया नहीं । आप खड़े नहीं हुए ।

श्री कवासी लखमा :- अभी मैं शराब के बारे में बताउंगा न । मैं समय में बताउंगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- प्रमाणिक है । दादी प्रश्न को देख लो ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- पहले आप इसको बताईये न कि पिकअप क्यों नहीं ले रहा है ? सब लोग परेशान हैं और पिकअप भी नहीं ले रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये बैठिये । अभी 35 लोग बाकी हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकारी दफ्तरों में यह एक बड़ा खेल जो चल रहा है कि जो पैसा राज्य सरकार का है । बैंकों से निकालकर प्राईवेट बैंक में उनको जमा करना और उसके नाम से, सी.एस.आर. के नाम से उसमें जो कमीशनखोरी का काम चल रहा है । पता नहीं वह कब पैसा लेकर चले जाये और पैसा डूब जाये तो केवल कमीशन के चक्कर में हमारे जो राष्ट्रीयकृत बैंक हैं और ऐसे बड़े बैंकों से निकालकर के प्राईवेट बैंकों में अभी जो पूरे प्रदेश में, जब प्रधानमंत्री जी यह चाह रहे थे कि सारे लोगों का अपना खुद का घर होना चाहिए और खुद का घर होना और मकान होना उनके लिये सम्मान की बात है ।

श्री कवासी लखमा :- प्रधानमंत्री के नाम से पूरा पैसा दें, 100 रूपये पूरा दें । 50-50 राज्य सरकार को । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- आपको यह बताना चाहिए न कि हमारी सरकार की हैसियत नहीं है ।(व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- उस समय माननीय इंदिरा गांधी जी पूरा पैसा देती थीं। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार की मैचिंग ग्रांट देने की हैसियत नहीं है ।(व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके शासनकाल में चिटफंड कंपनी ने हजारों लोगों का पैसा लूटा था ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक सरकार होती है जो यह सोचती है कि केंद्र से पैसा आना चाहिए । ज्यादा से ज्यादा योजना बननी चाहिए लेकिन अकेली छत्तीसगढ़ सरकार ऐसी है कि केंद्र सरकार पैसा दे रही है तो राज्य सरकार के हाथ-पांव फूल रहे हैं और प्रधानमंत्री आवास योजना जो 12 लाख लोगों को दिये गये थे । अनेक पत्र आये, मंत्रियों ने बात की । मंत्री का पत्र आया, अधिकारी का पत्र आया और उसके बाद में यह 10 हजार करोड़, 12 हजार करोड़ रूपये जो यहां से वापस हुए ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय कौशिक जी, वर्ष 2011 में कांग्रेस पार्टी ने सर्वे किया । आपने नहीं किया, उसको क्यों नहीं बोला ? हमारी सरकार अभी सर्वे कर रही है । अभी बजट में पैसा आया है, वह बनेगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपकी सरकार की विदाई हो जायेगी । काम शुरू नहीं होगा ।

श्री कवासी लखमा :- विदाई नहीं होगी, फिर आने वाले हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आवास नहीं मिला तो केवल दिखाने के लिये आप सर्वे कर रहे हैं और सर्वे करके क्या बताना चाहते हैं ? केंद्र सरकार से जो राशि आयी उसका उपयोग करने की स्थिति में आप नहीं हैं और उसके बाद में आप बोल रहे हैं कि उनका सर्वे करके हम मकान बनायेंगे । पिछले समय आपने घोषणा जारी की थी कि हम दो कमरे का मकान देंगे । आजतक किसी को दो कमरे का मकान नहीं मिला है ।

श्री कवासी लखमा :- देंगे, अभी देंगे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- कब देंगे ?

श्री कवासी लखमा :- देंगे, देंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- कब दोगे? आपका कार्यकाल अब समाप्त हो गया है और आप बहुत जल्दी जाने वाले हो। माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार केन्द्रीय योजनाओं का लाभ छत्तीसगढ़ के लोगों को मिलना चाहिए, उसमें सबसे बड़ी अगर कोई बाधा है और ब्रेक है तो यह छत्तीसगढ़ की सरकार है। केन्द्र सरकार की राशि को हितग्राहियों तक पहुंचने में रोकने का काम यह छत्तीसगढ़ की सरकार कर रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षक भर्ती में क्या हो रहा है? क्या 14 हजार शिक्षकों की भर्ती हुई? वर्ष 2019 में विज्ञापन जारी हुआ और वर्ष 2019 में विज्ञापन जारी होने के बाद में आपका समय निकल गया। लगभग अभी 72 हजार शिक्षकों के पद रिक्त हैं और रिक्त पदों पर एक भी पोस्टिंग करने की स्थिति में नहीं है। 14 हजार शिक्षकों की भर्ती हेतु वर्ष 2019 में जो विज्ञापन निकाला गया था, उन 14 हजार शिक्षकों की आज तक भर्ती नहीं हुई। अभी जब प्रमोशन का समय आया तो प्रमोशन में स्वाथपूर्ण बंटवारे में लगे हुए हैं कि हम कैसे लूटे? कितना बढिया सिस्टम बनाये हैं कि पहले पोस्टिंग करनी है तो पहले दूर भेज दो और दूर भेजने के बाद जब आपके पास आयेंगे तब आप उन्हें पैसे लेकर बताना कि हमारे पास यहां जगह है। आपको adjust करते हैं। ये केवल बिलासपुर का मामला नहीं है। रायपुर में जांच चल रही है। उसके बाद मैं तो चाहूंगा कि आप मुंगेली में भी जांच करायें और बाकी जगह जांच करायें तो ये करोड़ों रूपये का घोटाला केवल पोस्टिंग के नाम से जिस प्रकार से सरकार द्वारा की जा रही है..।

अध्यक्ष महोदय :- आप अध्यक्ष रहे हैं। आपको मुझे बार-बार टोकना अच्छा नहीं लग रहा है। आप यहां मेरी जगह होते तो क्या करते? यह बता दीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं आपसे 10 मिनट ले लेता हूं।

श्री अमरजीत भगत :- धरम भैया, आप इतने समझदार हैं। आप इतनी मेहनत कर रहे हैं, आपकी तो पार्टी आपका महत्व ही नहीं समझती। आप कितना परेशान हैं, बताओ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अमरजीत जी, आप तो बैठ जाओ। क्या, मैं आपका 10 मिनट ले लूं। नहीं, तो मैं अभी बैठ जाता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, बैठ जाइए, ज्यादा अच्छा है। इन लोगों को अवसर दीजिए न। आप कहां लगे हैं? जल्दी 2 मिनट, 5 मिनट में खत्म करिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- ठीक है। माननीय अध्यक्ष महोय, मैं 2-3 बातों का जिक्र करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- हां, महत्वपूर्ण बातें करिए, बाकी छोडिए। सभी एक ही घोटाले करेंगे न। सभी लोग घोटाला-घोटाला कह रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- अच्छा, हमने आरोप क्या लगाया है? हमने भाषण दिया तो आपने क्या कहा? चौबे जी ने कहा कि आप भाषण दे रहे हैं। तो मैं तो आरोप को सिद्ध कर रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं यह कह रहा हूं कि आपने घोटालों के 190 आरोप लगाये हैं तो 10-10 घोटाले बांट लीजिए। 10-10 मिनट बात करिए। सभी 190 में बात करेंगे तो कैसे होगा?

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं 2-3 बातों को बोलकर समाप्त कर रहा हूं।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, वे लोग ही नहीं हैं। सब लोग भाग गये हैं। पूरा कुर्सी खाली है। रमन सिंह तो पहले से ही गोल हैं। भा.ज.पा. के नेता लोग कोई नहीं हैं। बृजमोहन जी ने बड़ी-बड़ी बात की, वे भी गोल हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, डी.एम.एफ. की बात आई। चाहे वह कोरबा की बात हो, जांजगीर की बात हो, जो आपके जिले के हैं या दंतेवाड़ा की बात हो। जिस प्रकार से डी.एम.एफ. का दुरूपयोग किया जा रहा है, मैं आपको दंतेवाड़ा का एक उदाहरण बताना चाहता हूं।

श्री अमरजीत भगत :- धरम भैया, रिक्वेस्ट है कि प्लीज नो रिपिटेशन। ये रिपिटेशन हो रहा है। स्पीकर साहब, पहले से ही बोल चुके हैं कि रिपिटेशन नहीं होना चाहिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, डी क्लास का ठेकेदार है और पेपर में वहां के सांसद जी के बारे में और सांसद प्रतिनिधि के बारे में खबर लगातार छप रही है। अभी बरसात में बारिश हो रही है, तब वहां पर सीमेंटीकरण का काम हो रहा है और छाता लगाकर लोग वहां पर खड़े हुए हैं और ठेका कैसे दिया जाता है और उसका दुरूपयोग कैसे होता है? श्रीमती टरिष्क्या राणा ये जो ठेकेदार है, डी क्लास की ठेकेदार है। उन्हें एक काम दिया गया है। एक ही काम को कई टुकड़ों में बांटा गया है। मैं आपको उदाहरण बता रहा हूं कि कैसे किया जाता है? उनको 9 महीने की अवधि दी गई है और 45 लाख एक काम का दिया गया है और काम क्या है, बूढ़ातालाब, बारसूर में सौंदर्यीकरण भाग 18 विद्युतीकरण। दूसरा, मैं आपको एक डेट में ही बता रहा हूं। श्रीमती टरिष्क्या राणा, डी वर्ग ठेकेदार बूढ़ातालाब, बारसूर में सौंदर्यीकरण वर्ष 2016 से वर्ष 2018, इसकी राशि 77 लाख 19 हजार है। ऐसे लगभग 5 हैं। मतलब करोड़ों रूपये, जो बड़े टेंडर होने चाहिए, वो बड़े टेंडर के बजाय में डी क्लास को अपने लोगों को कैसे 1-1 नाम से 10-10 उसमें अलग से किया गया, एक तारीख में घोषित किया गया

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

और उसका कितना दुरूपयोग किया जा रहा है, मैं केवल उसका एक उदाहरण बताना चाह रहा हूं । अध्यक्ष महोदय, मैं आतंक और इस सरकार के हमले की बात कह रहा था और तखतपुर में एक आदिवासी महिला सरपंच है । उस आदिवासी महिला सरपंच ने त्यागपत्र दिया । किसलिए दिया ? वह सबके पास गई उसके बाद भी कहीं भी उसकी सुनवाई नहीं हुई । इसके चलते उसने यह कहा कि मैं विकास के लिए सरपंच बनी हूं, यदि मैं विकास नहीं कर सकती तो मैं त्याग पत्र दे रही हूं । त्याग पत्र क्यों दिया, इसका कारण पूछने के लिए कोई नहीं आया । न किसी अधिकारी ने पूछा और न ही कोई जन प्रतिनधि गया । बल्कि उसके पास एक फार्मेट भेज दिया कि आप इसमें भरकर भेजिए आपके त्याग पत्र की स्वीकृति हो जाएगी । उस सरपंच के सपोर्ट में तखतपुर के 122 सरपंचों ने त्याग पत्र देने के लिए जिला कलेक्टर बिलासपुर से मिले और उसके बाद उन्होंने कहा कि हम लोग त्याग पत्र देते हैं । जब एक आदिवासी महिला की सुनवाई नहीं हो सकती तो हम लोगों की क्या सुनवाई होगी ?

समय
3.11 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

उपाध्यक्ष महोदय, कनिष्ठ अधिकारियों को अपर पोस्ट पर बैठाने का सिलसिला शुरू हुआ है । 15 सालों से जिन किसानों को कभी बिजली का बिल नहीं गया, बिजली बिल हाफ के नाम से उनके पास बिजली बिल भेजने का काम इस सरकार के द्वारा किया गया है । इनका कहना है कि विद्युत कटौती नहीं है, पंप कनेक्शन में 5 से 8 बजे रात तक लगातार कटौती हो रही है । उपाध्यक्ष महोदय, किसानों के साथ धोखाधड़ी का मामला मैंने उठाया था । एक मामला और चल रहा है मैंने करंट से हाथी की मौत का मामला उठाया था । अभी जो शेर की खाल पकड़ी गई, उसमें जो गिरफ्तार हुए हैं, हमने पहले ही इस बात को जाहिर किया था कि यह एक षड्यंत्र है । यह षड्यंत्र केवल राज्य का नहीं है । लगातार हाथियों की मौत हो रही है, लगातार भालुओं की मौत हो रही है उस पर चिंतन करना चाहिए । लेकिन लोगों के पकड़ाने के बाद समझ में आया कि सरगना के द्वारा कैसे उनको करंट लगाकर मौत के घाट उतारा जाता है । उसके बाद उनके नाखून, उनकी हड्डी और अन्य अंगों को निकालकर तस्करी करने का काम लगातार हो रहा है । इसमें कहीं पर सरकार के द्वारा ब्रेक नहीं लगा है ।

श्री अमरजीत भगत :- धरम भइया, यह हाथी वाला मामला आपके अविश्वास प्रस्ताव का हिस्सा है । आप बहक गए हैं, कहां से इसमें जंगली हाथी आ गया ?

श्री धरमलाल कौशिक :- बृजमोहन जी ने जो शुरूआत की है, मैं उस बात को रिपीट नहीं करूंगा लेकिन कहना चाहूंगा कि आपका खूफिया तंत्र फेल है । वे बच्चे सड़कों पर निकल गए, लेकिन रोकने वाला कोई नहीं था ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय पूर्व अध्यक्ष जी, अभी गर्मी इतनी है कि हम लोगों को गर्मी के कारण शर्ट उतारना पड़ेगा । ऐसा लगता है अमेरिका टाईप लू चल रही है । कूलिंग को बढ़वाओ, नहीं तो शर्ट उतारना पड़ जाएगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- उपाध्यक्ष महोदय, मैंने तस्करी और अन्य बातें की । यह केवल पहली घटना नहीं है, उसके पहले आपको मालूम है कि हमारा खूफिया तंत्र कितना फेल है कि खालिस्तान का नारा लगाते हुए, सामने तख्ती लेकर चलने वाले, मुख्यमंत्री निवास सिविल लाईन्स से निकल गए लेकिन न पुलिस को मालूम, न सरकार को मालूम, न गृहमंत्री को मालूम । खुफिया तंत्र पहली बार फेल नहीं हुआ है, यह लगातार फेल हो रहा है । ये कहते हैं कि भूपेश है तो भरोसा है लेकिन इस सरकार के बारे में कहना चाहता हूं कि कांग्रेस है तो धोखा है, हर भ्रष्टाचार अनोखा है, कमाने को खोखा ही खोखा है, धक्का मारो मौका है । जनता इस बात को बोल रही है । आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद् ।

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 44 घोटाले और 110 आरोप । इसके साथ जो आरोप पत्र प्रस्तुत किया गया है । एक भी तथ्यात्मक जानकारी नहीं है । माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी ने चर्चा की शुरूआत की । मैं ऐसा समझता हूं उन्होंने चर्चा न करते हुए केवल (xx) [31] की है । जिस प्रकार से उन्होंने यह कहा कि कुछ लोग (xx) अवस्था में प्रदर्शन किया तो पूरी सरकार (xx) हो गई । कल के दिन कोई जल सत्याग्रह करेगा, पानी में डूबेगा तो क्या पूरी सरकार डूब जाएगी ? यह किस प्रकार का तर्क है। छत्तीसगढ़ के विधानसभा के अनुरूप या उसकी गरिमा के अनुकूल इस प्रकार की बात नहीं हो सकती की पूरी सरकार [XX] हो गयी है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बहुत ज्यादा भ्रष्टाचार और घोटाले की बात हुई है। मैं आपके सामने कुछ जानकारी रखना चाहता हूं। माननीय रविन्द्र चौबे जी ने रायगढ़ के बारे में अपनी बात कह दी है कि डॉ. रमन सिंह ने रायगढ़ में क्या कहा था, मैं उसको रिपीट नहीं करना चाहता। लेकिन भारतीय जनता पार्टी के जो वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, पहले छत्तीसगढ़ के प्रभारी हुआ करते थे, उन्होंने रायपुर में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं से यह कहा था कि एक साल तक चावल की दलाली खाना बंद कर दीजिए तो सरकार वापस आ जाएगी। (शेम-शेम की आवाज) दिल्ली के बारे में, महंगाई के बारे में या दिल्ली से संबंधित जो भी बातें यहां पर हुई, जब चौबे जी ने कहा तो आप लोगों ने आपत्ति की कि आप घोषणा पत्र के बारे में दिल्ली को लेकर कोई बात नहीं कर सकते, ठीक है जाने दीजिए। अब आप यह बता दीजिए कि आपके घोषणा पत्र के हिसाब से आपने हर आदिवासी परिवार को गाय दे दी क्या ? सभी बेरोजगारों को भत्ता दे दिया क्या? पांच हार्स

[31] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

Uncorrected and unedited/Not for Publication Friday, July 21, 2023

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पॉवर बिजली के पंपों को फ्री कर दिया क्या ? 270 रूपये धान का बोनस दे दिया क्या ? आप कुछ भी नहीं कर पाए।

श्री अजय चंद्राकर :- देखिए, आप आला दर्जे के आलिम आदमी हैं, आप तथ्यों तर्कों वाले हो। घोषणा पत्र में चर्चा रोलिंग पार्टी की होती है या विपक्ष की होती है। पहले इसको तय कर लीजिए। दूसरी बात, आप 270 रूपये बोनस, गाय देने की बात बता रहे हो ना, इसमें आप तीन बार और चुनाव लड़ चुके हो। जोगी जी, पहले समय से हम गेरवा लेकर खड़े हैं, बोलते थे। तब से लेकर अब तक यह विषय कई बार इस सदन में आ चुका है। आप इधर आंकड़े प्रस्तुत करते थे, आप उस वाले आंकड़े में भाषण दीजिए।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप कृपया करके अपना आरोप पत्र पढ़ लें। उसमें आपका बिन्दु है कि आपने अपने घोषणा पत्र को पूरा नहीं किया तो घोषणा पत्र के बारे में चर्चा तो होगी ही। आप अपने आरोप पत्र में देख लीजिए। दूसरी बात यह है कि आपने खाली विभाग का नाम लिख दिया, वन घोटाला, स्वास्थ्य घोटाला, खाली विभाग का नाम घोटाला, कोई तथ्यात्मक जानकारी नहीं है। वन विभाग के बारे में आपने खाली वन घोटाला लिख दिया। मैं आपको वन के बारे में जानकारी दे देता हूं। वर्ष 2021 फारेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया, छत्तीसगढ़ में वन क्षेत्रफल के घनत्व में जो 2021 में आंकड़े प्रकाशित हुए हैं, 106 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है। छत्तीसगढ़ 1 लाख 35 हजार वर्ग किलोमीटर का है। 44.2 प्रतिशत फॅारेस्ट एरिया है। 106 वर्ग किलोमीटर घनत्व में वृद्धि हुई है। फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार वन क्षेत्रों के बाहर वृक्षारोपण, नदी तट वृक्षारोपण, हरियाली प्रसार, पौधा वितरण, इन सब चीजों को लेकर 1107 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं लघु वनोपज के संबंध में जानकारी देना चाहूंगा। पूरे देश में छत्तीसगढ़ अकेला ऐसा राज्य है, जो 67 प्रकार के लघु वनोपज को क्रय करता है। यह ट्राइफेड के आंकड़े हैं। पूरे देश में लगातार जो 74 प्रतिशत लघु वनोपज का क्रय है, वह अकेले छत्तीसगढ़ की सरकार करती है। आपके भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री स्वयं आकर मुख्यमंत्री जी के निवास में 9 पुरस्कार देकर गये हैं। (मेजों की थपथपाहट) आपने केवल एक लाईन में वन घोटाला लिख दिया।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, पहले तो आप अपने शब्दों को सुधार लीजिए, आपकी सरकार नहीं, हमारी सरकार। आपकी सरकार भी हमारी सरकार है।

श्री मोहम्मद अकबर :- आपकी पार्टी के भारत सरकार ने पुरस्कार दिया है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, तेंदूपत्ता की खरीदी, कांग्रेस पार्टी ने कहा था कि 2500 रूपये से बढ़ाकर 4000 रूपये प्रति मानक बोरा करेंगे। हमारे साढ़े 13 लाख संग्राहक हैं और लगातार सरकार बनने से अब तक 4 हजार रूपये के हिसाब से खरीदी की जा रही है। अब एक नई घटना घटी कि भारत सरकार की सामाजिक सुरक्षा बीमा योजना में 50 प्रतिशत अनुदान भारत सरकार का और 50 प्रतिशत अनुदान छत्तीसगढ़

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सरकार का था, उस बीमा योजना में पहले ही साल भारत सरकार ने मना कर दिया कि हम आगे पैसा नहीं देंगे, तब हमने शहीद महेन्द्र कर्मा जी के नाम से तेंदूपत्ता संग्राहक बीमा योजना बनाई। जिसमें 50 प्रतिशत की राशि भारत सरकार की तथा 50 प्रतिशत की राशि लघु वनोपज संघ और 50 प्रतिशत की राशि राज्य सरकार की है। इस प्रकार से हमने बीमा योजना की शुरूआत की है। वह योजना अभी तक लगातार संचालित है। इसके अलावा अभी हाथी के बारे में भी बहुत बातचीत हो रही थी। इसके पहले छत्तीसगढ़ में 3 एलीफेन्ट रिजर्व सेमरसोत, बादलखोल, तमोरपिंगला थे। हाथियों का बहुत ज्यादा ध्यान रखने वालों को मैं यह बताना चाहता हूं कि वर्ष 2008 में भारत सरकार की तरफ से 452 वर्ग किलोमीटर में लेमरू हाथी रिजर्व को सैद्धांतिक सहमति मिली थी। लेकिन वर्ष 2008 से लेकर वर्ष 2018 तक उसका नोटिफिकेशन नहीं हो पाया। उसका नोटिफिकेशन इसलिए नहीं हो पाया, क्योंकि वहां पर कोयले की खदानें थीं और तत्कालीन सरकार उन कोयले की खदानों को छोड़ना नहीं चाहती थी। लेकिन छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद उस 452 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को बढ़ाकर 1995 वर्ग किलोमीटर किया गया और बाकायदा उसका नोटिफिकेशन भी जारी किया जा चुका है। हाथियों के बारे में बात करना एक अलग बात है लेकिन यदि कोयला प्राथमिकता है तो फिर हाथियों को कौन देखता है। लेकिन इस सरकर ने फैसला लिया और 1995 वर्ग किलोमीटर में एलीफैन्ट रिजर्व बनाया।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरे एक और विभाग के बारे में लिखा है-परिवहन घोटाला। इसकी तथ्यात्मक जानकारी कुछ भी नहीं है। यहां परिवहन का काम होता है। जब हमने अंतर्राज्यीय बेरियर की स्थापना की, उस समय यह आरोप लगाया गया कि भ्रष्टाचार करने के लिए इसकी स्थापना की जा रही है। लेकिन फिर भी अंतर्राज्यीय बेरियर की स्थापना की गई। उसके पीछे का कारण यह है कि छत्तीसगढ़ एक नक्सल प्रभावित राज्य है और राज्य सरकार को गाड़ियों की आवाजाही की जानकारी होनी चाहिए। उसके हिसाब से विरोध का परवाह किये बगैर अंतर्राज्यीय बैरियर की स्थापना की गई। जिस दिन तत्कालीन सरकार ने उन बेरियरों को हटाया, उस समय की वार्षिक आय 12 करोड़, 12 लाख रूपये थी और अब उसकी आय वार्षिक 211 करोड़ रूपये है। यह परिवहन विभाग की उपलब्धि है। इसके अलावा बेरोजगारों को 461 परिवहन सुविधा केन्द्र दिये गये। उसमें लाइसेंस वगैर: बनाने की कार्रवाई होती है। इसके अलावा तुंहर सरकार, तुंहर द्वार योजना के माध्यम से रजिस्ट्रेशन प्रमाण, आर.सी. और बाई सेवाओं को परिवहन सुविधा केन्द्र में सीधे डाक के माध्यम से आप विभाग के ऑनलाइन सिस्टम में आवेदन कर सकते हैं और उसमें सभी प्रकार की बाइ सुविधाओं की जानकारी तथा आदेश तथा रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र, आर.सी. व ड्राइविंग लाइसेंस वगैर: मिलाकर अब तक कुल 21 लाख 52 हजार 450 लोगों को घर पहुंच सेवा के आधार पर दिया गया है। आपने एक लाइन लिखा है- परिवहन घोटाला। तो क्या घोटाला हुआ, इसकी भी तो जानकारी देनी चाहिए। लेकिन इस प्रकार की कोई बात नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कोरोना काल के बारे में बातचीत हो रही थी। कोरोना काल में 7 लाख श्रमिकों की वापसी हुई है। 21 हजार क्वारेन्टाइन सेंटर बनाये गये थे। इसमें 16 करोड़, 28 लाख, 20 हजार, 539 रूपये की लागत आई। 7 हजार, 978 यात्री वाहनों के जरिए पहले रेल के माध्यम से और फिर यात्री वाहन की व्यवस्था करके उनको अलग-अलग गन्तव्य स्थान तक पहुंचाया गया। झारखण्ड, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ के अलग-अलग स्थान के लोगों को पहुंचाया गया। साढ़े 4 लाख लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। यहां तक कि कांग्रेस के लोग बाहर से आए हुए श्रमिकों को चप्पल तक पहनाये हैं और कपड़े दिये हैं। उसके बाद उनको अलग-अलग स्थानों में भेजा गया और भारतीय जनता पार्टी का कोई भी नेता या कार्यकर्ता इस पूरे मामले में कभी नजर तक नहीं आया और आप कोरोना की बात करते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय धरमलाल कौशिक जी आवास के बारे में बोल रहे थे। आवास के मामले में जो आवास योजना है, उसमें 2011 की सर्वे सूची में जिन लोगों का नाम पात्रता सूची में था, उनको पैसा मिलने में कुछ देर हुई, लेकिन बाद में 3200 करोड़ रूपए जारी हो गए । अब ऐसे लोग जो पात्र हैं, जिनको आवास मिलना चाहिए और पात्रता सूची में नाम नहीं होने के कारण उनको आवास नहीं मिल पाया, ऐसे लोगों के लिए 1 अप्रैल से दोबारा सर्वे हुआ है और आने वाले समय में इसकी पात्रता का परीक्षण होगा और इसमें भी कार्रवाई होगी । आपको संदेह करने का कोई औचित्य नहीं है ।

उपाध्यक्ष महोदय, बहुत सारे घोटालों की बात हो रही थी । मैं स्पेशिफिक बात करूंगा, हवाबाजी नहीं करूंगा । भाटापारा में धान घोटाला हुआ था, अब कौन किया था, क्या किया था, मैं न नाम लूंगा, न किसी के बारे में कोई बात करूंगा । स्पेशिफिक जानकारी दूंगा । बलौदाबाजार-भाटापारा जिला में धान संग्रहण केन्द्र नाम आलेसुर खम्हरिया में अवैध तरीके से राईस मिलर्स को 14 करोड़, 10 लाख, 88 हजार, 707 क्विंटल धान का परिदान किया गया । धान संग्रहण केन्द्र भाटापारा के देवरीसुमा में 12 अक्टूबर, 2015 को 15 करोड़, 02 लाख रूपये में 94,466 क्विंटल धान की अफरा-तफरी की गई । मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता, लेकिन हमारे भाटापारा के जागरूक विधायक हैं, इनको कुछ कार्रवाई करनी चाहिए, इनको कुछ बोलना चाहिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मंत्री जी, अगर आपने भाटापारा का उल्लेख किया है तो नि:संकोच नाम लीजिए कि किनके-किनके खिलाफ मामला बना, क्या कार्रवाई हुई ? आप नाम बोलिए, मुझे कोई संकोच नहीं है । अगर आपको नाम लेने में संकोच है तो मैं नाम बता देता हूं ।

श्री मोहम्मद अकबर :- देखिए, जब तक किसी दस्तावेज का उल्लेख न हो तो नाम नहीं लिया जाता ।

श्री शिवरतन शर्मा :- उस केस में कुछ लोगों को सजा हो चुकी है ।

श्री मोहम्मद अकबर :- आप क्यों चिंतित हो रहे हैं, मैंने तो आपका नाम नहीं लिया है न ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने मेरा उल्लेख किया कि भाटापारा के जागरूक विधायक हैं । आप दस्तावेज की बात कर रहे हैं । उस केस में कुछ लोगों को सजा हो चुकी है । सजा हो चुकी है तो आप उनका नाम बता दीजिए ।

श्री मोहम्मद अकबर :- मैं किसी का भी नाम नहीं लेना चाहता । मैं इसलिए नाम नहीं लेना चाहता कि मैं उन विवादों में पड़ना नहीं चाहता, लेकिन यह जो हुआ है, मै उसकी जानकारी दे रहा हूं और यह तत्कालीन सरकार के कार्यकाल का बोल रहा हूं, मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता ।

उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने आरोप-पत्र में बहुत घोटाला-घोटाला लिखकर दिया है तो कम से कम एक-दो जानकारी देना जरूरी है । 31 मार्च, 2011 को सी.ए.जी. ने एक रिपोर्ट जारी की और 31 मार्च, 2011 को सी.ए.जी. की रिपोर्ट है, उसमें शंकरपुर कोल ब्लॉक भटगांव 2, भटगांव एक्सटेंशन में अब ये लोग बताएंगे कि नागपुर की कौन सी कम्पनी को ठेका दिया गया था । मैं नाम नहीं लेना चाहता । नागपुर की कौन सी कम्पनी को ठेका दिया गया था । मैं कम्पनी का नाम बता देता हूं । वह ज्वाइंट वेंचर हुआ था । छत्तीसगढ़ मिनरल डेव्हपलमेंट कारपोरेशन और उसके साथ-साथ 13 सितम्बर, 2008 के आधार पर एसएमएस इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड एण्ड सोलर एक्सप्लोजिव्ह लिमिटेड, नागपुर की कम्पनी को दिया गया था, यह कम्पनी का नाम है । अब सी.ए.जी. ने क्या लिखा ? निविदाएं कम दर में स्वीकृति होने के कारण 1052 करोड़ रूपए की हानि हुई । अब मैं केवल इतना कह सकता हूं कि यह नागपुर की कम्पनी है, आप लोग जानते हैं कि यह किसकी कम्पनी है । मैं नाम लेना नहीं चाहता ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, ऐसा है आप बार-बार बोल रहे हैं कि मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता । जब कोई चीज ऑन रिकार्ड है तो नाम लीजिए न । अगर आपके पास तथ्य है तो नाम लीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह छायावाद है, आप फेंटेसी में बोल रहे हो । आप कल्पना कीजिए कि ऐसा हुआ होगा, नागपुर की कम्पनी किसकी थी ? तो छत्तीसगढ़ में ही साहित्य में फेंटेसी पैदा हो रही है । अभी मैं संस्कृति विभाग में बोलूंगा तो आप फेंटेसी में मत बोलिए न, आप तकनीकी भाषा में बोलिए ।

श्री मोहम्मद अकबर :- मैंने तो कम्पनी का नाम बता दिया न । मैंने नागपुर की कम्पनी का नाम लिया है, आप पता कर लीजिए ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- सच्चाई है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं सच्चाई ला बोल दूहूं तो उठ के चल देबे । नागपुर की एक कम्पनी का नाम, भाटापारा की एक कम्पनी ने ऐसा कर दी, लेकिन मैं नाम नहीं लूंगा । जिसका भी नाम हो, उसको लीजिए । मैं बोलूंगा तो मैं नाम लूंगा । आपको नाम लेना चाहिए कि शिवतरन जी ने घोटाला किया है । ये उत्तर देंगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहम्मद अकबर :- मैं तो बोल ही नहीं रहा हूं, आप क्यों बोल रहे हैं कि शिवरतन जी ने घोटाला किया है करके । मैं तो बोल ही नहीं रहा हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने कहा कि आप बोलिए ।

श्री मोहम्मद अकबर :- मैं क्यों बोलूं ? गरिमा का ध्यान होना चाहिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- नागपुर की कंपनी है, भाटापारा की कंपनी है, यह बात बंद कीजिये।

श्री मोहम्मद अकबर :- मैं क्यों बोलूं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- ये हवा-हवाई वाला काम बंद करिये।

श्री मोहम्मद अकबर :- हवा-हवाई का क्या है ? मैं तो कम्पनी का नाम ले रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह हवा-हवाई है।

श्री मोहम्मद अकबर :- मैं तो कम्पनी का नाम ले रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप प्रोपाइटर का भी नाम लो ?

श्री मोहम्मद अकबर :- मैं कंपनी का नाम ले रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह सनसनी पैदा करने वाली बात है।

श्री मोहम्मद अकबर :- यह सनसनी पैदा करने वाली बात नहीं है। एस.एम.एस. इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड नागपुर की कम्पनी है। सोलर एक्सप्लोसिव नागपुर की कम्पनी है। आपके पार्टी के एक सांसद की कम्पनी है और क्या बोलूं, बताओ ?

श्री अजय चन्द्राकर :- नाम बता दो।

श्री मोहम्मद अकबर :- सी.ए.जी. ने 1058 करोड़ का आपत्ति लगाया है। आप जबर्दस्ती अपने पार्टी के लोगों की बदनामी नहीं कराना चाहते हो तो फिर ज्यादा उत्तेजित मत करिये।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ था कि हसदेव अरण्य क्षेत्र में अब कोल ब्लाक का उत्खनन नहीं होना चाहिए। माननीय धर्मजीत जी और सारे लोग शामिल थे। जब हमने लेमरू बनाया तो लेमरू के लिए भारत सरकार को चिट्ठी लिखकर भेजा है कि इसको नीलामी की सूची से बाहर किया जाये। उस क्षेत्र में 39 कोल ब्लाक आते हैं। क्योंकि लेमरू एलीफेंट रिजर्व है और जो हसदेव अरण्य क्षेत्र है, वह बायो डायवर्सिटी के हिसाब से जो जैव विविधता है, उस जैव विविधता को संरक्षित करना है। इसलिए बायो डायवर्सिटी को लेकर जो प्रक्रिया चल रही थी, उसको पूरा कराना है इसलिए किसी कोल ब्लाक के खनन की अनुमति ना दी जाये, ना इसको बेचने की अनुमति दी जाये। भारत सरकार की जो सूची है, उससे उसको अलग किया जाये। यह छत्तीसगढ़ सरकार के कार्य करने की..।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा विधानसभा क्षेत्र हाथियों से बहुत ज्यादा त्रस्त क्षेत्र है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रामकुमार यादव :- नहीं, तुंहरे दु:ख मा उहां ले भागत हे। 15 साल मा जंगल ला तोड़ दे हा तो हाथी हा भागत हे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- वही तो, वहां खदान नहीं होना चाहिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप बोल रही है कि हाथियों से त्रस्त है, मंत्री जी बोले कि सब हाथी अनुशासित हैं। मंत्री जी तो बोल रहे हैं कि हाथियों से कोई तकलीफ नहीं है। आप मंत्री जी को बता दो।

श्री अजय चन्द्राकर :- हम लोग क्या **(xx)**[32] लेंगे।

श्री कवासी लखमा :- तू क्या **(xx)** आप **(xx)** ही नहीं सकते।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- वहां से कोयला ना ले जाये, सब ठीक हो जाये।

श्री धर्मजीत सिंह :- उसको जंजीर से बंधवाकर कहीं भिजवा देंगे।

श्री अमितेश शुक्ल :- क्या अजय भाई, मुर्शिद के साथ ऐसी बातें?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी, एक सेकेण्ड। अमितेश जी, आप मंत्री तो नहीं बने। आपके दादा, परदादा लोगों ने इस प्रदेश की सेवा की है। अब ना आपके पिता जी रहे ना चाचा जी रहे। आप एक भी संस्थान उन दोनों के नाम पर नहीं रखवा पाये। आप दोनों जगह मूर्ति भी लगवाये हो, तो आप अपने पैसे से लगवाये हो। एक जगह आधी मूर्ति लगी है। अपना थोड़ा पैजामा ढीला करके देख लो।

श्री अमितेश शुक्ल :- मैं तो पैंट पहनता हूं भाई, पैजामा कहां से ढीला करूं ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने आरोप-पत्र को देखा। उसमें खाली लिखा है कि बोधघाट सिंचाई परियोजना घोटाला, अरपा-भैंसाझार सिंचाई घोटाला, अरपा बैराज घोटाला, अरपा वाटर फ्रंट घोटाला, हसदेव बैराज घोटाला। कोई तथ्यात्मक जानकारी नहीं दी गई है। मैं तथ्यात्मक जानकारी दे देता हूं कि इनके समय का क्या घोटाला है। पूरे देश के इतिहास में पहली बार कोई बांध बिका है। किसी पावर प्लाण्ट के लिए बांध बिका है ? रोगदा बांध। पूरे देश में पहली बार, सन् 2008 जांजगीर चांपा के रोगदा बांध प्रायवेट लिमिटेड कम्पनी के.एस.के. एनर्जी पावर लिमिटेड 2541 परिवारों की खेती और उसके अलावा 10 गांवों को जमीन के.एस.के. कम्पनी को दे दी गई, जिसका सन् 2014 में कोल ब्लाक आवंटर रद्द हुआ है और 18 करोड़ में यह बांध बेचा गया। मैंने उस समय विधानसभा में प्रश्न लगाया था। यह 160 एकड़ का बांध था। उस समय विधानसभा में आसंदी से यह निर्देश हुआ था कि इसकी जांच विधायक दल के द्वारा किया जायेगा। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी उसमें अध्यक्ष थे। 3 सदस्य भारतीय जनता पार्टी से और 2 सदस्य मैं और माननीय धर्मजीत सिंह जी थे। हम लोगों ने उसमें विरोध किया था कि यह गलत है, पूरे देश में कहीं कोई उदाहरण नहीं है कि पावर प्लाण्ट कम्पनी को बांध बेच दिया जाये। लेकिन तत्कालीन सरकार ने के.एस.के. पावर प्लाण्ट के लिए रोगदा बांध को बेच

---

[32] (xx) अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

दिया। समिति की बैठक में मैंने और माननीय धर्मजीत जी ने डिसेन्ट नोट दिया, लेकिन बहुमत के आधार पर उसको पारित कर लिया गया कि कोई अनियमितता नहीं हुई है। उसको जिन शर्तों को लगाकर दिया गया, उसमें आज तक कार्रवाई नहीं हुई। आप लोग बांध बेचने का काम किए हैं। खाली बोधघाट घोटाला, अरपा, भैसाझार घोटाला लिख देने से कुछ नहीं होगा। कुछ तो तथ्यात्मक बात करो। कोई बात नहीं किए। आप लोग तत्कालीन सरकार के समय डॉ. रमन सिंह की सरकार ने रोगदा बांध बेचा था, पहली बार था ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करें । डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी । प्लीज सर, और कितना समय लगेगा ?

श्री रामकुमार यादव :- 15 साल में करे हव तेन घोटाला हरे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप हमारी बीजेपी सरकार पर आरोप लगा रहे हैं, साढ़े चार साल से आपको कार्यवाही करने से किसने रोका था ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि आरोप पत्र को आप ध्यान से पढ़ें, उसमें एक जगह लिखा है कि जैम पोर्टल खरीदी घोटाला, जैम पोर्टल है, वह केन्द्र सरकार का मार्केट प्लेस है, जिसमे खरीदी बिक्री का काम होता है । अब इसको पढ़ने के बाद ऐसा लगा कि भई जिस तरह से पूरा देश में हो रहा है, पहले तो बाल्को बिक गया, नगरनार स्टील प्लांट बिकने के कगार पर है, रेल्वे बिक रहा है, बीएसएनएल बिक रहा है, बंदरगाह बिक गये, यह सारी चीजें बिक रही है । अब इनके आरोप पत्र में लिखा है कि जैम पोर्टल खरीदी घोटाला, जैम पोर्टल कोई देख रहा है क्या ? जैम पोर्टल तो एक मार्केट प्लेस है, जिस पर कार्यवाही होनी चाहिये। यदि भारत सरकार इसको भी बेच रही है तो यह आपकी जानकारी में होगा, लेकिन कम से कम जब आपने आरोप पत्र बनाया, उन शब्दों को आप पढ़ लेते कि आप क्या लिख रहे हैं, जैम पोर्टल से खरीदी घोटाला है या जैम पोर्टल घोटाला है ? यह स्पष्ट नहीं है ।

श्री मोहन मरकाम :- उपाध्यक्ष जी, नेता प्रतिपक्ष आंख मूंदकर रफ-टफ कर दिये । क्या लिखा है, खुद को पता नहीं है ।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पीडीएस राशन कार्ड के बारे में है, पहले गरीबी रेखा के नीचे जिनका नाम होता था, तत्कालीन सरकार के समय राशन कार्ड उनको दिया जाता था । राशन कार्ड के अलग-अलग रंग थे, बीपीएल परिवार को जब राशन कार्ड दिया जाता था तो उनके दीवारों में लिख दिया जाता था कि बीपीएल राशन कार्ड फलाने रंग का है, लेकिन कांग्रेस की सरकार के घोषणा पत्र में था कि हम सभी को राशन कार्ड के दायरे में लायेंगे, सभी को राशन कार्ड बनाकर देंगे, गरीबी रेखा के नीचे नाम होना जरूरी नहीं है, इस समय छत्तीसगढ़ में 74 लाख, 54 हजार लोगों के पास राशन कार्ड है । इनके समय में क्या हुआ, इनके राजनांदगांव के एक मंत्री को अत्यन्त गरीबों का

राशन कार्ड बनाकर उनको दे दिया गया । पूर्व मंत्री को गरीबों में अत्यन्त गरीब का राशन कार्ड दिया गया । उनके दीवार में लिखने की ताकत थी क्या, नहीं कर सकते हैं । दूसरी बात, वर्ष 2013 में परिवारों की संख्या 56 लाख, 50 हजार 724 और राशन कार्ड कितना बनाये थे, 70 लाख 27 हजार 422, जैसे ही चुनाव खत्म हुआ, 1 लाख 81 हजार का राशन कार्ड निरस्त हुआ, 11 लाख 96 हजार 374 की जांच चल रही है, ऐसा करके उसको आगे बढ़ा दिये । खाली चुनाव जीतने के लिये हुआ ? लेकिन इस सरकार ने कहा कि हम सब को राशन कार्ड बनाकर देंगे, करोड़पति है, राशन कार्ड बनाना चाहता है तो ले ले, लेकिन सब को राशन कार्ड बनाकर दिया गया है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय चौबे जी मणिपुर के बारे में कुछ बोल रहे थे तो आप सभी की तरफ से आपत्ति आई कि इसमें नहीं बोलना चाहिये, लेकिन जो महिलाओं के ऊपर प्रधानमंत्री जी ने जो छत्तीसगढ़ की तुलना की है, इसलिये यह आंकड़े देना मैं जरूरी समझता हूँ । माननीय उपाध्यक्ष जी, बहुत ज्यादा विस्तार में न जाते हुये प्रदेश में महिलाओं की स्थिति का तुलनात्मक विवरण । महिलाओं के अपराध में कमी, वर्ष 2017 और वर्ष 2018 की स्थिति और वर्ष 2022 की स्थिति । 8587 और कमी 7344, इसमें 15 प्रतिशत की कमी है । घरेलू हिंसा, 29.4 कमी होकर हो गया, 27.4, महिलाओं के विरूद्ध शारीरिक हिंसा, 34.7 से 32.9, महिलाओं के विरूद्ध दहेज मृत्यु, 79 से 65, बलात्कार की घटना में कमी, 2091 से 1093, प्रधानमंत्री जी छत्तीसगढ़ की कहां से तुलना कर दिये कि छत्तीसगढ़ में हो रहा है । यह भारत सरकार का आंकड़ा है, नेशनल फेमिली हेल्थ सर्विस, यह आंकड़े इसलिये बताना जरूरी है कि छत्तीसगढ़ की पूरे देश में गलत ढंग से छवि पेश की जा रही है, यह उचित नहीं है और इसलिये यह आंकड़े जो महिलाओं के प्रति जिस प्रकार की बात हुई है, उसमें कमी आई है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आदिवासी नृत्य महोत्सव के बारे में भी चौबे जी ने कहा है, पूरे देश-विदेश के आदिवासी समुदाय के लोग आये, प्रदर्शन हुआ, विदेशी कलाकार भी आये, इसमें इनको आपत्ति हो गई । अब ये आरोप-पत्र में लिख दिये आदिवासी नृत्य महोत्सव घोटाला। ये राज्योत्सव में 1.5 करोड़ रूपये देकर करीना कपूर जी को बुलाते थे, वह घोटाला नहीं था। कितना देते थे और कितने का (व्यवधान) होता था, यह जानकारी नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- सुनिये तो। मैंने एक बार सुभाष घई जी को छत्तीसगढ़ बुलाया था, क्यों बुलाया था, वह मैं आपको तब बताऊंगा जब मैं भाषण दूंगा। लेकिन करीना कपूर जी की बात है, तो अब वह बेगम हो गयी है। आपके कांग्रेस नेता नवाब पटौती जी, जो भोपाल से चुनाव लड़े हैं, वह उनकी बहु है। मैंने उनको एक मुलाकात में बताया कि कांग्रेस वाले आपके लिए ऐसा-ऐसा बोलते हैं, जबकि आपके ससुर जी भोपाल से कांग्रेस की सीट से चुनाव लड़े हैं।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने आरक्षण का भी एक विषय दिया। हमने और आप सब ने मिलकर 27 प्रतिशत आरक्षण का प्रस्ताव पारित किया लेकिन बाद में राजभवन में क्या हुआ उसको चौबे जी बता चुके हैं, मैं उसके बारे में ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं समझता हूं। आपके

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आरोप में बढ़ती नक्सल हिंसा का जिक्र है। आपके समय में झीरम हत्याकांड हुआ, झीरम नरसंहार हुआ। उसमें हमारे कांग्रेस के सारे वरिष्ठ, 27 लोग शहीद हो गये। उसके बाद झीरम नरसंहार के बाद लगातार जिस प्रकार की कार्रवाई हुई है कि पीड़ित परिवार को न्याय मिलना चाहिए, न्याय मिलना चाहिए, लेकिन उस बारे में कोई कार्रवाई नहीं हो पायी है। आप ही के कार्यकाल में पहली बार नक्सलियों ने एक आई.ए.एस. अधिकारी का अपहरण कर लिया था। उसके बाद कुछ लोगों की समिति बनी और एक लिखित एग्रीमेंट पर उनको छोड़ा गया। लेकिन आज तक वह तथ्य सामने नहीं आया कि किस आधार पर उनको छोड़ा गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, आप क्वांटिफायबल डाटा आयोग की रिपोर्ट सदन में नहीं रख सकते और ब्रम्हदत्त समिति ने लिखित में क्या किया, आप उसका उल्लेख कर सकते हैं। दोनों में कौन-सी रिपोर्ट ज्यादा गोपनीय है ?

श्री मोहम्मद अकबर :- उपाध्यक्ष महोदय, माओवादी द्वारा दो नामांकित व्यक्ति थे। डी.डी. शर्मा और प्रोफेसर हरगोपाल। अब छत्तीसगढ़ शासन के दो प्रतिनिधि थे श्रीमती निर्मला बुच और एस.के. मिश्रा। 30 अप्रैल 2012 को बैठक हुई थी, जिसमें तय किया गया था निर्मला बुच की अध्यक्षता तथा छत्तीसगढ़ शासन के मुख्य सचिव एवं पुलिस महानिदेशक की सदस्यता में हाई पावर कमेटी का गठन किया जायेगा। उसके बाद हाई पावर कमेटी क्या करेगी कि जिन बेकसूर लोगों को माओवादी बताकर जेलों में भेजा गया, उनकी समीक्षा करना है और उनको..।

श्री अजय चन्द्राकर :- अकबर जी, आप ओपनर हो और आपको और रविन्द्र चौबे जी को छोड़ तीसरा कोई बोलेगा ही नहीं, मैं यह जानता हूं। उस समिति में यह था कि अनलॉफुल एक्ट में गिरफ्तारी नहीं होगी और जो गिरफ्तारी हुई है उसको रिहा करेंगे। इस कमेटी के बनने के बाद कितने आदिवासी लोगों की अनलॉफुल एक्ट में गिरफ्तारी हुई है और जो गिरफ्तार हुए थे, उनमें से कितने की रिहाई हुई है, आप यह बताईये ?

श्री मोहम्मद अकबर :- उपाध्यक्ष महोदय, ऐसा है कि यह प्रश्नकाल तो नहीं है जो आप पूछ रहे हैं कि कितनों की गिरफ्तारी हुई और कितनों को रिहा किया। आप अपनी बात करिये, मैं अपनी बात करूंगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप भाषण दे रहे हैं और आप सरकार में बैठे हैं।

श्री मोहम्मद अकबर :- उपाध्यक्ष महोदय, हम सरकार में बैठे हैं तो हर चीज का अलग-अलग सिस्टम होता है। आप प्रश्नकाल में प्रश्न पूछते तो जवाब भी दे दिया जाता। लेकिन अभी तो अपनी बात करना है, आप अपनी बात करेंगे और हम अपनी बात करेंगे, यह सवाल जवाब का समय तो नहीं है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- जब आप अपनी इतनी पीठ थपथपा रहे हैं, तो बता दीजिये।

श्री अमितेश शुक्ल :- अजय भैया, आप भूल गये हैं कि यह प्रश्नकाल नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहम्मद अकबर :- उपाध्यक्ष महोदय, वह कमेटी लंबित प्रकरणों की समीक्षा करेगी तथा जिन लोगों को माओवादी के संदेह में गिरफ्तार कर लंबी अवधि तक जेल में रखा जायेगा, उनको उसकी मदद करना है। यह इसकी मूल भावना है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं सिर्फ 5 मिनट और लूंगा। आपके आरोप पत्र में है कि एम.ओ.यू. सिर्फ कागजों पर है। 13 सितंबर, 2004 को फैरल इंजीनियरिंग कंपनी से एम.ओ.यू. होना था और डॉ. रमन सिंह जी लंदन गये थे। वह कंपनी वाले यहां घूम रहे थे कि यहां हमारा एम.ओ.यू. कर लीजिये, लेकिन कुछ लोगों को लेकर लंदन जाना था तो उनको वापस भेजकर वहां पर एम.ओ.यू. किया गया। आज तक इस कंपनी का अता-पता नहीं है। इस देश के इतिहास में पहली बार 4 जून, 2005 को बस्तर के लोहण्डीगुड़ा में 10 हजार करोड़ के एकीकृत स्टील प्लांट को लगाने के लिए एम.ओ.यू. हुआ। उसके एम.ओ.यू. में कंडीशन लिखा गया कि उसको गुप्त रखा जायेगा। केवल टाटा कंपनी वाले और एम.ओ.यू. करने वाले जो अधिकारी है, वही जान सकेंगे और बाकी लोग नहीं जान सकेंगे। उस समय भारी विवाद की स्थिति उत्पन्न हुई और हमने विधान सभा में आवाज उठाई। तत्कालीन अध्यक्ष जी ने कहा कि यदि आपको एम.ओ.यू. देखना है तो आप मेरे कक्ष में आकर देख लीजिये। हमने उसका विरोध किया कि यह जनता का पैसा है, हम उसको जमीन, कोयला, पानी, बिजली और परमिशन दे रहे हैं। उसको हर चीज इतना-इतना मीट्रिक टन चाहिए, वह नाप करके लेने वाली बात है। लेकिन इतनी सब चीजें देने के बाद जहां शासन की जमीन, शासन का पानी लग रहा है तो यह एम.ओ.यू. हमारी, जनता की जानकारी में होना चाहिए। इन्होंने उसको खुलासा नहीं किया। हमें हाईकोर्ट जाना पड़ा और हाईकोर्ट में जाने के बाद फिर उस एम.ओ.यू. को सार्वजनिक किया गया। 10 हजार करोड़ रूपये का प्लांट लगाने की बात थी। अब उस एम.ओ.यू. में लिखा है कि 2500 एकड़ जमीन की आवश्यकता है और उसको बाद में चेंज करके 2500 हेक्टेयर लिख दिया गया। तो पहली आपत्ति यह है कि यदि आपने एम.ओ.यू. किया है तो बाद में उस जमीन को में चेंज नहीं होना चाहिए और वही जमीन है जो आगे चलकर कांग्रेस पार्टी की सरकार आने के बाद हम लोगों ने लोण्हडीगुड़ा के किसानों को लौटाया।

उपाध्यक्ष महोदय :- आपको 30 मिनट हो चुके हैं। आप कितना समय लेंगे?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूँ। अब आपके आरोप पत्र में यह है कि किसानों की ऋण माफी नहीं हुई। मैं यहां पर नाम पढ़ देता हूँ। यह बात बार-बार आती है तो इसका अंत हो ही जाना चाहिए। इसमें बार-बार आरोप लगता है कि किसानों का ऋण माफ नहीं किया गया। वरिष्ठ सदस्य श्री ननकीराम कंवर 63 हजार 982 रूपये माफ हुआ है या नहीं हुआ है? श्री पुन्नूलाल मोहले 92 हजार 480 रूपये माफ हुआ है या नहीं हुआ है? श्री रजनीश कुमार सिंह 60 हजार 860 रूपये माफ हुआ है या नहीं हुआ है ?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आप राष्ट्रीयकृत बैंकों का कर्ज माफ हुआ है या नहीं? आप यह बताईये? वह तो आपके समय में भी हम लोग भी बांटते थे। हम लोग बोलते थे कि पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान मुख्यमंत्री सब का होता था।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, भाई सौरभ सिंह 13 हजार 870 रूपये माफ हुआ है या नहीं हुआ है ?

श्री सौरभ सिंह :- माननीय मंत्री जी, आप मुझे भी बताईये कि यह कागज कहां से पढ़ रहे हैं ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह तो भाई वहीं बैंक का रिकॉर्ड है।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय मंत्री जी, मुझे पता नहीं है कि मेरा कर्ज माफ हुआ है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय धरमलाल कौशिक जी 23 हजार 208 रूपये माफ हुआ है। माननीय केशव प्रसाद चन्द्रा जी ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माने आपके हिसाब से सिर्फ ऋण माफी भा.ज.पा वालों की हुई है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारी भी ऋण माफी हुई है, लेकिन हम लोग यह बोलते नहीं है कि हमारा ऋण माफ नहीं हुआ है।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अकबर भाई, हम यह बोलते हैं कि आप यह कहते हैं कि 10 हजार करोड़ रूपये की ऋण माफी हुई है। आपका रिकॉर्ड जो बोलते है वह 7 हजार 800 करोड़ रूपये का बोलता है। दूसरी बात यह है कि आपका जो कर्ज माफ हुआ है, वह कॉपरेटिव बैंक का माफ हुआ है। आपने कहा था कि सभी किसानों का कर्ज माफ होगा। जो राष्ट्रीकृत बैंक और प्राईवेट बैंकों का जो एच.डी.एफ.सी. में था, जो आई.सी.आई.सी. बैंक में था, वह माफ नहीं हुआ है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां पूरे कर्ज की माफ की बात हो रही है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो पूरे कर्ज माफी की बात थी। आपके घोषणा पत्र में यह था कि हम किसानों का पूरा कर्ज माफ करेंगे। आपने केवल अल्पकालीन ऋण माफ किया है और बाकी ऋण माफ नहीं किया है। दूसरा बार-बार एक बात आती है कि हमने 11 हजार करोड़ रूपये का ऋण माफ कर दिया। आपके प्रश्न के उत्तर में आने दिया है कि कुल 8 हजार 261 करोड़ रूपये का ऋण माफ हुआ है। आप कहें तो मैं अभी रिकॉर्ड दिखा देता हूँ। यह कल के प्रश्न के उत्तर में ऑन रिकॉर्ड है। यह ऑन रिकॉर्ड है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हर बार यह 18 लाख किसानों का 9 हजार 500 करोड़ रूपये जारी किया जाता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- भा.ज.पा. के विधायकों का बकाया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह हुआ है। आप एक मिनट सुनिए। हम तो सार्वजनिक तौर पर कहते हैं कि हमारी कर्ज माफी हुई है। हम सब की कर्ज माफी हुई है। हम इस बात को कहां छुपा रहे हैं। हमारी कर्ज माफी हुई है। यह हम तो बोल रहे हैं। आप लोगों को इसलिए बताना जरूरी है आप लोग इंकार करते हैं कि इस प्रदेश में किसानों की कर्ज माफी हुई ही नहीं है। हम इसलिए बता रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी, मेरी कर्ज माफी हुई है या नहीं?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपकी कर्ज माफी नहीं हुई है। आपका नाम नहीं है।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय मंत्री जी, आप मेरा नाम ले रहे थे तो मैं मिलान करवाऊंगा। आप ज्यादा राशि बतायेंगे तो यदि कम ऋण माफी हुई होगी तो। मैं मिलान करवाऊंगा।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपकी कर्ज माफी हुई है या नहीं? मैंने आपका पढ़कर बता दिया। अब दुबारा पढ़ना है तो मैं दुबारा पढ़ देता हूँ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय मंत्री जी, नहीं। आप मेरा नाम ले रहे थे, लेकिन आपने राशि नहीं बताई।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं दुबारा पढ़ देता हूँ। केशव प्रसाद चन्द्रा भोथीडीह जैजेपुर 3 लाख 55 हजार 349 रूपये माफ हुआ है। ठीक है हो गया।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अंतिम बात कहना चाहता हूँ धान खरीदी को लेकर सबसे ज्यादा विवाद की स्थिति होती है। माननीय चौबे जी ने भी अपनी बात कही। माननीय सदस्य भी समय-समय पर धान खरीदी को लेकर अपनी बात करते हैं। इसमें विवाद किस बात का है। भारत सरकार धान खरीदी के लिए पैसा देती है। हमारा बार-बार यह कहना है कि हमें भारत सरकार से धान खरीदी के लिए कोई पैसा नहीं मिलता। हमें न कोई अनुदान, सहायता, कर्ज मिलता है। छत्तीसगढ़ की सरकार हर साल मार्कफेड जरिए 20 से 25 करोड़ रूपये का कर्ज लेती है। मार्कफेड जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक जिसमें 1333 समिति पहले थी, अभी 2 हजार 58 हो गई है। इन समितियों के जरिए धान खरीदी का काम करती है। धान खरीदी करने के बाद उसका परिवहन, उसकी कस्टम मिलिंग और कस्टम मिलिंग के बाद जब भारतीय खाद्य निगम में जमा होता है तो वह चावल का पैसा हमको दिया जाता है। अब खरीदते समय समर्थन मूल्य का चेक 4 से 5 दिनों के भीतर हो जाता है। लेकिन जो राजीव गांधी किसान न्याय योजना है, आप लोग नाम से ही समझ जाईये न कि पैसा किसका है। यदि भारतीय जनता पार्टी के द्वारा यह पैसा दिया जाता तो नाम किसका होता, दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी बाजपेयी, लालकृष्ण आडवानी न्याय योजना होता। यह राजीव गांधी किसान न्याय योजना है और राजीव गांधी किसान न्याय योजना है तो कांग्रेस की ही तो हुई। यह पैसा हम दे रहे हैं। बार-बार यह कहना कि भारत

सरकार पैसा दे रही है। भारत सरकार कोई पैसा नहीं दे रही है, छत्तीसगढ़ की सरकार पैसा दे रही है। यह हमारे स्वर्गीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी के नाम की योजना है। यह अटल बिहारी बाजपेयी, लालकृष्ण आडवानी जी के नाम की योजना नहीं है। इसके कारण से मेरा यह कहना है कि आपने जो भी आरोप लगाये हैं उसमें बहुत अधिक ज्यादा बात बोलने का नहीं है। मैं इनके द्वारा जो अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, उसका विरोध करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, आपने बोलने के लिए समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी (मस्तूरी) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमने अविश्वास प्रस्ताव लेकर आये हैं और उस अविश्वास प्रस्ताव के संदर्भ में कुछ बातों के साथ मैं अपनी बात प्रारंभ करना चाह रहा हूं। यह कांग्रेस की सरकार हम लोगों को शुरू से एक कथा सुनाती आई है और उस कथा में हमारी आर्थिक समृद्धि की, हमारे स्वाभिमान की बात करते हैं और उस कथा में गिल्ली, डंडा, भंवरा का पाठ पढ़ाया जाता है। गिल्ली, डंडा, भंवरा, बांटी चलो गोबर बिनबो ये संगवारी। इससे हमारी आर्थिक समृद्धि और स्वाभिमान छुपा हुआ है जिसका पाठ पढ़ाते हैं। यह कथा हमको सुनाई जाती है और पंजीरी का प्रसाद बाहर के लोगों को बांटा जाता है। हमारे तीनों जो राज्यसभा सांसद हैं, बाहर के लोगों को पंजीरी बांटी गई है। यह जितनी ठेकेदार पद्धति है, रेत के जितने ठेकेदार हैं, ट्रांसपोर्टिंग करने वाले हैं, यह सब छत्तीसगढ़ के बाहर के लोगों को अधिकांशत: दिया गया है। यह पंजीरी नहीं है तो और क्या है? यह छत्तीसगढ़ के हित में है, उसकी आर्थिक समृद्धि से जुड़ा हुआ है। जल जीवन मिशन इतने गावों में है, आपके भी गांव में है, सभी जनप्रतिनिधियों के गांव में यह जल जीवन मिशन योजना है। सरपंच लोग सी.सी. लोग की कई बार मांग करते हैं, सी.सी. रोड की प्रतीक्षा करते हैं, उस सी.सी. रोड की बेदर्दी से खुदाई करके रखे हुए हैं। कहां-कहां से लोग आये हैं, यह ठेकेदारी का काम कर रहे हैं। जितने रोड, भवन के काम हैं, इसमें ठेकेदारी से काम कराये जा रहे हैं।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- आदरणीय डॉक्टर साहब, यह जल जीवन मिशन में केन्द्र सरकार की मॉनीटरिंग नहीं है क्या ? केन्द्र सरकार की भी मॉनीटरिंग है। अगर जल जीवन मिशन में घोटाला हो रहा है तो उसमें आप भी शामिल हैं।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, चन्द्रा जी का सवा तीन लाख रुपये माफ हुए हैं।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, रेडी-टू-ईट में छत्तीसगढ़ की महिलायें काम करती थीं, उनके पूरे व्यवसाय को छीन करके उनको बोरे-बासी का पाठ पढ़ा रहे हैं। एक आदमी को रेडी-टू-ईट के संचालन की व्यवस्था देना क्या यह छत्तीसगढ़िया लोगों के लिए न्याय की बात है? उनके साथ मजाक बनाकर रखे हुए हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- पहले सब कोटना में फेकते थे, खाते नहीं थे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी आंकडे बता रहे है कि 12-15 हजार मजदूर लोग छत्तीसगढ़ से बाहर कमाने के लिए जाते हैं। मैंने एक बार यहां भी सदन में भी बात की है, इसका प्रश्न भी था और अध्यक्ष जी की तरफ से व्यवस्था भी आई कि छत्तीसगढ़ के बाहर 15 से 17 लाख मजदूर बाहर जाते हैं उनके लिए व्यवस्था होनी चाहिए। जो मजदूर पलायन करके जाते हैं, हमारे छत्तीसगढ़ के लोग पलायन करके जाते हैं। क्या उनकी सुध ली, उनके बारे में विचार किया ? सदन में कहने के बावजूद भी आज तक विचार नहीं किया। ऐसी सरकार जो छत्तीसगढ़ के हित में काम नहीं करती, हमको बोरे-बासी का पढ़ाने के लिए है और पंजीरी अलग से बांटने का काम करेंगे। कभी उन मजदूरो के बारे में विचार नहीं किया गया। आज भी उनको पलायन करने वाले मजदूर कहते हैं, उनके इस नाम में कोई संशोधन नहीं किया गया। हमारे छत्तीसगढ़ में जिस तरीके से इनकी प्रशासनिक क्षमता का संचालन, कार्य पद्धति है और इन्होंने जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ की पहचान बनाई, वह छत्तीसगढ की पहचान अपराध गढ़ के रूप में बनाई, वह छत्तीसगढ़ को अपराध गढ़ के रूप में बनाई। माफिया, भू-माफिया और तरह-तरह के माफियाओं को जन्म दिया। परिणाम यह आया कि कई प्रकार के अपराधों में छत्तीसगढ़ दूसरे-तीसरे नंबर पर आ गया। क्या हमारा छत्तीसगढ़ में ऐसा व्यवहार था? इनकी प्रशासनिक क्षमता और इनकी कार्य करने की क्षमता के कारण यह पाठ पढ़ाकर हमको किया गया। फिर अधिकारियों का ट्रांसफर किया गया। जितने कलेक्टर हैं, उनको सम्मान के साथ काम करने के बजाय उनको ए.टी.एम. की तरह इस्तेमाल करते रहे। कलेक्टर को कलेक्टिंग एजेंट बनाकर रख दिया गया और ए.टी.एम. बाहर कि किसी और लोगों के हाथ में दे दिया गया। क्या इससे छत्तीसगढ़ राज्य का भला होगा? यहां पर भूपेश बघेल जी संविदा नियुक्ति के खिलाफ में अच्छे से कहते थे, बड़े जोर-शोर से बात उठाते थे और बड़े जोर-शोर से हल्ला करते थे और वही संविदा नियुक्ति के जो सचिव हैं, जिसको सामान्य प्रशासन विभाग में अवसर दिया, उनको सचिव बनाया और अपने स्थान पर रखा गया। यह कैसा दोहरा नीति अपनाते हैं? इसीलिए जो कनिष्ठ अधिकारी हैं, उसको सर्वश्रेष्ठ अधिकारी के तौर पर देना, वह बड़ा (व्यवधान) है। दूसरी चीज, मैं स्वास्थ्य पर बात करना चाहता हूं। माननीय मंत्री जी भी बैठे हुए हैं। यूनिवर्सल हेल्थ का एक सपना दिखाया गया । एक कल्पना की गई। शुरू से हमने देखा वर्ष 2009 से लेकर उसके क्या अनुरूप काम करने के लिए माननीय मंत्री जी को, छत्तीसगढ़ शासन को मौका मिला क्या? उस यूनिवर्सल हेल्थ पर केवल बात भर हुई, चर्चाएं हुईं और पूरे स्वास्थ्य विभाग में भर्राशाही मच गया। क्यों मचा है, उसकी ज्यादा व्याख्या करने की जरूरत नहीं रही। यह क्या ढाई-ढाई साल का फार्मूला है? स्वास्थ्य विभाग सुपर विजन का विभाग है। जितना बेस्ट सुपर विजन करेंगे, उतने अच्छे से स्वास्थ्य विभाग चलेगा। आज हम उसमें का इंडीकेटर देखते हैं, जो तथ्य आते हैं, जो मरीजों की व्यवस्था के लिए बात करते हैं, एम्बुलेंस देते हैं। उपाध्यक्ष जी, मैं थोड़ा सा पानी का उपयोग कर लेता हूं।

श्री बृहस्पत सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, उस बोतल में क्या है, यह भी गंभीरता का विषय है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- सैम्पल दे दूंगा, जांच कर देंगे। (हंसी) 108, मरीजों के संचालन के लिए व्यवस्था बनाई गई है। ऐसे लोगों को बंदरबांट किया गया। ऐसे लोगों को एम्बुलेंस दिया गया, जिसके पास न एम्बुलेंस चलाने की न व्यवस्था है और न ही सोच है और उनके अनुभव है और न ही उनके पास संसाधन है, उनको दे दिया गया। विभाग ने जांच किया तो सही पाया कि इसके पास कुछ भी नहीं है। ऐसे लोगों को फिर से छोटा सा पेनाल्टी देकर उसको दूध-भात देकर छोड़ दिया गया। ऐसे में कैसे संचालन होगा? एक दवाई है। जो 50 करोड़ रूपये की दवाई खरीदी गई, वह भी एक्सपायरी दवाई खरीदी गई। यह एक्सपायरी दवाई स्वास्थ्य केन्द्रों में पड़ा रह गया, उसका वितरण नहीं हो पाया। यह 50 करोड़ रूपये का दवाई है। यह जो कंपनी को दिये हैं। कैसे एक्सपायरी दवाई को खरीदा गया? आप सब जानेंगे तो चहेते लोगों को देने की बातचीज की गई है।

संसदीय सचिव, समाज कल्याण मंत्री से संबद्ध (डॉ. श्रीमती रश्मि आशिष सिंह) :- भैईया, नसबंदी कांड की दवाई भूल गये, जिसमें चूहा मार दवाई मिली थी और 13 महतारी लोगों की मृत्यु हो गई थी।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- नसबंदी कांड, अंखफोड़वा कांड।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- पूर्व चला, उसकी बात और कर लेंगे।

श्री रामकुमार यादव :- डॉ. साहब। पूर्व स्वास्थ्य मंत्री जी, अंखफोड़वा कांड भी हुआ था। जो आंख का आपरेशन कराए थे, वह हमेशा के लिए अंधे हो गये थे।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- उपाध्यक्ष महोदय, कोरोना टेस्ट के लिए जो रेपिड एंटीजेन टेस्ट है। अब मैं एक आंकड़े दे रहा हूं, उससे अंदाज लगाईयेगा कि फरवरी और अप्रैल, 2030 तक हमने एक किट को 36 रूपये में खरीदा और सात दिन के बाद वही किट करीब-करीब 68 रूपये हो गया और 89 रूपमें में हमने 33 लाख किट खरीदा। यह कैसे हुआ? वही रेट में वही किट, वही बातें। कितने का घोटाला, यह कौन कर रहा है? छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य के साथ कौन लूटा-लूट मचा दिया? इसमें लगभग 15 करोड़ रूपये का भ्रष्टाचार हुआ है। एक भारत पेरेन्टल न्यूक्लियर संस्थान है, जो एक सप्लायर है और जोकि ब्लैक लिस्टेड है। यह कई राज्यों में ब्लैक लिस्टेड है। ब्लैक लिस्टेड में ऐसे आदमी हैं, जिसको 25 करोड़ रूपये से अधिक का दवाई खरीदी करने के लिए अनुमति देना और निविदा के शर्तो के विरूद्ध देना क्या यह सही है ? पूरे स्वास्थ्य विभाग का यह खेल मचाकर रख दिये हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जशपुर जिले में 12 करोड़ रूपये की दवाई की खरीदी की गयी। डॉक्टर फॉर यू संस्था की एक संस्था है जिसने खरीदा । इस संस्था के अलग-अलग जिलों में एक ही वित्तीय वर्ष पर एक ही समय में अलग-अलग रेट दर्ज करके, इसकी खरीदी करके घोटाला किया गया । एक ही समय पर अलग-अलग रेट है । अलग-अलग जिलों का किया गया और कोरोना के समय का जो वेंटिलेटर खरीदी का है उसकी भी जांच चल रही है, जिस पर आज तक कार्यवाही नहीं हुई है । कांकेर जिले में डीएमएफ फंड से एम.आर.आई. कैंसर के लिये खरीदी गयी । यह लगभग 6.50 करोड़ रूपये यानी 6-साढ़े 6 करोड़ रूपये की दवाई खरीदी की

गयी और यह जेम पोर्टल के माध्यम से खरीदी की गयी, उसमें एक ही पात्र व्यक्ति था जिसको निविदा की शर्तों के विरूद्ध देकर के उपकृत किया गया था । जिस मशीन को खरीदा गया, वह आज तक चालू नहीं हुआ । उसका संचालन नहीं हो पाया । आप इससे अंदाज लगाईये कि छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य की ताशीर कैसी है ? अम्बेडकर कॉलेज में उपयोगिता को देखते हुए सिटी स्कैन खरीदी की गयी लेकिन वह जो मशीन है, वह आज तक चालू नहीं हो पायी । जो 15 करोड़ रूपये का सिटी स्कैन है, जो चालू नहीं हो पाया और इसका क्या मतलब है ? केवल हम खरीदी में ही इंटरेस्ट लेंगे, खरीदी ही हमारा उद्देश्य है । उसकी संचालन व्यवस्था का कोई उद्देश्य नहीं है और इस प्रकार की एक बातचीत आयी । जो छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विस कॉर्पोरेशन है, जो दवाई खरीदी करता है । इस संस्था ने भवन भी बनाना शुरू कर दिया । इस संस्था के पास कोई कर्मचारी नहीं है । उनके पास जो बहुत सारे संविदा से लिये हुए हैं, कहीं से अटैच करके रखे हुए हैं । ये लोग भवन बना रहे थे । मेरे ग्राम भरारी में एक ऐसे एजेंट को दिया है जो जमीन धंस गयी, उसके अंदर हो गया । मैंने कॉर्पोरेशन से बात की, कोई सुनने वाला नहीं है । यह उनकी क्या केपेसिटी है ? कैसे संचालन कर रहे हैं ? यह तो करप्शन है, कॉर्पोरेशन नहीं हो करके करप्शन का हो गया है, जो मनमर्जी से दवाई खरीदी का काम कर रहे हैं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, दूसरा है एक सुपोषण अधिकार । कांग्रेस का एक सुपोषण का है । अब तक के केंद्र सरकार ने मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान चलाने के लिये 2000 करोड़ रूपये दिये यानी 2000 करोड़ रूपये केंद्र सरकार का, मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान का, डीएमएफ से 500 करोड़ रूपये और राज्य सरकार से डेढ़ हजार करोड़ दिया गया । सुपोषण से 4000 करोड़ रूपये खर्च किये गये और जब इस सुपोषण से 4000 करोड़ रूपये को हम देखते हैं और इतनी तुलना स्वास्थ्य विभाग से करते हैं तो मृत्यु दर बढ़ा हुआ है । मातृ मृत्यु दर बढ़ा हुआ है । बच्चे की मृत्यु दर बढ़ी हुई है, कुपोषण बढ़ा हुआ है और छत्तीसगढ़ में हम 28 राज्यों में से 26वां राज्य हमारी स्थिति में लाकर खड़ा कर दिये, क्या इस 4000 करोड़ रूपये का छत्तीसगढ़ के हित में उपयोग हुआ ? अब मैं उसकी भाजपा शासनकाल से तुलना करूंगा, कांग्रेस शासनकाल में कितने मृत्युदर थे ? मातृत्व में कितने बच्चे सुपोषित थे ? यदि मैं इन सबकी तुलना करूं तो आप पायेंगे कि अभी भी बढ़ा हुआ है जो रिपोर्ट के हिसाब से है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- बांधी जी, 13 मिनट हो गये हैं ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं थोड़ा सा और कहना चाहूंगा । मैं एक इंच इधर-उधर नहीं हो रहा हूं । मैं पूरा लाईन में आ रहा हूं । जो सतत् विकास लक्ष्य इंडेक्स है, वर्ष 2020 में उन्होंने जो रिपोर्ट दी है । 40 प्रतिशत कुपोषण है, अब हम 4000 करोड़ रूपये खर्च करके लगभग 40 प्रतिशत जो कुपोषण की स्थिति में आ गये हैं । 28 राज्यों में हमारा 26वां स्थान है । हमारी यह एक स्थिति बनी हुई है । मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूं कि स्वास्थ्य एक बहुत बड़ा यूनिट है लेकिन कांग्रेस की सरकार ने आपस में द्वंद के कारण, आपसी द्वंद के कारण स्वास्थ्य में जो मरीज हैं, जो

मरीज हैं, जो बीमार लोग हैं, उनका विश्वास नहीं बन पाया है और लोग प्राइवेट अस्पताल में जाने को मजबूर हो गये हैं। उपाध्यक्ष महोदय, इसे गंभीरता से लिया जाये, इसलिए हम इस सरकार के प्रति अविश्वास व्यक्त करते हैं कि आपने अंतर-द्वंद को प्राथमिकता दी और लोगों की सेवाओं को कम प्राथमिकता दी। अब मैं धान खरीदी के दूसरे विषय में आ जाता हूं। धान खरीदी का जो काम किया गया, लगभग वर्ष 2018 से धान खरीदी की। उस समय उन्होंने एक नियम लागू किया कि जो भी दुकानदार धान खरीदेगा, उसे जेल कर दिया जायेगा और उसका यह परिणाम है कि व्यापारी लोगों ने धान नहीं बेचा। यह वर्ष 2019 की बात है और तब से अब तक ये सब जितने लोग बैठे हैं, चाहे ताम्रध्वज साहू हो, चाहे हम लोग हों या धरम भैय्या हो, शिला बीनने जाते थे। छत्तीसगढ़ में शिला बीनने की परंपरा थी, लेकिन इन लोगों ने जिस तरीके से काम किया तो आज कोई भी बच्चे शिला बीनने नहीं जाते हैं और ये छत्तीसगढिया की बात करते हैं। अब जब वर्ष 2020 में धान खरीदी गई तो उस समय किसानों के लिए एक नया सर्कूलर भेजा गया कि बोरा नहीं है। उस समय जो बोरा दिया गया, उसका पैसा आज भी किसानों को अप्राप्त है, लेकिन छत्तीसगढ़ का जो किसान है, वह मौन बैठा हुआ है। शांत है और रकबा भी कम किया गया। उपाध्यक्ष महोदय, रकबे और गिरदावली में सुधार करने के लिए राजस्व अधिकारी को बिना चढ़ोत्तरी चढ़ाये किसान का रकबा सुधार नहीं होता है। वर्ष 2021 में सोसाइटी में खाद कम गया और निजी क्षेत्रों में खाद ज्यादा गया, परिणाम यह कि छत्तीसगढ़ का जो किसान है, उसे 600-700 रूपये में धान खरीदने पर सरकार ने उन्हें मजबूर कर दिया, क्योंकि पर्याप्त मात्रा में सोसाइटी को धान उपलब्ध नहीं कराया। ठीक उसी समय भूरामाहो का भी प्रकोप हुआ और भूरामाहो के प्रकोप में किसानों को कोई बताने वाला नहीं था कि ये भूरामाहो का जो प्रकोप है, इसमें कौन सी दवाई उपयुक्त होगी। जैसा पाये तैसा करके 5 बार, 7 बार किसानों ने छिंटा और अपने फसल को बचाया। उपाध्यक्ष महोदय, वैसी ही वर्ष 2022 में भी पुनरावृत्ति हुई, जिसका परिणाम यह हुआ। गोबर खरीदी के आंकड़ों के संबंध में कहना चाहूंगा। गोबर खरीदी से 3 लोग बुरी तरह से प्रभावित हैं। पहला किसान, जिस किसान को बिना सटिफाई किये हुए बोरा नहीं है। के.सी.सी. किसानों को दिया गया और उन किसानों को आपने वर्मी कंपोस्ट के नाम पर जबर्दस्ती खाद को दे दिया था। वह प्रमाणित खाद नहीं है। वह किसानों ने सरकार पर विश्वास करके लिया और उसकी उपयोगिता नहीं है, क्योंकि जिस प्रक्रिया से वर्मी कंपोस्ट बन रहा है, वह उचित तरीके से नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय :- साहब, चलिए समाप्त करिए।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- मैं एक बात और कहकर समाप्त करूंगा। जितनी समितियां हैं, उसके संबंध में माननीय भूपेश बघेल जी कहते हैं कि उसकी संचालन व्यवस्था के लिए 10 हजार रूपये दिया जा रहा है और लगभग 7 हजार से 10 हजार के आसपास गौठान हैं। अब ये कितने गौठान में 10 हजार रूपये उसकी व्यवस्था के लिए झोंक रहे हैं, कौन ले रहा है, इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है। इस प्रकार से

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

छत्तीसगढ़ के लोगों के साथ घोटाला हो रहा है। गाय धोने के लिए उसके जो गौठान हैं, उसका समलतीकरण नहीं है। आज पूरा गौठान चोरी हो रहा है तो कोई रिपोर्ट लिखने वाला नहीं है। पुलिस वाले के पास जाओ तो पुलिस वाला बोलता है कि गौठान का नहीं है। पाइप उठाकर ले गये। सोलर सिस्टम में जो पाइप लगा है, वह निकालकर ले गये। जो फेंसिंग तार लेकर गये, उसे उठा ले गये।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, समाप्त करें। माननीय गृह मंत्री साहब।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- उपाध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- बांधी जी, आप न अजय चन्द्राकर जी की बातों को बड़े ही ध्यान से सुन रहे थे, लग रहा था। वे फेंटेसी में बात कर रहे थे। आपके पूरे भाषण को सुनकर ऐसा लगता है कि हम लोग फेंटेसी वर्ल्ड में थे। ये हो जायेगा, वो हो जायेगा, ऐसा हो जायेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, टी.एस.बाबा नाराज हैं । सरकार से असहमत हैं । अभी थे और बोलने के समय कहां चले गए ?

(श्री टी.एस.सिंहदेव, स्वास्थ्य मंत्री द्वारा सदन में प्रवेश करने पर)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, वे आ गए हैं । चलिए, हमारे....।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब वे खड़े हो चुके, प्रोसीडिंग आगे बढ़ गई । अब रिवर्ट कैसे होगी ?

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, इनके बाद भाषण करवा देंगे ।

श्री नारायण चंदेल :- उपाध्यक्ष महोदय, पूरा सदन बाबा साहब को सुनना चाहता है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब प्रोसीडिंग आगे बढ़ गई है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल सुनेंगे हम लोग, हमारे आदरणीय हैं ।

श्री टी.एस.सिंहदेव :- आसंदी से अनुमति होगी तो..।

श्री अजय चन्द्राकर :- उनको बोलना होगा तो वे निवेदन करेंगे, यह आसंदी का प्रिविलेज है कि वे बोलने देंगे या नहीं बोलने देंगे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- बाबा साहब से हम सुनना चाहते हैं, सत्य । क्या हुआ दिल्ली में ?

श्री अजय चन्द्राकर :- उनका 3 घंटे का रिकॉर्ड है ।

श्री उमेश पटेल :- 2 घंटे, 55 मिनट का रिकॉर्ड है, लगता है आप लोग भूल गए ।

गृहमंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में चल रही हमारी सरकार के विरूद्ध प्रस्तुत अविश्वास प्रस्ताव पूर्णत: तथ्यहीन, आधारहीन है । इस प्रस्ताव में कोई गंभीरता नहीं है । मैं इसका विरोध करता हूं । सम्माननीय उपाध्यक्ष महोदय,

श्री अजय चन्द्राकर :- आपसे हमको समर्थन की अपेक्षा भी नहीं है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री ताम्रध्वज साहू :- सत्ता में नहीं रहने के कारण ये सब अपना आपा खो बैठे हैं । इसीलिए (xx) [33] की बात करते हैं । धारा लगी है उसका समर्थन करते हैं । भावनात्मक बातें करके जनता को गुमराह करने का प्रयास करते हैं, जाति सूचक बातें करते हैं । उपाध्यक्ष महोदय, ये हमारे घोषणा पत्र की बात करते हैं । अपने घोषणा पत्र को पहले पढ़ लें, डॉ. रमन सिंह जी और इन लोगों ने क्या कहा था । कितने में धान खरीदी करने की बात कही थी और कितना खरीदे ? धान के बोनस देने की बात कही थी । एक साल धान का बोनस दिया गया और चार साल बोनस नहीं दिया । बेरोजगारी भत्ता देने की बात कही थी, लेकिन कहीं नहीं । आदिवासियों को जर्सी गाय देने की बात कही थी लेकिन कुछ नहीं हुआ ।

श्री अजय चन्द्राकर :- ये सब विषय पूर्व के वक्ताओं ने बोल दिया है । अध्यक्षीय आसंदी से व्यवस्था आई है कि जो बातें बोली जा चुकी हैं, वे रिपीट नहीं होंगी । ये बातें चौबे जी और अन्य लोगों द्वारा बोली जा चुकी है ।

श्री रामकुमार यादव :- आदिवासी समाज मन गेरूवा ला बांधकर राखे हें । एमन ला खोजत हे, कहां हे जर्सी गाय ला कब दिही करके । 15 साल ले तुमन वादा कर रहेव ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- आपकी सुनने की क्षमता खत्म हो गई है क्या ।

श्री शिवरतन शर्मा:- जर्सी गाय ला छोड़ तोर बर बछिया खोले ले नइ मिलत हे ।

श्री अरूण वोरा :- चंद्राकर जी को एक बात बता दीजिए, भूपेश है तो भरोसा है, भरोसे की सरकार है और भरोसा बरकरार है और अगली बार 75 पार है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मेरा भरोसा उप मुख्यमंत्री माननीय टी.एस.सिंहदेव साहब के ऊपर है । मैं सार्वजनिक रूप से बोल रहा हूं ।

श्री अरूण वोरा :- वे भी तो सरकार के अंग हैं ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बहुत ज्यादा घोटाले की बात करते हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- राजा साहब एक बार खड़े होकर बोल दें कि भूपेश है तो भरोसा है । राजा साहब बोल दें कि भूपेश है तो भरोसा है तो हम स्वीकार कर लेंगे। अभी बोल दें, हम भी सुनना चाहते हैं ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- कई बार कह चुके हैं । अपने भाषण में बोलेंगे ना । उपाध्यक्ष महोदय, ये बहुत ज्यादा घोटाले और भ्रष्टाचार की बात करते हैं । किंतु ये अपने जमाने का भूल गए हैं । बिलासपुर का नसबंदी ऑपरेशन में 18 लोगों की मृत्यु, गर्भाशय कांड, मोतियाबिंद ऑपरेशन में तीन जिलों में 100 लोगों की मृत्यु ।

---

[33] (xx) अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- राजा साहब, नसबंदी ऑपरेशन घोटाला है क्या ?

श्री ताम्रध्वज साहू :- झलियामारी गांव में बालिका के यौन शोषण की बात, गौशाला में गायों की मृत्यु की बात, झीरम घाटी में 27 लोगों की मौत, मदनवाड़ा में 25 जवानों की शहादत, ताड़मेटला में 76 जवानों की शहादत, भुरकापाल में 25 जवानों की शहादत, रानीबोदली में 55 जवानों की शहादत, माहड़ाबेड़ा में 27 जवानों की शहादत ये सब इनके कार्यकाल का है । उपाध्यक्ष महोदय, घोषणा पत्र की बात और सरकार बनने के बाद की योजनाओं से शुरू करता हूं । हमें हमारे नेता ने 10 दिन का समय दिया था कि हमारी सरकार बनाओगे तो हम 10 दिन में किसानों का कर्जा माफ करेंगे, लेकिन शपथ ग्रहण करके एयरपोर्ट से सीधे माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय टी.एस.सिंहदेव जी और मैं, मंत्रालय गए ।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- भैया कोई ऐसा चैलेंज भी किया था कि किसानों का कर्ज माफ कर देंगे तो मैं इस्तीफा दे दूंगा।

(माननीय सदस्य (श्री अजय चंद्राकर) द्वारा हाथ उठाने पर)

श्री ताम्रध्वज साहू :- चैलेंज करने वाले ने हाथ उठा दिया है। (हंसी) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 10 दिन का समय था, किसानों की बात थी, इसलिए हमारे मुख्यमंत्री जी ने 10 दिन इंतजार नहीं किया, दो घंटे के अंदर किसानों का कर्जमाफ किया और नोटशीट में दस्तखत भी किया। हमने अपनी सरकार की शुरूआत किसानों की कर्जमाफी से की। उसके बाद यह सिलसिला बढ़ता चला गया। इस छत्तीसगढ़ सरकार में हमें साढ़े चार साल, पौने पांच साल हो गया, हम लोगों ने 51 योजनाएं संचालित की। घोषणा पत्र के 36 वादे अलग और उसके साथ मिलाकर 51 योजनाएं बनाई। चाहे वनांचल की बात हो, चाहे मैदानी अंचल की बात हो, उन 51 योजनाओं को ना केवल बनाया, ना केवल लांच किया अपितु धरातल में उतारा, क्रियान्वित की और सारे लोगों को लाभान्वित किया। जिन-जिन वर्गों के लिए योजनाएं बनी, सब लोग उससे लाभान्वित हो रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, वह जो पी.डब्ल्यू.डी का पुल गिरा था, वह सरगुजा का है, शिवनाथ का नहीं है।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने जितनी योजनाएं बनाई, वह सामान्य तौर पर चलन में है, चाहे वह धान खरीदी की बात हो, चाहे कर्ज माफी की बात हो, चाहे बिजली बिल हाफ करने की बात हो, चाहे हमारे सिंचाई कर माफ करने की बात हो, भूमिहीनों को 7 हजार रूपये सालाना देने की बात हो, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, सहायिकाओं की मानदेय में वृद्धि की बात हो, मितानिनों की मानदेय की बात हो, मध्यान्ह् भोजन रसोईयां के मानदेय में वृद्धि की बात हो, कोटवार और पटेल की मानेदय में वृद्धि की बात हो, यहां तक की पंच, सरपंच, जनपद सदस्य, जिला पंचायत सदयों की मानदेय में वृद्धि की गयी। गौठान के अध्यक्षों का भी मानदेय तय किया गया, विधायकों की विधायक निधि में वृद्धि की गयी, हमारी सरकार ने सभी वर्गों के हितों की बात की है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

छत्तीगसढ़ में गरीब से गरीब व्यक्ति या कोई अरबपति, खरबपति यह नहीं कह सकता कि हमारे लिए कोई योजना नहीं बनी है। बिजली बिल हाफ का फायदा उस खरबपति, अरबपति को भी मिल रहा है। माननीय भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में हमारी सरकार सभी के लिए योजनाएं बनायी और क्रियान्वित की, सभी को उसका बराबर फायदा मिल रहा है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, चूंकि कई विभाग हैं, इसलिए संक्षिप्त में कम-कम बिन्दुओं पर अपनी बात केन्द्रित करूंगा। नरवा, गरवा, घुरूआ, बाड़ी के बारे में काफी बातें कहते हैं लेकिन इन चार चीजों में हमारे छत्तीसगढ़ का विकास, हमारी संस्कृति सब छुपा है। नरवा, नरवा को आज हम अगर बांधते हैं तो हमारा सरफेस वाटर बढ़ जाता है, वाटर लेवल बढ़ता है, मेन्टेन होता है। सिंचाई के लिए नाला किनारे जिनका खेत है, वह सिंचाई कर सकता है। इसमें दोनों तीनों तरफ से हमारा फायदा होता है। गरवा, आज हम लोग गौठान बना रहे हैं, बड़ी-बड़ी बातें आ रही है, गौठान में जानवर नहीं है। भारतीय जनता पार्टी के लोग गर्मी के दिन में गौठान में गरवा खोजने जा रहे हैं, गर्मी दिन में गौठान में कौन सा जानवर मिलेगा। मैं तो कहता हूं कि गौठान में जाकर देखिए, समस्या देखने जा रहे हैं तो उसका निदान भी करिए। अपने-अपने क्षेत्र में जितने गौठान हैं, उसको देखिए। माननीय मुख्यमंत्री जी ने 4 करोड़ रूपये एक विधायक को दिया है, दो-दो करोड़ रूपए अपने क्षेत्र की गौठान में लगाईए। टीन सेड बना है, वर्मी खाद के लिए टंकी बना है, वहां बोर कराईए, लाईट लगाईए। वहां पर जितनी महिला समूह काम करती हैं, उनका वोट आपको मिलेगा। यह 13 लोग फिर जीतकर आएंगे, चलिए 75 प्लस की बात नहीं करते, 75 नहीं होते, हम 71 ही रहेंगे पर यह 13 की स्योरिटी हो जाएगी। (हंसी) अगर यह गौठान में दो-दो करोड़ रूपये का काम करने लगेंगे तो इनकी स्योरिटी हो जाएगी। हालांकि अभी इनको टिकट मिलेगी या नहीं, इसकी गारंटी नहीं है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बोलते-बोलते 5 मिनट में 75 से 71 हो गए, चुनाव आते-आते इनकी गिनती शून्य हो जाएगी। ऐसा लगता है। आप देखिए, वही गिन रहे हैं, मैं कुछ नहीं बोल रहा हूं। 75 से एक मिनट में 71 हो गए। चुनाव आते तक इनकी क्या हालत होगी।

श्री ताम्रध्वज साहू :- 75 से 71 नहीं है, 71 प्लस की बात को छोड़कर जितने हैं, उतने रहेंगे। हां मैं बोल रहा हूं, आप कितना भी डिस्टर्ब कर लीजिए, आप भले यहां डिस्टर्ब हो जाते हो। मैं डिस्टर्ब नहीं होता।

श्री अजय चंद्राकर :- आप ही 71 बोल रहे हैं।

श्री ताम्रध्वज साहू :- हां, मैं बोल रहा हूं। आप कितना भी डिस्टर्ब कर लीजिए। आप भले यहां डिस्टर्ब हो जाते हैं लेकिन मैं डिस्टर्ब नहीं होता हूं। यह प्रमाणित तथ्य है और इसको सभी लोग जानते हैं। वोरा जी, आप तो अच्छी तरह से जानते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय चंद्राकर जी, इसके बाद आपकी बारी है।

श्री अरूण वोरा :- मंत्री जी, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। मंत्री जी तो 71 साल अपनी उम्र बता रहे हैं। आप क्या समझ रहे हैं? मंत्री जी 75 के पार हैं। आप गिनते रह जाएंगे और वह 80 साल की उम्र में पहुंच जाएंगे। (हंसी)

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, नरवा, गरूवा, घुरूवा और बाड़ी योजना के तहत् हम वर्मी खाद से सब्जी का उत्पादन करते हैं। आज जो हम लोग चावल खाते हैं, जो गेहूं खाते हैं, जो सब्जी खाते हैं और जो दूध पीते हैं, उसमें जितने कैमिकल का उपयोग हो रहा है उससे दुनिया भर की नाना प्रकार की बीमारियां होती हैं। हम हमारी पुरानी संस्कृति नरवा, गरूवा, घुरूवा और बाड़ी को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। यह बात हमारे सामने है और हम लगातार उस दिशा में काम कर रहे हैं। मैं उद्यानिकी पर थोड़ी सी चर्चा कर रहा हूं। खरीफ के मौसम में हमने प्रतिवर्ष कृषकों को 9 हजार रूपये प्रति एकड़ की दर से आदान सहायता राशि दी है। यदि कोई किसान धान के बदले सुगन्धित धान या फोर्टिफाइड धान या अन्य अनाज जैसे-दलहन, तिलहन या उद्यानिकी फसल या वृक्षारोपण करता है तो उसको प्रतिवर्ष प्रति एकड़ 10 रूपये दिया जाएगा। यह हमारी योजना है। यदि कोई वृक्षारोपण करता है तो हम उसको 3 वर्ष तक यह राशि देंगे। यह भी हमारी योजना में सम्मिलित है। राजीव गांधी किसान न्याय योजना में हम पात्रता अनुसार 9 हजार रूपये अथवा 10 हजार रूपये प्रति एकड़ की दर से सहायता राशि दे रहे हैं। राजीव गांधी किसान न्याय योजना के विषय में सबको मालूम है, इसलिए इसको ज्यादा विस्तार में बताने की जरूरत नहीं है। हमने 2,500 रूपये में धान खरीदी की बात कही थी। हमने एक साल 2,500 रूपये में धान खरीदा तो केन्द्र ने हमारा चावल लेने से इंकार कर दिया। माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि यदि आप समर्थन मूल्य से 1 पैसा भी ज्यादा देंगे तो हम आपका चावल नहीं लेंगे। परंतु माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि मैंने अपने किसानों से वायदा किया है इसलिए मैं 2,500 रूपये से एक पैसा भी कम नहीं दूंगा। राजीव गांधी किसान न्याय योजना बनाकर हमने समर्थन मूल्य में धान की खरीदी की तथा बोनस की बाकी राशि को हम 4 किस्तों में दे रहे हैं। इस प्रकार से हमने अपना वायदा पूरा किया। एक साल बोनस और चार साल कौन अस वाली बात नहीं है। हम हर साल धान खरीद रहे हैं। हम हर साल आदान राशि दे रहे हैं और बराबर 4 किस्तों में ये राशि देते हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गौधन न्याय योजना का जो मैं आंकड़ा दे रहा हूं, इसमें अब कुछ वृद्धि हो गई है। हमारे 10 हजार, 336 गौठान बन चुके हैं। जिसमें से 10 हजार, 240 गौठान स्वीकृत हुए और उनका निर्माण पूरा हो गया है। यह आज के प्रश्न में भी आया है और चूंकि यह थोड़ा बढ़ गया है इसलिए इसकी जानकारी हमने दे दी थी।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी वरिष्ठ मंत्री हैं। मैंने सुबह इनकी प्रशंसा भी की थी। जब आप सब कुछ देखकर पढ़ रहे हैं तो उसको टेबल करवा दीजिए। इससे सदन का समय बचेगा।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब चंद्राकर जी बोलने के लिए खड़े होते हैं, तब बंद करो कहने पर वह नहीं बोलते हैं और पटक-पटक ऐसे बोलते हैं। जब दूसरे बोलते हैं तो वह उनका उपहास उड़ाकर खण्डन करते हैं कि आप पटल पर रख दीजिए। इसका मतलब यह है कि यह सब चीज जानते हैं। यह इतने विद्वान हैं और इनको सुनने की जरूरत नहीं है। लेकिन ऐसे बहुत से सदस्य हैं जो नये हैं और उनको जानकारी देना जरूरी है। इसलिए यदि आप नहीं सुनना चाहते हैं तो अपना कान बंद कर लें, परंतु बाकी सदस्यों को मेरी बातें सुनने दीजिए, जो मैं प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरे पास बहुत सी नई जानकारियां भी हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने आपके सामने गौधन न्याय योजना की बातें रखीं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, आपको सब सुनना चाहते हैं और आपके प्रति सबके मन में सम्मान भी है लेकिन आप सत्य कथन तो करिये। आप गौठान-गौठान कह रहे हैं। क्या किसान की लावारिस जानवर की समस्या दूर हो गई?

श्री चंदन कश्यप :- रतनजोत और शौचालय का क्या हुआ? आपने कहा था कि लंदन से न खाड़ी से, डीजल देंगे बाड़ी से।

श्री शिवरतन शर्मा :- यदि किसान की लावारिस जानवर की समस्या दूर हो गई है तो गौठान का औचित्य है। आप यह बता दीजिए कि यदि किसान की लावारिस जानवर की समस्या दूर नहीं हुई है तो किसान को गौठान से क्या लाभ हुआ?

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप लोग सीधे आपस में सवाल न करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मंत्री जी, हम तो चाहते थे कि आप ही उप मुख्यमंत्री बने।

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, हम तो चाहते हैं कि आप मुख्यमंत्री बने।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- देखिये, उप मुख्यमंत्री जी जैकेट पहनकर आये हैं। आप भी वैसे ही जैकेट पहन कर आते।

श्री ताम्रध्वज साहू :- क्या आपकी बात समाप्त हो गई ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शिवरतन शर्मा जी ने कहा कि क्या किसानों की समस्या दूर हो गई? समस्या दूर होती जाती है और नई समस्या पैदा होती जाती है। अभी हमारी समस्या ये लोग हैं। (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- अभी आपकी समस्या हम लोग हैं, पर पूरे प्रदेश की जनता की समस्या आप लोग हो ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- अगर ये लोग ईमानदारी से 15 साल में समस्या निदान का काम किये होते तो इन 5 सालों में हमें कोई काम करने की जरूरत ही नहीं पड़ती। इन्होंने 15 साल कुछ नहीं किया इसलिए सारा बोझ हम लोगों के ऊपर आ गया, हम लोगों को हर विभाग का काम सक्रियता से करनी पड़ रही है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपाध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने आगे बढ़कर मिलेट मिशन चालू किया और माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने खुद स्वीकार किया, हमारे मुख्यमंत्री जी ने उनको प्रेजेंट भी किया । हम लोग मिलेट मिशन का कार्य क्षेत्र बढ़ा रहे हैं, हम लोग ज्यादा से ज्यादा लघु धान्य उपज कोदो, कुटकी, रागी का समर्थन मूल्य बढ़ाकर बाजार व्यवस्था दुरूस्त करते जा रहे हैं, ताकि आगे चलकर इसमें और बढ़ोत्तरी की जा सके । मिलेट आधारित रोजगार के प्रोत्साहन के लिए 12 जिले रायगढ़, कोरबा, रायपुर, सरगुजा, सूरजपुर, नारायणपुर, मानपुर-मोहला, अम्बागढ़ चौकी, कोरिया, जशपुर, बालोद, बलरामपुर में मिलेट्स कैफे महिला स्व सहायता समूह द्वारा संचालित है । प्रदेश के लघु और सीमांत किसानों को शाकम्बरी योजना के अंतर्गत लाभ दिया जा रहा है, ताकि सिंचाई क्षमता में तीव्र वृद्धि हो । हम बाड़ी योजना में भी वृद्धि कर सकें । विगत 15 साल में इनके कार्यकाल में कृषि क्षेत्र में जो कमियां थीं, उसको भी हम लोगों ने दूर करने का प्रयास किया है । जैसे उद्यानिकी और वानिकी अनुसंधान के लिए हम लोगों ने महात्मा गांधी उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय की स्थापना की । लघु धान्य फसल कोदो, कुटकी का समर्थन मूल्य उपार्जन प्रक्रिया नहीं थी, उसको भी हम लोगों ने वन धान्य समितियों के माध्यम से दुरूस्त किया । सहकारी समितियों के माध्यम से उद्यानिकी फसल हेतु शून्य प्रतिशत पर ऋण दिया, ताकि इस क्षेत्र को और अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जा सके ।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, आपके लिए 10 मिनट का समय निर्धारित है । अभी आपको बोलते हुए 16 मिनट हो चुके हैं । आप और कितना समय लेंगे ?

श्री ताम्रध्वज साहू :- मेरे समय का 16-17 मिनट तो इन लोगों ने खड़े होकर व्यवधान करके ले लिया है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- थोड़ा सा देख लीजिएगा ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- इनको बोलिए, अजय जी को विशेष तौर पर बोलिए कि मेरे बोलने में व्यवधान न करें ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने उनको बोल दिया है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- जब मैं बोलूं तो मुझे मत टोकवाईए ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- उपाध्यक्ष महोदय, मैंने आपको नहीं टोका है । कभी आपको टोका है तो बताईए । बाकी लोगों की बात नहीं करता, मैंने आपको कभी टोका है क्या ?

श्री रामकुमार यादव :- कई झन बेहोश हो गे हें ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपने गृह विभाग की कुछ बातें आपके सामने रखना चाहूंगा । जब हम लोगों ने यहां सरकार बनायी तो हमारे सामने नक्सली उन्मूलन की समस्या थी, वह 15 सालों इतना ज्यादा बढ़ी हुई थी कि हम उसको किस प्रकार से दूर करें । माननीय मुख्यमंत्री जी ने तय किया कि हम आदिवासियों को हल पकड़ाएं या बंदूक ? हमारी सरकार में हम लोगों ने तय किया

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कि हम हल पकड़ाएंगे, ताकि बंदूक से हमारे आदिवासी जितना दूर हो सके, वह हो इसलिए हम लोगों ने विश्वास विकास सुरक्षा के नाम से कार्य शुरू किया । बस्तर अंचल में हम लोगों ने लघु वनोपज का समर्थन मूल्य बढ़ाया । हम लोगों ने सामूहिक पट्टा और व्यक्तिगत पट्टा देने का काम किया । वहां पर 15 सालों में नक्सलियों के कारण लगभग 1500 स्कूल बंद हो गए थे, वह हम लोगों ने चालू किया । वहां ईलाज करने का काम चालू किया, हम लोगों ने राशन दुकान चालू किया। हम लोगों ने बिजली पहुंचने का काम चालू किया तो वनांचल में इस तरीके से हम लोगों ने काम किया । जब हम लोग आदिवासी क्षेत्र में कैम्प खोलते थे तो आदिवासी पहले उसका विरोध करते थे, पर अब कैम्प खोलते हैं तो उसको स्वीकार करते हैं कि यह हमारे लिए है । उपाध्यक्ष महोदय, आप वहां के रहने वाले हैं, आपको बहुत अच्छी तरह से मालूम है कि आज वहां वनांचल में सर्वाधिक मोटर सायकल की बिक्री हो रही है, सर्वाधिक ट्रेक्टर की बिक्री हमारे वनांचल में है । अगर आज हम वहां का दौरा करते हैं तो वहां से बैंक खोलने की मांग होती है । इसका मतलब यह है कि आदिवासियों के हाथ में पैसा आया इसलिए वे बैंक की मांग करने लगे हैं । यह हमारे नक्सली उन्मूलन का सबसे बड़ी उपलब्धि है । 1 जनवरी, 2019 ये 15 जुलाई, 2023 तक 1855 माओवादियों ने समर्पण किया है । अलग-अलग कैडर के माओवादियों हैं, बहुत से मारे गए हैं, कुछ ने वापसी भी की है, बहुत से लोगों ने आत्म समर्पण भी किया है ।

उपाध्यक्ष महोदय, हमने 75 नवीन सुरक्षा कैम्पों की स्थापना की है । प्रत्येक नक्सल प्रभावित ग्राम पंचायतों के उनके विकास के लिए एक-एक करोड़ रूपए की व्यवस्था की गई । अलग-अलग महिला सुरक्षा अपराध के मामले में अलग-अलग थाना, अलग-अलग महिला सेल, साईबर क्राईम से निपटने के लिए साईबर थाना, यह सब चीज हम लोगों ने की है । पुलिस कल्याण योजना के अंतर्गत ढाई करोड़ रूपये को बढ़ाकार चार करोड़ रूपये प्रतिवर्ष किया है। स्कालरशीप योजना, संकट निधि, शिक्षा निधि की राशियों में रिस्पांस भत्ता, में वृद्धि किया गया है। अनियमित वित्तीय कम्पनी, चिटफण्ड कम्पनी की बात चल रही थी, आदरणीय कौशिक जी बात कर रहे थे। हम लोगों ने 45,826 निवेशकों को राशि वापिस किया है, हम लोगों ने लगभग 33 करोड़ रूपये चिटफंड कम्पनियों का निवेशकों को वापिस किया है। नक्सल हमलों में शहीद कर्मचारियों के विशेष अनुदान को 15 लाख रूपये से बढ़ाकर 35 लाख रूपये किया है। सहायक आरक्षकों के लिए 5 लाख रूपये से बढाकर 25 लाख किया है। इस तरह से हम लोगों ने इस दिशा में भी काफी काम किया है। अभी जन घोषणा-पत्र की काफी बात हो रही थी। महिला के खिलाफ अपराध की बात हो रही थी। 4 महिला सेल बिलासपुर, दुर्ग, रायपुर, सरगुजा में है। 447 थानों में महिला सेल बनाया गया है। महिला विरूद्ध अपराध अनुसंधान इकाई के तहत रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, रायगढ़, जांजगीर में महिला प्रकोष्ठ बनाया है। 28 जिलों में आपरेशन मुस्कान, हमर बेटी हमन मान, महिला सुरक्षा अभिव्यक्ति एप, हम लोगों ने इस दिशा में सारा काम किया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मानननीय उपाध्यक्ष महोदय, खुफिया फेल तन्त्र की बात करते हैं। छत्तीसगढ़ पुलिस का खुफिया तन्त्र सुदृढ़ और व्यवसायिक रूप से दक्ष है और हम उसी के कारण यह उपलब्धि हासिल कर रहे हैं। हमर सियान, ग्राम रक्षा समिति, मनमा नवानार, पुलिस जनहित योजना, हमर संगवारी, हमर पुलिस, नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सिविक एक्शन के माध्यम से जागरूकता के अनेक कार्य करते जा रहे हैं। महिला सम्बन्धी अपराध बलात्कार, दहेज मृत्यु, शीलभंग शीर्ष के मामले में पिछले 15 वर्षों की तुलना में काफी कमी आई है। बढ़ती नक्सल समस्या को दूर करने के लिए चाहे सड़कों का निर्माण हो, टॉवर का निर्माण हो, पुल-पुलियों का निर्माण हो, हम लोग लगातार बड़ी संख्या में निर्माण करते जा रहे हैं। जिस झीरम घाटी की बात करते हैं, आज लोग 12 बजे रात में भी अकेले सफर करने लगे हैं। उपाध्यक्ष महोदय, आप उस क्षेत्र से हैं, आप उस चीज को भलीभांति जानते हैं। नशे की बात आई। हमारा छत्तीसगढ़ की सीमा 7 राज्यों से जुड़ा हुआ है। नशीली दवाओं की तस्करी रोकने के लिए 1 करोड़ 25 लाख रूपये स्वीकृत कर 25 चैक पोस्ट की भी स्थापना की गई है। मानव तस्करी रोकने के लिए भी हमारा विंग्स लगातार कार्रवाई कर रहा है। हमने पुलिस कर्मी परिजनों को सुविधा देने की दिशा में आगे काफी काम किया है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने बस्तर फायटर्स के नाम से 2,057 नवीन भर्ती किया है। भारत वर्ष में पहली बार थर्ड जेण्डर को भी पुलिस विभाग में भर्ती करने का अभियान चलाया, उसके तहत हम लोगों ने काम किया है। रिक्त पदों पर भर्ती और पुलिस विभाग में पदोन्नति का भी काम किया। नक्सल घटनाओं में कमी, नवीन थाना की स्वीकृति, महिला सेल, बाल मित्र कक्ष, डायल 112 का सभी जिलों में विस्तार का काम किया है। सायबर थाना प्रारंभ किया है। हम लोगों ने ये सारे काम किए हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने गुम बच्चों की पता साजी में बड़े से बड़ा काम किया है। उपाध्यक्ष महोदय, आप विश्वास करेंगे कि हमने 2,193 बच्चे जो गुम थे, हम लोगों ने उनका पता कर वापस उनके परिवार को लौटाया है। अपराधियों की गिरफ्तारी में क्राइम रिक्वहर रेट 99 प्रतिशत है, यह विश्वसनीय सरकार की पहली बात है। तनाव मुक्ति के लिए स्पंदन योजना, भत्तों में बढ़ोत्तरी, नवीन जेलों की स्वीकृति, बिलासपुर, रायपुर और बेमेतरा में खुला जेल, बंदियों के अवकाश में वृद्धि, नगर सैनिकों के मानदेय में वृद्धि, नार्को टेस्ट की सुविधा, आदिवासियों पर दर्ज प्रकरण की वापसी, ऐसे अनेक कार्य हैं, जो हम लोगों ने किया है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं कुछ चर्चा लोक निर्माण विभाग की करूं। हमारा 25 हजार करोड़ रूपया आवंटन था, हम लोगों ने 12 हजार करोड़ रूपया व्यय कर लिया और 16 हजार करोड़ रूपये तक व्यय की संभावना है। सड़क, पुल-पुलियों के 7,600 कार्य शुरू किये हैं। भा.ज.पा. शासनकाल के लंबित सड़क और पुल-पुलियों को बनाया है। हम लोगों ने 4 साल में 9 रेल्वे ओव्हर ब्रिज और 5 अण्डर ब्रिज

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

का निर्माण कार्य पूर्ण किया है। सी.जी.आर.डी.सी. के तहत 525 कार्य के लिए 5,700 करोड़ की स्वीकृति प्रदान की है। जवाहर सेतु योजना के तहत 127 पुल, 829 करोड़ के हम लोगों ने स्वीकृत किये, बनाये हैं । मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना के तहत 4,344 कार्य, 533 करोड़ के हम लोगों ने स्वीकृत किये हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो डिप्लोमा वाले हैं, बेरोजगार इंजिनियरों को काम देने के तहत, जो डिप्लोमा वाले हैं, छोटी सड़कों में 15 हजार रूपया मासिक देते हैं । मध्यम श्रेणी की बड़ी सड़कें है, डिग्री वालों को 25 हजार रूपया मानदेय दिया जाता है, मास्टर डिग्री के जो इंजिनियर हैं, हमारा जो बड़े प्रोजेक्ट हैं, 50 करोड़ और 100 करोड़ का है, वहां 50 हजार तक उनको मानदेय दिया जाता है, उनको काम में रखा जाता है । इस प्रकार से 2330 इंजिनियरों को हम लोगों ने काम दिया है । ई-श्रेणी पंजीयन किया है और बेरोजगारों को रोजगार का अवसर उपलब्ध कराने का काम किया है । हम लोगों ने पी.डब्लू.डी. में भी इस साल पदोन्नति किया है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय मंत्री जी । अभी हमारे पास 29 वक्ता हैं । आपको 26 मिनट हो गये हैं । जल्दी समाप्त करें ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- सम्माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पर्यटन विभाग की कुछ चर्चा करूं, 15 साल के पिछले कार्यकाल में पर्यटन की कोई नीति तैयार नहीं थी, हम लोगों ने अपने कार्यकाल में नीति तैयार की है । रामायण सर्किट के बाद हमारे अजय चन्द्राकर जी बात करते हैं, राम वनगमन पथ की बात हम लोगों ने शुरू की है, यह कहा गया है कि 14 साल के वनवास काल में भगवान राम 10 साल हमारे छत्तीसगढ़ की भूमि में गुजारे हैं । 75 जगहों पर गये हैं, उनमें से 9-10 जगहों को हम लोगों ने चिन्हांकित किया है । माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्देश पर चिन्हांकित करके उन स्थलों के विकास काम हम लोगों ने हाथ में लिया है । भारतवर्ष में एकमात्र कौशिल्या माता का मंदिर चंदखुरी में है, जिसमें विकास अंतिम चरण में है । यह काफी अच्छा बन रहा है । आप भी दर्शन के लिये चलियेगा । हम लोग शिवरीनारायण में, राजिम में, हम सभी जगह विकास के कामों को संचालित करते जा रहे हैं । स्वदेश दर्शन योजना के तहत 94 करोड़ की राशि का हमने काम किया है । डोंगरगढ़ माता बमलेश्वर मंदिर में प्रसाद योजना के अंतर्गत 43 करोड़ का कार्य हम लोगों ने शुरू किया है । राम वनगमन पथ का काम 167 करोड़ की लागत से किया जा रहा है । दामाखेड़ा के विकास के लिये 22 करोड़ रूपया हम लोगों ने स्वीकृत किया है । होटल मैनेजमेंट संस्थान जो बंद पड़ा था, चालू नहीं हुआ था, उसको भी हम लोगों ने चालू कर दिया है, धार्मिक न्यास की बात आती है, न संचालनालय था और न ही कुछ वहां था, हम लोगों ने संचालनालय स्वीकृत किया है और स्वीकृत करने के बाद पदस्थापना के विषय में हम लोग आगे बढ़े हैं । राजिम माघी पुन्नी मेला की बात करते हैं, राजिम माघी पुन्नी मेला का नाम बदलकर उसको राजिम महाकुंभ किया गया था, जबकि यह कहा जाता है कि चार कुंभ होता है, पांचवे का उल्लेख नहीं है, जब मैंने इसमें बिल पेश किया, उस समय अंग्रेजों के गजेटियर का बुक्स लाया था, उसका

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उल्लेख करते हुये मैंने कहा कि लगभग 116 साल पहले अंग्रेजों ने गजेटियर में लिखा है, उस समय राजिम माघी पुन्नी मेला में 50 हजार की भीड़ हुआ करती थी, उस समय से राजिम माघी पुन्नी मेला नाम है, उसको बदल दिया गया था, पुन: उसको वास्तविक रूप में लाने का काम हम लोगों ने किया है । मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिये हम लोग काम करते हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजिम में मेला स्थल नहीं है । मेला किराये के जगह पर लगता है, नदी में लगता है, माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्देश पर 55 एकड़ जमीन हम लोग चिन्हांकित करके मेला स्थल विकसित करने का काम हम लोगों ने वहां पर शुरू किया है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इनके अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूँ, इसको रिजेक्ट किया जाये, आपने बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

उपाध्यक्ष महोदय :- अजय चन्द्राकर साहब ।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष जी, वो तो बोल बेच कर ही, जैसे अभी मंत्री जी बोलिसे, हमर मन के मानने वाला राम हरै, एखर मन असन नोहे, ऊपर में राम-राम, तरि में कसई ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरी आपसे हाथ जोड़कर विनती है, अजय चन्द्राकर जी बोल रहे हैं तो गीता में हाथ रखकर बोलेंगे कि सच बोलेंगे, क्योंकि सच तो उनको बोलना नहीं है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- इनके पूरे भाषण से आपको एक फायदा होगा कि आपके मन में उत्तेजना आयेगी । यह आपको फायदा होने वाला है ।

एक माननीय सदस्य :- डेढ़ घंटे से कम नहीं बोलना है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, चन्द्राकर साहब का समय बरबाद मत करिये ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप लोग बैठिये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- और कोई बोलोगे तो बोल लो भई, माईक बंद कर दो ।

श्री अरूण वोरा :- उपाध्यक्ष महोदय, शिवरतन शर्मा जी ने बोला कि उत्तेजित हो जायेंगे, तो इसका मतलब चन्द्राकर जी उत्तेजना के उत्प्रेरक है ?

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूर) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय अध्यक्ष महोदय ने अपील की कि छत्तीसगढ़ विधान सभा की महान परंपरा है और उसका पालन करते हुए हम आज के अविश्वास प्रस्ताव को ऐसा-वैसा करें। मैंने उसी समय कहा कि कोई महान परंपरा नहीं है। मैं अपनी बात यहीं से इसलिए शुरू कर रहा हूं कि इस सरकार का संविधान में, नियम में, परंपरा में, संवैधानिक संस्थाओं में विश्वास ही नहीं है। यह एक चलवर्ती सरकार है, जिसका अर्थ है कि मेरी चले, सोलो शो, यह एकल प्रदर्शन वाली सरकार है। इनको अपने ऊपर कोई नियम कानून नहीं चाहिए। मुख्यमंत्री जी जो करते हैं, वह सोलो शो है, जैसे सोलो शो नाटक होता है, जिसको एकल नाटक कहते हैं, इस प्रदेश में एकल नाटक चल रहा है और यदि माननीय मंत्रीगण समझते हैं कि इसमें उनका कोई रोल है, तो उनको बताना चाहता हूं कि जब

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पांडव भ्रमण में आ गये तो भगवान कृष्ण ने बर्बरीक को बुलाया कि बताओ आपने महाभारत में क्या-क्या देखा ? बर्बरीक ने कहा कि मैं आपको बहुत शॉर्ट में सुना देता हूं। भगवन्, मैंने तो सिर्फ आपका सुदर्शन चक्र देखा बाकी सब तो केवल लाठी हिला रहे थे। वैसे ही यह सब लाठी हिलाने वाले लोग समझ रहे हैं कि हम मंत्री हैं। यह सोलो शो है, यहां मुख्यमंत्री जी का एकल प्रदर्शन है। अब मैं आपको बताता हूं कि यहां माननीय मंत्री, श्री मोहन मरकाम जी उपस्थित है।

श्री रामकुमार यादव :- भूपेश बघेल जी के चक्र ला तुमन कोई नइ देखे हव।

श्री अजय चन्द्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, आप संसदीय इतिहास में 1400 से अभी तक के रिकॉर्ड को देख लीजिये। आप देखने भर दीजिये कि हमने जिस संसदीय प्रणाली को स्वीकार किया है। जिस दिन अभिभाषण में चर्चा हुई, उस समय प्रस्तावक सदस्य और समर्थक सदस्य, दोनों अनुपस्थित थे। आपने कुछ नहीं किया, क्या यह छत्तीसगढ़ के लिये सहज घटना थी ? यह क्या महान परंपरा है ?

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राज्यपाल के अभिभाषण के बारे में बोलना चाहूंगा। मैंने आज उल्लेख किया था कि हमने माननीय मुख्यमंत्री जी के खिलाफ निंदा प्रस्ताव दिया था। राज्यपाल महोदय बोल कुछ रहे हैं, इसलिए हम कॉपी मांग रहे हैं, हमने सी.एस. को लिख दिया और उसके लिए सूचना का अधिकार भी लगा, हमने नहीं लगाया, मैं व्यक्तिगत तौर पर सूचना का अधिकार लगाने के विरूद्ध हूं, लेकिन आज तक हमको कॉपी नहीं मिली। वह लेटर इधर से उधर घूम रहा है। यहां कुछ पढ़ा जा रहा है, वहां कुछ बोला जा रहा है। क्या छत्तीसगढ़ विधान सभा में कभी ऐसी घटना घटी है ? यदि कभी घटी है तो आप बताईये। इतिहास में पहली बार हुआ कि एक भी बजट सत्र पूरा दिन नहीं चला।

उपाध्यक्ष महोदय, आपको आगे और गिनाता हूं कि आपने परसों व्यवस्था दी थी कि वह विभाग मुख्यमंत्री जी का विभाग है। कहां की विधान सभा, आपका कहां का निर्देश, कौन-सी संसदीय प्रक्रिया ? क्या जवाब रख दिया गया है ? आपकी आसंदी ने कहा था चावल घोटाले में 24 तारीख को रिपोर्ट रखी जायेगी। यदि आप चाहते तो जैसी परंपरा है, उसके अनुसार इस सदन के प्रथम दिन चावल घोटाले की रिपोर्ट को उपलब्ध करवा देते। यदि मैं होता तो मैं ए.जी. को कटघरा लगाकर बुलाता कि आप बताओ कि 34 याचिकाओं का क्या स्टेटस है। कौन-सी याचिका लगी है ? कौन-सी याचिका नहीं लगी है ? कितनी याचिका स्वीकृत हुई है ? कौन-सा बेंच सुन रहा है ? क्या विधान सभा को घुमराह किया जा रहा है ? मैं होता तो यहां पर कटघरा लगता और ए.जी. आकर उसका जवाब देते। लेकिन सरकार यह भी नहीं करेगी, न आप करवायेंगे। यह विधान सभा की कीमत है ?

उपाध्यक्ष महोदय, आप आगे सुनिये। आपको प्रश्नों के उत्तर का एक उदाहरण दे रहा हूं। यहां सिंचाई मंत्री जी नहीं है। वर्ष 2023-24 में राज्यपाल के अभिभाषण में माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि सिंचाई क्षमता 10 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 13 लाख 5 हजार 451 हेक्टेयर हो गयी है, यह विधान सभा में वर्ष 2023-24 के अभिभाषण में है। जबकि वर्ष 2021-22 के माननीय बृजमोहन जी के प्रश्न में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जवाब आया है कि वास्तविक सिंचाई क्षमता में 16 हजार 974 एकड़ की कमी आयी है और वर्ष 2022-23 में 29 हजार 762 हेक्टेयर की कमी आयी है। अब आप यह बताईये कि विधान सभा की क्या वेल्यू है। क्या वह अधिकारियों के ऊपर कार्रवाई कर सकते हैं कि वे विधान सभा को गुमराह कर रहे हैं। आप इसमें कुछ बोल सकते हैं ? आप कागज देखकर पढ़ रहे हैं, आप जनता का क्या सामना करेंगे? यदि आपको विश्वास होता तो आप ऐसे बोलते। हां, हम कार्यवाही करेंगे और विधान सभा के सम्मान को बहाल करेंगे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजनीतिक तौर पर निर्णय हो रहे हैं। मैं आपको मुख्यमंत्री सड़क विकास योजना में बता दूं। यहां माननीय मंत्री जी नहीं हैं। वर्ष 2023-24 के अभिभाषण में कहा गया। जो भी हो। मेरे पास आंकड़े हैं कि 2 हजार 2155 किलोमीटर सड़कों का कार्य पूर्ण हुआ। वर्ष 2022-23 में 26 कलिोमीटर। अब आप देखिए जो उसी साल का आर्‍थकि सर्‍वे है । इस आर्‍थकि सर्‍वे में 219 सड़कें 465 किलोमीटर की लम्बाई है यह उसी साल का आर्थिक सर्वे जो रखा गया है, जो उसमें पिछले साल बताया गया। यह विधान सभा में दोनों पटल में है जो अभिभाषण में है मेरी सरकार ने इतनी किलोमीटर सड़क बनाई। यहां उसी सरकार के सांख्यिकीय मंत्री जी बैठे हैं उनके आर्थिक सर्वेक्षण में दूसरी बात कही गई है। अब आपको मैं बता दूं यह एक छोटा-छोटा सा उदाहरण है। एक प्रिविलेज में चर्चा नहीं हुई। आपके नोटिफिकेशन होने के बाद यह दूसरी परिभाषा दे रहे थे। मैं उत्तेजित नहीं होता। आप विधान सभा और लोकसभा में रहे हैं। नोटिफिकेशन के बाद नाम बदल लें। आप रोज नाम बदल लीजिए। **[XX]** [34] मेला योजना कर लीजिए, हमको उससे क्या करना है ? वहां मेला ही तो लगेगा। **[XX]** मेला योजना कर लीजिए, हमको उससे क्या करना है। नोटिफिकेशन के बाद ...।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब कोई बात होती है तो वह खुद कहते हैं कि जो सदन के सदस्य नहीं है उनका नाम नहीं लिया जाए। वह खुद कैसे नाम ले रहे हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आलोचना नहीं कर रहा हूँ। मैं नामकरण की बात कर रहा हूँ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज नोटिफिकेशन के बाद माननीय प्रेमसाय सिंह जी कल मैं मजाक से नहीं बोल रहा था। आपसे दस्तख्त होकर गवर्नर के पास बिल जाएगा। शासन के पास आएगा फिर नोटिफिकेशन जारी होगा। यह उनके साथ मजाक है क्या ? मुझे बोल रहे थे कि आप आदिवासी, इसका, उसका नाम लेते हैं। मैं तो विचारधारा से शुद्ध आर.एस.एस. का आदमी हूँ। मैं भाजपाई भी नहीं हूँ, ऐसा बोल देता हूँ जिसमें जातिवाद का कोई स्थान ही नहीं है। उसका कोई स्थान ही नहीं है। जो जातिवाद की बात करते हैं। माननीय बृजमोहन जी बैठे हैं मैं उसका दल के अंदर विरोध करता हूँ। आप विधान सभा

---

[34] [34]**[XX]** अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

की बात तो छोड़ दीजिए। अब यह अवमानना खुले आम हो रही है। यह अवमानना किसलिए हो रही है कि आप संलिप्त हैं। आपको सुरक्षा देना है। जो साबित है उसमें आपकी चेतावनी काम नहीं कर रही है। वह यहां नहीं है। हमें इस सदन में बोल रहे हैं कि हम गाली दे रहे हैं, ऐसा कहा। मेरे मुंह से माननीय उमेश पटेल जी के लिए शब्द निकला मैंने उसी समय खेद व्यक्त कर दिया। मैंने गलत बोला था, मैंने स्वीकार कर लिया। मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी की नसीहत मान ली और मैंने स्वीकार कर लिया। तुम लोगों, इन लोगों को बोलना नहीं आता। आपके सामने तुम, इन, इस प्रकार की भाषा हो रही है। प्रोसिडिंग में यह पेशकश कर दी। आपने, सत्तारूढ़ दल के किसी आदमी ने नहीं कहा। यह नैतिकता स्वीकार नहीं की कि हमें धर्मजीत सिंह जी की चुनौती स्वीकार है। वह अभी इस्तीफा देंगे। आज आपने यह व्यवस्था दी थी। आप प्रश्नकाल के बाद प्रोसिडिंग देखकर निर्णय लेंगे।(व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय चन्द्राकर जी, आप सुन तो लीजिए। यह दूसरों के लिए बहुत नैतिकता की बात करते हैं। अपने गिरेबान में झांककर नहीं देखते हैं। कल यही आदमी इनके बोलने में भाषा का स्तर सड़क छाप जैसे लोगों का रहता है। आज भी इनकी बॉडी लैंगवेज जैसे सड़क के **[XX]** [35] चलते हैं उस प्रकार की इनकी बॉडी लैंगवेज होती है।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप समय का ध्यान रखेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो उन्होंने इतनी बड़ी गाली दी। उन्होंने इतनी बड़ी चुनौती दी। मुझे इस बात का दु:ख है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं व्यक्तिगत रूप से आरक्षण का समर्थक नहीं हूँ, इन्होंने ऐसा बोला था। आप अपना भाषण निकलवाकर देख लीजिए। यह क्या बात करेंगे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, किसानों का 20 क्विंटल धान नहीं होता है, यह आप ही ने बोला था।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय,यह ज्ञान बांट सकते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :-अच्छा, मैं खड़ा हूँ।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, किसान मन घलोक पूछत रहिस हे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप लोगों को जितना बोलना है आप लोग बोल लीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिए। आप आपस में सीधे संवाद न करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, हो गया, अब मैं बोलूं। अब चूंकि यहां प्रोटेक्शन हो रहा है हम यदि विपक्षी हैं तो उसकी भावना का सम्मान नहीं है। पूरी दुनिया में जो संसदीय प्रणाली को

---

[35]**[XX]** अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मानते हैं, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, विशेषाधिकार और उन्मुक्तियॉ codified नहीं हैं। जब सदन का राजनीतिकरण कर रहे हैं तो विशेषाधिकार और उन्मुक्तियों कों codified करने वाला पहला प्रदेश छत्तीसगढ़ होगा और उसकी जरूरत को मैं यहां आपको बताता हूं ताकि लोगों को सुरक्षा मिले। संवैधानिक संस्था ई.डी. के खिलाफ हम प्रदर्शन कर सकते हैं, उसमें जुर्म दर्ज नहीं होगा इसलिए हम codified करें। विधायक के साथ हम उसमें कांग्रेस जन भी लिखें। माननीया विधायक छन्नी चंदू साहू जी के साथ जो दुर्व्यवहार किया है वह हो सकता है, उसके ऊपर कोई कार्रवाई नहीं होगी, यह विशेषाधिकार और उन्मुक्तियॉ codified होना चाहिए। बडे नेता बनना है तो एस.पी., कलेक्टर का कॉलर पकड़ो, ऐसे बोलने वाले आदमी के ऊपर कोई धमकी की भाषा नहीं होगी, यह विशेषाधिकार codified होना चाहिए। सत्तारूढ़ दल के विधायक के साथ- साथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को भी यह विशेषाधिकार प्राप्त हो। आम जनता को थप्पड़ मारा गया।

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, क्या यही विषय अविश्वास प्रस्ताव में है, और कोई मुद्दा नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आम जनता को एक मंत्री ने थप्पड़ मारा। कोई कार्यवाही नहीं होगी। एक कर्मचारी को एक विधायक ने थप्पड़ मारा, उसका वीडियो वायरल हुआ, कोई कार्यवाही नहीं होगी क्योंकि वह कांग्रेस का है। यह विशेषाधिकार और उन्मुक्तियॉ को इसमें codified कीजिए। हमारी बहन जी शकुंतला साहू जी नहीं हैं। रेत माफिया के खिलाफ कार्यवाही करने में एक तहसीलदार को कर्तव्यपालन करने से रोकती हैं। और उनकी दमदारी देखिये, ऐसा संरक्षण होता है, वह कहती हैं कि तुम्हारा ट्रांसफर करवा दूंगी और दो घंटे में ट्रांसफर हो जाता है। यह codified होना चाहिए। विधायक ने दो घंटे में ट्रांसफर बोल दिया और ब्यूरोक्रेसी दो घंटे में उसका ट्रांसफर कर दे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक मनीष श्रीवास्तव, अब मैं उनका नाम नहीं लेता, वह कांग्रेस के हैं। कोंडागांव के माननीय मंत्री जी हैं। एस.डी.ओ.पी. को पीटे, उनके साथ misbehave भी किये तो कोई उसका कुछ बिगाड मत सके। कांग्रेस के कार्यकर्ता और विधायकों के साथ-साथ यह codified होना चाहिए। एक हमारे विधायक जी हैं, आबकारी विभाग के उनके भतीजे ने लप्पड़ मारा, वह codified होना चाहिए। कर्मचारी को लप्पड़ मारेगा तो उसको कांग्रेस के विधायक या कार्यकर्ता या उसके रिश्तेदार होने के कारण प्रिविलेज है। एक Head constable से सूरजपूर में कांग्रेस के कार्यकर्ता ने मारपीट की। इसमें मेरे पास नाम है। इधर माननीय डी.जी.पी. साहब बैठे हुए हैं, पुलिस बल का नेतृत्व कर रहे हैं। आप बोलिये, मैं फिर बोल देता हूं कि आपके पास गिनती के गृहमंत्री हैं, प्रतीकात्मक गृहमंत्री हैं, कांग्रेस वाले आपके पुलिस वाले को मारेंगे, आप सहिये। एक युवा कांग्रेस का नेता असलम शेरू जबरदस्ती कब्जा करने का बिलासपुर सरकंडा का वीडियो वायरल हुआ। उसके कसकर मारे, वह कांग्रेस का नेता है, कौन क्या कर लेगा ? यह codified होना चाहिए। मैं आपको और बता देता हूं। आज कवर्धा के पंडातराई के अध्यक्ष धारा 420 से लेकर 24,

467, 468, 70, 71 में गिरफ्तार हुए, उनकी जमानत रद्द हो गई, वह जेल में चल दिये। लेकिन वह कांग्रेस का नगर पंचायत अध्यक्ष है, मैं मांग करता हूं कि कांग्रेसी होने के कारण उसको ऐसा करने का एक स्वाभाविक अधिकार है। वह करे और आप सुरक्षा दीजिए। आप डी.जी.पी. को बोलिये कि पुलिस मार खाये तो खाये लेकिन उसको सुरक्षा दीजिए।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, खुर्सीपार में एक उचित मूल्य की दुकान है। दो दुकान में 980 क्विंटल अनाज कम पाया गया। चूंकि कांग्रेस का कार्यकर्ता है, उसको चोरी का नैतिक अधिकार है, उसके ऊपर क्यों कार्यवाही होगी ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह कुछ घटनायें मैंने संसदीय कार्य विभाग में बोलते हुए इसलिए बताई कि हमारी प्रणाली में विशेषाधिकार और उन्मुक्तियॉ codified नहीं हैं, छत्तीसगढ़ की विधान सभा का पहली गर्व प्राप्त होगा कि हम विशेषाधिकार और उन्मुक्तियों को codified कर रहे हैं। माननीय उपाध्यक्ष जी, अब मैं कुछ वित्त विभाग में बोलता हूं।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह थप्पड़ मारने की बात कर रहे हैं। मध्य प्रदेश में आदिवासियों के ऊपर बी.जे.पी. के विधायक प्रतिनिधि उनके सिर के ऊपर **[XX]** [36] है।

श्री अजय चंद्राकर :- मध्य प्रदेश में अविश्वास प्रस्ताव आया है क्या?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- मुख्यमंत्री का चरण धोते हैं।

श्री कवासी लखमा :- आपके मख्यमंत्री का पैर धोते हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- उपाध्यक्ष जी, कल माननीय मुख्यमंत्री जी आंकड़े पढ़ रहे थे। मैंने पहली बार देखा कि पूरी सरकार ब्यूरोक्रेसी पर केन्द्रित है। यह सरकार आत्मविश्वास खो चुकी है। कागज पर निर्भर सरकार है। 30 जून, 2023 की स्थिति में 86,264 करोड़ रूपये कर्ज है।

उपाध्यक्ष महोदय :- साहब, 16 मिनट हो चुका है।

श्री अजय चंद्राकर :- साहब, मिनट को छोड़िये। अभी तो मैंने शुरू किया है। मैं एकाध वक्ता का नाम घटा देता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- इसीलिए तो मैंने टोक कर रखा है कि बिल्कुल मत टोकिएगा।

श्री अजय चंद्राकर :- सर, मैं जल्दी-जल्दी बोल रहा हूं।

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, वह गरम पानी से तीन बार गरारा करके आए। दिन में तीन-चार बार गरारा करें।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाईये।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं जल्दी-जल्दी बोल देता हूं।

---

[36] **[XX]** अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- इसीलिए तो मैं पहले से टोंक दिया हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, 20,689 करोड़ रूपये प्रत्याभूति बकाया कर्ज है। मार्कफेड की प्रत्याभूमि 30,000 करोड़ रूपये की है। कुल मिलाकर 1,33,106 करोड़ रूपये कर्जा है। जो वर्ष 2018 में 14,457 रूपये प्रति व्यक्ति कर्ज था, आज 27,341 रूपये प्रति व्यक्ति कर्ज है। प्रदेश सरकार को अभी शुद्ध राजस्व आय में कमी आई है। यह मैं नहीं बोल रहा हूं। आप सी.ए.जी. की रिपोर्ट को पढ़ लीजिये, आर्थिक सर्वेक्षण को पढ़ लीजिये, सब को पढ़ लीजिये। मेरे पास सारे दस्तावेज रखा है। अब आपको बता दूं कि वित्त सचिव के स्मृति पत्र में 50 प्रतिशत कर्ज के लिए, कुछ अदायगी के लिए और कम से कम 20 प्रतिशत पूंजीगत व्यय हो, यह आदर्श बजट माना जाता है। छत्तीसगढ़ में उसका अता-पता नहीं है। मैं आपको बता देता हूं कि आर.बी.आई. की रिपोर्ट में सर्वाधिक राजकोषीय घाटे वाले राज्य में छत्तीसगढ़ दूसरे नंबर पर है। कल मेरे को अंग्रेजी में नहीं समझते कह रहे थे तो मैं एक रिपोर्ट को अंग्रेजी में पढ़ता हूं। In 2023-2024, 7,542 crore in estimated to be spent on debt re-payment by the state. This is a 26% increase over the ...।

श्री अमरजीत भगत :- Your voice not clear. Please clear your voice.

श्री अजय चंद्राकर :- Over the revised estimates for 2022-2023. This could be due to a significant proportion of debt maturing in this financial year. The C.A.G. had noted that 25% of state's public debt (as of march 31, 2021) would mature by 2023-2024, 80% यह असली चीज है। 81% of public debt woulb be have to be repayed 2026-27 तक 81 प्रतिशत तक लोन को चुकाना है जोकि असंभव है।

श्री अमरजीत भगत :- But my friend speech very wrongful. You are not correct speech in English.

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष जी, This is clear. (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट। आपको हंसी आ रही है, उसकी कॉमेडी में बोल रहा हूं। माननीय, आप प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रहे हैं। आप मुझको कामराज का पूरा नाम बातइये तो। वह कब पैदा हुए? वह कांग्रेस पार्टी में एक बड़े नाम है। वह कब पैदा हुए, बता दीजिये?

श्री धर्मजीत सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, अब मैं सरल प्रश्न पूछ लेता हूं। अभी आपका जो गठबंधन बना है INDIA, उसका फूलफार्म बता दीजिये। INDIA का फूलफार्म बताईये न।

श्री अरूण वोरा :- इसका नाम है, Indian national developmental Excutive committee. (हंसी)

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री मोहन मरकाम) :- I am very depressed to listen your speech.

श्री अजय चंद्राकर :- एक भी कांग्रेसी यहां पर हैं तो कामराज का पूरा नाम बता दें।

श्री अमरजीत भगत :- I am very depressed to listen your speech.

श्री अजय चंद्राकर :- मजाक से कुछ नहीं होता है। आप अपने आप को कांग्रेसी कहते हैं तो हिम्मत से बताईये। मैं पांच मिनट और बैठता हूं। Freebies की व्यवस्था एक अर्थव्यवस्था हो होती

है । सन् 1953 से 1964 तक काम राज्यीय मद्रास स्टेट उस समय तमिलनाडू नहीं होता था, मुख्यमंत्री होते थे । सबसे पहले Freebies की योजना उन्होंने लागू की अर्थात् Freebies की योजना कांग्रेस की देन है उसके बाद वह डीएमके ने कलर टीवी लायी । उसके बाद आम आदमी पार्टी ने नॉर्थ इंडिया में शुरू किया, मुफ्त की बिजली, मुफ्त का पानी, मुफ्त की सब चीज दिल्ली में, दिल्ली जल में आज जितनी डूबी, पहले कभी नहीं डूबी थी । अब सुप्रीम कोर्ट ने भी Freebies के बारे में यह कहा कि लोककल्याणकारी कार्यों में खर्च करें लेकिन आम आदमी पार्टी दिल्ली और हिमाचल प्रदेश एवं पंजाब तीनों ने केंद्र सरकार से पैसे मांगे हैं । सरकार बनने के बाद नियमित वेतन तक वे दे नहीं पा रहे हैं कि तत्काल में हमको पैसा दीजिये यह Freebies में है । अब मैं आपको Freebies के और उदाहरण बताता हूं फिर मैं एक विभाग भर में बोलूंगा और फिर बंद कर दूंगा । अब मैं चलिये इसको बंद कर देता हूं क्योंकि जो गारंटी कर्नाटक में दी थी, हिमाचल प्रदेश में दी थी । एक भी Freebies की गारंटी अब तक लागू नहीं हुई है । मैंने इस्तीफे में जो हाथ उठाया, अभी भी उठा दिया कि मैं भी इनकी तरह इस्तीफा दे दूंगा । यदि पूरा कर्जा माफ करें, मैंने अल्पकालिक कर्जे में भाषण नहीं दिया था । मैंने भाषण दिया था पूर्णकालिक कर्जा, सारे कर्ज जो किसान के घोषणा पत्र में लिखे हैं, वह पूरा कर्जा माफ कर दीजिये, मैं दस दिन में इस्तीफा दे दूंगा करके और मैं इसमें फिर से कायम हूं । आज कर दें, आज से दसवें दिन मैं इस्तीफा दे दूंगा । मेरे पास यह पूरे उदाहरण हैं, अब दूसरी बात छोटे-छोटे विषय हैं । लोग संस्कृति, छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़िया रामवनगमन में बहुत बातें करते हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे थोड़ा समय चाहूंगा, आपकी दया-कृपा मिल जाये ।

उपाध्यक्ष महोदय :- थोड़ी उत्तेजना वाला नहीं होना चाहिए । (हंसी) बाकी ठीक है ।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अब इनकी बात को लोग गंभीरता से नहीं लेते हैं । ये पहले दिन से इस्तीफा दे रहे हैं, कर्जा माफ हो जायेगा तो इस्तीफा दे दूंगा, 2500 रूपये होगा तो इस्तीफा दे दूंगा लेकिन इन्होंने आज तक इस्तीफा नहीं दिया है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह देश सबका है, यह प्रदेश सबका है । 119वीं पीढ़ी के राजा हैं, 100 से ऊपर पीढ़ी के राजा श्री टी.एस. सिंहदेव जी हैं । छत्तीसगढ़ी भाषा को आठवीं अनुसूचि में शामिल करवाने के लिये क्या-क्या प्रयास किये गये, जब मंत्रीगण बोलेंगे या मुख्यमंत्री जी बोलेंगे तो मैं उस उत्तर में अपेक्षा करूंगा । राजभाषा आयोग आपने बनाया है, आप मुझे यही बता दें कि क्या-क्या मापदंड होना चाहिए । कितने प्रकाशन होने चाहिए ? उसके व्याकरण हैं कि नहीं हैं ? कितने लोगों के द्वारा बोला जाता है ? मुझे यही बता दें । आठवीं अनुसूचि में शामिल मत करवायें । संस्कृति मंत्री जब बोलेंगे तो इसी को बता दें कि राजभाषा में आठवीं अनुसूचि में शामिल करवाने के लिये किसी भाषा के मापदंड क्या हैं, इधर-उधर की बहस करने से क्या मतलब है ? बिंदु में उत्तर देंगे तो मैं समझूंगा । अब अगर प्रकाशन देखें, व्याकरण देखें तो मैंने एक-बार इस सदन में जानकारी दी थी कि

छत्तीसगढ़ी का व्याकरण हीरालाल काव्योपाध्याय हिंदी से पहले का हमारा व्याकरण है । यहां एक भी कांग्रेसी लोगों में उपस्थित कोई मुझे बता दें जिसने उस व्याकरण की किताब को देखा भी होगा । वह व्याकरण भी बनेगा, लेखन कैसे होगा, प्रकाशन कैसे होगा ? बोले कैसे जायेंगे ? सीखना है तो लोग कैसे सीखेंगे । आप किसी को सिखायेंगे तो वे कैसे सीखेंगे ? उसकी कौन सी लिपि होगी और उस लिपि में यदि कोई भाषा के शब्द नहीं आते हैं, कोई वाक्य नहीं आते हैं तो उसको किस तरह से स्वीकार किया जायेगा ? बतायेंगे, बहुत विद्वता तो है । एक भी कांग्रेसी, मेरी पूरी चुनौती है । अब जब आप किताब को छपवायेंगे तो हमने ग्रंथ अकादमी बनायी थी, मैं बोल देता हूं कि छत्तीसगढ़ में कोदूराम जी दलित । उसकी किताब कौन सी थी ? मैं फेंटेसी की बात कर रहा था । ठाकुर जगमोहन सिंह कहां पैदा हुये थे ? रायगढ़ के विधायक कहां हैं ? वे चल दिये । पहला उपन्यास लिखा गया स्वप्न । उसका एक नाम भी जानते हैं तो बता दें ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- इसका नंबर तो बाद में था। ये बीच में कहां से कूद कर आ गये?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप आगे सुनिए। राउत नाचा प्रदेश के आदिवासी समुदाय का नृत्य है। यह पी.एस.सी. में पूछा है। भाभी जी, आप बताइए कि राउत नाचा कौन से आदिवासी समुदाय का नृत्य है। छत्तीसगढ़ की पी.एस.सी. ने पूछा है। बहुत बात करते हैं, आदिवासी हितों की। मूल संस्कृति जो आदमी नहीं जानता, भूपेश बघेल जी का एक योगदान है कि सचिव स्तर की जांच उस सोनवानी जी के ऊपर चल रही थी, उसे खत्म करके नियमों को ताक में रखकर पी.एस.सी. का चेयरमेन बनाया गया।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह तो गलत बात है। कोई अनुसूचित जाति का व्यक्ति पी.एस.सी. का अध्यक्ष नहीं बन सकता?

श्री अजय चन्द्राकर :- फिर आ गया अनुसूचित जाति।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अपनी योग्यता के आधार पर बना है। इनकी कृपा से नहीं बना है।

श्री अजय चन्द्राकर :- फिर जाति में आ गये।

श्री ननकीराम कंवर :- अनुसूचित जाति गलत नहीं कर सकता क्या?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- क्या गलत किया? तुम्हारे यहां 15 साल में पी.एस.सी. ने क्या किया? 12 साल भ्रष्टाचार हुआ है। केवल 3 साल भर्ती हुई है। 12 साल भर्ती नहीं कर पाये हो। किसलिए हुआ? कोर्ट ने भर्ती करने नहीं दिया। तुम लोग भ्रष्टाचार में डूबे थे। इसलिए तुम लोग कुछ नहीं कर पाये। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष जी, यह क्या हो रहा है?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ये इस तरह से कैसे बोलेंगे। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- जिसके खिलाफ जांच चल रही थी, फिर भी पी.एस.सी. का चेयरमैन बनाया। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिए, मैं कह रहा था कि आप थोड़ा शांत रहिए। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तुम लोग पूरा भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हुए थे। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप वरिष्ठ मंत्री हैं और शब्दों का अगर सही इस्तेमाल करें, शिष्टाचार आप लोगों को आना चाहिए। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- शब्दों का चयन इन्हें करना चाहिए। इन्होंने ऐसे कितनों का नाम लिया है। इन्होंने कइयों का नाम लिया है। पूरा भ्रष्टाचार आप लोगों ने किया। 15 साल [XX][37] करते रहे। इन्होंने 15 साल पूरे छत्तीसगढ़ को [XX] है। पूरा [XX] किये हो और ये हम लोगों की बात करते हैं। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- मात्र इसलिए क्योंकि वे एस.सी. का है, बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जो वर्तमान में सरकारी अधिकारी हैं, उसके खिलाफ हम आरोप लगा सकते हैं, ये हमें अधिकार है और इसलिए माननीय जी इसे जातिवाद में न ले जाये और वे माफी मांगे। माननीय सदस्य अगर भाषण दे रहे हैं तो मंत्री जी को इस प्रकार से बोलने का अधिकार नहीं है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय सदस्य जान-बूझकर इस तरह की हरकत कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- पी.एस.सी. चेयरमेन के खिलाफ सचिव स्तर की जांच चल रही थी। उसके बाद भी पी.एस.सी. का चेयरमेन बना दिया।

श्री अजय चन्द्राकर :- पी.सी. मिश्रा जांच कर रहे हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, आप भाषण जारी रखें। माननीय मंत्री जी एवं सदस्यों से निवेदन है कि शब्दों का चयन करके बोलें। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय सदस्य अनर्गल बात करेंगे तो ठीक नहीं होगा। आप इन्हें समझाइए कि ये ठीक से बात करें पी.एस.सी. में 15 साल तुम लोग घोटाला किये हो। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- जब पहली बार कांग्रेस की सरकार आयी तो पी.एस.सी. में घोटाला हुआ था और अभी कांग्रेस की सरकार आयी तो भी पी.एस.सी. में घोटाला हुआ है। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- पी.एस.सी. में तुम लोग पूरे 15 साल घोटाला किये। 15 साल घोटाला किये तो अब क्या आरोप लगा रहे हो। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग एक दूसरे पर आरोप मत लगाइए। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- जातिवाद की बात कहां से आ गयी, जब हम किसी अधिकारी के ऊपर में आरोप लगा रहे हैं तो। (व्यवधान)

---

[37] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- 15 साल तुम लोगों ने भ्रष्टाचार के अलावा क्या किया है? और यहां भ्रष्टाचार की बात करते हो। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं आपका सुन रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, महाभारत में शिशुपाल की एक कहानी है। शिशुपाल पैदा हुआ, उसके दो नाक, 4 हाथ ऐसे थे। उसकी मां बड़ी चिंचित हुई।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- [XX][38]।

श्री शिवरतन शर्मा :- ये उनकी भाषा है। ये उनकी भाषा है। (व्यवधान)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आप ऐसा कैसे बोल सकते हैं? आप क्या कहना चाहते हैं? तुम-तुम से बात कर रहे हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मेरी बगैर अनुमति के आप लोग कोई खड़े नहीं होंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मंत्री महोदय को बाहर निकालिए। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- यथार्थ में जीयो, कल्पना में मत जीयो। आज की बात करो, कल्पना की बात मत करो। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मंत्री महोदय को बाहर निकालिए। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने विलोपित कर दिया है। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- क्या विलोपित कर दिये। उन्हें माफी मांगने बोलिए या इसी समय सदन से बाहर करिए। (व्यवधान)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- ये तुम-तुम में बात करने का क्या तरीका है? (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं सभी से अनुरोध करता हूं। मैं माननीय मंत्रगण से भी अनुरोध करता हूं कि थोड़ा शब्दों का भी चयन करिए। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- माननीय सदस्य बार-बार यह गलती क्यों करते हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने विलोपित कर दिया। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- ये लोग बोले तो ठीक और हम लोग बोले तो खराब। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मंत्री जी को इस सदन से बाहर करिए। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- सदन की कार्यवाही 5 मिनट के लिए स्थगित।

(5:09 से 5:25 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

---

[38] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय
5.25 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

उपाध्यक्ष महोदय :- आज की कार्यसूची के पद क्रमांक 4 का कार्य पूर्ण होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाए । मैं समझता हूं सदन इससे सहमत है ।

सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने सदन स्थगित किया । इससे पहले माननीय अजय चन्द्राकर जी का भाषण चल रहा था । माननीय अजय चन्द्राकर जी ने अपने भाषण में पी.एस.सी. चेयरमेन के खिलाफ चल रही जांच का उल्लेख किया था । लगातार एक सदस्य किसी भी विषय को एक जाति विशेष से जोड़ते हैं और सदन में व्यवधान उत्पन्न करते हैं । कल भी यह विषय आया था, आज सबेरे जब बृजमोहन जी बोल रहे थे तब भी यह विषय आया । क्या किसी मंत्री को बार-बार व्यवधान डालने का विशेषाधिकार आसंदी की ओर से दिया गया है या आसंदी ऐसे व्यक्ति को प्रताड़ित करेगी । इस पर व्यवस्था आ जाए तो अच्छा रहेगा । उसके बाद हम लोग बोलें तो ठीक रहेगा । अन्यथा बार-बार यह विषय आएगा ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए अभी 29 वक्ता हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, एक ही व्यक्ति के द्वारा हर बार सदन में व्यवधान उपस्थित करना, बात को बिगाड़ने की कोशिश करना, उसको जातिवाद पर ले जाना, यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है । हम सब लोग चाहते थे कि अंतिम दिन है और सदन ठीक से चले ।

उपाध्यक्ष महोदय :- बहुत बढ़िया ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- परंतु उनको आप निश्चित रूप से प्रताड़ित करिये, वे खड़े होकर माफी मांगें या फिर उनको सदन से बाहर करिये ।

श्री अमरजीत भगत :- आज सुबह आसंदी से ऐसी व्यवस्था आई थी कि सभी लोग अपने व्यवहार में शिष्टता लाएंगे । व्यक्तिगत् आरोप प्रत्यारोप से बचना है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ऐसी स्थिति में सदस्यों के लिए बोलना बहुत कठिन होता है । क्योंकि उत्तेजना हमको भी आ सकती है, हम भी मनुष्य हैं । हमें भी आवेश आ सकता है ।

श्री अमरजीत भगत :- उसके विपरीत आज केवल एक सदस्य के द्वारा बार-बार ऐसे स्तरहीन शब्दों का प्रयोग करना, सदस्यों की भावनाओं को ठेस पहुंचाना ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए सहयोग कीजिए अभी 29 वक्ता बाकी हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, कोई व्यवस्था तो आनी चाहिए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमितेश शुक्ल :- विलोपित कर दिया ना ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आज अंतिम दिन है, थोड़ा देख लीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने विशेषाधिकार और छत्तीसगढ़ की महान परम्पराओं में इसीलिए बात की । आप बुरा मत मानिएगा, मुझे वहां से किसी सदस्य को प्रताड़ित किया जाएगा या निर्देशित किया जाएगा या सदन के नेता निर्देशित करेंगे, ऐसी बिल्कुल अपेक्षा नहीं है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- सदन में समस्त माननीय सदस्यों का सम्मान है और आसंदी प्रत्येक सदस्य के सम्मान की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है । मैंने आप सभी की बातें सुनी हैं । मैं पुन: माननीय मंत्रियों से निवेदन करूंगा कि मर्यादित एवं शालीन शब्दों का प्रयोग कीजिए । ऐसी भाषा न कहें जिससे किसी की भावनाएं आहत हों ।

श्री अजय चन्द्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं महाभारत की एक बात कह रहा था । शिशुपाल का जन्म हुआ तो उसकी चार आंख, चार हाथ, चार कान, दो मुंडी इस तरह की थी ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष जी, एक निवेदन है कि उसमें संशोधन कर दीजिए । मंत्रियों के अलावा सदस्यों के लिए भी कह दीजिए ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने तो सभी के लिए बोला है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- महाभारत में एक कहानी आती है । उसकी मां चिंतित होती है, कोई आदमी आएगा, इसको देखेगा । जिससे कि इसके अतिरिक्त नाक, काम, हाथ हट जाएंगे और उसी के हाथों इसकी मृत्यु होगी । कृष्ण भगवान उसकी बुआ के लड़के थे, वे जाते हैं । हाथ, नाक, कान गायब हो जाते हैं तो उसकी मां बोलती है कि यह आपका भाई है । तो उन्होंने कहा कि मैं इसकी 100 गलतियां माफ करूंगा । मैं इसको यह बताना चाहता हूं ।

श्री अमरजीत भगत :- अभयदान तो हम लोगों ने भी आपको दिया है, 99 की छूट है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय पवन दीवान जी छत्तीसगढ़ के ब्रम्हचारी थे, कवि थे । उनकी कविता छत्तीसगढ़ महतारी के आधार पर कुरूद में पहला छत्तीसगढ़ महतारी का मंदिर बना । कांग्रेस के एक विधायक ने ही मंदिर बनवाया था। उसके चार हाथ थे, उस समय जब प्राण प्रतिष्ठा हुई तो महाराज ने कहा था कि छत्तीसगढ़ में एक समय ऐसा आएगा जब सिन्ड्रोम वाली सरकार आएगी जिसमें तरह-तरह के लक्षण होंगे। माफिया सिन्ड्रोम होगा, तस्करी सिन्ड्रोम होगा, लुटेरा सिन्ड्रोम होगा, नशा सिन्ड्रोम होगा, कोयला सिन्ड्रोम होगा, शराब सिन्ड्रोम होगा।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय चंद्राकर जी, आप विषय पर ही बोलिएगा। आपका समय हो गया, कृपया समाप्त करिए।

श्री अमरजीत भगत :- उपाध्यक्ष महोदय, इसीलिए बोलता हूं कि सामान्य शांति और सौहार्द्र बिगाड़ने का काम करते हैं। इनको निर्देशित करिए कि सीधा-सीधा बात करें।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने कह दिया है, वे विषय के अंदर ही बात करेंगे।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कांग्रेस का यह राज आया, माननीय भूपेश बघेल जी मुख्यमंत्री बने और छत्तीसगढ़ महतारी का दो हाथ हो गया। कुरूद में चार हाथ हो गया, यहां दो हाथ हो गया। उस प्राण प्रतिष्ठा वाले पंडित की भविष्यवाणी ठीक हुई, छत्तीसगढ़ को अब क्या कर दिया गया, छोड़ दीजिए।

माननीय उपाध्यक्ष जी, अब संस्कृति विभाग में बोल देता हूं। मैं आपको एक बात बताता हूं। मैं माननीय संस्कृति मंत्री की ओर जाऊंगा नहीं। एक बात है, पूरी दुनिया वृंदावन की लट्ठमार होली जानती है। हम छत्तीसगढ़ के लोग हैं, प्रकाश जी, आप बताएंगे कि छत्तीसगढ़ में सबसे अच्छी होली कहां होती है। आप तो सांस्कृतिक राजधानी रायगढ़ से आते हैं।

श्री अमितेश शुक्ल :- राजिम में होती है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप बस्तर से हैं। दंतेवाड़ा की 15 दिन तक चलने वाली फागुन मड़ई यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति है। कैसे प्रकृति के प्रेम ताड़ के पत्ते जलाते हैं, टेसू के पत्ते से रंग बनाते हैं, संस्कृति मंत्री को कभी जानने की फुर्सत नहीं रही। उसकी ब्रांडिंग की फुर्सत नहीं रही।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पूरी दुनिया जानती है कि वृंदावन में विश्व प्रशिद्ध लट्ठमार होली होती है।

उपाध्यक्ष महोदय :- डॉ. साहब, आपका भी नाम है, आप थोड़ा सा बैठिए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारी आदिवासी संस्कृति, आदिम संस्कृति इतनी समृद्ध रही। घोटुल के कमरे बनाने से घोटुल संरक्षित नहीं होगा। जो खुली परंपरा आज पाश्चात्य देश देखती है, वह बस्तर में सदियों पहले विद्यमान थी। भारत ने सिखाया कि लैंगिक समानता क्या होती है। बस्तर ने सिखाया शिक्षा क्या होती है, स्वतंत्रता क्या होती है, यह बस्तर ने सिखाया। हम अपनी संस्कृति पर गर्व कैसे करेंगे ? भौरा, गिट्टी खेलना एक खेल है, सांकड़ लेना परंपरा है, मैं इसको मानता हूं, यह संस्कृति है कि गौरा ठंडा होता है तो सांकड़ लिया जाता है। आप मुझे यह बताईए कि छत्तीसगढ़ की संस्कृति मुकुटधर पाण्डे ने छायावाद दिया, मुक्तिबोध की कविता अंधेरे में इस सदी में उत्तरार्ध में सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली कविता है। क्या कोई छत्तीसगढ़ी आदमी इसको जानता है ? श्यामास्वप्न फैंटेसी का पहला उपन्यास है, कोई छत्तीसगढ़ी आदमी उसको जानता है? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताता हूं। इस सरकार को क्या हो गया है, वह बता देता हूं। मुख्यमंत्री जी फिक्सन राइटर बन गये हैं, फैंटेसी में फैंटसिंग पैदा छत्तीसगढ़ में हुई। मुक्तिबोध जी फैंटेसी के सबसे बड़े लेखक रहे। क्या फैंटेसी है, उसको बता देता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय चंद्राकर साहब, 44 मिनट हो चुके हैं, अभी बहुत वक्ता हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं दो विभाग में जल्दी-जल्दी बोल देता हूं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं भी पूरा एक घंटा बोलूंगा।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष जी, क्या फैंटेसी है, उसको बता देता हूं। बृजमोहन जी ने कुछ उल्लेख किया, उसको लंबा कर देता हूं। घोषणा करो, घोषणा खाओ, घोषणा सुनो, घोषणा में ताली बजाओ और घोषणा को कूद-कूदकर बताओ। कैसे, मैं मेट्रो रेल चला दूंगा, मैं फिल्म सिटी बना दूंगा, मैं ऐरो सिटी बनाऊंगा, ऐरोसिटी के चारों तरफ आधा किलोमीटर में किसकी जमीन है, उसकी जांच करवाईए। विश्वस्तरीय स्कूल को बृजमोहन जी ने बोल दिया, मैं नहीं बोलता। होलसेल कारिडोर, वर्धा की तर्ज पर बनाएंगे, बृजमोहन जी ने बोल दिया है। शहीद स्मारक में तो छत्तीसगढ़ का अपमान हो गया। हमारे मुख्यमंत्री के उपर हमें गर्व है। कोई संवैधानिक पद में आदमी नहीं है, वह मुख्य अतिथि है। हमारे माननीय मुख्यमंत्री उसमें दूसरे पदों पर है। रामचंद्र भगवान की थ्री डी व्यू बनाएंगे। राम भक्ति अभी अचानक जगी है और बाकी को अब छोड़िये। यह दिवा स्वप्न।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप समाप्त करिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक मिनट में समाप्त करता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इनको बोलने दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय :- और भी सदस्य बाकी हैं। क्या है कि और भी वक्ता शेष हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की संस्कृति के ऊपर बात हो रही है। यह महत्वपूर्ण मुद्दा है। यह इस विधान सभा सत्र का अंतिम दिन है। ज्ञानवर्धक बात हो रही है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप एक मिनट में अपनी बात समाप्त करिये।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वैसे भी वह मुद्दे पर नहीं बोल रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वह उसी-उसी बात को दोहरा रहे हैं। क्या कुछ सुनने लायक है?

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम लोग कोई पहली बार अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा नहीं कर रहे हैं। हमने 20 वर्षों में कई अविश्वास प्रस्तावों पर चर्चा की है। हमने मध्य प्रदेश में भी देखा है और यहां भी देखा है। आप चलने दीजिए। यदि आप बार-बार टोकेंगे तो सदस्य कैसे बोलेंगे?

उपाध्यक्ष महोदय :- नहीं, सभी के लिए समय निर्धारित है। मैंने मंत्रियों को भी टोका और उनको कम समय दिया।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप सुबह 5 बजे तक सदन चलाइये। हम तो बैठने के लिए तैयार हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम सुबह 6 बजे तक अविश्वास प्रस्ताव की चर्चा में बैठे हैं। सारे लोग बैठने के लिए तैयार हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जल्दी-जल्दी में भाषण पूरा नहीं होता है। आप हमें आराम से बोलने दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, बोलिये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यदि यह कुछ नया बोलेंगे तो आप सदन को आगे चलाइये। इनके भाषण में कुछ नहीं है। कहां कुछ है?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम सुबह 6 बजे तक बैठेंगे। हमें सुबह 6 बजे तक बैठने में कोई दिक्कत नहीं है। इसलिए आप सबको बोलने का मौका दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय :- मेरा यह कहना है कि मैंने माननीय मंत्रियों से भी आग्रह किया कि आप समय का ध्यान रखें। मंत्रियों ने भी अपना भाषण 20-25 मिनट में समाप्त किया। आपको 44 मिनट हो चुके हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बृजमोहन भैय्या, आप मत बैठिये। आप जाकर आराम से सो जाइये।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सुबह 6 बजे तक चलाइये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कुछ लोगों को टेढ़ा-मेढ़ा चलने की आदत है। उनको सीधे-सीधे चलने की आदत नहीं है। यह वही-वही बात करते हैं। कोई नया तथ्य, नई बात कहे तो समझ में आए।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सुबह 5 बजे तक चलाइये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने एक भी ऐसी बात नहीं कही है, जिन बातों को बृजमोहन जी ने कहा था। मैं आगे बढ़ गया या उनका उल्लेख नहीं किया।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, बोलिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन लोगों ने कहा कि हमने मुद्दा छीन लिया। वर्ष 2020 से आप 10 जगहों पर राम भगवान की मूर्ति की स्थापना कर रहे हैं। इंदू बंजारे जी बैठी हैं। मैंने पिछली बार अरण्य काण्ड पर भाषण दिया था कि सबसे ज्यादा समय है तो उन्होंने कहा कि इस बार रामायण का थीम अरण्य काण्ड होगा। मैं आपसे जानना चाहता हूं कि आपने एक साल में कितनी बार रामायण प्रतियोगिता कराया? राज्य स्तरीय रामायण प्रतियोगिता, 16-18 जनवरी, 2003, रामायण मण्डलियों की राज्य स्तरीय प्रतियागिता शिवरीनारायण में 8-10, 2023, राज्य स्तरीय रामायण प्रतियोगिता, रायपुर 27-29, 2023, राष्ट्रीय रामायण महोत्सव, 1-3 जून, 2023, एक साल में 4 बार रामायण हुई।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- भैय्या, 9-9 दिन तक नवधा रामायण होता है।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं आपको बताना चाहता हूं कि जब अरण्य काण्ड की बात हुई, तब अरण्य काण्ड में भगवान ने नवधा भक्ति अपने मुंह से छत्तीसगढ़ की धरती पर सुनाई थी। जहां राम मंदिर बन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रहा है, वहां राम लला 5 वर्ष के बच्चे में कैसे दिखेंगे? इसमें देशभर के मूर्तिकारों की प्रतियोगिता हो रही है। यदि इनमें आस्था होती तो यह शिवरीनारायण, जहां नवधा भक्ति कही गई, वहां पर सबरी, एक भीलनी को सामाजिक समरसता के मूल्य का लोकमंगल का महाकाव्य रामायण वहां पर वह प्रतिमा लगवाते। तो एक प्रतिमा लगा दिये। मतलब, आपने जिन 9 जगहों का चयन किया है, वहां वैसी एक प्रतिमा लगा दिया है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको दूसरी बात बताता हूं कि आप जिन 10 जगहों का चयन किया है, मैं पुन: पूरी ताकत से बोल रहा हूं। माननीय उमेश जी, आप उच्च शिक्षा मंत्री हैं। मेरा एक मिम चला कि अजय चंद्राकर यह बोलते हैं कि कौशल्या माता छत्तीसगढ़ की नहीं हैं। मैं कांग्रेस के पूरे पक्ष से यह पूछना चाहता हूं कि आप मुझे ज्ञात इतिहास के किसी भी का एक संदर्भ ग्रंथ दिखा दीजिए कि माता कौशल्या चंद्रखुरी में पैदा हुई थी।

श्री रामकुमार यादव :- तो कौशल्या माता कहां पैदा होए रीहिस हे?

श्री अमरजीत भगत :- आप कौशल्या माता को छत्तीसगढ़ की बेटी होने का विरोध करते हैं। आपने कौशल्या माता का अपमान किया है...। (व्यवधान)

सुश्री शकुन्तला साहू :- भैय्या, जब मोदी जी आये थे, तब आपने ही तो कहा था कि कौशल्या की नगरी में स्वागत है और अब आप ही कह रहे हैं। आपने ही अपने ट्विटर में डाला था।

श्री रामकुमार यादव :- हमारी कौशल्या दाई छत्तीसगढ़ में पैदा हुई थी।

श्री अमरजीत भगत :- आप छत्तीसगढ़ की बेटी का सम्मान नहीं कर पा रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- कौशल्या माता उत्तर कोसल के राजा भानुमंत की कन्या थी। (व्यवधान)

श्री राजमन वेंजाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह उनका अपमान कर रहे हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आपका नंबर आएगा तो आप बोलियेगा। (व्यवधान)

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट, तोर बारी आही तो बोल लेबे। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आप कौशल्या माता का विरोध कैसे कर रहे हैं ?

श्री राजमन वेंजाम :- आपके पास क्या प्रमाण है, यह बता दीजिए ।

(सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए ।

श्री ननकीराम कंवर :- वह गलत बोल रहे हैं, वह इनके लिए गलत हो सकता है, लेकिन यह सब लोग खड़े होकर चिल्ला रहे हैं, यह उचित है क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कौशल्या माता छत्तीसगढ़ की थी, लेकिन चन्दखुरी की नहीं थी । दूसरी बात, इन्होंने राम वनगमन पथ में चम्पारण को शामिल कर लिया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमितेश शुक्ल :- उपाध्यक्ष महोदय, कौशल्या माता के बारे में हम लोग कुछ भी नहीं सुनना चाहते । ये कौशल्या माता के बारे में बोल रहे हैं कि तो सम्मान की भावना रहनी चाहिए ।

सुश्री शकुन्तला साहू :- जब मोदी जी आये थे तो आपने ही कहा था कि कौशल्या की नगरी में आपका स्वागत है और आप ही विरोध कर रहे हैं । आपने फेसबुक में भी डाला था । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- मोदी जी आये रिहीसे तो तही ह केहे रेहे कि कौशल्या माता की धरती छत्तीसगढ़ में आपका स्वागत है । अब का होगे । वहां अलग बोलते हैं और यहां अलग बोल रहे हैं (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- इन्होंने धार्मिक भावना के ठेस पहुंचाया है । कौशल्या माता छत्तीसगढ़ की बेटी है, पर पूरे ताकत के साथ ये विरोध कर रहे हैं । (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- अजय जी, आपने संबोधित करके कहा । (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- राम का नाम लेकर दो बार सत्ता प्राप्त कर लिए, अब नहीं करेंगे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, आप लोग बैठिए ।

श्री उमेश पटेल :- कौशल्या माता छत्तीसगढ़ की बेटी हैं, मैं आपको इसमें चैलेंज कर रहा हूं । चाहे तो इसमें बहस करने के लिए आप चर्चा करवा लीजिए और इस पर चर्चा हो जाये । वह छत्तीसगढ़ की माता थीं, छत्तीसगढ़ की बेटी हैं । हम चर्चा करने को तैयार हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, बैठिए । जब मैं खड़ा हूं तो आप लोगों को बैठना चाहिए । (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- कौशल्या माता छत्तीसगढ़ की बेटी हैं । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- ये कौशल्या माता का विरोध पूरी ताकत के साथ कर रहे हैं । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप लोग बैठिए, मैं व्यवस्था दे रहा हूं ।

श्री अमितेश शुक्ल :- उपाध्यक्ष महोदय, ये तय करेंगे कि कौशल्या माता महां पैदा हुई है । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय चन्द्राकर जी, आप समाप्त करें, आपका समय भी समाप्त हो गया । बाकी वक्ताओं के लिए भी समय देना है, हमारे पास समय की भी मर्यादा है । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं समाप्त कर रहा हूं ।

डॉ. विनय जायसवाल :- ये कौन से आधार पर बात कर रहे हैं । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं यह किस्सा समाप्त कर रहा हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आपको बोलते हुए एक घंटे से ज्यादा हो गया, बाकी वक्ताओं को भी समय देना है । एक मिनट में अपनी बात समाप्त करिए । एक मिनट से ज्यादा नहीं होगा । बहुत समय हो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

गया । आप 4:40 बजे से बोल रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- विषय तो पूरा हो, किसी भी विषय पर बात हो रही हो तो उसको पूरा होने दीजिए ।

उपाध्यक्ष महोदय :- हमारे पास समय-सीमा की भी मर्यादा है ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- एक व्यक्ति को इतना समय मत दीजिए, वे अकेले बोलेंगे क्या ?

श्री धर्मजीत सिंह :- उनको 10 मिनट समय दीजिए ।

उपाध्यक्ष महोदय :- एक मिनट में समाप्त करिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं संक्षिप्त में बोल रहा हूं ।

श्री अमितेश शुक्ल :- चन्द्राकर जी कौशल्या माता के बारे में बोल रहे हैं, यह बहुत गलत बात है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- हमने सभी सदस्यों के लिए 10 मिनट समय निर्धारित किया है । 10 मिनट में अपनी बात रखेंगे । आप लोग शांत रहिए, मैं इनको बोल रहा हूं । मेरा यह कहना है कि हमने प्रत्येक सदस्य के लिए 10 मिनट का समय निर्धारित किया है । आपका भाषण 4:40 बजे से शुरू हुआ है और एक घंटे से ज्यादा हो गया, सभी लोग सहयोग करें । एक मिनट में अपनी बात समाप्त करें (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- एकर सेती हमर मन के समय ला कम मत करिहौ ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं राम वनगमन पथ में बोल रहा था । मैं उमेश पटेल जी के बात का समर्थन करता हूं कि कौशल्या छत्तीसगढ़ की बेटी थी, चन्दखुरी की नहीं थी । दूसरी बात, चम्पारण कौन से राम वनगमन पथ में आता है । इन्होंने चम्पारण का गौरव समाप्त कर दिया । वल्लभाचार्य जी विशिष्टता दायित्व दर्शन के प्रतिपादक थे । भारतीय दर्शन में छत्तीसगढ़ का योगदान है । देश भर के 84 बैठकों में प्रमुख बैठक चम्पारण है । राम वनगमन पथ से उसका कोई संबंध नहीं है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- समाप्त करिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सुनिए साहब । राम राज्य की बात करते हैं न। राम की मूर्ति बनाना राम राज्य नहीं है। अगली बार ये रामायण करवायेंगे तो उत्तर काण्ड में थीम बनायेंगे। मैं उत्तर काण्ड की एक-दो चीजें पढ़ता हूं। "राम प्रताप विषमता खोई" - कोई विषमता नहीं होगी, जातिवाद नहीं चलेगा, भय शोक ना रोग- ना भय होगा, ना शोक होगा ना रोग होगा, लेकिन यहां भय है, शोक है, रोग है, यहां सब है। दैहिक भौतिक वैदिक तापा- ताप नहीं होते, लेकिन यहां पूरा ताप है, यहां भूपेश बघेल जी के राज्य में हर तरह का ताप व्याप्त है। राम के चरित्र को जीये, सब कृत नहीं कपट ..। माननीय चौबे जी के साथ कपट किया गया, यह कपट का राज्य है। उस समय कपट, चतुराई, धूर्तता किसी में नहीं थी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कालजन्य, कर्मजन्य, स्वभावजन्य, दुखजन्य, ये सब किसी को रामराज्य में नहीं था। यह पूरा दोष कांग्रेसियों में है। ये क्या राम का चरित्र जीयेंगे। क्या एक मूर्ति लगा देने से सब हो जायेगा ?

अब मैं दो विषय जल्दी-जल्दी बोल देता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, अब समाप्त करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी ने हमारे प्रतीकों के अपमान का ठेका ले रखा है। उन्होंने इस सप्ताह India Today में इन्टरव्यू दिया है। मैं उसको पढ़ देता हूं। भा.ज.पा. ने राम की छवि को आक्रामक बना दिया है दूसरी बात, भक्ति, शक्ति, ज्ञान के प्रतीक हनुमान जी को एकदम एंग्री बर्ड बना दिया। यह शब्द हनुमान जी के लिए है, एंग्री बर्ड बना दिया। ये राम भक्ति की बात करते हैं। राम तक पहुंचना है तो उन्होंने तुलसीदास को कहा यदि रामचरित्र लाना है तो पहले हनुमान से भक्ति सीखो, हनुमान की भक्ति सुनो। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन लोगों ने भगवान राम को खरीद लिया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं दो मिनट में बात समाप्त करता हूं। अरण्य काण्ड में छत्तीसगढ़ में भगवान 10 साल थे। मारिच, सुबाहू, त्रिशला, ये 5 राक्षस और 14 हजार सेना को इसी धरती में नष्ट किया था। आप 4 महीने रूकिये, इनकी सारी सेनाएं नष्ट होंगी।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अब छोटी-छोटी बात बोल देता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये समाप्त करें। माननीय उप मुख्यमंत्री जी। अब आप समाप्त करिये, अब आपको कोई समय नहीं मिलेगा। उप मुख्यमंत्री जी आप अपनी बात शुरू करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं छोटी-छोटी बात बोल देता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- समय सीमित है और वक्ता बहुत हैं। मुझे और भी वक्ताओं को बोलने के लिए समय देना है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम सबुह 5.00 बजे तक बैठने के लिए तैयार हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- हमारे पास समय सीमित है। अभी 29 वक्ता हैं। अब मैं बिलकुल नहीं सुनूंगा। आप बोलिये, मैं रिकार्ड नहीं करवाऊंगा। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं 5 मिनट में समाप्त कर देता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- एक घंटे से ज्यादा समय हो गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं 5 मिनट में समाप्त कर देता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- बिलकुल नहीं। उप मुख्यमंत्री जी आप बोलिये साहब।

श्री अजय चन्द्राकर :- 5 मिनट।

उपाध्यक्ष महोदय :- नहीं, अब सुनना ही नहीं है। मैं बिलकुल नहीं सुनूंगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, जब हम तैयार है तो उनको समय दे दीजिये।

उपाध्यक्ष महोदय :- उनको बोलते हुए 1 घंटा हो गया है। मैं तो बाकी माननीय सदस्यों को भी बोला हूं। अभी मैंने गृहमंत्री जी को 20 मिनट में समाप्त करवाया है तो ऐसे नहीं चलेगा। यह सदन है, समय की मर्यादा है, सीमित समय है। एक घंटे से ज्यादा समय नहीं मिलेगा, उप मुख्यमंत्री जी आप बोलिये। मैंने सबसे ज्यादा समय चन्द्राकर साहब को दिया। मैंने मंत्री को टोका है, भाई, ऐसा नहीं है कि आपके लिए ही है। चलिये, आप 2 मिनट में समाप्त करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज वनमंत्री जी बोल रहे थे कि तेंदूपत्ता घोटाला नहीं हुआ है। इनके 5 साल में इस साल लक्ष्य से कम 12 लाख मानक बोरा तेन्दूपत्ता खरीदी हुई है, यह घोटाला नहीं है तो क्या है ? ये कोण्डागांव से आते हैं। उनके क्षेत्र का 112 करोड़ रूपये का बोनस अभी तक नहीं बंटा है और घोटाला नहीं हुआ है, कहते हैं। 37 टेण्डर अनियमित पाये गये, जबकि ये घोटाला नहीं है, बोलते हैं। यदि ये 67 वनोपज खरीदते हैं तो उसकी मात्रा बताना चाहिए कि हम कितनी मात्रा में वनोपज खरीदे हैं। 8 करोड़ रूपया सिंचाई में ...।

श्री बृहस्पत सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय (XX) [39]

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय बृहस्पत सिंह जी, आप लोग बैठिये ना । समय दे रहा हूँ, उसको बरबाद मत करिये । दो मिनट में समाप्त करें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 8 करोड़ रूपये सिंचाई में, आपने सेल्फ चेक निकाल कर कोई डेम नहीं बना है, निर्माण नही, कोई नाली नहीं, कहां का है ? रामचन्द्रपुर, बलरामपुर विधान सभा । 8 करोड़ का सेल्फ चेक । जांच करवायेंगे, घोषणा करेंगे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बहुत किसानों की बात करते हैं, बिजली का उत्पादन कम हो गया है । छत्तीसगढ़ में लगातार गिर रहा है, 1 लाख 32 हजार अस्थायी कनेक्शन है, लोगों को काम नहीं मिल रहा है, बोल रहे हैं, लोगों की औपचारिकता पूरी मत करना, सिर्फ 52 हजार के लायक हमारे पास पैसा है, 1 लाख 32 हजार को हम नहीं दे सकते । एक दादा भाई नौरोजी थे ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपने किसानों का एक-एक दाना खरीदेंगे, बोले थे, खरीदे क्या ?

श्री ताम्रध्वज साहू :- उपाध्यक्ष जी, आप मुझको कितना समय दिये थे, निकलवा कर देख लीजिए और इसका समय देख लीजिए । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- ये क्या है, उपाध्यक्ष महोदय ? ये क्या तमाशा है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- दादा भाई नौरोजी ने 1971 में एक किताब लिखी थी, ड्रेन ऑफ वेल्थ उसका सिद्धान्त था । मैं उसको दूसरा बोलता हूँ । मैं दूसरी बात बोलता हूँ ।

---

[39] (XX) आसंदी के आदेशानुसार विलोपित किया गया ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- [XX]

श्री अजय चंद्राकर :- हिन्दुस्तान की ब्रेनरेन समस्या थी । अभी छत्तीसगढ़ में समस्या है, हिन्दुस्तान से अरबपति बाहर जा रहे हैं । छत्तीसगढ़ में प्रायवेट वेल्थ के माईग्रेशन की एक समस्या हो गई है, करप्ट मनी के माईग्रेशन का, वह पैसा कहां-कहां जा रहा है, छत्तीसगढ़ में यह समस्या है । पैसे कहां जा रहे हैं, उसके लिये जांच आयोग बैठना चाहिये, इतने समाचार पत्रों में छपे हैं, गृह मंत्री जी से एक बात करके एक लाईन बात करके समाप्त करता हूँ । गृह मंत्री जी को उसके विभाग का कोई नमस्ते कर दे तो मान जाऊंगा । नक्सली घटनाओं में कमी, 1300 से ज्यादा नक्सली घटनायें हुई है ।

श्री राजमन वेंजाम :- आपके समय फर्जी एनकाउंटर होता था । नक्सली घटनरा में बोल रहे थे तो मैं बोलूंगा । आप फर्जी एनकाउंटर करते थे, बच्चों को गोली मारते थे । घर से उठाकर गोली मारते थे । आज भी गवाह है । (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपके सरकार में झीरम घाटी कांड हुआ था । फर्जी एन्काऊँटर करवाये थे । आपकी सरकार में हुआ था । (व्यवधान)

डॉ.श्रीमती लक्ष्मी ध्रुव :- तीन महिलाओं को न्याय दिलवाओ जो आपके सामने बैठी है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बेमेतरा को जोड़ दे ना तो 1800 करोड़ रूपया जायेगा। उसमें सबसे कम हिस्सेदारी साजा की है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- पी.डब्लू.डी. में बहुत ईमानदारी हुई है तो कितने रिवाईज हुये हैं, पटल पर रखेंगे क्या ? कितनी अवधि बढ़ाई गई, पटल पर रखेंगे क्या ?

श्री ताम्रध्वज साहू :- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का पिछले पांच साल का पैसा कहां गया ? कुरूद में सबो पैसा ला लेग-लेग के बिछा दे अऊ फालतु के बात करथस । प्रधानमंत्री ग्राम सड़क पूरा कुरूद में गया है । पटवारी मन ला आदेश रहाय, बताना मत । जमीन खरीद लय अऊ दोगुना मुआवजा बर करोड़ो अरबों के घपला करके बैठे हस अऊ बात करथस ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब भड़क कैसे गये, मिर्ची क्यों लगी ? (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- भ्रष्ट्राचार से भरे हैं । इनके लोगों ने पूरा जमीन खरीद किया था । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करें । प्लीज समापत करें । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- कैम्प लगाने के लिये पांच सरपंचों ने एनओसी दी है, एक भाजपा का सरपंच भी शामिल था । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, यह अजय चन्द्राकर जी का शानदार स्पीच था । अजय चन्द्राकर जी ने सारे लोगों को खड़े करा दिया । यह सफलता का पैमाना है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

एक माननीय सदस्य :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं चन्द्राकर जी के तारीफ के लिये दो शब्द बोलना चाहता हूँ ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- जोर-जोर से कांख-कांख के बोलई सफलता नोहे, वोहा गलती छुपाये के परिणाम ए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- ए महोदय, आपसे पुछूंगा, आपके सहयोगी जयसिंह आयेंगे तो उससे पुछियेगा कि कोयला चोरी हो रही है कि नहीं हो रही है ? डीजल चोरी हो रही है कि नहीं हो या नहीं हो रहा है । अभी-भी कोयला और डीजल चोरी हो रहा है। आप जसयिंह अग्रवाल जी से पूछिये।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय ने यह व्यवस्था बनाई थी कि आप एक दूसरे से आराम से बात करिये और माननीय करके संबोधित करिये।

श्री ताम्रध्वज साहू :- सबसे पूछेंगे, पिछले 5 साल में कुरूद में क्या-क्या चोरी हुआ है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जांच करवाईये। आप जांच करवाईये।

श्री ताम्रध्वज साहू :- हां, पूछ लेंगे । आपकी आवाज ही ज्यादा नहीं है। यहां बहुत बुलंद आवास से बोलते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चन्द्राकर जी, आपने बहुत गलती की है।

श्री उमेश पटेल :- उपाध्यक्ष महोदय, आप व्यवस्था तो बताईये। आप चन्द्राकर जी को बताईये कि एक सदस्य दूसरे सदस्य को किस तरीके से संबोधित करेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय :- चन्द्राकर साहब, आप सहयोग करिये।

श्री उमेश पटेल :- उपाध्यक्ष महोदय, क्या यह माननीय सदस्य से ये, वो से बात करेंगे। आज सुबह आपने भूपेश बघेल जी को कहा कि ए भूपेश बघेल। अभी आपने कहा ए महोदय, यह आप क्या बात कर रहे हैं। आप कम से कम माननीय तो बोलिये। (व्यवधान)

सुश्री शकुंतला साहू :- (व्यवधान) आप कुछ भी बोल रहे हैं। एक दूसरे को ए, वो बोलकर संबोधित कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- उपाध्यक्ष महोदय, आप इस पर व्यवस्था बनाईये।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं कर रहा हूं।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह आर.एस.एस. से सीखकर आये हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने पहले भी मंत्रियों और सदस्यों को कहा है कि आप ऐसे शब्दों का उपयोग करिये जिससे किसी माननीय सदस्यों को ठेस न लगे। उसको आप लोग अपने हिसाब से देख के बात करिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

स्वास्थ्य मंत्री (श्री टी.एस. सिंहदेव) :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं अविश्वास प्रस्ताव के विरोध में असहमति रखते हुए बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। 109 बिंदुओं के अविश्वास प्रस्ताव में पहले बिंदु में 44 खण्ड है और शेष 108 आरोप पृथक से लगाये गये हैं। स्वास्थ्य और स्वास्थ्य शिक्षा विभाग के संदर्भ में 9 बिंदु है, जी.एस.टी. विभाग के संदर्भ में 2 बिंदु है और ऊर्जा विभाग के संदर्भ में 5 बिंदु है। क्रमांक 01, 19, 33, 34, 35, 37, 64, 65, 67 एवं जी.एस.टी. में प्रथम बिंदु में उल्लेख बिंदु क्र. 29 और ऊर्जा विभाग में 15, 16, 17, 18 और 43 है। मुझे ऊर्जा विभाग की नई जिम्मेदारी मिली है, मैं वहीं से प्रारंभ कर रहा हूं। पृष्ठ क्रमांक-04 में क्रेडा घोटाला के संदर्भ में उल्लेख है और छत्तीसगढ़ प्रदेश में ऊर्जा के गैर पारंपरिक श्रोतों को बढ़ावा देने के लिए क्रेडा राज्य सरकार की नोडल एजेंसी के रूप में काम करता है और विगत साढ़े 4 वर्षों में क्रेडा ने ऊर्जा के गैर परंपरागत ऊर्जा के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति की है। विगत साढ़े 4 वर्षों की उपलब्धियां निम्नानुसार है।

समय:
5.57 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

माननीय अध्यक्ष महोदय, सौर सुजला योजना के तहत एक लाख 37 हजार सोलर पंपों की स्थापना कृषकों के हित में..।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी और उपमुख्यमंत्री जी को ऊर्जा विभाग मिले हुए 4 दिन हुए हैं। उनके जमाने का तो कोई काम नहीं है। उनको जो फर्जी वाली जानकारी लिखकर दे दी गयी, वे उसको पढ़कर सुना रहे हैं और उनकी मजबूरी है कि ऊर्जा विभाग में जो फर्जी काम हुए हैं, वह उनसे पढ़वाए जा रहे हैं। यदि यह उनके कार्यकाल में हुआ होता और वह अपना अनुभव बताते तो ज्यादा अच्छा होता।

श्री शिवरतन शर्मा :- राजा साहब, 08 लाख लोगों को प्रधानमंत्री आवास क्यों नहीं मिल पाया, आपने दु:खी होकर क्यों मुख्यमंत्री जी को पत्र लिखा ?

अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, अब इस बात को छोड़िए।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग से क्यों इस्तीफा दिया। आप इस विषय पर बोलेंगे तो ज्यादा अच्छा रहेगा। वह सत्यता के करीब लगेगा और जो सत्यता हो वह बोलेंगे तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- आप चाहेंगे तो उसका भी उत्तर दे दूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, समय कम है, उनको बोलने दीजिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, आप आ गये क्या ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री टी.एस. सिंहदेव :- अध्यक्ष महोदय, मुझे चार दिन में जो जानकारी मिली है और बात व्यक्ति की नहीं है, बात सरकार की है और सरकार के माध्यम से जो छत्तीसगढ़ के नागरिकों के लिये सुविधाएं उपलब्ध कराई गई है, उनका उल्लेख हो रहा है। यहां किसी व्यक्ति को श्रेय देने की बात नहीं है। साढ़े चार साल के हिसाब किताब की बात है। इसमें प्रश्न आया है, इसलिए इसका उत्तर विभाग की ओर से है।

अध्यक्ष महोदय, 01 लाख 37 हजार सोलर पंपों की स्थापना की गयी है। इसके अतिरिक्त स्वच्छ पेयजल के लिए सौर पेयजल योजना के तहत 3674 सोलर ड्यूल पंपों की गुणवत्ता पूर्ण स्थापना की गयी है। क्रेडा के माध्यम से ग्रामीण विद्युतीकरण योजना के अंतर्गत 867 ग्रामों में प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है, इसमें लगभग 01 लाख 32 हजार से अधिक परिवार लाभान्वित हुए हैं। इसी तरह से 4507 सोलर हाई मास्ट स्थापित किये गये हैं। इसमें प्रभावी रख-रखाव के संधारण के लिए 96 से 98 प्रतिशत सफलता हासिल हुई है। ग्रामीण निस्तारी के लिए तालाबों में भी सोलर पंप की..।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, सारे मंत्री देखकर पढ़ रहे हैं। वह अपना आत्मविश्वास खो चुके हैं।

समय
6.00 बजे

श्री टी.एस. सिंहदेव :- अजय जी, मैंने आपसे ही सीखा है। वैसे आज आपका बोलना उल्टा पड़ गया। कोई बात नहीं। परियोजनाओं की गुणवत्ता पूर्ण करने के लिए समस्त मानकों का पालन किया जा रहा है और राष्ट्रीय स्तर पर जो पुरस्कार मिले हैं मैं उनका छोटा सा उल्लेख कर देता हूँ। बेस्ट फरफॉरमिंग स्टेट नोडल एजेंसी यह केन्द्र सरकार की ए.आर.ई.एस. एजेंसी है। उनके द्वारा है और सोसायटी ऑफ एनर्जी इंजीनियर्स एवं मैनेजर्स स्टार स्टेट डिजिग्नेटेड एजेंसी यह छत्तीसगढ़ को अपने काम के लिए गैर परम्परागत ऊर्जा के क्षेत्र में माना गया है और गैर परम्परागत ऊर्जा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर पैट्स स्कीम में द्वितिय स्थान प्राप्त हुआ है। यह दिल्ली में किनकी सरकार है, वह कैसा आंकलन कर रहे हैं ? यह आरोप कौन लगा रहा है, उसका आधार क्या होगा ? यह परिलक्षित होता है । अत: अविश्वास प्रस्ताव में क्रेडा के संबंध में लगाए गए आरोप असत्य हैं और आधार नहीं बनता है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पांचवां बिन्दु 15 नंबर में पृष्ट क्रमांक 5 में बिजली हाफ की बात कही गई है। वर्ष 2018 में जन घोषणा पत्र में क्रमांक 3 में बिजली बिल हाफ की जो बात कही गई वह उसमें आरोप लगा है कि यह लोगों को इसका लाभ नहीं मिला। इसका लोगों को कितना लाभ मिला। नि:शुल्क रियायत में मई 2023 तक कुल राशि 3 हजार 897 करोड़ 52 लाख रूपये की है। इस सरकार ने भूपेश बघेल जी की अगवायी में छत्तीसगढ़ के नागरिकों को यह राहत की राशि उपलब्ध करायी है। यदि हम व्यक्तिगत कहेंगे तो उन्हीं के पास यह विभाग था, जिस समय काम हो रहा था। फिर मेरा यह कहना है

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कि सरकार ने नागरिकों को लिए यह राहत उपलब्ध करायी। 42 लाख 68 हजार उपभोक्ताओं को प्रतिमाह छूट का लाभ मिल रहा है। यह कैसी योजना है, कितनी कारगर है? इसका फायदा किसको मिल रहा है और किसको फायदा नहीं मिल रहा है? इन आंकड़ो से इस बात का अंदाज लगेगा। हम मई महीने तक अगर वर्ष 2003 का जोड़ देते हैं तो यह राशि और बढ़कर 4 हजार 105 करोड़ 19 लाख की राशि छूट की छत्तीसगढ़ के नागरिकों को उपलब्ध करायी गयी है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बिन्दु क्रमांक 16 और पृष्ठ क्रमांक 5 में हमने तेलंगाना को जो बिजली दी, हमें पैसा नहीं मिल पा रहा है उसके संबंध में आरोप लगा है तो उसके संदर्भ की जानकारी यह है कि यह अधिसूचित इलेक्ट्रीसिटी लेट पेमेण्ट सरचार्ज एण्ड रिलेटेड मैटर्स रूल्स 2022 में बनाये गये और उनके परिप्रेक्ष्य में यह अवगत हो कि दिनांक 03.06.2022 को तेलंगाना राज्य के विरूद्ध 3 हजार 576.88 करोड़ रूपये बकाया राशि थी, जिसमें प्रारंभ राशि 1500 करोड़ रूपये और बाद में 600 करोड़ रूपये हुआ। इस प्रकार तेलंगाना राज्य के द्वारा 2100 करोड़ रूपये का भुगतान की स्वीकारोक्ति दी गई। लेट पेमेण्ट सरचार्ज रूल्स के अनुरूप किश्तों में भुगतान करना प्रारंभ किया गया। यह नियम बने हैं जिनके तहत अगर बकाया राशि है तो हमको कैसे देना है? उसी के उल्लेख अनुसार किश्तों में देना है और सरचार्ज लगेगा। वह भी उसकी किश्त का हिस्से के रूप में अदाएगी होगी। कुल रूपये 640 करोड़ सी.एच.पी.डी.सी.एल. को प्राप्त हो चुके हैं और शेष राशि मासिक भुगतान या मासिक किश्त के रूप में 56 करोड़ 11 लाख रूपये निर्धारित की गई है। बाकी डिटेल्स हैं और यह तेलंगाना के संदर्भ में जानकारी है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आरोप क्रमांक 17 में ग्रामीण क्षेत्रों में कटौती की बात है। विभाग का स्पष्ट कहना है कि कोई घोषित कटौती नहीं है। किसी प्रकार की नियोजित या नियमित विद्युत कटौती नहीं है और छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत नियामक आयोग के निर्देशानुसार स्थापित केवल पम्प कनेक्शनों के 11 के.व्ही.ए. फीडरों को 18 घण्टे नियमित विद्युत प्रदाय करना है। यह नियामक आयोग के आदेश 15 के.व्ही.ए. के सप्लाई लाईन के तहत जो विद्यमान हैं उसके तहत 18 घण्टे सप्लाई दी जा रही है। शेष समस्त अन्य जो फीडर हैं उनमें 24 घण्टे सप्लाई उपलब्ध करायी जा रही है। कहीं आकस्मिक तौर पर कोई विघ्न उत्पन्न होता है कहीं फाल्ट आता है कहीं पॉवर प्लांट बंद हो जाता है कोई ऐसी दिक्कत आती है अगर उस समय की बात को छोड़ा जाए कि विद्युत सप्लाई नहीं हो रही है, कटौती नहीं है उसके मेनटेनेंस के समय कुछ समय लगता हो, उस समय के लिए केवल बिजली रोकी जाती है। अन्यथा छत्तीसगढ़ में कोई बिजली कटौती नहीं है।

श्री शिवरतन शर्मा :- राजा साहब, अटल किसान ज्योति योजना में 6 घंटे की कटौती है। आप पता कर लेंगे और यह आदेश है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री टी.एस.सिंहदेव :- मैंने इसीलिए पढ़कर बताया कि 11 के.व्ही.ए. लाईन के फीडर से जो विद्युत पंपों, कृषि पंपों को सप्लाई हो रही है उसमें नियामक आयोग का यह डॉयरेक्शन है कि 18 घंटे बिजली उपलब्ध करानी है। वह 6 घंटे कटौती की जो बात आप बोल रहे हैं, वही बात है। वही मैंने आपको जानकारी दी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बिन्दु क्रमांक 18 में मड़वा प्लांट के संबंध में घटिया कोयला सप्लाई करने की बात है। मैं पूरी डिटेल में न पढ़कर केवल इतना बता दे रहा हूं कि गुणवत्ता निर्धारण के लिए सरकारी संस्था मेसर्स सिफर द्वारा जांच की गई है। वर्ष 2020-21, 2021-22, 2022-23 में 3300 calorific value के कोयले के इस्तेमाल करने की बात है। जांच में जो पाया गया है वह प्रथम वर्ष 3300 के विरूद्ध में 4060, दूसरे वर्ष में 3300 के विरूद्ध में 4020 और तीसरे वर्ष 3300 के विरूद्ध में 3927 calorific value के कोयले की जांच के उपरांत इसकी उपयोगिता पाई गई है। कहीं घटिया कोयले की बात परिलक्षित नहीं होती है। औसत calorific value इतनी है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बिन्दु क्रमांक 43 में गोबर से बिजली की बात है कि यह भी एक शगुफा है। यह बात कई बार आती है कि मुख्यमंत्री जी छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ की पहचान के लिए क्या कर रहे हैं? देश में छत्तीसगढ़ की पहचान बनाने वाली योजनाओं में अनेक पहलुओं में यह भी एक छोटी पहल है तो उतनी छोटी भी नहीं है, जब यह पूरे रूप से लागू हो जायेगी। वर्तमान में यह 7 ग्रामों में विद्यमान है। जगदलपुर के एक गांव में, डोंगाघाट में, गीदम के नगर गौठान में, दंतेवाड़ा, कुकानार सुकमा में, खोखरा चांपा-जांजगीर में, खरमुड़ा कोरबा में, निरधी कोरबा मे। इनमें से जो बिजली उत्पादन हो रहा है जो ग्रिड में दे दी गई है, वह पहला बस्तर में जगदलपुर डोंगाघाट का है। 404.5 यूनिट बिजली फीडर में दी गई है। यह शगुफा नहीं है। यह सप्लाई हो गई है। इसी तरह से गीदम में 110 यूनिट, दंतेवाडा में 90 यूनिट बिजली दी गई है और शेष दो कूकानार, खोंखरा के हैं, उसमें स्थानीय प्रयोजन में उसका उपयोग हो रहा है। इसका सफलतापूर्वक प्रयोग प्रारंभ है और सफलता हासिल है और दो अन्य निर्माणाधीन हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- राजा साहब, आप अभी ऊर्जा विभाग का प्रभार लिये हैं। 15 साल तक हमारे किसानों को बिल नहीं भेजा गया था। आपकी सरकार में बिल भेजना प्रारंभ कर दिये हैं। जब आपने पहले साल हॉफ बिजली की बात की तो जितनी आपने 800 करोड़ रुपये की छूट की थी और टैक्स मिला करके उनसे 1 हजार करोड़ रुपये वसूल किये थे। जितना छूट दिये हैं, उसका पैसा कितना है और उपभोक्ता से जो पैसा लिये हैं, वह कितने हैं, तो आपके बिजली बिल हॉफ का अंतर आ जायेगा।

श्री टी.एस.सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बिन्दु क्रमांक 1 में इस बात का उल्लेख है कि VAT में रियायत नहीं दी गई है और बिन्दु क्रमांक 29 में अन्य आरोप लगाये गये हैं जिसमें इस बात का उल्लेख है कि वादा के बाद भी VAT कम नहीं किया गया। अध्यक्ष महोदय, मैं यह नहीं समझ पा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रहा हूं कि यह मामला G.S.T. के संदर्भ में कहा जा रहा है या VAT के संदर्भ में कहा जा रहा है। क्योंकि छत्तीसगढ़ में VAT जो लग रहा है, यह पेट्रोलियम प्रोडक्ट पर लग रहा है, शेष G.S.T. के तहत है। G.S.T. regime में राज्य सरकार न दरों को कम कर सकती है, न बढ़ा सकती है। इसका संपूर्ण अधिकार G.S.T. Council के पास है। राज्य की सरकार G.S.T. की दरों में कोई कटौती नहीं कर सकती। वह न बढ़ा सकती है और न घटा सकती है। शेष जहां तक VAT में रियायत की बात है तो इस दरमियान छत्तीसगढ़ सरकार ने 381.22 करोड़ रुपये की रियायत छत्तीसगढ़ के नागरिकों को पेट्रोल और डीजल में VAT कम करके उपलब्ध कराई है। पेट्रोल में 153.508 करोड़ और डीजल में 227.713 करोड़ उपलब्ध कराई है। केन्द्र सरकार की भी बात आती है कि इसमें पैसा समय पर मिलात है, पैसा समय पर नहीं मिलता है, हमको क्या दिक्कते जाती है। 31 मार्च, 2022 तक का हमारा जो पुराना बकाया था, उसमें 871 करोड़ रूपये बकाया निकलता था। आज भी हमको पहले साल में 857 करोड़ रूपये ज्यादा मिल गया था, उसका समायोजन हो रहा है। आज भी केन्द्र सरकार ने हमको 714.19 करोड़ रूपये राशि उपलब्ध नहीं कराई है।

श्री सौरभ सिंह :- 187 ।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- नहीं भाई, 187 नहीं । हमारा जो protected income है। अगर इस तिमाही का ही 01.04.2022 से 30.06.2022 में देखें, उसके बाद जी.एस.टी. सेस खत्म हो गया। उस दरम्यान हमारा जो protected income projected है, वह 4602.57 करोड़ रूपये का है और revenue calculation में 2762.62 करोड़ आया और हमको compensate 1875.95 करोड़ किया गया। इसके विरोध में हमको compensation 1004.71 करोड़ मिला। हमारा बकाया 871.24 करोड़ बचता है। जिसमें हमारा जो पुराना assessment था। हमको पहले साल राज्य सरकार से ज्यादा पैसा मिल गया था। यह जो ज्यादा पैसा उपलब्ध हुआ था, यह राशि 300 कुछ करोड़ की थी। उसका समायोजन होने के बाद आज जो 157 करोड़ बचता है, वह 714 करोड़ रूपये अभी भी बाकी है और हमको जो पुराना न्यूज मिलना था, उसमें भी 134 करोड़ रूपये बाकी है। उसमें भी केन्द्र सरकार ने 134 करोड़ रूपये अभी उपलब्ध नहीं कराया है। तो मैंने यह संक्षिप्त में वैट और जी.एस.टी. के बारे में सदन को जानकारी उपलब्ध कराई। अब इस अवसर पर मैं निजी तौर पर स्वास्थ्य और स्वास्थ्य शिक्षा के संदर्भ में यह कहना चाहूंगा कि मेरा अनुभव स्वास्थ्य विभाग में जिम्मेदारी निभाने का बहुत संतोषजनक और सुखद रहा। यह नहीं कि कमियां नहीं हैं। हम कमियां देखेंगे तो निश्चित रूप से कमियां रहती हैं। लेकिन छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा दिसंबर, 2018 के बाद से जो तुलनात्मक सुधार करने का प्रयास किया गया, उसमें काफी अंतर और सुधार आया है। समय और लगेगा। मुझे जितना समय मिलेगा, मैं इन बातों को रखने का प्रयास करूंगा। मैं यह भी कहूंगा। कई बार यह बात आती है कि कैसा तालमेल था तो काम हुआ या नहीं हुआ और उसमें यह गड़बड़ हो गया है और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कमी आ गई।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- राजा साहब, आप संतोषप्रद काम को बता रहे हैं। इस सदन में स्वास्थ्य विभाग के लिए आपने दो घोषणाएं की। छत्तीसगढ़ में यूनिवर्सल हेल्थ स्कीम प्रारंभ करेंगे। साढ़े चार साल बाद इस स्कीम की क्या स्थिति है? आपने पिछले बजट सत्र में कहा कि हम 1 अप्रैल से कि पूरी सरकारी अस्पताल में कैशलेस का प्रयास करेंगे । उसका क्या हुआ?

श्री टी.एस. सिंहदेव :- मैं दोनों की जानकारी दे दूंगा। हम लोग उसी तरफ आ रहे हैं। एक तो अच्छा है कि आपने गुंजाइश दे दी कि 1 अप्रैल से गुंजाइश करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, आपको समय भी चाहिए और आप डिस्टर्ब भी कर रहे हैं।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- अध्यक्ष महोदय, हम सबने सुना। माननीय मुख्यमंत्री जी ने उसको अनुपूरक में पढ़ा। मेरे ख्याल में बृहस्पत सिंह जी अपने भाषण में जब बोल रहे थे तो उन्होंने भी इस बात का उल्लेख किया कि स्वास्थ्य क्षेत्र में राजीव गांधी न्याय योजना लागू हो गई है। उसके लिए राशि उपलबध करा दी गई है और हम लोग एक कट ऑफ डेट से चालू कर देंगे। वह हम लोग घोषित कर देंगे कि किस तारीख से चालू हो जायेगा। बजट में आ गया है। केबिनेट की प्रक्रिया अधूरी थी, वह पूरी हो गई है। आपने गुंजाईश दिया, उसके लिए धन्यवाद। यह नहीं था कि 01 अप्रैल आपने गुंजाईश मुझे दे दी तो लागू हो जायेगा, उसमें अब कोई अड़चन नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय :- ये सब लोग आपसे संतुष्ट हैं । आपको डिस्टर्ब नहीं करेंगे। आप भाषण जल्दी समाप्त कर सकते हैं । (हंसी)

श्री टी.एस. सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह इतना लंबा है । मैं क्या-क्या बोलूं ?

अध्यक्ष महोदय :- हां, मैंने इसीलिये कहा कि वह आपकी लंबाई के हिसाब से लंबा है । ये माननीय बोल रहे थे कि पिछली बार माननीय बाबा साहब ने 2 घंटे तक भाषण दिया था । (हंसी)

श्री टी.एस. सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब की दो घंटे नहीं होंगे । मैं जल्दी-जल्दी समाप्त कर देता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- हां, जल्दी करिये । रिकॉर्ड को कम करना है न । कम से कम समय में करिये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वैसे भी राजा साहब, जो बात आप बजट में बोल चुके हैं उसको बोलने की जरूरत नहीं है कोई नयी बात हो तो बता दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय :- उसको मत बोलिये इसीलिये तो मैंने कहा कि ये सब आपसे संतुष्ट हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप लोगों ने 5 साल बोला, उसी बात को तो आज वे बोल रहे थे ।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह भी तो आरोप है कि कुछ नहीं हुआ । आरोप जो है वह यह है कि कुछ नहीं हुआ । अलग-अलग बिंदुओं के अलग-अलग आरोप हैं । मैंने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

इसीलिये उनका क्रमांक पढ़ दिया तो मैं अपनी ओर से व्यक्तिगत केवल थोड़ी सी बातें रख दे रहा हूं । चूंकि यह आखिरी सत्र है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप व्यक्तिगत रूप से रख दीजिये ।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अपने संतोष के साथ मैं समस्त उन अधिकारियों को जिन्होंने साथ में काम किया । ए.सी.एस. रहे, प्रिंसिपल सेक्रेटरी रहे, सेक्रेटरी रहे, स्पेशल सेक्रेटरी रहे, डी.एम.ई. रहे, ज्वाईन डॉयरेक्टर्स रहे, डॉयरेक्टर्स रहे, सी.एम.एच.ओ. रहे, सिविल सर्जन रहे, बी.एम.ओ. रहे । हमारे सब हेल्थ सेंटर के साथी रहे, मितानिन रहे । मैं सबका आभार व्यक्त करता हूं और धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने भी यह नहीं कि हमारे जनप्रतिनिधियों की ही केवल जिम्मेदारी थी । अधिकारी और कर्मचारी के रूप में उन्होंने जो सहयोग दिया वह मेरे लिये अप्रत्याशित था, मैं नहीं सोचता था कि इतना सहयोग मिल सकेगा लेकिन मिला और उसके आधार पर कई काम छत्तीसगढ़ में हो पाये । अब लंबे समय वाली पारी है, कोशिश रहेगी कि मैं कम से कम में अपनी बात को रखूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके समक्ष मानव संसाधन की उपलब्धता के संदर्भ में जानकारी रख रहा हूं तो इस दरमियान यह जो बात आती है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्या हुआ, क्या नहीं हुआ और कैसे होगा । यह मानव संसाधन के आधार पर ही हो सकता है तो जहां अभी भी कमियां हैं, वहां इस दरमियान जहां पहले 132 विशेषज्ञ छत्तीसगढ़ में थे । दिनांक 17 दिसम्बर को शपथ हुई, मुझे उस समय के जो आंकड़े उपलब्ध कराये गये । चूंकि 132 विशेषज्ञ थे, आज 883 हैं । छत्तीसगढ़ में विशेषज्ञों की संख्या आज 883 है तो यह कहना कि छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य विभाग में कुछ भी काम नहीं हुआ यह असत्य भी है और भ्रामक भी है और इस कारण से बहुत सारे लोग हो सकता है कि जो सरकारी अस्पताल में न पहुंचें वे प्राईवेट अस्पताल की तरफ रूख करके हजारों रूपये गंवा दें ऐसी बात हमको नहीं कहनी चाहिए । जिसका ठोस आधार न हो । चिकित्सा अधिकारी जहां 1180 थे, आज 2329 हैं । डबल से ज्यादा तो ये वही बात है कि यह कहना कि यह सरकार पिछले समय कुछ नहीं कर रही थी या किसी कारण से स्वास्थ्य विभाग पिछड़ रहा है। यह आंकड़े इस बात को झूठलायेंगे कि ऐसी थोड़ी भी स्थिति नहीं है । मैं और आंकड़े बोलूंगा तो समय लगेगा । मैं उसको इतने पर ही रोककर एक संकेत के रूप में डी.एच.एस. के बारे में आंकड़ों के माध्यम से बता दे रहा हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर आयुष में भी इसी तरह से देखेंगे तो वर्ष 2018 में मुझे जो आंकड़े दिये गये हैं वह निरंक बता रहे हैं । प्रथम श्रेणी निरंक, द्वितीय श्रेणी निरंक, तृतीय श्रेणी निरंक, चतुर्थ श्रेणी निरंक । आज हमारे पास 224 लोग यहां पर काम कर रहे हैं । राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के माध्यम से जो अतिरिक्त हमको वर्ष 2018 से लेकर के 30 जून के बीच में बल मिला है, हमको एच.आर. मिला है । 76 विशेषज्ञ, 234 चिकित्सा अधिकारी, 3319 सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी, सी.एम.ओ. के रूप में जो सबहेल्थ सेंटर्स में तैनात होते हैं । 3000 शायद पहले एक भी न रहे हों । मुझे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चेक करना पड़ेगा तो स्टॉफ नर्स 1732, ए.एन.एम. 712, लैब टेक्निशियन 77, अन्य पद से 1506 तो 7782 यह स्वास्थ्य विभाग के जो 10,000 लोग जुडे हैं इसके अतिरिक्त 7786 लोग इस दरमियान जुड़े हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- राजा साहब, यह सब तो हम लोगों ने पढ़ लिया, सुन लिया । किन परिस्थितियों में आप उपमुख्यमंत्री बने ? मुख्यमंत्री की दौड़ से कैसे पीछे हट गये ? आप यह बताईये न ।

अध्यक्ष महोदय :- यह उचित नहीं है।

श्री ताम्रध्वज साहू :- वो आपके अविश्वास प्रस्ताव के बिंदु में है क्या? (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- सरकार के बीच अंत:कलह हमारे बिंदु में है और वहा अंत:कलह में आता है।

श्री धर्मजीत सिंह :- मान लीजिए, बिंदु न भी हो तो आखिर हुआ क्या, यह जानने की उत्सुकता है न। बतायेंगे तो राजा साहब। मुख्यमंत्री जी तो बतायेंगे नहीं।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- अभी भी कुछ चीजें कुछ समय तक बंद कमरे में है। आखिर में वहां तक भी आउंगा।

श्री धर्मजीत सिंहदेव :- क्या हुआ? कैसे हुआ? कब हुआ? ये सब आप बता दीजिए।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- आप लोगों ने जिज्ञासा जाहिर की है। मेरे ख्याल से अजय जी ने या किसी ने कहा था, उसके बारे में उल्लेख किया। मैं उसके बारे में भी जरूर बोलूंगा।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय, बंद कमरे में हैं न?

श्री टी.एस. सिंहदेव :- एक दरवाजा था, उसके अंदर ही है। दरवाजा भी बंद था। कमरा भी था।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आप अंदर थे या बाहर थे?

श्री टी.एस. सिंहदेव :- डी.एम.ई. में जो हमारे मेडिकल कॉलेजेस हैं, उनका उल्लेख अगर आप करेंगे तो इस दरमियान 1 जनवरी, 2019 से जून, 2023 तक 742 लोगों की तैनाती हुई है। अब हमारे 10 मेडिकल कॉलेज हो गये हैं। 3 निर्माणाधीन हैं। 4 और उसके अतिरिक्त बजट में आ गये हैं। इनके लिए भी जो एच.आर. हमें मिला है, उसका उल्लेख मैंने किया और इनके अतिरिक्त अन्य 432 अन्य पद हैं। तो स्वास्थ्य विभाग में ध्यान नहीं दिया जा रहा है या कहीं लापरवाही हो रही है, ये बात तथ्य और सत्य से परे है। अब थोड़ा समय लगने वाली बात कुछ जानकारियां जो पता नहीं मालूम होंगी या नहीं मालूम होंगी तो चिकित्सा विशेषज्ञों की शत-प्रतिशत पदोन्नति पहले 50 प्रतिशत होती था, इसे चेंज करके 50-50 करके हम लोगों ने भर्ती की और हमें इसमें सुविधा मिली। चिकित्सा विशेषज्ञों की पदोन्नति रास्ता साफ करने के लिए 5 साल से 2 साल की गई है। राज्य गठन के पश्चात् विशेषज्ञों की नियुक्ति का आंकड़ा मैंने बता दिया। प्रथम श्रेणी का मैंने बता दिया है। चिकित्सा अधिकारियों के संदर्भ

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में बता दिया है। राज्य में दिसंबर, 2018 से अब तक लगभग 1743 संविदा एम.बी.बी.एस. डॉक्टर्स का मैंने बता दिया है। दिसंबर, 2019 में मुख्यमंत्री हाट बाजार योजना, एक बहुत ही सफल योजना, जिसके लिए 300 डॉक्टर्स हमने मांगे थे संविदा में, 300 डॉक्टरों के पद मिले और आज 1814 या 1817 हाट बाजारों में ये टीम प्रतिदिन जाती हैं और प्रति बाजार के दिन जाती हैं और वहां 1 करोड़ से ज्यादा वह आंकड़ा आयेगा। मैं फिर पढ़ दूंगा। लोगों को सुविधा उपलब्ध करा चुकी है। स्टाफ नर्सों की बात है। शिक्षण की बात है। इसमें 2100 पदों की भर्ती की प्रक्रिया की अनुमति मिली है और 3948 पदों की अनुमति, ये सारी अनुमतियां स्वास्थ्य विभाग को शासन की ओर से मिली हैं, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं को और सुदृढ़ बना सकते हैं। चिकित्सा शिक्षा विभाग के संदर्भ में मैंने कुछ जानकारियां पहले ही उपलब्ध करायी हैं। बलिराम कश्यप जी के नाम पर जो मेडिकल कॉलेज, जगदलपुर में खुला है, इसमें 2 विषयों में 5 पी.जी. की सीटें हासिल हुई हैं। 3 मेडिकल कॉलेजेस कांकेर में ये खोले गये हैं। अभी बात आ गयी बलिराम कश्यप जगदलपुर कम्यूनिटी मेडिसीन के पी.जी. के कोर्स खुले हैं। नर्सिंग विद्यालय, राजनांदगांव में 17 सीटें मिली हैं। नर्सिंग महाविद्यालय, दुर्ग में 15, कवर्धा में 5, अंबिकापुर में 25, कांकेर में एन.एम.सी. के एम.बी.बी.एस. की 100 सीटें, कांकेर के उसके अतिरिक्त। वर्ष 2022 में चिकित्सा मान्यता प्राप्त कोरबा में एन.एम.सी. से 100 बिस्तरों का, महासमुंद में 100 बिस्तरों का, अंबिकापुर में 46 सीटें पी.जी. की उपलब्ध हुईं। नांदगांव में 14 सीटें, रायपुर में 145 सीटें, बिलासपुर में 39 सीटें, यह सेवा हम देंगे कहां से जब तक मानव संसाधन की उपलब्धि सुनिश्चित करके वहां प्रोफेसर नहीं है तो आपको सीट कहां से मिलेगी? आपको अगर एन.एम.सी. सीट दे रही है तो आपके पास पढ़ाने का आदमी है तब तो वह सीट दे रही है। इतनी-इतनी सीटें आपको मिल रही हैं अर्थात् वहां पर आपका मानव संसाधन उपलब्ध है, तब ये सीटें आपको मिल रही हैं और वर्ष 2030 में रायगढ़ और रायपुर में 50-50 सीटों की वृद्धि हुई हैं। 50 से 100 और 150 से 200, अन्य कॉलेजों में भी इस प्रकार से वृद्धि मिली है। वर्ष 2019 में ये कुछ राशियां हैं, ऐसे बोलना पता नहीं मायने कितना रखेगा, लेकिन कहीं 19 करोड़, कहीं 13 करोड, कहीं 39 करोड़, कहीं 12 करोड़, कहीं 5 करोड़, कहीं 69 करोड़, कहीं 41 करोड़, कहीं 32 करोड़, कहीं 4 करोड़, कहीं 34 करोड़ ये अलग-अलग मेडिकल कॉलेजेस में उपकरण इत्यादि खरीदी के लिए लगातार शासन से बजट के माध्यम से राशियां उपलब्ध होती रही हैं । 2020 में कांकेर, कोरबा और महासमुंद में प्रत्येक महाविद्यालय में 616 पदों की स्वीकृति हुई है । उसके अतिरिक्त कांकेर, कोरबा और महासमुंद के लिए 280 पद सृजित किए गए हैं । राज्य में कैंसर संस्थान की स्थापना बिलासपुर में हुई जिसके लिए 14 पदों की स्वीकृति हुई है । अन्य महाविद्यालय संबद्ध चिकित्सालय रायपुर में 36 पद, चंदूलाल चंद्राकर में 616 पद, समस्त चिकित्सा महाविद्यालयों में माइक्रोबायोलाजी लैब के लिए 135 पद, चंदूलाल चंद्राकर के लिए 425 पद, सुपर स्पेशियालिटी अस्पताल बिलासपुर में 277 पद, वर्ष 2022 ए.सी.आई. में कॉर्डियोवैस्कुलर 137 पद, 2021-23 के बीच में मैंने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पहले भी बताया कि 827 विशेषज्ञों के पदों की भर्ती इस दरमियान की गई है जो डी.एच.एस. में हुआ वह अलग और ये डी.एम.ई. के थोड़े से आंकड़े थे ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- राजा साहब, कोरोना में लगभग 16 हजार लोग मरे हैं, आपने ही इसका जवाब दिया था । उनको 50 हजार रूपए देने का था, कितने लोगों को दे पाए हैं, मैंने प्रश्न किया था उसके बारे में भी जवाब दे दीजिए ?

श्री टी.एस.सिंहदेव :- ये प्रश्न तो इसमें नहीं था । आपने केवल आरोप ही लगाया है । आपने कहीं और प्रश्न किया होगा ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- कोराना वैक्सीन आरोप पत्र के अंतर्गत है ।

श्री टी.एस.सिंहदेव :- मैं आपको बता दूंगा । 16 हजार नहीं है । 14190 की मृत्यु कोरोना से छत्तीसगढ़ में आज तक रिकॉर्डेड है । ये पूरे देश का करीब-करीब 1.19 प्रतिशत आता है । छत्तीसगढ़ का शायद न कम हो, न ज्यादा हो । दूसरे राज्यों का कम-ज्यादा हो सकता है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- मेरा यह कहना है कि जिनकी मृत्यु हुई थी, राज्य सरकार की ओर से उनको राशि दी जानी थी तो कितनी संख्या में लोगों को पैसा दिया गया ?

श्री शैलेश पाण्डे :- 20 लाख करोड़ का क्या हुआ, पहले बताइए ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- पहले इसको बता लो ।

श्री शैलेश पाण्डे :- जो पांच, छः दिन तक 20 लाख करोड़ का धारावाहिक चलाए थे उसका क्या हुआ ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए बांधी जी, आप बोल चुके हैं ।

श्री टी.एस.सिंहदेव :- मैं आपकी सारी जिज्ञासाओं का, सारे प्रश्नों का उत्तर दूंगा । मेरे पास उत्तर अभी नहीं होगा तो मैं समय मांगकर आपको उत्तर उपलब्ध करवा दूंगा । केन्द्र सरकार, सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद जो राशि उपलब्ध कराई है, हमारी जानकारी के अनुसार सबको मिली है । अगर कोई बचा है तो आप बता देंगे, हम लोग जांच करके करा देंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- ये अविश्वास प्रस्ताव के बिंदुओं को ही आप छुइए, बाकी को छोड़िए । क्योंकि ये लोग तो भटकाते ही रहेंगे, कहीं का कहीं ।

श्री टी.एस.सिंहदेव :- जी, स्वास्थ्य विभाग में क्योंकि लम्बा जाएगा इसलिए मैं केवल शीर्षक पढ़ दे रहा हूं, ।

अध्यक्ष महोदय :- स्वास्थ्य विभाग में इन्होंने दिया है क्या ?

श्री टी.एस.सिंहदेव :- जी, स्वास्थ्य विभाग के ऊपर भी अविश्वास है क्यों कुछ काम ही नहीं किया स्वास्थ्य विभाग ने ।

अध्यक्ष महोदय :- जी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री टी.एस.सिंहदेव :- infant mortality की बात आई थी । इसमें कल या परसों साथी सदस्य बोल रहे थे । कल तो मैं नहीं था, परसों ही बोला होगा कि यह बढ़ गया है । अगर जानकारी नहीं है तो हमको ऐसा सदन में नहीं कहना चाहिए । अगर जानकारी है तो गलत नहीं कहना चाहिए । 2016 में आई.एम.आर 39 था, अभी 38 है । अच्छा नहीं है, लेकिन सुधार है, खराब नहीं हुआ । एन.एम.आर. छत्तीसगढ़ में 26 था और 26 ही है, यह 2018 में बढ़कर 29 हो गया था अभी कम हुआ है और अंडर पाईव डैथ का अंतर 49 था, अभी 41 है । एस.एन.यू. बने हैं, एम.एन.सी.यू. बने हैं इत्यादि जानकारी अगर चाहिए तो दूंगा, यहां बहुत लम्बा हो जाएगा । शिशु स्वास्थ्य पोषण कार्यक्रम चला । चिरायु का कार्यक्रम है, जिला शीघ्र हस्तक्षेप सेंटर्स की स्थापना है । राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाया, टीकाकरण का है, परिवार कल्याण का है, राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन का है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- मुख्यमंत्री सुपोषण योजना के अंतर्गत 4 हजार करोड़ मिला और उसके बावजूद भी 4 हजार करोड़ का उपयोग छत्तीसगढ़ के लिए किया ..।

अध्यक्ष महोदय :- ये आपके अविश्वास प्रस्ताव में नहीं है । आपको अनुमति नहीं है, इनका जवाब देने की जरूरत नहीं है । डॉ. बांधी प्लीज ।

श्री बृहस्पत सिंह :- यह प्रश्नोत्तरी का समय नहीं कि आप एक-एक प्रश्न पूछते रहे और जवाब देते रहें ।

अध्यक्ष महोदय :- आप भी बैठिये यार ।

श्री टी.एस सिंहदेव :- सेंट्रल टी.बी. डिवीजन की स्थापना है, सी.बी. नाईट मशीनों की तैनाती है, True night machine की तैनाती है, निक्षय पोषण योजना प्रारंभ है। प्रधानमंत्री टी.बी. मुक्त भारत अभियान के तहत हम लोग सक्रियता से काम कर रहे हैं और सराहना भी मिली है। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर पर दूसरे नंबर पर इम्प्रूवमेंट में छत्तीसगढ़ को माना गया है। मैं उतना सब नहीं बता रहा हूं लेकिन यह सब भी बातें हैं। हमें अपने छत्तीसगढ़ के लिए पक्ष विपक्ष को छोड़कर यह सब कहना चाहिए। आप कमी बताईए लेकिन जहां उपलब्धि है, उसको भी स्वीकार करिए। 28 दिसंबर, 2022 के इंडियन कार्पोरेशन राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग में यह बात आई कि यह बढ़ गया, परसों साथी कह रहे थे कि यह बढ़ गया, यह एक जानकारी बतौर बता देता हूं, प्रथम चरण में जब मलेरिया का उपचार चालू हुआ था, घनात्मक दर 4.6 था, अभी वह घटकर 0.22 हो गया है। अगर छत्तीसगढ़ की सरकार और स्वास्थ्य विभाग स्वास्थ्य के क्षेत्र में कुछ नहीं कर रहा होता या वेक्टर डिसीस कंट्रोल के क्षेत्र में तो यह संभव नहीं होता और इसके परिणाम स्वरूप राज्य में जो वार्षिक परजीवी सूचकांक हैं, जो प्रति हजार जनसंख्या के हिसाब से माना जाता है, वह 2.63 से घटकर 0.94 पर आया है। छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम चल रहा है। इसमें स्थापना के समय 8.2 प्रति 10 हजार था, वर्तमान में 2.19 है। यह आंकड़े हैं जो बताते हैं कि छत्तीसगढ़ सरकार से जुड़े हुए स्वास्थ्य विभाग के अमले के माध्यम

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

से जो प्रयास हो रहा है, वह सकारात्मक दिशा में जा रहा है और सुधार की गुंजाईश है, मैं इसको कभी इंकार नहीं करता। अभियान चल रहा है, डी.पी.एम.आर का है, पोस्ट एक्सपोजर प्रोफाईल एक्स का है, वह अलग चल रहा है, स्पर्श कुष्ट की जागरूकता है, इसमें जो छुआछूत की बात है, उसमें पहल चल रही है। उपचार मुक्त, वर्ष 2018-19 में कुल 8,993 एवं वर्ष 2022-23 में कुल 6152 रोगियों का पूर्ण उपचार किया जा चुका है। यहां राज्य नोडल एजेंसी काम कर रही है। अध्यक्ष महोदय, डिटेल में बताऊंगा तो समय लगेगा। ब्लड सेल इत्यादि है। इसमें पहल हो रही है, 139 प्रतिशत रक्त संग्रहण का टारगेट है, टारगेट से ज्यादा अचिव किया गया, स्वैच्छिक रक्तदान लोगों ने कम दिया है, आप सबसे अनुरोध है कि सहयोग करिए, लोगों को जुटाईए। इसमें 83 प्रतिशत अचिवमेंट हुआ है। स्वैच्छिक रक्तदान 112 प्रतिशत हुआ है। छत्तीसगढ़ राज्य में एड्स नियंत्रण समिति बनी है वह काम कर रही है, एड्स निर्माण समिति बनी है, वह काम कर रही है। मानव संसाधन के डिटेल्स हैं। मैं पढ़ नहीं रहा हूं, चाहेंगे तो उपलब्ध कराया जा सकता है। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम छत्तीसगढ़ के विगत् तीन वर्षों की उपलब्धियों में सराहना मिली है। NCD (non-communicable diseases) के बारे में है। यह कार्यक्रम चल रहा है। गर्भाशय ग्रीवा, कैंसर स्क्रीनिंग में काम चल रहा है। अस्पताल प्रशासन क्वालिटी एश्योरेंस कार्यक्रम में 100 से ज्यादा शासकीय अस्पतालों को एन.क्यू.एस में मान्यता मिल गयी है, मैं मानता हूं कि यह बड़ी उपलब्धि है। मुस्कान कार्यक्रम के अंतर्गत 4 अस्पताल काम कर रहे हैं। कायाकल्प योजना के तहत् अनेकों अस्पतालों में काम हुआ है। 9 जिला अस्पतालों में सी.टी.स्कैन लगी हुई है। वरिष्ठ सदस्य चले गये हैं, शेष 5 अस्पतालों में प्रक्रियाधीन है। सभी जिला अस्पतालों में यह प्रयास है, मुंगेली के विधायक जी को मेरा कमिटमेंट है, उन्होंने बार-बार निवेदन किया है, इस चुनाव के पहले मुंगेली में सी.टी. स्कैन की मशीन सेंक्शन हो जाएगी। सभी जिला अस्पतालों में लगना है लेकिन अगर वह सेंक्शन नहीं है तो सेंक्शन करने की बात यहां पर रख दे रहा हूं। एक जानकारी है कि इस वर्ष केन्द्र सरकार के माध्यम से जैसे ही स्वीकृति मिल जाएगी तो प्रदेश में समस्त सब हेल्थ सेंटर यह पांच हजार से ज्यादा हैं, यह नये भवन से युक्त हो जाएंगे। कोई अपवाद के रूप में छूटा होगा तो मैं उसके लिए नहीं कहूंगा। अन्यथा प्रदेश के समस्त सब हेल्थ सेंटर में नया भवन उपलब्ध हो जाएगा। पी.एस.ई., सी.एच.सी. सब उसी श्रेणी में आते हैं। अन्य काम हो रहे हैं। राष्ट्रीय दृष्टिहीनता के माध्यम से यह काम हो रहा है, यह छत्तीसगढ़ में था ही नहीं। माना में 100 बिस्तर का नेत्र अस्पताल स्थापित है। वहां अच्छा काम हो रहा है। उससे 15 हजार 925 मरीज लाभान्वित हो चुके हैं। बाल नेत्र सुरक्षा सप्ताह लगता है। राष्ट्रीय राजमार्ग के वाहन चालकों के नेत्र की जांच होती है। कैटेरेक, ब्लाइंडनेस पर काम चल रहा है। वर्ष 2018-2019 में 1 लाख, 18 हजार, 605 मोतियाबिंद ऑपरेशन हुए थे। इस वर्ष 1 लाख, 35 हजार, 113 मोतियाबिंद के ऑपरेशन किये गये हैं। हमारा प्रयास यह है कि कम से कम एक आंख से दृष्टि बाधिता खत्म हो जाए। हम लोग यह लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। 7 जिलों ने इस लक्ष्य को हासिल भी कर लिया है। यदि किसी की दोनों

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आंखों में मोतियाबिंद है तो कम से कम एक आंख से अच्छे से दिखे, समस्त जिलों में इस पहल को लेकर छत्तीसगढ़ सरकार का स्वास्थ्य विभाग चल रहा है। मैंने मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लिनीक योजना के बारे में जानकारी दे दी है। इसमें 1,814 हाट बाजारों में 450 डेडिकेटेड वाहनों के माध्यम से सेवा उपलब्ध कराई जा रही है। योजना के प्रारंभ से अब तक 1 करोड़ 23 लाख, 96 हजार से अधिक फूटफॉल हो चुके हैं और लोगों का उपचार हुआ है। वहीं इस वर्ष में अप्रैल, 2023 से अभी तक 23 लाख, 71 हजार लोगों का यहां उपचार हुआ है। हमर लैब की स्थापना हुई है। जहां-जहां हमर लैब बने हैं, मैं आपको इसकी जानकारी दूंगा तो यह काफी लंबा है और इसमें कई जिला अस्पतालों के नाम हैं। हम इसको सी.एच.सी. में भी स्थापित कर रहे हैं। आपको ब्लड टेस्ट की व्यवस्था सब हेल्थ सेंटर में मिलेगी, पी.एच.सी. में मिलेगी, सी.एच.सी. में मिलेगी और जिला अस्पताल में भी मिलेगी। हब एण्ड स्पोक मॉडल है। आपको किसी भी प्रकार के खून की जांच करानी हो, जो शासन उपलब्ध कराती है तो आपको सब हेल्थ सेंटर में केवल सैम्पल देना है, आने की जरूरत नहीं है। आपका टेस्ट सैम्पल बड़े लैब में आ जाएगा और जांच होने के बाद आपको उसकी ऑनलाइन रिपोर्ट उपलब्ध हो जाएगी और हार्ड कॉपी में भी उपलब्ध हो जाएगी। जिला अस्पतालों में 120 प्रकार के टेस्ट और सी.एच.सी. में 50 प्रकार के टेस्ट होते हैं, हालांकि कहीं-कहीं उससे ज्यादा भी उपलब्ध हैं। हमर लैब स्थापित होने के बाद सी.एच.सी. और हमर लैब के माध्यम से 62 लाख, 87 हजार, 643 लोगों की जांच हुई।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राजा जी, यह बजट भाषण हो रहा है।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- आपने कहा कि यह सरकार कुछ नहीं कर रही है तो मैं आपको जानकारी दे रहा हूं। (व्यवधान) 67 हजार, 144।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- राजा साहब, मेरा एक प्रश्न है कि केन्द्र सरकार से 3 मेडिकल कॉलेजों के लिए 270 करोड़ रूपये की स्वीकृति हुई थी। जब आप विस्तार से जानकारी दे रहे हैं तो उसकी प्रगति की भी जानकारी दे दीजिए।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- आप मुझे थोड़ा सा मौका दे दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी जी मेरी अनुमति के बगैर बोल रहे हैं इसलिए आप उनकी बातों को मत सुनिये और आप जल्दी समाप्त कीजिए। समय नहीं है। यह आखिरी सत्र है, इसलिए मैं सबको 10-10 मिनट समय देना चाहता हूं।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- जी, मैं वहां आ रहा हूं। वह मुझे उस विषय में आने नहीं दे रहे हैं। थोड़ी देर हो गई है। (व्यवधान) उक्त कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ अच्छे से काम कर रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शायद मंत्रिगण ने यह समझ लिया है कि यह बजट भाषण है तो उनका भाषण, बजट भाषण जैसे हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- यह बजट भाषण नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमितेश शुक्ल :- बृजमोहन भैय्या, मंत्री जी के पास इतना नॉलेज है।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- आपने जानकारी मांगी कि छत्तीसगढ़ सरकार स्वास्थ्य के क्षेत्र में कुछ नहीं कर रही है। मैं आपका विश्वास हासिल करने के लिए कह रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- उसको छोड़िये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में हमने जो आरोप लगाये है, मंत्री जी उन आरोपों के जवाब दे दें। मंत्री जी बजट भाषण जैसे भाषण दे रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, यह आरोप का जवाब मांग रहे हैं, इसलिए आरोप का जवाब दीजिए। आपको बाकी कुछ कहने की जरूरत नहीं है।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- मैं आपका विश्वास हासिल करने के लिए बोल रहा हूं कि आप विश्वास रखिये कि किस तरह से छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य विभाग काम करने की कोशिश कर रहा है और इस विभाग को ये उपलब्धियां हासिल हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राजा साहब, हमने आपके ऊपर कोई आरोप नहीं लगाया है। हमने तो आपके विभाग पर आरोप लगाया है। हमने कहा है कि वह जो 1 नंबर वाले हैं, वह 2 नंबर वाले को काम करने नहीं दे रहे हैं और वह पैसे नहीं दे रहे हैं।

श्री अमितेश शुक्ल :- बृजमोहन भैय्या, आपकी जय और वीरू की जोड़ी बन गई। (व्यवधान)

श्री टी.एस. सिंहदेव :- मैं आखिरी में उसी पर बोलना चाह रहा था।

श्री नारायण चंदेल :- राजा साहब, 1 नंबर वाले 2 नंबर में लगे हुए हैं।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इतनी सारी जानकारी दे रहा हूं। इतने सारे पदों के सृजन की बात कर रहा हूं। इतने सारे फंण्स की उपलब्धता की बात कर रहा हूं। इतने सारे मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की बात कर रहा हूं। इस बजट में 4 नये मेडिकल कॉलेजों के लिए 50-50 करोड़ रूपये पारित हुए हैं। यदि वन एण्ड टू की ऐसी कोई बात होती तो फिर यह कैसे होता?

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, ये सब आपसे संतुष्ट हैं। आपके ऊपर कोई आरोप नहीं है, कोई बिंदु नहीं है।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- जी। छत्तीसगढ़ में सोटू की भी स्थापना हो गई है। (व्यवधान) राष्ट्रीय संकीर्ण उत्कल्प, प्रधानमंत्री डायलिसिस।

श्री शिवरतन शर्मा :- राजा जी से मुख्यमंत्री जी संतुष्ट हैं।

अध्यक्ष महोदय :- हां। मंत्री जी, आपसे सब संतुष्ट हैं। आप इनको धन्यवाद दीजिए।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- जी। डायलिसि मिशन का कार्यक्रम चल रहा है। 93 हजार, 345 लोगों का सफलतापूर्वक डायलिसिस किया गया। काम नहीं हो रहा है, उसका थोड़ा विस्तारित जवाब है। यदि मैं अन्य विभागों की बात करूंगा तो फिर भाषण लंबा होगा। आप भी कह रहे हैं और मस्तूरी के मेरे साथी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कह रहे थे तो मेडिकल कॉलेजेस के लिए टेण्डर लग गया है और उसके लिए जो राशि आप कह रहे हैं, उससे ज्यादा राशि लगेगी, जो राज्य सरकार देगी । उसकी चिन्ता अब नहीं करनी है । टेण्डर की प्रक्रिया में विलंब हुआ, पर अब एजेंसी तय हो गई है, एजेंसी टेण्डर कर देगी और मुझे लगता है कि अगस्त माह के अंदर टेण्डर की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी और "टर्न की" बेसिस पर यह काम दिया जा रहा है । दो साल के अंदर ये तीनों नये मेडिकल कॉलेज खड़े हो जाएंगे । आप सबको धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- आपको बहुत-बहुत धन्यवाद । माननीय शिवरतन शर्मा जी ने प्रतिपक्ष के लोगों के लिए 10-10 मिनट तय किया है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर आप कहेंगे तो मैं बिना बोले बैठ जाता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- आपने तय किया है, यह मैं बता देता हूं, जो आपके लिए और नेता जी के लिए बाध्य नहीं है । आप बोलिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, हम लोगों ने तय किया है कि सुबह 4 बजे तक बैठेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- संभव नहीं है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम लोगों ने तय किया है कि अगर अविश्वास प्रस्ताव रात को दो बजे के पहले समाप्त हो जाये तो अविश्वास प्रस्ताव नहीं है इसलिए हम 4 बजे तक बैठने के लिए तैयार हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- कुछ हो भी तो । आपने कुछ दिया है, उसमें कुछ है ? आपके अविश्वास प्रस्ताव को आपने खुद पढ़ा है, उसमें कुछ है क्या ?

श्री नारायण चंदेल :- हमने सब कुछ पढ़ा है । आपके नेतृत्व में हम नया इतिहास बनाना चाहते हैं, सुबह 4 बजे तक बैठेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अविश्वास प्रस्ताव को देखिए तो । आपने कुछ दिया होता तो कुछ बात होती । पता नहीं लोग कैसे बात कर रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अविश्वास प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल, बिन्दुवार बोलिए और जल्दी-जल्दी बोलिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सन् 2018 में माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार बनी और सरकार में बैठे सारे लोगों ने साढ़े चार साल चाहे सदन में हो या सदन के बाहर हो, दो बातें बड़ी प्राथमिकता से कही है कि हमने सभी किसानों का कर्ज माफ कर दिया। हम किसान का धान 25 सौ रूपये क्विंटल में खरीद रहे हैं । मैं इनके कर्ज माफी से ही अपनी बात को शुरू करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- कोई नई बात से अपना भाषण शुरू नहीं कर सकते ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आंकड़ा सहित बोल रहा हूं न ।

श्री रामकुमार यादव :- कर्ज माफ हुआ या नहीं हुआ ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सरकार कर्ज माफी के नाम पर छत्तीसगढ़ के किसानों धोखा देने वाली सरकार है । भारतीय जनता पार्टी के विधायकों का जो कर्ज माफ हुआ, माननीय अकबर साहब उसकी सूची पढ़ रहे थे । जब इन्होंने जन घोषणा-पत्र जारी किया तो उस जन घोषणा-पत्र में किसानों के कर्ज माफी की बात थी । अल्पकालीन, मध्यमकालीन और दीर्घकालीन ऋण के विषय को क्लीयर नहीं किया गया था । अब जब ऋण माफी हुआ तो ऋण माफी में इन्होंने अल्पकालीन कृषकों का ऋण माफ किया । अब ये बोलते हैं कि जितने किसानों ने अल्पकालीन ऋण लिया, हमने उन सारे किसानों का ऋण माफ कर दिया । मैं आपके सामने दो आंकड़ा प्रस्तुत करना चाहता हूं । पहली बात यह है कि ये बोलते हैं कि हमने 11 हजार करोड़ का ऋण माफ कर दिया । यह सरासर असत्य कहते हैं । विधान सभा के प्रश्न के उत्तर में इन्होंने कहा है कि हमने व्यावसायिक बैंक का 2968 करोड़, 85 लाख और सहकारी बैंक का 5261 करोड़, 43 लाख रूपए का ऋण माफ किया है और दोनों को जोड़ने से वह राशि 8230 करोड़, 28 लाख रूपए होती है। आप लोगों को बार-बार गुमराह करते हो कि हमने 11 हजार करोड़ का ऋण माफ कर दिया । आपने जो ऋण माफ किया है और ऋण माफी की राशि बैंक में जमा की है, वह राशि 8230 करोड़, 28 लाख रूपए है । पहली बात यह है कि 3 हजार करोड़ रूपए की गड़बड़ी आप लोग यहीं लोगों को गुमराह करने के लिए बताते हो । दूसरा विषय, ये लोग बार-बार एक बात बोलते हैं कि हमने किसानों का पूरा अल्पकालीन ऋण माफ कर दिया । यह 15 मार्च, 2022 की प्रश्नोत्तरी की कॉपी है । आपने स्वयं अपने उत्तर में स्वीकार किया है कि हम 1,30,152 लघु कृषकों का पूरा ऋण माफ नहीं कर पाये हैं । सीमांत कृषकों का 1,74,936 किसान का हम पूरा ऋण माफ नहीं कर पाये हैं और 5 एकड़ से जो बड़े किसान हैं, ऐसे 87,198 किसानों का पूरा ऋण माफ हम नहीं कर पाये हैं । अगर यह पूरी संख्या को जोड़ लें तो इस प्रदेश में लगभग पौने चार किसान ऐसे हैं, जिनका आपने पूरा ऋण माफ नहीं किया है। गंगा जल उठाकर कसम खाये थे कि किसान का पूरा ऋण माफ करेंगे। अब मैं आपको चुनौती देता हूं। यहां कृषि मंत्री जी बैठे हैं, यहां अकबर साहब बैठे हैं, उप मुख्यमंत्री जी बैठे हैं। आज आप गंगा जल उठाकर कह दो कि हमने किसान का पूरा कर्ज माफ कर दिया। अगर आपने घोषणा-पत्र को पूरा किया है तो आप गंगा जल उठाकर बोल दो। मैं आपके लिए और आकड़ें बता रहा हूं। 96 हजार किसान ऐसे हैं, जिनका एक नया पैसा भी ऋण माफ नहीं किया गया है तो ऋण माफी के नाम पर छत्तीसगढ़ के किसानों को धोखा देने वाली सरकार, माननीय भूपेश बघेल की सरकार है। पूरे प्रदेश को गुमराह करने वाली सरकार श्री भूपेश बघेल की सरकार है। पूरे छत्तीसगढ़ में उसका गलत ढंग से यशोगान करने वाले ये सारे मंत्री हैं। ऐसे सरकार को एक पल इस प्रदेश में राज करने का अधिकार नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक दूसरा विषय, ये बार-बार कहते हैं कि हमने किसानों का 2500 रूपये क्विंटल में धान खरीदा है। अजय बाबू, अजय कुमार जी..।

अध्यक्ष महोदय :- आपकी बात को अजय भी नहीं सुन रहे हैं तो आप सोच लीजिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, अब गंगा जल उठाकर कसम खाने की दूसरी घटना बताता हूं। कृषि मंत्री जी, आप मेरी बातों का जवाब दोगे। आप बार-बार बोलते हो कि हम किसानों से 2500 रूपया क्विंटल में धान खरीद रहे हैं।

समय
6.47 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

उपाध्यक्ष महोदय, सन् 2018-19 में चुनाव के समय किसान का धान खरीदा गया उसका 2500 रूपया क्विंटल धान का भुगतान किया है। सन् 2019-20 में जिस किसान ने धान बेचा, आप बोनस की चारों किश्त जोड़कर देख लो, किसान को धान की कीमत 2415 रूपया क्विंटल मिला है, उसमें बीच में 85 रूपये खा गये। आप सिर्फ 85 रूपये नहीं खाये, केन्द्र की सरकार ने जो समर्थन मूल्य बढ़ाया, आपने वह समर्थन मूल्य की राशि भी नहीं दी, अपने खाते में जोड़ ली।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वर्ष 2020-21 में किसान को धान समर्थन मूल्य 2485 रूपया मिला। आप चारों बोनस की राशि जोड़कर देख लो। आपने यहां 15 रूपया कम किया। उसके बाद केन्द्र की सरकार ने दो साल समर्थन मूल्य में वृद्धि की, आप वह पैसा खा गये। वर्ष 2021-22 में धान का समर्थन मूल्य, बोनस का चार किश्त मिलाकर 2500 रूपया दिया। परन्तु उस 4 किश्त में 3 साल जो धान का समर्थन मूल्य बढ़ा, उसको समाहित कर लिया गया। वर्ष 2022-23 में 2640 रूपया देने की घोषणा कर रहे हो। अभी तो आपने 2040 रूपया दिया है। परन्तु यदि आप 600 रूपया 4 किश्तों में दोगे तो 290 रूपया 4 साल में केन्द्र सरकार ने धान के समर्थन मूल्य में वृद्धि की है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे जल्दी बैठा दिया। मैं इसमें एक बात बोल रहा हूं। जो आप आदान राशि देते हैं..।

श्री कवासी लखमा :- आप और बोलोगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप तो वहां जाकर जुआ खिलाओ। तशमा में जुआ खिलाओ, जाकर जुआ खिलाओ और नक्सलियों को मिलो, नक्सलियों से बात करो। यहां मत बात करो।

श्री कवासी लखमा :- क्या बात कर रहे हो ?

श्री अजय चन्द्राकर :- नक्सलियों से बात करो। मेरा आरोप है, आप नक्सिलयों से मिले हुए हो।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, मंत्री जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आदान राशि में कहीं उल्लेख नहीं है कि ये अन्तर की राशि दे रहे हैं। यदि यह सरकार 2800 रूपया देगी तो आदान राशि की वृद्धि के लिए 1 रूपया भी बजट में नहीं है। दूसरी बात, केन्द्र सरकार आने वाले समय में 85 लाख टन चावल लेगी, आप गुणा-भाग कर लिए, 1 लाख 25 हजार मीट्रिक टन धान खरीदने जा रहे हैं, उसमें 85 लाख टन चावल ही नहीं बनेगा तो राज्य के पी.डी.एस. के लिए चावल कहां से आयेगा ? केन्द्र सरकार की आलोचना करते हैं । इस बात को सहकारिता मंत्री से पूछ लीजिएगा । आप गुणा भाग करके निकाल लीजिएगा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- वर्ष 2021-2022 में इन्होंने 2500 रूपये धान की कीमत दी है । 2500 रूपये धान की कीमत में तीन साल में केन्द्र की सरकार ने समर्थन मूल्य बढ़ाया, उस राशि को जोड़ दें । अब वर्ष 2022-2023 में 2640 रूपया देने वाले हैं, 4 साल में 2790 रूपये की वृद्धि तो केन्द्र की सरकार ने की है तो आपको इस साल 2790 देना चाहिये । यहां पर 150 रूपये की बीच में डंडी मार रहे हो । माननीय मंत्री जी, मैंने धान खरीदी की बात की है । मैं माननीय कृषि मंत्री जी को सदन में चुनौती देता हूँ, जिस बात के लिये बोलते हैं ना, माननीय अकबर साहब की प्रेस कांफ्रेस हुई थी, हमने किसानों की पूरा कर्ज माफी के लिये और किसानों का धान 2500 रूपये क्विंटल में खरीदने के लिये गंगा जल उठाकर शपथ खाई थी...।

श्री मोहम्मद अकबर :- जो गंगा जल हाथ में लेकर कसम खाये थे ना, वह तो तुम्हारी पार्टी में चले गये हैं, हम लोग कहां खा लिये हैं, आर.पी.एन.सिंग थे, उन्हीं से पूछो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अभी एक सप्ताह पहले आपकी ही प्रेस कांफ्रेस पूरे प्रदेश में छपी कि हम गंगा जल उठाकर कसम खाये थे...।

श्री मोहम्मद अकबर :- हम नहीं, फिर गलत मत बोलो । बकायदा उसको कसम खाते हुये स्क्रीन में दिखाया गया, भाजपा के आर.पी.एन.सिंह वह कसम खा रहे थे, मैं नहीं ।

श्री सौरभ सिंह :- बगल में शैलेष नितिन त्रिवेदी भी बैठे थे । विडियो में वह भी दिख रहा है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं क्लियर कर देता हूँ । मेरा इस सदन में एक अशासकीय संकल्प था और मैंने अपने अशासकीय संकल्प जो कि शराबबंदी को लेकर था, उसमें गंगा जल उठाकर कसम खाने की बात की थी, माननीय मुख्यमंत्री जी खड़े हुये थे । माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हम गंगा जल की शपथ शराबबंदी के लिये नहीं किये थे, किसान के कर्जा माफी और किसानों के 2500 रूपये क्विंटल धान खरीदी के के लिये किये थे । कृषि मंत्री जी आप भी थे, अगर मैं गलत बोल रहा हूँ तो ऑन रिकार्ड खंडन कर दीजिए । वह तो ऑन रिकार्ड चीजें हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- बनारस में देश के सम्माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि गंगा मईया ने मुझे बुलाया है, महंगाई कम करूंगा, 2 करोड़ लोगों को रोजगार दूंगा, 15 लाख खाते में जायेगा, कौन बोला ? देश के प्रधानमंत्री ने बोला ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, अभी संसद चल रही है, अभी जो अपने तीन प्योर छत्तीसगढ़िया राज्य सभा में गये हैं ना, उनको यह सारे मुद्दे दे दो, वह भाषण में इन मुद्दों को उठायेंगे । हमारे जो माननीय मिश्री भईया बोल रहे हैं । मिश्री भईया, मैं चुनौती दे रहा हूँ, आप लोग बोलते हो कि हमने गंगा जल उठाकर इस बात के लिये कसम खाई थी, आप गंगा जल उठाकर कह दो कि हमने किसानों का पूरा कर्जा माफ कर दिया और 2500 रूपये हम धान खरीद रहे हैं । अगर हिम्मत है तो उठाकर बोलो ।

श्री धर्मजीत सिंह :- एक सांसद सरदार जी आये थे, यहां फार्म भरने आये थे, मैं बोला ये सर्टिफिकेट लेने नहीं आयेंगे ...। (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, धान खरीदी में धोखा, ऋण माफी में धोखा, अब एक विषय यह आया कि धान खरीदी के लिये केन्द्र पैसा नहीं देगा, चाहे डॉ.रमन सिंह जी की सरकार थी, चाहे भूपेश बघेल जी की सरकार है, यह सरकार धान खरीदने में सफल इसलिये हुई कि केन्द्र की सरकार ने सेंट्रल पुल में चावल लिया । सेंट्रल पुल में जो चावल लेते हैं, जो धान समर्थन मूल्य में खरीदा जाता है, उसका भुगतान तो पूरा करते ही हैं, उस भुगतान को करने के साथ-साथ लगभग 175 रूपये क्विंटल अतिरिक्त भुगतान यह केन्द्र सरकार से लेती है । उपाध्यक्ष महोदय, प्रश्न के उत्तर में इनहोंने जो जवाब दिया है, वही पढ़कर सुना रहा हूँ । राज्य सरकार द्वारा सेंट्रल पुल का चावल उपार्जन करते समय अधिप्राप्ति लागत के अंतर्गत धान के समर्थन मूल्य के साथ मंडी शुल्क, निराश्रित शुल्क, किसान कल्याण शुल्क, इतना ही लगभग 102 रूपया हो जाता है । मंडी लेबर चार्ज, परिवहन व्यय, उसमें धान एवं चावल दोनों का..।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय शर्मा जी, हमने सभी सदस्यों के लिये 10-10 मिनट का समय निर्धारित किया है। 15-16 मिनट हो चुके हैं, आप और कितना समय लेंगे ?

श्री शिवरतन शर्मा :- आप बोलेंगे तो मैं बैठ जाता हूं। माननीय अध्यक्ष जी से बात कर लेंगे। मैं 15 मिनट में पूरा विषय ले लूंगा। जो बातें किसी ने नहीं बोली, मैं उन बातों को बोल रहा हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, बोलिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप थोड़ा पैसेन्जर ट्रेन चलाईये, आप वंदे भारत मत चलाईये। स्पीकर साहब आते हैं तो ठीक रहता है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- स्पीकर साहब ने भी आधे घण्टे का समय दिया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, हम लोग भी वहां बैठ चुके हैं। हम लोगों का भी थोड़ा-सा ख्याल रखिये। आप पहले दिन से इतने अच्छे तरीके से चला रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, आप इतने अच्छे तरीके से सदन चला रहे हैं कि आपने जो परसों व्यवस्था दी थी, उसका पालन नहीं हो रहा है। उसका पालन करवाईये।

उपाध्यक्ष महोदय :- पालन होगा। मैंने अवलोकन के लिये बोला है।

श्री धर्मजीत सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, एक बात और बता देता दूं कि आप इधर ही ज्यादा देखा करो। उधर देखने से फिर वही गड़बड़ होती है।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं इधर ही ज्यादा देखता हूं। मेरा ध्यान इधर ज्यादा रहता है उधर कम रहता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, किसान कल्याण शुल्क, मंडी लेबर चार्ज, दोनों तरफ का धान और चावल देने का परिवहन व्यय, सूखत, समितियों का कमीशन, धान का भण्डारण एवं रख-रखाव व्यय, ब्याज व्यय, मिलिंग चार्ज, प्रशासनिक व्यय, बारदाना लागत, मदों को जोड़ा जाता है और इन सबको जोड़ने के बाद आप सेंट्रल को क्या भाव से चावल दे रहे हैं ? आप वर्ष 2020-21 में 3184.39 रूपये क्विंटल और वर्ष 2022-23 में 3458.89 रूपये क्विंटल की दर से चावल दे रहे हैं। माननीय अकबर साहब, सेंट्रल गर्वन्मेंट चावल का जो भुगतान कर रही है, उस चावल के भुगतान से ही आप धान खरीद पा रहे हैं। यदि सेंट्रल गवर्नमेंट एक साल चावल नहीं खरीदे तो आप धान खरीदने की स्थिति में नहीं रहेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, चावल की बात हो रही है मैं आपके ध्यान में एक बात ला देता हूं। सहकारिता मंत्री जी कहां हैं, वह चले गये क्या ? 28 महीने कोरोना काल था, प्राथमिकता के कार्ड में 5 किलो केंद्र सरकार का, 5 किलो राज्य सरकार का और 5 किलो कोरोना का अलग से था। इन्होंने 28 महीने 10 किलो चावल दिया है। इन्होंने [XX] ? केंद्र का कोटा कम किया, कोरोना का चावल नहीं दिया या राज्य का नहीं दिया ? आप कोरोना के 28 महीने का चेक करवा लीजिये। इस सरकार ने 10 किलो चावल दिया है और कोरोना का 5 किलो चावल खाया है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- भैया, आप गला सुधारो।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसके बाद सेंट्रल पुल से जो चावल छत्तीसगढ़ को आता है, यह उस चावल में दो सौ रूपये और एडिशनल जोड़ लेते हैं।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो झूठ बोलेगा उसके मुंह में घांव हो जायेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जांच करवा लीजियेगा। कोरोना पीरेड के 28 महीने में प्राथमिकता में कितना चावल मिला है। आप जांच की घोषणा कर दें।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री राजमन वेंजाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम लोग 35 किलो चावल फ्री में बांट रहे हैं। हमारी सरकार अन्नदाताओं को फ्री में चावल दे रही है।

श्री अमरजीत भगत :- उपाध्यक्ष महोदय, 28 महीने चावल आया है, 28 टन आया है और उतने का ही वितरण हुआ है, तो गड़बड़ कहां से होगी ? इनके दिमाग में घुस गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं फिर से बोल रहा हूं कि आपने 10 किलो दिया है और 5 किलो खाया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, यह जब सेंट्रल पुल में चावल जमा करते हैं और उसमें जो व्यय लेते हैं, मैंने उसकी जानकारी आपको दी है। अब नागरिक आपूर्ति निगम, जब सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए छत्तीसगढ़ को चावल देता है, तो इस साल सरकार ने 3640 रूपये की कीमत जोड़ी है और उसमें कौन-कौन सा व्यय जोड़ दिया है। राज्य सरकार द्वारा सेंट्रल पुल के चावल वितरण लागत के अंतर्गत उपरोक्त उल्लेखित अधिप्राप्ति लागत के मदों के अतिरिक्त चावल का भण्डारण व्यय, चावल का परिवहन व्यय, चावल का हैण्डलिंग चार्ज, ब्याज व्यय, ट्रांजिट एवं भण्डारण हानि, नागरिक आपूर्ति निगम का प्रशासनिक व्यय, यह व्यय इसके अतिरिक्त जोड़ा जाता है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप बता दीजिये कि अगर सेंट्रल गवर्नमेंट इन चीजों का भुगतान न करें और सेंट्रल पुल में चावल न खरीदे तो क्या छत्तीसगढ़ सरकार समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी कर सकती है ? आप जो भी कर पा रहे हैं, वह सेंट्रल गवर्नमेंट के सहयोग के चलते कर पा रहे हैं और यह सूखे चावल के मुद्दे पर बात करते हैं। उपाध्यक्ष महोदय, यह आपकी व्यवस्था थी कि 600 करोड़ रूपये के चावल की जो गड़बड़ी हुई है, बजट सत्र के आखिरी दिन 24 मार्च को रिपोर्ट प्रस्तुत की जायेगी लेकिन 23 मार्च को सदन समाप्त हो गया। क्या आज भी वह रिपोर्ट आयी ? मैं आपको एक छोटी-सी घटना बता देता हूं। भिलाई में खुर्सीपार की दो दुकानों में से 800 क्विंटल चावल गायब हो गया।

समय
7.00 बजे

राशन के दुकान में सेल्स मेन के ऊपर कार्यवाही करने की बात हो रही है, पर वास्तव में जिनके नाम पर राशन दुकान एलॉट हैं उनके खिलाफ कार्यवाही नहीं हो रही है क्योंकि वह कांग्रेस के कार्यकर्ता, कांग्रेस के नेता हैं । यह जितना चावल चोरी हो रहा है उसमें कहीं न कहीं आपकी पार्टी के लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज मैंने बोला है कि भिलाई की दो दुकानों में 980 क्विंटल शार्टेज है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं सिर्फ किसानों की बात पहले करता हूँ। मैंने तो इस बात का उल्लेख किया। आसंदी की व्यवस्था थी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह मनगढ़त आरोप है। आपके मनगढंत आरोप का किसी पर भी कोई असर नहीं होना है। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ढाई लाख क्विंटल चावल 800 रूपये में उस धान को बेचा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आसंदी ने व्यवस्था दी थी कि 24 तारीख को रिपोर्ट प्रस्तुत की जायेगी। यह आसंदी की व्यवस्था थी।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ई पोर्टल में पूरा रजिस्टर्ड होता है। कोई एक दाना नहीं खा सकता। यह असत्य का पुलिंदा है। यह ठगने का काम है। किसी का कोई एक दाना नहीं खा सकता।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी कहां गये? मिश्री भईया कहां गये?

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी भी कई मिलों का ब्याज नहीं दे पाया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं किसानों की बात करता हूँ। इसी सदन में घोषणा हुई और इन्होंने कहा था कि हम सिंचाई का रकबा दुगुना करेंगे। हम बोधघाट परियोजना को पूरा करेंगे। जब डॉ. रमन सिंह जी ने खड़े होकर कहा कि आप सर्वे भी नहीं कर पाओगे तो एक दूसरे ने चुनौती स्वीकार कर ली। उस बोधघाट परियोजना का क्या हुआ? उसका सर्वे हो गया, वह परियोजना पूरी हो गई? आपने उसके लिए क्या बजट प्रावधान किया? इस सरकार ने केवल लफ्फाजी के सिवाय कुछ नहीं किया और जहां तक रकबा डबल करने की बात है। आप माननीय राज्यपाल महोदय के दो अभिभाषणों की कॉपी उठाकर देख लीजिए। माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में आप वर्ष 2022-23 को उठाकर पढ़ लीजिए। वर्ष 2022 की तुलना में वर्ष 2023 में सिंचाई का रकबा 50 हजार हेक्टेयर कम हुआ है और यह बढ़ाने की बात करते हैं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय शिवरतन जी, हम पूरे हिन्दुस्तान के छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा धान की कीमत देते हैं और आप पूरा हिन्दुस्तान घुमकर आ जाईये।। हम आपको किराया दे देंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसीलिए आपसे सहकारिता विभाग ले लिया गया। सिंचाई में किसान को धोखा हुआ।

श्री उमेश पटेल :- माननीय शिव भईया, क्या है कि अजय चन्द्राकर जी आपको फेल करने के लिए उल्टा-सीधा बोलवा रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 18 तारीख के प्रश्न के उत्तर में माननीय मुख्यमंत्री जी ने स्वीकार किया है कि छत्तीसगढ़ में 55 हजार 357 किसान ऐसे हैं जिनके पम्प कनेक्शनों की औपचारिकता पूरी हो गई है उनने पैसा पटा दिया है, पर उनको पम्प कनेक्शन नहीं दिया

जा पा रहा है। बरसात का समय है अब पम्प कनेक्शन लग भी नहीं सकता। यह किसानों की हितैषी सरकार है। माननीय अकबर साहब भी बैठे हैं और माननीय खाद्य मंत्री भी बैठे हैं। इन्होंने घोषणा की थी कि हर परिवार को एक रूपये किलो में चावल देंगे।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम हर परिवार को 1 रूपये किलो में चावल दे रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कल के प्रश्न के उत्तर में माननीय मंत्री जी ने स्वीकार किया है कि छत्तीसगढ़ में 8 लाख 79 हजार 651 सामान्य श्रेणी के कार्ड हैं और सामान्य श्रेणी के कार्ड को हम 10 रूपये किलो में चावल देते हैं। यह कल के प्रश्न के उत्तर में स्वीकार किया है। और अभी बोल रहे हैं कि सबको दे रहे हैं। आपके जनघोषणा पत्र में था।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम कौन सा गलत कह रहे हैं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बी.पी.एल. और सामान्य श्रेणी के कार्ड में यही अंतर है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसमें सभी को राशन कार्ड देने की बात हुई थी। आप मेरी बात सुनिए। पहले गरीबी रेखा के नीचे जिनका नाम होता था। उनको ही केवल राशन कार्ड दिया जाता था। हम लोगों ने यह कहा था कि हम पूरे राज्य के सभी नागरिकों को राशन कार्ड के दायरे में लाएंगे और सबको राशन कार्ड देंगे। तो हम सबको राशन कार्ड दे रहे हैं।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां तक डॉ. रमन सिंह जी को भी दिया है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, और कोई भी व्यक्ति हो, कोई करोड़पति व्यक्ति आवेदन करेगा तो उसे राशन कार्ड दिया जायेगा, लेकिन गरीबी रेखा के नीचे वाले जितने भी लोग हैं। आप सुन लीजिए उनको 1 रूपये और बाकी 10 रूपये में दिया जायेगा। यह पॉलिसी में है, लेकिन सारे लोगों को राशन कार्ड यह पॉलिसी में है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, यह आपका जन घोषणा पत्र है इसमें लिखा है कि प्रत्येक परिवार को 35 किलो चावल प्रतिमाह 1 रूपये की दर से एवं बी.पी.एल. परिवार को नियंत्रित दर पर तेल, दाल, नमक, चीनी और मिट्टी का तेल प्रदान किया जायेगा। यह आपका घोषणा पत्र है। इसमें कहां लिखा है कि 10 रुपये किलो में चावल देंगे। आपको घोषणा पत्र को भिजवा देता हूं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 8 लाख 89 हजार..।

श्री मोहम्मद अकबर :- आप लोगों का घोषणा पत्र इधर भी है। इसका क्या मतलब है ?

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री मोहन मरकाम) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसीलिए आप लोग 13 सीटों पर सिमट गये। आप लोग अपना घोषणा पत्र भी देखिये।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय समाप्त करिये। आपको बोलते हुए 25 मिनट हो गये हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी तो शुरू किया हूं। 8 लाख 89 हजार 651 किसानों को.. ।

श्री अमरजीत भगत :- शिवरतन शर्मा जी, एक मिनट सुन लें।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, अब ऐसे होगा तो कैसे होगा।

श्री अमरजीत भगत :- एक मिनट सुन लीजिए न। हिन्दुस्तान में किसी के छाती में बाल नहीं है भूपेश बघेल जी को छोड़कर जो इतने समय तक अपने राज्य के नागरिकों को फ्री में चावल खिलायेगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, अब मैं प्रधानमंत्री आवास योजना की बात करता हूं। माननीय पंचायत मंत्री जी का भाषण हुआ कि हम मुख्यमंत्री आवास योजना चलायेंगे। वर्ष 2016 से 2023 तक छत्तीसगढ में 11,76,116 प्रधानमंत्री आवास ग्रामीण क्षेत्र में स्वीकृत हुए हैं। वर्ष 2016 में जो प्रतीक्षा सूची थी वह 18,75,585 की थी। पुरानी सूची के 6,99,469 लोग बाकी हैं जो 2022 तक पूरे होना था। इसमें यह भी नाम है जो आपने अभी 2 लाख का बजट प्रावधान किया है वह भी 11 लाख में स्वीकृत है। आपने एक प्रश्न के उत्तर में स्वीकार किया है आवास प्लस के 8,19,999 मकान और बनने हैं। इस प्रकार छततीसगढ़ में 15,19,468 प्रधानमंत्री आवास ग्रामीण क्षेत्र में बनने हैं। जन घोषणा में है कि सबको दो कमरे का आवास बनाकर देंगे और जो केन्द्र सरकार की योजना थी, खाली छत्तीसगढ़ इससे वंचित क्यों हो गया? क्योंकि आप राज्यांश का 40 प्रतिशत नहीं दे सके। उप मुख्यमंत्री जी चले गये हैं। उप मुख्यमंत्री जी ने जब पंचायत विभाग को छोड़ा तो उन्होंने पत्र में लिखा था कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत प्रदेश के आवासहीन लोगों को आवास बनाकर दिया जाना था जिसके लिए मैंने कई बार आपसे चर्चा कर राशि आवंटन का अनुरोध किया था, किन्तु इस योजना में राशि उपलब्ध नहीं की जा सकी। फलस्वरूप प्रदेश के लगभग 8 लाख लोगों के लिए आवास नहीं बनाये जा सके। यह आरोप मेरा नहीं है। यह आरोप उप मुख्यमंत्री ने इस सरकार पर लगाये हैं। आपकी लापरवाही के चलते छत्तीसगढ़ के 16 लाख परिवार प्रधानमंत्री आवास से वंचित रह गये। एक बात बता देता हूं कि अगर गरीब की हाय लगती है न तो गरीब की हाय से कोई नहीं बचता।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, प्रधानमंत्री आवास गावों में बन रहे हैं। आप हर ग्राम पंचायत में पता कीजिए। हर ग्राम पंचायत में प्रधानमंत्री आवास बन रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- भूपेश बघेल जी की सरकार को छत्तीसगढ़ के गरीबों की हाय लगी है। उनकी हाय से, बददुआ से आपको दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकती। मैं समझता हूं कि छत्तीसगढ़ में देश के इतिहास में पहली घटना घटी। अब तक हमने कर्मचारियों को strike करते सुना था, अधिकारी कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर strike करते थे। देश के इतिहास में पहली बार छत्तीसगढ़ के जनप्रतिनिधि strike में बैठे। सरपंचों ने strike की। strike के पीछे उनकी मांग क्या थी ? उनको काम नहीं मिल रहा है। काम के बदले कमीशन मांगा जा रहा है। सरपंचों को प्रताड़ित किया जा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रहा है। पहली बार लगभग 1 महीना छत्तीसगढ़ के सरपंच हड़ताल करके रहे, पंचायतों में काम रूक गया।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- उसके कारण यह लोग हड़ताल में नहीं थे। उन लोगों का तो भत्ता बढ़ा दिया गया है। पंचायत में इतना काम है कि सरपंच लोग काम नहीं कर पा रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, जन घोषणा पत्र में घोषणा थी कि नक्सल प्रभावित पंचायत को हम 1 करोड रुपये प्रतिवर्ष देंगे, सामान्य पंचायतों को 70 लाख रुपये प्रतिवर्ष देंगे। आप जरा पूछ लो कि किस पंचायत को कितनी राशि मिली ? इनको हडताल करने के लिए मजबूर होना पड़ गया। कुल मिलाकर सरपंचों को परेशान करने वाली सरकार, गांव के विकास को रोकने वाली सरकार श्री भूपेश बघेल की सरकार है।

माननीय उपाध्यक्ष जी, गौठान। आज ही माननीय मंत्री साहू जी उत्तर दे रहे थे कि 10,240 गौठान पूर्ण हो गये। मैंने उसी समय प्रश्न किया था। आपके गौठान बनने से किसानों की समस्या का निदान हो गया क्या? इस सरकार ने तो रोका-छेका अभियान भी शुरू किया था। किसान के चरी चरांगन की समस्या दूर हो गई क्या? इस गौठान के निर्माण से हजारों-करोड़ों रूपये खर्च हो गये, पर न गांव को फायदा हुआ और न गांव के किसानों को फायदा हुआ? किसान आज भी पीड़ित हैं। किसान की फसल आज भी चरी हो रही है। आपने तो अपने घोषणा-पत्र में यह भी कहा था कि लावारिश जानवरों के लिए हम गौशाला बनवायेंगे। आप जरा बता दीजिये कि आपने पूरे प्रदेश में इस साढ़े चार सालों में कितने लावारिश जानवरों के लिए गौशाला बनवाने का काम किया है? इस सरकार की गोबर खरीदी, बिहार के चारा घोटाले से बड़ा घोटाला वाली खरीदी है। आज प्रश्न के उत्तर में आया है कि 229 करोड़ रूपये का गोबर गायब है। हम लोगों ने आपसे पूछा था कि वह गोबर कहां है? कहां के कोल्ड स्टोरेज में रखे हैं, वह जरा बता दीजिये।

उपाध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, आधे घंटे से भी ज्यादा हो गये। समाप्त करिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- कहां के कोल्ड स्टोरेज में रखे हैं, बता दीजिये। आप बताने की स्थिति में नहीं हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 229 करोड़ रूपये का गोबर गायब है।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- उपाध्यक्ष महोदय, पूरी जानकारी दे दी गई थी। घर बनाना शुरू करते हैं तो एक ही दिन में नींव निकालो, एक ही दिन में छत डाकर प्लास्टर फ्लोरिंग हो जाएगा क्या? शुरू करेंगे। आज धीरे-धीरे करके 10,000 गौठान तक चले गये हैं और उसके बाद गोबर की कहीं अफरा-तफरी नहीं है, कोई घपला नहीं है। गौठान फायदे में है। असल में क्या है कि इन लोगों का क्लास हाई लेवल से हुआ है जो असत्य बोलने में माहिर हैं। ये लोग उनके कॉलेज से पी.एच.डी. करके निकले हैं। वही काम इन लोग करते जाते हैं। और कोई दूसरी बात नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज इनके प्रश्न के उत्तर में जो जानकारी आई है। मैं बहुत अथेंटिक बात कर रहा हूं।

श्री ननकी राम कंवर :- उपाध्यक्ष महोदय, मंत्री जी खाद नहीं दे रहे हैं।

श्री ताम्रध्वज साहू :- ज्यादा मत बोलिये। आपका उम्र हो गया है। बैठ जाईये। उम्र हो गया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, 229 करोड़ रूपये का गोबर गायब है। कहां के कोल्ड स्टोरेज में रखे हैं? माननीय मंत्री जी बता दें कि गोबर कीड़ा खा गया या इनके दिमाग में गोबर भर गया? यह स्पष्ट कर दीजिये।

श्री ताम्रध्वज साहू :- आप लोगों के दिमाग में गोबर भरा है। पूरा गोबर।

श्री शिवरतन शर्मा :- 229 करोड़ रूपये के गोबर के रखइया तुमन ही हौ ता तूहरे मन के दिमाग मा भरही।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करें।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, Rural industrial park । इसमें 600 करोड़ रूपये का बजट है। डी.एम.एफ. की राशि लग गई। 300 पार्क पूर्ण हो गये। इसमें कितने लोगों को रोजगार मिला है? सिर्फ मशीन खरीदी हुई है। 5 लाख की रूपये की मशीन 15 लाख, 17 लाख रूपये में खरीदी गई है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय शर्मा जी।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष जी, अभी तो मैंने शुरू किया है।

उपाध्यक्ष महोदय :- सुनिये न। मात्र दस मिनट का हम लोग ..। 32 मिनट हो गये।

श्री अजय चंद्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, आज जो व्यवस्था आई है कि नई बात करेंगे, रीपीट नहीं करेंगे। माननीय सदस्य नई बात ही कर रहे हैं। 5 मिनट सुन लीजिये।

उपाध्यक्ष महोदय :- 32 मिनट हो गये। हाँ, बोलिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, industrial park के नाम पर पूरे छत्तीसगढ़ को चूना लगाया जा रहा है। डी.एम.एफ. के मद से सिर्फ मशीन की खरीदी हो रही है। 5 लाख की मशीन को 15 लाख और 20 लाख रूपये में खरीदी हो रही है। यह बात मैं नहीं कह रहा हूं बल्कि वर्तमान सरकार के मंत्री माननीय मोहन मरकाम जी ने प्रश्नों के माध्यम से डी.एम.एफ. की राशि के दुरूपयोग का प्रश्न इस विधान सभा में लगाया है। माननीय उपाध्यक्ष जी, इस सरकार के ऊपर भ्रष्टाचार के ऊपर हम आरोप नहीं लगा रहे हैं। इस सरकार के कद्दावर मंत्री श्री जयसिंह अग्रवाल पत्र लिखत हैं कि कलेक्टर भ्रष्टाचार में लिप्त हैं।

श्री ताम्रध्वज साहू :- अब अजय चंद्राकर जी को बोलन बंद कराईये। घर में जायेंगे तो उसको कोई दूसरा घूसने नहीं देंगे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- कलेक्टर के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। इस सरकार का मंत्री पत्र लिखता है। यदि मंत्री किसी अधिकारी पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाता है तो उसके बाद विपक्ष को कोई प्रमाण देने की आवश्यकता है क्या? जयसिंह अग्रवाल जी ने सार्वजनिक रूप से आरोप लगाया है या नहीं लगाया हे, आप सार्वजनिक रूप से बता दीजिये? आपकी जानकारी में है या नहीं है? यदि मंत्री आरोप लगा रहे हैं तो उसके बाद किसी प्रमाण की जरूरत है क्या?

श्री बृहस्पत सिंह :- शर्मा जी, यह तो रमन सिंह की सरकार में आपके सामने पूर्व गृह मंत्री बैठे (व्यवधान) लगाये थे। रमन सिंह जी की सरकार में पूर्व गृह मंत्री जी कंवर साहब लगाये थे।

श्री अजय चंद्राकर :- शिवरतन जी, डी.एम.एफ. घोटाले में मोहन मरकाम जी एक तहसील के सी.ई. को नहीं हटाया। आरोप लगाने के कारण मोहन मरकाम जी हट गये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, अब मैं युवाओं के लिए विषय लाता हूं। 10 लाख युवाओं को रोजगार देंगे और रोजागर नहीं दे सकें तो 2500 रूपये महीना बेरोजगारी भत्ता देंगे। कल उमेश जी ने अपने प्रश्न के उत्तर में स्वीकार किया है कि साढ़े 4 सालों में 33,348 लोंगों को हम शासकीय नौकरी दे सके और 22,154 पदों हेतु विज्ञापन जारी किया गया है । 1 लाख 14,764 लोगों को बेरोजगारी भत्ता दे रहे हैं और प्रदेश में वर्तमान में पंजीकृत बेरोजगारों की संख्या 16 लाख 40,635 है यानी आप 20 परसेंट को भी रोजगार नहीं दे सके । 20 परसेंट को भी आप बेरोजगारी भत्ता नहीं दे सके । आप युवाओं के रोजगार की बात करते हैं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, खाली शिक्षा विभाग में 57,447 पद रिक्त हैं । स्कूल शिक्षा में कल मेरे प्रश्न के उत्तर में आया है । कुल 1 लाख 94,555 स्वीकृत पद हैं, 1 लाख 37,080 भरे हुए हैं और 57,447 रिक्त हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप भी जब इधर बैठते थे न तो एक विषय बड़ा जोरदार उठाते थे । माननीय उमेश जी का बड़ा प्रिय विषय हुआ करता था आऊटसोर्सिंग । आऊटसोर्सिंग को बंद करेंगे, यह सरकार प्रदेश के युवाओं का अधिकार छीन रही है । क्या आऊटसोर्सिंग बंद हो गयी ? मेरे प्रश्न के उत्तर में मंत्री जी ने जवाब दिया है कि वर्तमान में शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग में आऊटसोर्सिंग से भर्ती की जा रही है । दिनांक 11.02.2019 को शिक्षा विभाग व स्वास्थ्य विभाग के सचिव को पत्र लिखकर अभिमत मांगा गया है कि क्या आऊटसोर्सिंग बंद की जा सकती है । आज दिनांक तक अभिमत अप्राप्त है । दिनांक 11.02.2019 को आपने पत्र लिखा । चार साल हो गये, आज तक आपको अभिमत प्राप्त नहीं हुआ । इसको क्या मानें ? क्या यह सरकार युवाओं को काम देना चाहती है ? 33,000 लोगों को नौकरी मिली है । 22,000 का विज्ञापन भी निकला है और मुख्यमंत्री जी बिलासपुर में भाषण देते हैं कि हमने 2 लाख 40,000 लोगों को सरकारी नौकरी दे दी । बड़े-बड़े फ्लैक्स लगते हैं कि हमने 5 लाख लोगों को रोजगार दे दिया । पूरे प्रदेश की जनता को धोखा देने का काम अगर कोई कर रहा है तो माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार कर रही है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, फर्जी प्रमाण-पत्र का मामला आया । निर्वस्त्र अवस्था में लोग प्रदर्शन करने निकले और जब माननीय प्रधानमंत्री जी ने ट्वीट किया कि छत्तीसगढ़, राजस्थान, मणिपुर में यह घटनायें घटी हैं, दुखद है, पीड़ादायक है । दोषियों पर कार्यवाही होनी चाहिए तो माननीय मुख्यमंत्री और गृहमंत्री को बड़ी पीड़ा हुई कि छत्तीसगढ़ का उल्लेख कैसे हो गया ?

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री मोहन मरकाम) :- हमारी सरकार ने कार्यवाही की । क्या आपने मणिपुर में की ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 4 सालों से लगातार लोग फर्जी प्रमाण-पत्र के लिये लगे हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- हमारी सरकार ने कार्यवाही की है । आप उनके बचाव में आते हैं मतलब क्या आप उनके साथ हैं ?

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- अगर आप कार्यवाही करते तो उन लोगों को ऐसा प्रदर्शन नहीं करना पड़ता ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 57 लोग कोंटा में, सुकमा जिले में फर्जी प्रमाण-पत्र से नौकरी कर रहे हैं । आप बोलें तो लखमा जी मैं आपको सूची उपलब्ध करा देता हूं । क्या आप कार्यवाही करायेंगे ? मंत्री का संरक्षण है, यह आरोप है । (व्यवधान) संरक्षण है इसलिये फर्जी प्रमाण-पत्र वालों के ऊपर कार्यवाही नहीं हो रही है । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये समाप्त करें, माननीय मंत्री मोहन मरकाम जी । 10 मिनट का समय निर्धारित है । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- क्या आप मंत्री जी के साथ सुकमा जायेंगे ? (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- 15 साल हो गये थे । जगरगुण्डा में क्या किया ? (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय शर्मा जी, सहयोग करियेगा । आप बोलियेगा ।

(आदिम जाति विकास मंत्री, श्री मोहन मरकाम के अपने स्थान पर खड़े होने पर)

श्री अजय चंद्राकर :- मोहन मरकाम जी, ये दो मिनट में समाप्त कर रहे हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- अब आगे बढ़ गया, हो गया । अभी बहुत से वक्ता हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ प्रदेश शांति का टापू । अपराध के गढ़ के रूप में परिवर्तित हो गया । दुनिया में घटित होने वाला कोई ऐसा अपराध नहीं है जो छत्तीसगढ़ में नहीं हुआ हो । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, अब माननीय मंत्री मोहन मरकाम जी बोलेंगे । (व्यवधान)

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री मोहन मरकाम) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 4 साल में 11,719 घटनायें हुई हैं । बालात्कार की 500 घटनायें हुई हैं । (व्यवधान) हत्या की 4300 घटनायें हुई हैं, लूट की 2146 घटनायें हुई हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इसके विरोध में अपनी बात कहना चाहता हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप चलिये, बोलिए । उधर रिकॉर्ड बंद करिये । चलिये, आप बोलिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx][40] (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- अब आप समाप्त करें। शर्मा जी, सहयोग करें। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx] (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष जी, लबरा कब खाबे, कब बतियाबे, यही बात होगे। पूरा लबारी माने के सिवा अउ कोई दूसरा काम नहीं हे। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx] (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- प्लीज आप बंद करिए। समाप्त करिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx]

उपाध्यक्ष महोदय :- एक्चूअल में आपको 45 मिनट दे चुके हैं। एक मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx] श्री बृहस्पत सिंह :- ये घटना तो मणिपुर का है।

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx]

श्री मोहन मरकाम :- वह भा.ज.पा. के कार्यकर्ताओं ने किया था और उनके ऊपर रिपोर्ट हुई है। उनके ऊपर कार्यवाही हुई है और कार्यकर्ता भा.ज.पा के थे। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx]

श्री कवासी लखमा :- आप कब गये थे?

श्री शिवरतन शर्मा :- xx (व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, माननीय शर्मा जी, समाप्त करें। बहुत वक्ता हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx]

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, समाप्त करें।

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx] (व्यवधान)

---

40 [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार रिकॉर्ड नहीं किया गया ।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- अब समाप्त करें। मोहन मरकाम जी, अपना भाषण जारी रखें। माननीय मंत्री जी, अपना भाषण जारी रखें। अब मैं नहीं सुनूंगा। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx] (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- इन्होंने गलत आरोप लगाया है। आप भ्रष्टाचार पर बात कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx] (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- विपक्ष के द्वारा अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, मैं इसका विरोध करते हुए बातें प्रारंभ कर रहा हूं। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx] (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- समाप्त करें। मंत्री जी, आप बोलिए। माननीय मंत्री जी, आपको बोलने के लिए समय दे दिया। (व्यवधान) चलिए, आप बैठिए। (व्यवधान) मंत्री जी, आप बोलिए, इनका रिकॉर्ड नहीं हो रहा है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- [xx][41] (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- नहीं, ऐसा नहीं होता, आसंदी का भी सम्मान होना चाहिए। आपको पर्याप्त समय दिया गया है । माननीय मंत्री जी को मैंने 16 मिनट दिया है । (व्यवधान) माननीय मंत्री जी आप भाषण दीजिए ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- जनता की गाढ़ी कमाई को किसने लुटवाया ।

श्री मोहन मरकाम (कोंडागांव) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव विपक्ष के द्वारा लाया गया है । जिसका विरोध करते हुए मैं अपनी बातें कहना चाहता हूं । माननीय मुख्यमंत्री जी ने बजट भाषण में कहा था- वक्त कितना भी मुश्किल हो, रफ्तार नहीं थमने देंगे । चुनौतियां लाख हो, छत्तीसगढ़ को रूकने नहीं देंगे । आगे बढ़ेगा छत्तीसगढ़, गढ़ेगा नवा छत्तीसगढ़ । उपाध्यक्ष महोदय, 2018 के चुनाव में छत्तीसगढ़ की महान जनता ने 68 सीटों के साथ माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में भूपेश बघेल साहब के नेतृत्व में हमें सरकार बनाने का मौका दिया । माननीय मुख्यमंत्री जी की परिकल्पना थी, गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ । आज इन साढ़े चार सालों में छत्तीसगढ़ की जनता खुशहाल है, आज नीति आयोग, रिजर्व बैंक, अन्य सूबों की सरकार भी माननीय भूपेश बघेल सरकार की योजनओं की तारीफ कर रही है । उपाध्यक्ष महोदय, आपने देखा होगा भारतीय जनता पार्टी का पहला अरोप है भ्रष्टाचार । माननीय मोदी जी 7 जुलाई को आते हैं और भ्रष्टाचार की बात कहते हैं और जीरो टॉलरेंस की बात करते हैं । मैं पूछना चाहता हूं विपक्ष के साथियों से, माननीय

---

[41] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार रिकॉर्ड नहीं किया गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

मोदी साहब ने 36 हजार करोड़ के नान घोटाले के बारे में एक शब्द क्यों नहीं कहा । उन्होंने अगुस्ता वेस्ट लैंड घोटाले के बारे में क्यों नहीं कहा ? 6 हजार करोड़ के चिटफंड घोटाले के बारे में मोदी जी ने क्यों नहीं कहा ?

उपाध्यक्ष महोदय :- एक मिनट मरकाम जी, अजय जी कुछ कहना चाह रहे हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, बार-बार उंगली उठाने की परम्परा बंद कराइए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नान घोटाला 36 हजार करोड़ का हो या 100 करोड़ का हो । 36 हजार से और 2 शून्य लगा लें । नान घोटाले के मुख्य आदमी है, जिसके लिए आप लोग यहां से चिट्ठी लिखते थे कि इनकी जांच कराएं । वे अभी इनके गले के हार हैं, वही सरकार चला रहे हैं आज किलोल पत्रिका भी वही छाप रहे हैं । दूसरी बात...।

श्री धर्मजीत सिंह :- उससे तो मंत्री लोग थरथर कांपते हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- प्रियदर्शिनी इंदिरा बैंक घोटाला, इनके पूर्व मुख्यमंत्री के ऊपर नार्को टेस्ट में बैंक मैनेजर ने करोड़ों रूपए लेने की बात कही । इनके पूर्व मंत्री जो अभी भी इस सदन के सदस्य हैं । उनके ऊपर भी करोड़ों रूपए लेने का आरोप नार्को टेस्ट में है । ये किस भ्रष्टाचार की बात करते हैं । मोदी साहब, आप जीरो टालरेंस की बात करते हैं । जिनके ऊपर 25 हजार करोड़ की ई.डी. चार्जशीट लगती है, अजीत पवार के ऊपर । दूसरे दिन वह भारतीय जनता पार्टी की सरकार में शामिल होते हैं और भारतीय जनता पार्टी की वाशिंग मशीन में धुलकर पाक साफ हो जाते हैं । उपाध्यक्ष महोदय, मध्यप्रदेश में व्यापम घोटाला, हजारों करोड़ का ई-टेंडरिंग घोटाला, 40 करोड रूपए का शौचालय घोटाला, नर्मदा किनारे वृक्षारोपण घोटाला । हरियाणा में 400 करोड़ रूपए का घोटाला, उत्तर प्रदेश में किट घोटाला, 22 सौ करोड़ का घोटाला ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मध्यप्रदेश की, उत्तर प्रदेश की चर्चा चल रही है क्या ।

उपाध्यक्ष महोदय :- उदाहरण दे रहे हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- 7 जुलाई 2023 को मोदी साहब आकर छत्तीसगढ़ सरकार को बदनाम करने का प्रयास करते हैं । गुजरात से माननीय मोदी साहब आते हैं । 6 हजार करोड़ रूपए का कोयला घोटाला, 9 हजार करोड़ रूपये का ड्रग्स घोटाला, 23 हजार करोड़ का बैंक धोखाधड़ी घोटाला....।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, जो छत्तीसगढ़ के बाहर की मुख्य बात है, उसको विलोपित करवाएं, जहां-जहां पर [XX][42] का नाम है, उनको विलोपित करवाए। जहां-जहां दूसरे राज्यों का नाम है, उसको विलोपित करवाएं।

---

[42] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

Uncorrected and unedited/Not for Publication Friday, July 21, 2023

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रामकुमार यादव :- तुमन का-का घोटाला करव रहव, सुनव। घोटाला के पईसा ला खावत रहेव ता सुने के क्षमता रखव।

उपाध्यक्ष महोदय :- विलोपित करवाते हैं, मैं दिखवाता हूं।

श्री ननकीराम कंवर :- यह लोकसभा का विषय है, विधानसभा में क्यों बोल रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी विषय पर ही सीमित रहें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं-नहीं, उसको विलोपित करवाईए। जहां-जहां ये सब आया है, उसको विलोपित करवाईए।

उपाध्यक्ष महोदय :- विलोपित करवा रहे हैं। दिखवा रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मध्यप्रदेश, यू.पी., गुजरात।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं दिखवा रहा हूं। सीमित में ही अपनी बात रखें।

श्री मोहन मरकाम :- मैं घोटाले की बात बता रहा हूं, देश के प्रधानमंत्री जी छत्तीसगढ़ आकर घोटाले की बात करते हैं। 23 हजार करोड़ रूपये का जो घोटाला है, [XX], [XX], [XX] लेकर जाते हैं। उनको भगाने का काम कौन करता है।

श्री रामकुमार यादव :- वाह चौकीदार, वाह चौकीदार।

श्री मोहन मरकाम :- अगर [XX] सरनेम का व्यक्ति [XX] हो, [XX] हो, अगर [XX] सरनेम का [XX] है तो [XX] को [XX] नहीं कहेंगे तो क्या साहूकार कहेंगे।

श्री रामकुमार यादव :- [XX] - [XX] है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, [XX] जेल में जा रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, [XX] को दो साल की सजा सुना दी गयी, अगर मोहन मरकाम में हिम्मत है तो इस बात को सदन के बाहर बोलकर बताएं। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- जनता 2024 में बताएगी। 2024 में दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, आप विलोपित करवाईए। छत्तीसगढ़ के बाहर की जितनी भी बात बोली गयी है, उसको विलोपित करें। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं उसको दिखवा रहा हूं। आप विषय पर ही अपनी बात रखें तो अच्छा रहेगा।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वे विषय पर बोल रहे हैं। भ्रष्टाचार की बात हो रही है।

श्री शिवरतन शर्मा :- [XX] भ्रष्टाचार के आरोप में जमानत पर हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- पाण्डे जी बैठ जाईए।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो छत्तीसगढ़ के बाहर की बात है, उसको विलोपित करें। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- पाण्डे जी, आप लोग बैठ जाईए। मैं अभी दिखवाऊंगा, हो जाएगा।

(पक्ष-विपक्ष द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गए।)

उपाध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही 5 मिनट के लिए स्थगित।

(07:32 से 7:40 तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय :
7.47 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरण दास महंत) पीठासीन हुए)**

आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति मंत्री (श्री मोहन मरकाम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने अपना नाम पुकारने का भी इंतजार नहीं किया।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, उनका भाषण जारी है।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने इन साढ़े चार वर्षों में छत्तीसगढ़ के विकास और प्रगति के लिए काम किया है। हम कार्यकर्ताओं के माध्यम से जनता के बीच में गये। हमने पांचों उप चुनाव जीता है। (मेजों की थपथपाहट) हमने 14 के 14 नगर-निगम चुनाव जीता है। अक्सर कहा जाता है कि शहरों में भारतीय जनता पार्टी का जनाधार होता है, मगर हम उस मिथक को भी तोड़ने में सफल हुए। हमारी सरकार की नीतियों और योजनाओं के दम पर हम हर चुनाव जीतने में सफल हुए। ई.डी., सी.बी.आई., इंकम टैक्स केन्द्र में बैठी [XX]। उन्होंने उनको छोड़कर रखा है और हमारी सरकार को बदनाम करने का प्रयास किया जा रहा है। जिनमें अकेले चलने के हौंसले होते हैं, एक दिन उनके पीछे काफिले होते हैं। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने छत्तीसगढ़ की जनता का विश्वास जीतने का काम किया है, इसी कारण से हम हर चुनाव जीतने में सफल हुए। माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी, माननीय अजय चंद्राकर जी कह रहे थे कि [XX] [43] हुई है। प्रजातांत्रिक तरीके से, लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित सरकारों को गिराने का काम भारतीय जनता पार्टी करती है। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने मध्यप्रदेश में सरकार गिराई, कर्नाटक में सरकार गिराई, गोआ में सरकार गिराई और यह किस लोकतंत्र की बात करते हैं? यह काले अंग्रेजों की बात करते हैं। काले अंग्रेज तो यह भारतीय जनता पार्टी के 13 सदस्य हैं। यह हमसे काले अंग्रेज की बात करते हैं।

---

[43] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बार-बार बोल रहे हैं।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अजय चंद्राकर जी ने आर.एस.एस. की बात की।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय, सुनिये, अब यह तय हो गया है कि बाकी सभी सदस्य 10-10 मिनट बोलेंगे और मंत्री भी 10 मिनट बोलेंगे। नेता प्रतिपक्ष जी आधा घंटा और मुख्यमंत्री जी आधा घण्टा से ज्यादा बोल सकते हैं। सत्र को समाप्त करना है और आज सत्र का आखिरी दिन है।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे केवल 10 मिनट का समय चाहिए। मैं 10 मिनट में अपने विभाग की बात करूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- सुनिये, आप 10 मिनट में अपने विभाग की बात करिये। यदि आप इधर-उधर भटकेंगे तो सब गलत हो जाएगा। आज अंतिम तिथि है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मरकाम जी मेरा नाम बार-बार ले रहे हैं तो मैं एक लाईन बोल देता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- केवल एक लाईन बोलना है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बस एक लाईन । देश के राजनीतिक इतिहास में अद्भूत घटना घटी ।

अध्यक्ष महोदय :- अब वह लंबा लाईन है, मत बोलिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- वे तो राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय बात कर रहे हैं न ।

अध्यक्ष महोदय :- मत करिए न । आप भी तो कहां-कहां रामायण, महाभारत ले आते हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- चन्द्राकर जी दो घंटा बोल चुके हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इतनी देर में मेरी बात पूरी हो जाती । कम्यूनिष्टों की पहली सरकार 1929 में केरल में बनी । उसको पहली बार कांग्रेस पार्टी ने बर्खास्त किया और उसके बाद आजतक 154 बार राज्यों की सरकारों को बर्खास्त किया ।

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, माननीय विद्वान सदस्य ने कहा कि मैं **(XX)**[44] का सदस्य हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपने विभाग की बात करिए ।

श्री मोहन मरकाम :- **(XX)** (शेम-शेम की आवाज)

अध्यक्ष महोदय :- आप अपने विभाग पर कहिए, आप अपने विभाग पर कहिए ।

श्री मोहन मरकाम :- मैं अजय चन्द्राकर से कहना चाहता हूं । (व्यवधान)

श्री धरम लाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, यह **(XX)** के ऊपर चर्चा हो रही है?

---

[44] (XX) अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आप अपने विभाग पर कहिए ।

श्री धरम लाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में **(XX)** पर चर्चा हो रही है क्या ?

श्री मोहन मरकाम :- मैं कबीर दास जी की बात को दोहराना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, आप अपने विभाग पर कहिए ।

श्री मोहन मरकाम :- बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय । जो मन में देखा आपना, मुझसा बुरा न कोय । अपनी बुराईयां देख लीजिए, ऊंगलियां आप पर भी उठेंगी ।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, फिर हम लोग भी बोलेंगे। **(XX)** के ऊपर चर्चा हो रही है ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- कोई **(XX)** [45] पर चर्चा नहीं हो रही है । (व्यवधान)

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर **(XX)** के ऊपर चर्चा हो रही है फिर हम लोग भी बोलेंगे, **(XX)** के ऊपर में बोलेंगे, **(XX)** के ऊपर में बोलेंगे, **(XX)** के ऊपर में बोलेंगे । फिर आप मत कहना । ये सबको विलोपित करवाईए । (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- **(XX)** (व्यवधान)

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये सबको विलोपित करवाईए, नहीं तो हम लोग भी बोलेंगे। भारत में आने के पहले **(XX)** उसके ऊपर भी बोलेंगे ? (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- इतनी बात है तो **(XX)** के ऊपर भी बात होगी।
(XX) के ऊपर भी चर्चा होगी । भारत आने के पहले **(XX)** क्या थी, वह भी बोलेंगे । हम आगे जाकर भी बोलेंगे । (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- अध्यक्ष जी, इन्होंने **(XX)** के बारे में बोला है, उसको विलोपित करवाईए । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैं उन सभी बातों को विलोपित करूंगा, जो इस सदन से संबंधित नहीं है । मंत्री जी, आप समझ गए । आप जितना बोलेंगे, मैं सब विलोपित करता हूं । मैं कह रहा हूं कि आप अपने विभाग के बारे में बोलिए और आप शायद भूल रहे हैं कि आप मंत्री हैं, आप पी.सी.सी. चीफ नहीं हैं । विभाग के बारे में बात करिए ।

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, छत्तीगसढ़ की लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक कल्याण की है । हमारी सरकार, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने लगातार इन वर्गों के लिए योजनाएं संचालित कर रही है । 30 नम्बर का आरोप है कि

---

[45] (XX) अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अन्य पिछड़े वर्गों को आरक्षण नहीं दिया गया । इसी पवित्र सदन में जनसंख्या के अनुपात में एस.सी., एस.टी., ओ.बी.सी. वर्ग को आरक्षण देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है, जिसमें ओ.बी.सी. वर्ग को 27 प्रतिशत, एस.टी. वर्ग को 32 प्रतिशत, एस.सी. वर्ग को 13 प्रतिशत देने का निर्णय लिया था, मगर भारतीय जनता पार्टी का असली चेहरा दिखा । यहां से विधेयक सर्वसम्मति से पास होता है, मगर पास होने के बाद विधेयक राजभवन जाता है तो हमारे मंत्री उस विधेयक हो लेकर जाते हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- उस पर चर्चा नहीं होगी, उस पर बात हो चुकी है ।

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण देने के लिए कटिबद्ध है । भारत सरकार के आंकड़े हैं, हम व्यक्तिगत वन अधिकार में देश में नम्बर वन हैं । हम सामुदायिक वन अधिकार पत्र में देश में नम्बर वन हैं । हम सामुदायिक वन संसाधन में देश में नम्बर वन हैं । साढ़े लाख से अधिक लोगों ने वन अधिकार के लिए व्यक्तिगत आवेदन किया था, पिछली सरकार ने उनको निरस्त कर दिया था । मैं माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं कि आज कहीं न कहीं उन आदिवासियों के साथ-साथ अन्य परम्परागत रूप से निवासरत् पिछड़े वर्गों को भी वन अधिकार पत्र देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया और आज पिछडे वर्ग के अन्य परम्परागत रूप से 13,028 परिवारों को व्यक्तिगत वन अधिकार दिया गया। इसके साथ ही साथ हमारी सरकार ने लगातार काम किया है। एस.टी वर्ग के 31,971 व्यक्तियों को वन अधिकार दिया गया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, 59,791 व्यक्तिगत वन अधिकार दिया गया। इसी प्रकार 25,109 सामुदायिक वन अधिकार दिया गया। पूरे देश के लिए माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने सामुदायिक वन अधिकार, वहां के निवासियों को जीवन-यापन के लिए दिया है।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, मैं अपने विभाग की बातों को पूरा कर लूं। माननीय अध्यक्ष जी, इसके साथ-साथ प्रदेश में विशेष रूप से कमजोर जनजातियों को पर्याप्त अधिकार प्रदान करने की कार्यवाही धमतरी जिले को दी जा रही है। 9 अगस्त, विश्व आदिवासी दिवस के दिन छत्तीसगढ़ इतिहास के पन्ने में दर्ज होगा कि छत्तीसगढ़ की माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार लगातार काम कर रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रीय अभ्यारण्य में 18 सामुदायिक वन अधिकार दिया गया है। उसके साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में 911 वन अधिकार पत्र दिया गया है। 4 सामुदायिक वन संसाधन अधिकार-पत्र दिया गया है। ये पिछड़े जातियों की बात कह रहे हैं। हमारी सरकार ने 976 विशेष पिछड़ी जातियों को नौकरी देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया, जो 15 साल सत्ता में रही भारतीय जनता पार्टी की सरकार कुछ नहीं कर पाई।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बस खत्म करिये।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछड़े वर्ग के बच्चों के लिए हमारी सरकार ने लगातार काम किया है। आज हमें कहीं न कहीं लगता है कि 15 साल तक भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही, लेकिन जो श्रद्धा का केन्द्र, आस्था का केन्द्र देवगुड़ी है, घोटुल गुड़ी है, 15 सालों में डॉ. रमन सिंह की सरकार ने ..।

अध्यक्ष महोदय :- यह सब प्रश्नकाल में आ चुका है। आप खत्म करिये।

श्री मोहन मरकाम :- लेकिन हमारी सरकार ने इन साढ़े चार सालों में 83 करोड़ रूपया देवगुड़ी के लिए दिया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल की भारतीय जनता पार्टी की डॉ. रमन सिंह की सरकार में ..।

अध्यक्ष महोदय :- आप उधर मत जाईये। रमन सिंह के पास मत जाईये, वह यहां नहीं हैं।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब छत्तीसगढ़ राज्य बना तब छत्तीसगढ़ की गरीबी 37 प्रतिशत थी। जब डॉ. रमन सिंह सन् 2018 में सरकार छोड़कर गये, तब 40 प्रतिशत गरीबी थी। हमारी सरकार को विरासत में 42 हजार करोड़ रूपये कर्ज के रूप में मिला था। आज हमारा छत्तीसगढ़ प्रदेश को, बिहार, उड़ीसा से भी ज्यादा गरीब प्रदेशों में भारतीय जनता पार्टी की सरकार डॉ. रमन सिंह की सरकार ने पहुंचा दिया है। जो आकांक्षी जिले हैं, डॉ. रमन सिंह राजनांदगांव अपने जिले को भी नहीं सुधार पाये। आज ये हमारे सरकार के ऊपर आरोप लगाते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री मोहन मरकाम :- हमारी सरकार छत्तीसगढ़ के विकास, शांति, सुरक्षा, विश्वास और के एजेण्डे पर चल रही है। हम सन् 2023 में भी 75 सीटों के साथ सरकार बनायेंगे। (मेजों की थपथपाहट) ये जो मुंगेरी लाल के सपने देख रहे हैं, ये सपने, सपने ही रह जायेंगे। माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद। धर्मजीत सिंह जी माफ कीजियेगा। मैं 10 मिनट से ज्यादा समय नहीं दे पाऊंगा।

<u>सदन को सूचना</u>

रात्रिकालीन भोजन की व्यवस्था माननीय गुरू रूद्र कुमार जी की ओर से आप सबके लिए की गई है। माननीय सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है। आप अपनी सुविधा अनुसार भोजन ग्रहण करें। आप 10 मिनट में समाप्त करें। आपका समय शुरू होता है अब।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- अध्यक्ष महोदय, 14-15 सितम्बर 2018 की बात है, भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी, कांग्रेस के दफ्तर बिलासपुर में पुलिस के लोगों ने डण्डा रखकर वहां के जितने कांग्रेसी कार्यकर्ता थे, उनको बेरहमी से पीटा और उस समय आप भी श्रीमान टी.एस.सिंहदेव जी और वर्तमान मुख्यमंत्री जो प्रदेशाध्यक्ष थे, आप सब बिलासपुर गये थे । सिविल लाईन थाने को घेरे थे, रिपोर्ट दर्ज हुई, मुख्यमंत्री जी ने जिला दंडाधिकारी जांच के आदेश दिये, पुलिस ने मारा, भाजपा की सरकार, कांग्रेसी घायल हुये, अरूण तिवारी को गिरफ्तार करते फोटो है, अटल को मारते हुये फोटो है, पांच साल हो गये, इस सरकार में बैठे हुये मंत्री, मुख्यमंत्री उस दंडाधिकारी जैसे सिंपल जांच को नहीं करा पाये, तब भी हम आपके ऊपर विश्वास करें, अपने ही कार्यकर्ता के मान और सम्मान की आप रक्षा नहीं कर सकते, उनको न्याय नहीं दिला सकते, किस बात का विश्वास प्रकट करें ? अध्यक्ष महोदय, मैं एक बहुत ही ज्वलंत मुद्दे की ओर ध्यान आकर्षित करूंगा । हसदेव पर सुप्रीम कोर्ट में शपथ पत्र आपने दिया है, यह माननीय मंत्री जी ने भी कहा है । हम स्वागत करते हैं। परसा कोल ब्लॉक को दी अनुमति और केटेक्स टेंशन ऑफ तारा कोल ब्लॉक के वन अनुमति प्रस्ताव भी रद्द करें । यह भी आप वहां पर लगाईये, लेकिन राहुल गांधी जी जब 15 जून 2015 को मदनपुर आये थे, उन्होंने वहां कहा था कि मैं आदिवासियों के संग न्याय करूंगा । उसके बाद भी आपकी सरकार बनने के बाद आपके सरकार के आदरणीय मुख्यमंत्री और मंत्री जी ने परसाकोल ब्लॉक को 6 अप्रैल 2022 को जारी वन अनुमति प्रदान की । आप एक तरफ अडानी के खिलाफ बोलते हैं, दूसरे तरफ आप उसको अनुमति देते हैं । परसाकोल ब्लॉक हेतु पर्यावरण संरक्षण बोर्ड द्वारा जारी वायु अधिनियम और जल अधिनियम के तहत अनुमति आपने दिया है । इसी तरह से तारा कोल ब्लॉक के नीलामी के लिये भी आपने उनको सहमति दी है । इन सब चीजों के खिलाफ आपको अनुमति रद्द करना चाहिये । हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट में जाना चाहिये, कहीं ये गेम मत हो कि हमने तो सुप्रीम कोर्ट में कह दिया है, अब वहां बड़े-बड़े वकील लगा दें, राजस्थान का वकील आ जाये, जो वहां पर काम करना चाहता है, चिट्ठियां तो आते रहती है, चिट्ठी आई रे आई रे चिट्ठी आई रे, राजस्थान से । चिट्ठी आते रहती है । वहां पर कोई बड़ा वकील लगना चाहिये, वरना हमारे हसदेव अरण्य को कोई भी नहीं बचा पायेगा, वहां साढ़े छैः लाख झाड़ कटेंगे, यह सरकार की जिम्मेदारी होगी, अध्यक्ष महोदय अगर वह साढ़े छैः लाख वृक्ष कटेंगे तो आपको, न हमको आने वाली पीढ़ी कभी माफ नहीं करेगी । मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि आप इसको जरूर ध्यान रखेंगे । अध्यक्ष महोदय, आपको हीरा खदान के बारे में भी पहल करनी चाहिये । जब अजीत जोगी मुख्यमंत्री बने थे, उन्होंने हीरा खदान के निविदा में गड़बडी है, अनुबंध की शर्तों में खामी है, ऐसा करके उन्होंने निरस्त किया था, लेकिन उसमें अभी तक कोई तरक्की नहीं हुई है। पिछले तीन वर्षों में, सरकारी आंकड़ों में, 12 मामलों में, 19 तस्कर, 2 करोड़ का हीरा और 210 नग हीरा जब्ती हुई है । वहां पर पहले सी.आर.एफ. की सुरक्षा थी । अब वहां नक्सलियों का कब्जा हो गया है । अध्यक्ष महोदय, इसको

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

भी सरकार को देखना चाहिये था । रेत घाट के बारे में परसों बात कर दिया हूँ, रेत घाट में नंगा-नाच पूरे प्रदेश में हो रहा है, खासकर बिलासपुर जिले में इतना [XX] हो रहा है, सब सत्तारूढ़ पार्टी के लोग वहां पर काबिज हैं, कोई डर नहीं है, वहां पर न कोई कलेक्टर को डरता है, न खनिज अधिकारी को डरते हैं, न पुलिस को डरते हैं, रात को 12 बजे निकालते हैं, पुल के नीचे के घोड़े के पास से रेत निकाल लेते हैं और मालामाल हो रहे हैं । इस पर रोक तो होनी ही चाहिये थी, परन्तु यह रोक नहीं हुआ है । अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि श्री राजीव गांधी जी, जो कि प्रधानमंत्री थे, उन्होंने पंचायती राज का सपना देखा, उस पंचायती राज में पंचायत को सशक्त बनाने का संकल्प लिया था, लेकिन इस सरकार के 19-1-2023 के एक आदेश में लोक शिक्षण संचालनालय में जो माननीय मंत्री जी बोल रहे थे कि धरमजीत भईया मुंगेली हम इतने रूपये भेजेंगे । मुख्यमंत्री स्कूल जतन कोई योजना है, उसके नियम और शर्तों में स्पष्ट रूप से 12 वें नंबर में लिखा गया है, इस कार्य हेतु निर्माण एजेंसी डेढ़-दो हजार करोड़ का मामला है, इस कार्य हेतु निर्माण एजेंसी का निर्धारण संबंधित जिला कलेक्टर द्वारा किया जायेगा, इस कार्य हेतु ग्राम पंचायतों को एजेंसी नहीं बनाया जाना है, यह डायरेक्ट ऑर्डर आया है। आप क्या कहना चाहते हैं ? आप पंचायतों की मजबूती की बात करते हैं। राजीव गांधी जी ने उसको मजबूत करने का सपना देखा और आप उनकी भावनाओं की धज्जियां उड़ा रहे हैं। बिलासपुर जिले में 122 सरपंच हड़ताल पर है। वह कार्य आर.ई.एस. को और इधर-उधर देने में सिर्फ कमीशन और सेटिंग का खेल होगा इसलिए उसको भी मैं आपके ध्यान में ला रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय, आज निर्वस्त्र प्रदर्शन के बारे में बहुत बात हो गयी है इसलिए मैं इसके बारे में कोई चर्चा नहीं करना चाहता हूं। प्रदेश में सड़क दुर्घटनाएं बहुत हो रही है। आप जरा आंकड़े समझ लीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- आपके पास चार मिनट बचे हैं, आप उस हिसाब से बोलिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- सर, मैं बोल रहा हूं। वर्ष 2019 से 2023 के बीच में 48 हजार 271 सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं। जिसमें से 21 हजार लोग मरे हैं और ब्लैक स्पॉट के बारे में भी कोई फैसला नहीं हुआ है। मैं अभी लंबा खीचूंगा तो तकलीफ हो जायेगी इसलिये मैं छोड़ देता हूं।

अध्यक्ष महोदय, रायपुर के पास नकली माणिकचंद और सितार गुटखा बन रहा है, उसकी फैक्ट्री का संचालन हो रहा है। रायपुर से महज 10 कि.मी. दूर मंदिर हसौद में छापा पड़ा है। यह नकली चीजें और यह जहरीली चीजें बनाकर खुलेआम बेची जा रही है लेकिन इस पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है।

अध्यक्ष महोदय, इस पूरे प्रदेश में ड्रग्स की होम डिलीवरी हो रही है, नशीली टेबलेट, दवाएं खुलेआम बिक रही है। यह गांजा तस्करी का सबसे बड़ा हब है। अवैध शराब घरों तक पहुंचाई जा रही है। अभी एक नया ड्रक आया है, उसका नाम मैजिक मशरूम है, वह नशीला पदार्थ है और वह रायपुर आया है। मैक्सिको से यह पैकेट चला, मैक्सिको से किसी और प्रदेश में आया और किसी और प्रदेश से कहीं और

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गया और तेलीबांधा के उप डाकघर में इसको लिया गया है और यह भयंकर जहरीला पदार्थ है। पुलिस क्या कर रही है, आबकारी विभाग क्या कर रहा है, ड्रग्स विभाग वाले क्या कर रहे हैं ? यह नशीली पदार्थों का हब बना हुआ है, इसको रोकिये। बाबा साहब, आप मंत्री है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, इतना महत्वपूर्ण अविश्वास प्रस्ताव चल रहा है। लेकिन यहां न विभाग के सेक्रेटरी है, न सरकार के चीफ सेक्रेटरी है और न डी.जी.पी. है। यदि हम किसी बात को कह रहे हैं और वह सुनेंगे तभी तो एक्शन लेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- लिखने के लिये उनके अधिकारी बैठे हैं । आप उनका समय खराब कर रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, जो अधिकारी बैठे हैं, वह कैपेबल नहीं है। अविश्वास प्रस्ताव से महत्वपूर्ण प्रस्ताव कोई और नहीं होता है।

श्री अमितेश शुक्ल :- अध्यक्ष महोदय, एक्शन तो मुख्यमंत्री जी के आदेश से ही लेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- यहां से एक-एक मिनट की बात जाती है।

श्री अमितेश शुक्ल :- अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी आदेश देंगे तो वह एक्शन लेंगे। वह डायरेक्ट एक्शन कैसे लेंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, यहां विभागों के प्रमुख सचिव, ए.सी.एस., चीफ सेक्रेटरी, डी.जी.पी., इस स्तर के अधिकारी होने चाहिए क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव से महत्वपूर्ण प्रस्ताव और कोई दूसरा नहीं होता है। इस प्रस्ताव को सुनेंगे तब तो वह कुछ एक्शन लेंगे। विपक्ष किन-किन बातों को बोल रहा हैं, आपको इस बात को देखना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, आप उनका समय खराब कर रहे हैं।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, मुख्यमंत्री जी तो सुन रहे हैं।

श्री ताम्रध्वज साहू :- अध्यक्ष महोदय, चीफ सेक्रेटरी और डी.जी.पी. लगातार बैठे रहे हैं, दो-चार मिनट कहीं जाना जरूरी होता है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- यहां मंत्री हाजिर है, उनकी जगह वह काम देख रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप लोग थोड़ा सुन लीजिये। माननीय बाबा साहब, छत्तीसगढ़ में हर साल 02 हजार करोड़ रूपये की हुकिंग से चोरी होती है। इस पर ध्यान दीजिये। यह 02 हजार करोड़ रूपये जनता के दूसरे काम आयेगा। इस पर रोक लगाने की जरूरत है लेकिन आपके विभाग की तरफ से कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है। यहां महादेव एप्प और रेड्डी अन्ना एप्प, यह दोनों चल रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- उसको तो बहुत लोगों ने बोल दिया है।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, अब मैं जल्दी-जल्दी दो-तीन बातें बोलकर खत्म करता हूं। यहां माननीय वन मंत्री जी उपस्थित नहीं है। वे बहुत बड़ी-बड़ी बात बता रहे थे। इनके विभाग में मेरे क्षेत्र का ए.टी.आर. आता है। मैंने उसके कुछ गांवों को विस्थापित करने के लिए हाथ जोड़-जोड़कर प्रार्थना

कर ली, लेकिन पांच साल हो गये लेकिन इस सरकार ने और इस सरकार के मंत्री ने चार गांवों को भी विस्थापित नहीं कर पाया और वहां पर 10 हजार से अधिक लोग रहते हैं, वहां 29 गांव हैं।

अध्यक्ष होदय :- इस पर पिछली बार प्रश्नकाल में चर्चा हो चुकी है।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, प्रश्न में यह जवाब आया कि मंत्री जी के पास एक रूपया नहीं है लेकिन सड़क बंद कर दिये। वहां पर गांव में सड1क नहीं बनवायेंगे। वहां शेर की खाल मिल रही है, उसका भी लिंक कोई सी.आर.पी.एफ. का अधिकारी लंका और चाईना से मिला हुआ है, यह बता रहे हैं। वाईल्ड लाईफ मर रहा है, लेकिन कोई रोक-टोक, कोई देख-रेख नहीं है। लेंटाना का काम बढ़िया चला है । जिसका प्रमाण चीफ जस्टीस साहब नहीं ला सकते। यहां लेनटाना निकाले या नहीं निकालें? यहां लेनटाना की बहुत बात होती है। आप मुझे दो मिनट अपनी बात बोलने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- अब आप समाप्त करिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शराब बंदी की बात कहना चाहता हूँ। माननीय पंडित जी बने हैं, वह कहां है वह कोई फैसला नहीं कर सके। यहां स्काई वॉक का कोई फैसला नहीं हुआ। पी.एस.सी. का परिणाम अविश्वसनीय है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से एक बात कहना चाहता हूँ कि अभी उनके दो बयानों से थोड़ी तकलीफ हुई। उन्होंने बिलासपुर और रायपुर दोनों जगहों में कहा कि अजीत जोगी जी के कारण भा.ज.पा. बनी, यह बना और वह बना। जो आदमी मर गया उसके नाम को कोड नहीं करना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- आप उस बात को छोड़िए।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो भी हुआ। यहां दिवंगत आदमी अपनी बात का जवाब देने के लिए नहीं है। झीरम में विद्याचरण जी भी शहीद हुए थे। मैंने यहीं पूछा था कि अगर उनके नाम से कोई संस्थान हुआ हो तो कृपया आप जवाब में बताईयेगा। हम दूसरे प्रदेश में जाते हैं वहां के बड़े नेताओं की मूर्ति लगती है। माननीय मोतीलाल वोरा जी इस प्रदेश में कई बार मुख्यमंत्री रहे, पंडित श्यामा चरण शुक्ल जी...।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नयी राजधानी में हमने उनके नाम से मूर्ति बनवायी है।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप मुझे बोलने दीजिए। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दो मिनट में अपनी बात खत्म कर रहा हूँ। इस प्रदेश में कहीं पंडित श्यामा चरण शुक्ल जी कोई मूर्ति, कोई संस्थान दिखायी नहीं देती है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उनकी मूर्ति है। शहीद उद्यान के पास उनकी मूर्ति लगी है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या है। वह तो यह लोग लगवाएं हैं उसे सरकार ने लगावाया है क्या ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उस मूर्ति को सरकार ने लगवाया है। हमने राजिम में भी मूर्ति लगवायी है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप नामकरण तो कर दीजिए। मैंने नामकरण के लिए कहा है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनको जानकारी नहीं है। उन्होंने अपने पैसे से मूर्ति बनवाकर लगवायी है। उसे सरकार ने नहीं लगवाया है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपको सब मालूम है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा टाईम नहीं ले रहा हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने यहां बिलासपुर के सिवरेज के बारे में कहा था। वहां सिवरेज में पानी जाएगा नहीं और अमृत मिशन में पानी नहीं आएगा तो वहां से कहा गया था कि सब आएगा और सब जाएगा। आज तक न वहां पर सिवरेज में पानी गया और न ही अमृत मिशन में पानी आया। बिलासपुर में खोदापुर के नाम से वोट मांगा, वह खोदापुर का खोदापुर ही है। मतलब आप वहां सुरक्षित रूप से नहीं चल सकते हैं। भा.ज.पा. सरकार ने भैंसाझार को 25 हजार हेक्टेयर दिया था। उस समय कौन ठेकेदार था, उसने क्या किया, नहीं किया। मैं यह नहीं जानता। इन 5 सालों में उसकी क्षमता 12 हजार हेक्टेयर से नहीं बढ़ी है। आपको या तो कार्यवाही करनी थी या उसे बनवाना था, लेकिन आपने नहीं बनवाया। हम लोग विधान सभा भवन के शिलान्यास में गये थे वहीं से हमें कोरोना भी हुआ था। हम तो यह सोच रहे थे कि आप सत्र के खत्म होने के पहले विधान सभा भवन बनवा देंगे, लेकिन आप उसका भवन बनवा नहीं पाये। हमें उसका दु:ख रहेगा। मैं एक वीडियो देख रहा था कि रायपुर की पुलिस एक कोई छोटा कर्मचारी, सिपाही, हवलदार है। वह कहीं बेजा कब्जा हटाने के लिए गया था। उसके साथ एक छोकरे ने इतनी बद्तमिजी से बात की थी। ऐसा लग रहा था कि जैसे वह पुलिस वाला न हो, वह कोई चोर, उचक्का, लफंगा हो। आप बोलेंगे तो मैं आपको वह वीडियो दिखाऊंगा। उस पर क्या कार्यवाही हुई ? उसे 27 चप्पल मारकर अंदर करना था। वह पुलिस के साथ गुण्डागर्दी, बद्तमिजी करेगा। वह नेतागिरी की गर्मी में बोल जरूर रहा था, पर मुझे तो रायपुर के कोई दूसरे नेता लोग दिख रहे थे, जो सत्ता के मद में अंधे होकर काम करते हैं। मैं एक बात का प्रश्न और पूछना चाहता हूँ कि यहां के एक विधायक ने यहां के एक मंत्री के ऊपर आरोप लगाया था कि वह मंत्री उसकी हत्या कराना चाहता है।

अध्यक्ष महोदय :- वह बात आ तो गयी है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नहीं। वह मामला कहां हल हुआ है ? या तो उस विधायक ने सही कहा या उस मंत्री ने गलत बोला। यदि मंत्री ने सही कहा या विधायक ने गलत बोला ?

इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है कि वह मंत्री हत्या कराना चाहता था या उस विधायक ने गलत बोला। विधायक गलत बोल रहा है या मंत्री सही है जो भी असत्य बोले उनके बारे में कार्यवाही होनी चाहिए। यह अहंकार में जी रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने आपको 10 मिनट दिया था। 14 मिनट का समय हो गया है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूछपरख अच्छी लगे। हमारी कोई पूछपरख करे तो बहुत अच्छा लगता है, लेकिन जैसे अभी हम लोग पूछताछ कर रहे हैं पूछताछ में रार अहंकार जाता नहीं, जाती है सरकार। कृपा करके आप इसे ध्यान रखिए। हमारे द्वारा उठाये गये बिन्दुओं पर नज़र रखिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- केशव प्रसाद चन्द्रा आप 10 मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नारायणपुर से एक सूचना आई है। वहां के कलेक्टर कार्यालय में वहां के N.S.U.I. के जिला के उपाध्यक्ष विजय सलाम, सुक्खू सलाम, रेहान खान ने कलेक्टर ऑफिस में जा कर के कर्मचारी, अधिकारी से मारपीट की है।

अध्यक्ष महोदय :- कितने बजे?

श्री नारायण चंदेल :- यह अभी की घटना है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं आपसे समय पूछ रहा हूं। मैं तो जानकारी ले रहा हूं।

श्री नारायण चंदेल :- यह शाम की घटना है, लेकिन अभी भी उन पर कोई कार्यवाही नहीं हुई है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं यह जानना चाहता हूं कि यह कितने बजे की घटना है?

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, 02 बजे की घटना है।

अध्यक्ष महोदय :- 02 बजे की घटना है। संबंधित मंत्री ध्यान देंगे। केशव प्रसाद चन्द्रा जी।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज मैं विशेषाधिकार और उन्मुक्तियों में बोला था। कुछ लोगों को मारपीट करने का विशेषाधिकार है और पुलिस कुछ नहीं सकती।

अध्यक्ष महोदय :- आप उनका समय खराब मत करिये। आलरेडी आपका गला खराब हो चुका है।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- इनके घर के लोग अंदर नहीं आने देंगे, कोई दूसरा आदमी घर में आ गया है।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजेपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 71 की बहुमत वाली सरकार के ऊपर अविश्वास प्रस्ताव आया है।

अध्यक्ष महोदय :- 13 सदस्यों के द्वारा अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- 13 और 2 कुल 15 सदस्यों के द्वारा अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है।

अध्यक्ष महोदय :- 15 सदस्यों के द्वारा अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 सदस्य मन के अविश्वास प्रस्ताव आये हे। का चीज बर आये हे ?

अध्यक्ष महोदय :- क्यों 13 प्लस 3 होंगे न, 16 सदस्य हो गये।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- दो झन, 13 प्लस 2, 15 झन।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत जी ?

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- हमन शामिल भी रहबो तो शामिल नई मानय और नई भी रहबो तो नई मानय, न तू मानय और न ए मानय और मानना भी नई चाहिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- मालिक, तोर दस्तखत करै कहन तो नई करौं कहेस, ऐला सच-सच बोल न। ओकर मन से सेटिंग है बोल न।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप शुरू करिये।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 71 के ऊपर सदन मा अविश्वास प्रस्ताव लाये गेहे, लेकिन 71 के रहते हुए यहां अविश्वास में कुछ नई होय। प्रश्न ये हे कि सदन के बाहर मा कतका अविश्वास हे। जो अविश्वास प्रस्ताव लाये हें ओमन के आरोप ओती के ऊपर हे, ओती ले बोलत हें, तेमन के आरोप एती के ऊपर हे। मोला लागथे कि ये दोनो दल ला बाकी जनता मन के चिंता नई हे। कौन चोर हे, घोटालेबाज हे तेला खोजत हें। न एक भी वक्ता एती ले 71 के बहुमत में काबर अविश्वास प्रस्ताव हे, ये सरकार का काम ला अच्छा नई करिस, ये विषय ला प्रमुख रूप से नई रखिन। ना ओती के सरकार बोलिस, जतका मंत्री मन बोलिन, बढिया ओपनिंग होईस। सबले अच्छा मंत्री जी अपन उद्बोधन शुरू करिन। लेकिन सरकार के पक्ष ला बेहतर ढंग से रखिन, अइसना मोला नई लागय। निश्चित रूप से जे भी सरकार बनथे, ओकर एक नजरिया रहथे। हमन कुछ बोल देथेन तो कहथे कि ओती ले सेटिंग होये हे। लेकिन ये निश्चित रूप से पूरा छत्तीसगढ़ बोलत हे कि आज जो सरकार किसान मन के हित में काम करत हे, पहली बार शायद छत्तीसगढ़ के किसान बेहतर आर्थिक स्थिति में जीवनयापन करत हें, ऐमा कोई शंका नई हे। मोर विषय हमेशा प्रमुख रूप से ये सदन मा, सदन के बाहर किसान और मजदूर मन के हक, अधिकार की लड़ाई रहे हे। शायद ओई मजदूर और किसान मन के लड़ाई ला लड़त-लड़त एक सामान्य किसान के बेटा आज छत्तीसगढ के सदन में आ करके बैठे हवं। जो भी सरकार हे, हमेशा बोलथन कि नीति अच्छा बनात हे। लेकिन वो योजना ला लागू करने वाला अगर तंत्र बेहतर काम नई करै, भ्रष्टाचार होथे तो निश्चित रूप से ओकर लाभ वो जनता ला जेला मिलना चाहिए, नई मिल पाये। मुख्यमंत्री जी भी बैठे हैं, बहुत सारी बात हे। हमर राजस्व मंत्री जी बैठे हैं, माननीय राजस्व मंत्री जी व्यवस्था ला सुधारे बर बहुत अकन संशोधन करिन। लेकिन आम आदमी

बहुत अकन परेशान हो गये हे। माननीय रामकुमार जी, कम्पयूटर मा रोज किसान के नाम गायब हो जात हे।

समय
4.19 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय राजस्व मंत्री जी, मैं जब बोल रहा था, आप नहीं थे। आपसे एक बात जानना है कि आज भी कोरबा में कोयला चोरी, डोजल चोरी हो रही है या नहीं हो रही है ? क्या आप गंगाजल उठा सकते हो ?

श्री जयसिंह अग्रवाल :- कोरबा में डीजल चोरी, कोयला चोरी पहले भी होती थी और आज भी हो रही है। इसमें कौन सी बात है।

श्री अजय चंद्राकर :- अभी होती है या नहीं होती है?

श्री जयसिंह अग्रवाल :- केन्द्र सरकार की जो जवाबदारी है।

श्री अजय चंद्राकर :- अभी होती है या नहीं होती है?

श्री जयसिंह अग्रवाल :- मैं बोल रहा हूं कि पहले भी होती थी और आज भी हो रही है।

श्रम मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- केन्द्र की सरकार जवाबदार है। पूरा कोयला विभाग केन्द्र सरकार का है इसीलिए जवाबदार केन्द्र सरकार की विभाग है।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- आप डीजल और कोयला चोरी को छोड़िये। जो जमीन की चोरी हो रही है, आप केवल उसकी चिंता करिये।

श्री जयसिंह अग्रवाल :- कहां की जमीन चोरी हो रही है?

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- आप जतका कन व्यवस्था ला बनाय बर ..।

श्री जयसिंह अग्रवाल :- कहां की जमीन चोरी हो रही है?

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- जतका कन व्यवस्था ला बनाय बर रेवेन्यू मा ..।

श्री जयसिंह अग्रवाल :- सुनिये। आपने कहा कि जमीन चोरी हो रही है। कहां की जमीन चोरी हो रही, आप यह बताईये? हम उसको खोजवायेंगे।

श्री ननकी राम कंवर :- एक मिनट। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कोयला चोरी के संबंध में केन्द्रीय मंत्री जी ने (व्यवधान) फैक्ट्री को लिखा है। (व्यवधान) फैक्ट्री तो है नहीं। कि इसमें शासन और प्रशासन, दोनों चोरी करते हैं, इसमें जांच करिये। क्योंकि मैंने पत्र लिखा था, उसमें मेरे को आज भी पत्र का उत्तर आया है। तो यह सरकार की जिम्मेदारी है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चंद्रा साहब।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- राजस्व मा व्यवस्था सुधारे बर आप बहुत अकन बुता कर हौ, लेकिन ओकर से आम आदमी अतका कन परेशान होथे, शायद ओला ओइ आदमी जानही जेहर परेशानी ला झेलत हे। आज अगर ऑनलाईन मा हमर कोई रकबा कट गे तो आदमी परेशान हो जाही कि हमन वकील धर के एस.डी.एम. कार्यालय जाबो, गवाही साक्षी लिही अउ फिर मोल भाव हो लिही ओकर बाद फैसला करही अउ एस.डी.एम. हा फैसला कर भी दिही ता कागज ला धर के पटवारी करा जाबो ता पटवारी कहत हे भैया, मोर जो हिसाब-किताब हे तेहर तो ए करा होतेच हावय। अतके अकन परेशानी मा हे। शायद एक बार कलेक्टर सुन लिही, लेकिन पटवारी हर नइ सुनय। यह परेशानी रेवेन्यू मा हे। दूसर चीज, प्रशासनिक ..।

श्री अजय चंद्राकर :- सम्मानीय जी का क्या क्या अधिकार है, पूछिये न?

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- 15 साल आप मन भी सरकार चलाय हौ। 5 साल तक आप मन करा भी पूछत रहेन। उहूं ला पूछत रहेन।

श्री रामकुमार यादव :- विधायक जी, पहिली ओइ ला पूछा, तीर के ला।

श्री अजय चंद्राकर :- हाथी छाप महोदय, धारा 115, 116, सब में पटवारी मन के पूरा अधिकार हे। एस.डी.एम. ला निहित हो गे हे। अब हर पटवारी हलका ला एस.डी.एम. ला बना देना चाहिए। यह कहत हौं मैं हर।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- महूं हा तो ओई चीज ला कहत हौं कि एस.डी.एम. करा जाय बर लागथे। ये करा माननीय मंत्री जी ला किसान मन के ओइ समस्या ला तो बतात हन। शायद सुन लिही ता ठीक हे। भले ही अविश्वास प्रस्ताव तुमन लाय हौ, लेकिन ओई बहाना मा हमन ला भी बोले के मौका मिल गे हे ता बोलत हन। प्रशासनिक तंत्र अतका अकन हो गे हे कि ओमन सुनने वाला नइ हे। एके ठन बात आथे कि हाऊस ले निर्देश आही तेकरे काम करबो। कसना हाऊस हे ता। काबर कि पिछले कार्यकाल मा भी नान घोटाला के समय मा एक हाऊस के बात होइस। ये हर हाउस के गलती हे लागथे, बाहिर मा रइथे ता बढ़िया रइथे, लेकिन ओहर हाऊस मा जाथे ता बदल जाथे काबर मुख्यमंत्री जी भी येती बइठय ता बढ़िया किसान के बारे मा बोलय, बढ़िया तमाम चीज ला बोलय, लेकिन ओती जाय के बाद अब भाषा बदल गे। माननीय रामकुमार जी, भाषा बदल गे। अब ओ किसान मन के चिंता नइ हे, ओ जनता मन के चिंता नइ हे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमर तो ये मानना हे कि जो चुने हुए सरकार हे ओहा चलाय। बेहतर चलाही ता जनता बेहतर रिजल्ट दिही।

संसदीय सचिव, स्कूल शिक्षा मंत्री से संबद्ध (श्री द्ववारिकाधीश यादव) :- चंद्रा जी, आप अभी चांच मिनट पहले सरकार का धन्यवाद ज्ञापित किए हैं। पांच मिनट में आप इधर बदल गये।

उपाध्यक्ष महोदय :- चंद्रा जी, कृपया आप अपना भाषण जारी रखें। दस मिनट का समय है।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- भाई, किसान मन के हित मा जो काम होथे, तेला बतात हौं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री द्ववारिकाधीश यादव :- नहीं-नहीं, अभी आपने हमारे मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद बोला।

उपाध्यक्ष महोदय :- चंद्रा जी, आप उधर सीधे संवाद न करिये। आपका टाईम लिमिट है।

श्री रामकुमार यादव :- जैजैपुर में सबले ज्यादा कर्जा माफी अगर ककरो होईस होही ता आदरणीय विधायक केशव चंद्रा साहब जी के होय हावय।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- जी। माननीय मंत्री अकबर जी बताइस हे 3 लाख 55 हजार रूपये। आप भी सुने हा। नाम ला छोड़ देहे रिहीसे ता मैं कहे पूरा बतावा। अकबर जी, मोर 3 लाख 55 हजार रूपये कर्जा माफी हो हे।

श्री रामकुमार यादव :- एक ठन खाता मा हे। तुंहर इहां तीन-चार ठन खाता हे। मैं जानत हौं। (हंसी)

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- बाकी चीज ला तो मंत्री जी ला बताहा। ता ये दारी पूरा खाता सहित बताही।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप मन के बिजली बिल घलौक हाफ होइस होही।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- यही तो समस्या हे कि आप आदमी काबर परेशान हे? मैं प्रशासन तंत्र के बारे म काबर बोलत हौं? बिजली बढ़ गे, आगे सुधारने वाला कोई नइ हे। राशन कार्ड कट गे, कोई सुनने वाला नइ हे। पेंशन बर आदमी भटकत हे। यह सामान्य चीज जेकर लिये आदमी परेशान है तो प्रशासन ला ऐकर बर आप चुस्त-दुरूस्त करओ । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, किसान मन ला 5 साल, 7 साल हो गे हे ओमन ला मुआवजा नइ मिलत हे। ओकर जमीन में पुलिया बन गे, ओकर जमीन में सड़क बन गे, कोई सुनने वाला नइ हे । अभी भी प्रश्न लगाय हन ता कहत हें अर्धन्यायालयीन प्रक्रिया है, समय बता पाना संभव नहीं है तो आखिर प्रशासन के कोई न कोई जवाबदारी अउ जिम्मेदारी तो होही कि कतका दिन तक होही ? अउ शायद ऐला चुस्त-दुरूस्त कर लिहा तो हो सकत हे कि उहू मन अविश्वास प्रस्ताव लाये के बारे में नइ सोचतिन । इही लचर व्यवस्था हे जेकर कारण आज ऐमन ला सदन में बोले के मौका लगे हावय। माननीय उपाध्यक्ष, ये हमन के आखिरी...।

श्री रामकुमार यादव :- विधायक जी, एमन 15 साल में जैजैपुर वाला जो रोड नइ बनाये रहिन हें, अभी बनिस हे कि नहीं ? आप सही ला बताहा ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ओ सड़क में 417 किसान के मुआवजा लंबित है ।

श्री रामकुमार यादव :- ओ प्रक्रिया में हे भई । लेकिन रोड बनिस हे न । उहू हो जही ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सड़क बन गिस लेकिन 417 किसान ला मुआवजा काबर नइ मिलिस ? ये विधानसभा के जवाब हे अउ माननीय रामकुमार जी आप ला सड़क के चिंता हे ता किसान के भी चिंता होना चाहिए । जेन किसान के जमीन मा सड़क बनिस हावय, आज

आंदोलन करत हन ता आपके पुलिस हमन के ऊपर अपराध कायम कर दिस, डंडा अलग चलईस । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय रामकुमार जी जेन बात ला कहत हें ओ जिला के ए.डी.एम. आ के समझौता करिस । 5 जुलाई तक हम कलेक्टर के अध्यक्षता में एक बैठक करबो । 3 जुलाई के बैठक के हमन ला सूचना दिये गिस ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपका समय समाप्त हो गया ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, लेकिन जब कलेक्ट्रेड गेन ता कलेक्टर कहिथे कि बैठक स्थगित कर दिये गे हे । मैं कहेओं स्थगित कर दिये गे हे ता हमन ला बता दे रता । बोलथे तुमन ला बताये के कोई जरूरी नो हे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चंद्रा साहब, आपका समय समाप्त हो गया । माननीय खाद्यमंत्री जी ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ये प्रशासन के, कलेक्टर मन के रवैया हे । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप मोला बोले के अवसर दे हओ तेकर लिये धन्यवाद ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, विपक्ष के द्वारा 109 पाईंट का जो अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है वह असत्य का पुलिंदा है और विपक्ष ने जो अविश्वास प्रस्ताव लाया । मैं सोचता हूं कि यह समय उचित नहीं था । अंतिम सत्र, अंतिम दिन । हम लोगों ने इतने दिनों तक एक-साथ काम किया। यह माहौल खुशनुमा होना चाहिए था । आपस में हम लोगों ने एक-साथ काम किया और अंतिम समय में ऐसे विषय को लाकर के कभी उधर से तकरार, कभी इधर से तकरार । आज कई ऐसे अवसर देखने को मिले । जो संसदीय प्रक्रिया के लिये, परम्परा के लिये अच्छा नहीं रहा । भाषण की शुरूआत ही बहुत हल्के शब्दों से अशोभनीय एवं परम्परा के विरूद्ध अमर्यादित शब्दों का प्रयोग माननीय मुख्यमंत्री जी के लिये किया गया ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप विषय में आईये ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम अगर सीनियर लोग । हमसे भी सीनियर हैं । हम जो व्यवहार, जो शिष्टाचार लोगों को परोसेंगे वही नयी जनरेशन के लोग सीखेंगे । यह हम लोगों की नैतिक जवाबदारी है । संसदीय परम्परा में पक्ष होता है, विपक्ष होता है । अपनी-अपनी बात रखते हैं, विपक्ष सरकार को घेरने की कोशिश करता है । सरकार अपनी उपलब्धि बताता है । अब हम लोगों को चुनाव में जाना है । यहां हम लोगों ने जितना किया उस पार वाले ने भी, इस पार वाले ने उसका समय समाप्त । अब तो सीधे जनता-जनार्दन के पास जाना है और सर्टिफिकेट और अशीर्वाद उन्हीं को मिलेगा जिन्होंने काम किया है । मैं दावे के साथ बोल सकता हूं कि पूरे हिंदुस्तान में छत्तीसगढ़ में माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने जो किसानों के लिये किया है और पूरे हिन्दुस्तान में किया है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है। यहां 85 प्रतिशत से ज्यादा लोग खेती-किसानी का काम करते हैं। अगर सरकार कोई

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

योजना बनाकर 85 प्रतिशत लोगों को कवर्ड करती है, उनका कर्जा माफी करती है, उनके धान को 2500 रूपये में खरीदने की बात करती है, केन्द्र की आपत्ति के बाद राजीव गांधी किसान न्याय योजना लाया जाता है। पूरे हिन्दुस्तान में धान की कीमत 2040 रूपये मिलती है, लेकिन छत्तीसगढ़ पहला राज्य है जो 2640 रूपये दे रहा है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज अगर किसान मजबूत हो रहे हैं, ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है, यहां के बाजार गुलजार हैं तो तकलीफ किसको है? क्या किसानों की खुशी लोगों से नहीं देखी जा रही है? क्या इस बात के लिए अविश्वास है? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात की शुरूआत यहां से करूंगा कि धान के कटोरा हर धान म छलकाय, फरय फूलय और अंजोर बगरावे। छत्तीसगढ़ की धरती, छत्तीसगढ़ माता की आंचल जहां 2 करोड़ जनता आज खेल रहे हैं, कूद रहे हैं। आज देश-विदेश में लोग यहां की संस्कृति के प्रभाव को देख रहे हैं, इन शब्दों के साथ जय छत्तीसगढ़ ओ मोर महतारी, सूरत जोत म रोज करव आरती, इंद्रावती के पानी म तोर चरण पखराव, महानदी के पानी ओरछा के तोला परघाव, पानी-बानी फूल पतेरा बीरन माला पहिनाव, धन भाग हमर भेरी-भेरी सहराव, भीतरी कुरिया म तोला जवनाव, सफरी दुबराज के सुखर भोग लगाव। ठेठरी खुरमी अइरसा, तोर जोरन जोराव। (मेजों की थपथपाहट) आज छत्तीसगढ़ की संस्कृति, यहां की परंपरा, यहां के धरोहर को अगर किसी ने सहेजने का काम किया, किसी ने संवारने का काम किया तो भूपेश बघेल जी ने किया। उनकी जितनी तारीफ की जाये, उतनी कम है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, विपक्ष हमारे ऊपर आरोप लगाता है कि 5 हजार करोड़ का घोटाला कर दिये। इनको अपने गिरेबान में झांककर देखना चाहिए। उन लोगों को कोई नैतिक अधिकार नहीं है, जिनके ऊपर पहले से 36 हजार करोड़ का नान घोटाले का आरोप है और मैं बताता हूं कि माननीय डॉ. रमन सिंह ने गरीब कल्याण योजना अंतर्गत केन्द्र सरकार को अप्रैल, 2020 से दिसंबर, 2022 की अवधि में प्राप्त नि:शुल्क चावल के आवंटन का दुरूपयोग कर 5 हजार 127 रूपये के घोटाले का असत्य आरोप लगाया। सही बात यह है कि अप्रैल, 2020 से दिसंबर, 2022 की अवधि के दौरान केन्द्र सरकार के द्वारा राज्य सरकार को 33 महीना नहीं बल्कि 28 महीने का चावल 1 लाख 385 के हिसाब से हमको 28 लाख 10 हजार 780 टन चावल मिला है। वर्ष 2020-21 में 8 लाख जिसमें से 7 लाख 95 हजार 470 हमने वितरित किया, 7610 शेष रहा, 2021-22 में 11 लाख मीट्रिक टन मिला। हमने 10 लाख 87 लाख मीट्रिक टन वितरित किया। वर्ष 2022-23 में 9 लाख 3485 टन मिला, कुल 28 लाख, 10 हजार 780 टन चावल मिला। जिसमें से हमने 27 लाख 61 हजार 289 लाख टन चावल वितरित किया । शेष चावल 49451 टन, उपरोक्त से स्पष्ट होता है । हमने केवल 28 लाख, 10 हजार 780 टन में 27 लाख 61 हजार 289 टन चावल वितरित किया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, 28 महीने के कोरोनाकाल में 5 किलो आपका, 5 किलो केन्द्र का और 5 किलो कोरोना का और 28 महीने प्राथमिकता के कार्ड में सिर्फ 10 किलो वितरित

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हुआ है । यह बताइए कि जांच करवाएंगे क्या ? यह पढ़ाई को नहीं सुनते, उसको टेबल कर दें । हमारा आरोप है, जांच करवाएं ।

डॉ. शिव कुमार डहरिया :- झूठ बोल बोलकर गला बैठ गया भइया । थोड़ा शांत तो रहो ।

श्री अमरजीत भगत :- हमने जितना वितरित किया, उतने का क्लेम किया और शेष 49,451 टन था उसका हमने सब्सिडी क लिए क्लेम ही नहीं किया । इन महाशय लोगों से मेरा आग्रह है कि जब हमने उसका क्लेम ही नहीं किया है तो भ्रष्टाचार कहां से हो गया ? छत्तीसगढ़ को बदनाम करने के लिए आप मन-गढ़ंत आरोप लगाते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- जांच करवा दो । दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा ।

श्री अमरजीत भगत :- ये दो चिट्ठी रमन सिंह जी ने लिखी थी । कल प्रश्न लगाकर गोल हो गए, नहीं तो मैं सुनाया होता । आपने चिट्ठी लिखी भारत सरकार को, खाद्य मंत्रालय को और वहां से जांच हुई और इनका आरोप निराधार पाया गया। दूसरी चिट्ठी आपने लिखी थी उसकी जांच ही नहीं कराया क्योंकि वह तथ्यहीन थी ।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, यहां 10 मिनट तय हुआ है ।

श्री अमरजीत भगत :- मैं समाप्त कर रहा हूं । यहां की कला, यहां की संस्कृति को, आदिवासी नृत्य महोत्सव को देश और दुनिया देख रही है और सराह रही है । पक्ष-विपक्ष सब एक मंच पर नाच और थिरक रहे हैं, आपको उसमें भ्रष्टाचार दिखता है । आदिवासी नृत्य महाउत्सव से पूरे देश और दुनिया में एक तहलका मचा, कई राज्य उसका अनुसरण कर रहे हैं, आप उसका विरोध करते हैं । रामायण महाउत्सव, हमने पंचायत से लेकर जनपद और जनपद से लेकर जिला और राज्य स्तर पर किया । रामायण महोत्सव की राष्ट्रीय प्रतियोगिता हमने रायगढ़ में रखी । जब वहां पर लोगों ने आयोजन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया । उपाध्यक्ष महोदय, वहां जो लोग जो भजन गा रहे थे, रामा रामा रटते रटते, बीती रे उमरिया, कब आओगे प्रभु छत्तीसगढ़ नगरिया, कब आओगे प्रभु शबरी की नगरिया । लोगों की आंखों में आंसू, भावनात्मक रूप से उसमें डूबे हुए । उसमें मैथिली ठाकुर ने जो भजन गाया कि भगवान राम ने 14 साल के वनवस में सर्वाधिक समय छत्तीसगढ़ में बिताया । उसमें उन्होंने कहा, भाव था कि उड़ती चिरैया से पूछे कौशल्या, कईसे बाढे बबुवा हमार, तनि देखते रहिया । कौशल्या माता चिड़िया से पूछती है । भाव, उसमें भी इनको भ्रष्टाचार दिखता है । इनके मन मस्तिष्क में जो बात घुसी हुई है, उसको त्यागें और छत्तीसगढ़ के परिप्रेक्ष्य में संस्कृति के लिए जो काम हुआ है, खाद्य विभाग के लिए जो काम हुआ है, यनिवर्सल पीडीएस के लिए जो काम हुआ है । उसे पूरा देश सराह रहा है । मैं विपक्ष से आग्रह करता हूं कि आपने जो अविश्वास प्रस्ताव रखा है, उसे वापस ले लीजिए अन्यथा उसका हश्र क्या होना है, यह आपको भी मालूम है । आपने बोलने का अवसर दिया उसके लिए धन्यवाद् ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री प्रमोद कुमार शर्मा (बलौदाबाजार) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज जो अविश्वास प्रस्ताव आए हे, मैं ओखर समर्थन करथव। ऐ बात ला ऐ पार वाला भी जानत हे, ओ पार वाला भी जानत हे कि अविश्वास प्रस्ता एक फार्मेल्टी ए। हमन अगर तीन-तीन ठन वोट डालबो तभो हो पार हो जाही। अससे नइ हे कि सरकार गिर जाए लेकिन आज जेन चिलमिलाहट दिखत रहिस हे, ओ बिल्कुल गलत बात ए। मैं भ्रष्टाचार के बारे में बहुत सारा बात बोलहूं करके बना के रखे रेहेव लेकिन आज हमर अंतिम दिन हरे। आज पंचम विधानसभा के आखिरी दिन हावए, अउ आने वाला समय में हम पहुंचन की नई पहुंचन पता नहीं, ए सब भ्रष्टाचार के बारे में साढ़े चार साल बोले हन, ऐमा समझ में आ गे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- जेन बात बोलेस तेखर संग बिल्कुल नई पहुंचेस।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- नहीं-नहीं, बिल्कुल सही बात ए, माननीय मंत्री जी, हमर लिए दुर्भाग्य के बात ए, हम अइसे पार्टी के विधायक बनेन जेखर आज तक कोई ठिकाना नई हे। (हंसी) ना ओ कोति के रहेन ना ए कोति के रहेन। डेड़ साल जोगी कांग्रेस में चल दिस, दो साल कांग्रेस के समर्थन में चल दिस, मैं आज अपन पूरा मन के बात लो बोल के चाहत हंव। आप सब ला शुभकामना हे। हमला बहुत अच्छा लगिस। मैं एकदम अपन मन के बात ला बोलना चाहत हंव। हमर दुर्भाग्य हे कि हम अइसे पार्टी के विधायक बनेन कि अब हमर कोई ठिकाना नई हे, ना पार्टी के ठिकाना हे। ना ओ डाहर के टिकट दे के भरोसा हे ना ए डाहर के टिकट दे के भरोसा हे। (हंसी) ये स्थिति हावए। लेकिन आप मन ला शुभकामना हे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मोला इंहा बहुत दुख लगिस। मैं अपन पीड़ा व्यक्त करना चाहत हो। जब हम चुन के आथन, हमर क्षेत्र वाले मन चुन के भेजथे तो बड़ा गर्व के साथ आथन कि हम विधायक अन। अउ क्षेत्र वाले मन भी ए बात ला बोलथे, हमर क्षेत्र के विधायक ए कुछु मांग होही ता सदन मा आवाज उठाही। हम पहली बार इहां आयेन, हमला ए मालूम नई रहिस हे कि 15 साल ए मन का करिस, का नई करिस। हमला जानकारी नई हे, हम तो नया आयेन। लेकिन आप मन बोलत रथव कि 15 साल ऐ किए, वो किए, ता प्रभु आप मन अच्छा काम करव ना। अच्छा ठीक हे, ऐ मन लूटिस खाईस ता आपो मन लूटहू खाहू। हमला तो दिक्कत ऐ लगथे, हम छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े सदन में हन, अउ जनता हमला भेजे हे, अउ वहां अगर कुछ गलत होत हे ता हम अपन आवाज ए सदन मा उठाबो, अउ ओ मांग पूरा होही। लेकिन बड़ा दुख के साथ कहना पड़िस, साढ़े चार साल बीत गे, ऐ सदन के भी अइसे कोई अस्तित्व नई रहिस । हमर सामने में विधानसभा में गलत जवाब दिस हे, कतको शिकायत कर लेन आज तक कोई कार्रवाई नई होईन। ये बड़ा दुख के बात ए। हमला लगत रहिस हे, अउ भगवान करे छत्तीसगढ़ में अइसे छवि लोगों के बीच में मत जावए, कम से कम ओखर गरिमा ला बना के रखे रहाव, ए छत्तीसगढ़ के पवित्र सदन ए, यहां अधिकारी मन जो गलत जानकारी देवत हे, कम से कम ओखर उपर कार्रवाई करव। चलो ठीक हे, एमन भ्रष्टाचार करिस हे, आप मन का करत हव, आप मन ओला सुधारव, हमला लगिस कि ए हमर छत्तीसगढ़ के सरकार ए। हम जब चुन के आयेन ता हमला

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लगिस की हमर मुख्यमंत्री ए, छत्तीसगढ़ के सरकार ए, लेकिन यहां आ के पता चलिस, हमर सरकार नही, ए सिर्फ कांग्रेस पार्टी के सरकार ए। अगर हम अपन क्षेत्र से कोई योजना बना के भेजथन तो मैं कांग्रेस पार्टी वाला मन से पूछना चाहत हंव, यहां के सब सत्ता पक्ष वाले मन से पूछना चाहत हंव, आप बलौदाबाजार क्षेत्र वाले मन के मुख्यमंत्री नो हरो का, ओखर मन के सरकार नई ए का, का ओखर अधिकार नई हे, ओखरो मन के मांग ला पूरा करे के अधिकार हे, ए सरकार में हमन कोई भी योजना के मांग पूरा नई होईस हे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, क्षेत्र के जनता मन ला बड़ा उम्मीद रथे, ओमन ला इतना सब नेतागिरी के बारे में मालूम नई हे, ओमन एक सदन उपर भरोसा रखथय, ए सदन में अगर आवाज उठही ता हमर मांग पूरा होही। मे अइसे बहुत सार प्रूफ के साथ बता सकथव, यहां इतना सारा गलत-गलत जवाब आए हे, अउ कई बार शिकायत करे के बाद भी कार्रवाई नई होइस। मैं तो दावे के साथ कहत हंव, मोला बोले में कोई संकोच नई हे, ए मन सिर्फ कठपुतली ए, अगर असली कोई बइठे हे तो ओ कोति के अधिकारी मन पूरा चलात हे, ये जो पर्ची बना के देथे, ओमा सिर्फ पढ़े के काम होथए। ये वही अधिकारी मन ए, अगर भारतीय जनता पार्टी के सरकार आही ता गिरगिट बन के ओ कोति आ जाही, अभी कांग्रेस के सरकार ए ता ए कोति गिरगिट बन के हावए। वही घोटालाबाज अधिकारी मन हावए, पहली ए कोति रहिस हे, आज ओ कोति हावए। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज छत्तीसगढ़ के का स्थिति हे, अगर कोई अधिकारी ट्रांसफर हो के जात हे ता अपन साथ में ठेकादार ले के चलत हे। अउ सिर्फ पैसा वसूलो, पैसा कमाओ । ए बड़ा दुर्भाग्य के बात ए। ऐ आज के स्थिति हे। मैं ये नई कहात हंव की 15 साल में कुछ नई होईस, भ्रष्टाचार होईस होही, हमला ओखर बारे में नई मालूम लेकिन आज छत्तीसगढ़ के जो स्थिति हावए, ओ बहुत दयनीय हावए। हर जगह भ्रष्टाचार हे। मैं हर विभाग के भ्रष्टाचार प्रूफ के साथ रखे हंव लेकिन दुर्भाग्य के बात हे, मोला मालूम हे कि ए सदन मा बोलहूं तभो एखर कुछ होने वाला नई हे। उपाध्यक्ष महोदय, बोल के समय ला खराब करे के का मलतब हे। कुछ नई होना जाना हे।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए समाप्त करें।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- इतना जल्दी । (हंसी)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप स्वयं बोलना नहीं चाह रहे हैं। (हंसी)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- उहिच-उहिच ला तीन घाव रिपीट कर डरिस।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एहा काए बोलही?

उपाध्यक्ष महोदय :- अब कुछ होना ही नहीं है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- उहीच-उहीच ला तीन घाव रिपीट कर डारिस। (हंसी)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- प्रमोद भाई, आप स्वयं बोल रहे हैं कि बोलने का कोई फायदा नहीं है तो आप और समय क्यों ले रहे हैं?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मेरा यह कहना है कि अभी अपने मन की बात नहीं करनी है, अविश्वास प्रस्ताव पर बात करनी है। आप अविश्वास प्रस्ताव पर बात कीजिए।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ओला कोई फायदा नहीं हे तो काबर बोलही।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी लय में आए हवे। अब अविश्वास प्रस्ताव में बोलही।

श्री रामकुमार यादव :- महाराज, ते मोदी कस अपन मन के बात बोलत हस का?

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं पिछले 7-8 महीने से एक अधिकारी के शिकायत करत आत हो। बलौदा बाजार में एक एस.डी.ओ. हे। मैं मोर क्षेत्र के समस्या बतात हो। पिछले 7-8 महीना से लिखित में शिकायत, विधान सभा में ध्यानाकर्षण, प्रश्न लगा डरे हव।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय शर्मा जी, आप अविश्वास प्रस्ताव पर बात कीजिए।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं भ्रष्टाचार के बारे में बोलत हो, उही हा तो अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हरे।

उपाध्यक्ष महोदय :- नहीं, आप किसी विषय पर बोलिये।

श्री रामकुमार यादव :- उपाध्यक्ष जी, अपन मन के बात करही तो ऐखर वीडियो ला मोदी जी करा जोर के भेज देहु।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं पंचायत विभाग में बोलना चाहत हो। अतका सारा विभाग हे। मैं पिछले 8 महीना से एक अधिकारी के शिकायत करे हव। लेकिन वाह रे पंचायत विभाग, ओ अधिकारी खुलेआम बोलत फिरत हे कि मैं ऊपर हिस्सा देता हूं तो मेरा कौन क्या कर लेगा। यह स्थिति हे। मतलब, स्वाभाविक से बात हे कि ओमन ला कहीं न कहीं से संरक्षण मिलत हे। कलेक्टर साहब के जांच में भी ओहा गलत पाए गेहे। ओखर बाद ओ अधिकारी के जिला में पोस्टिंग हो गेहे अउ यही सब अधिकारी बइठे हे। मैं यहां बइठे नेता मन ला दोष नहीं देत हो।

श्री अजय चंद्राकर :- प्रमोद कुमार शर्मा जी, ओला महात्मा गांधी के संरक्षण हे।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- मैं धीरे-धीरे ओमा आवत हो। ओ ए बात ला खुलेआम बोलत फिरत हे कि मैं यहां पैसा कमाने के लिए आया हूं और मैंने इतने पैसे दिये हैं तो इतना पैसे वसूलूंगा। अगर ओखर खिलाफ कुछ करबे तो ओहा सीधा-सीधा आरोप लगा देथे ओखर काम ला नहीं करत हो, तेखर सेती करत हो। मैं एक आई.ए.एस. अधिकारी के बात करते हो। ओ बेचारी बोल नहीं सके। ए जगह शकुन्तला साहू जी तक हवे। उहु शिकायत कर डरे हे, लेकिन ओहा सत्ता पक्ष के हरे, तेखर कारण नहीं बोल सके। मैं दावे के साथ कहात हो कि अइसे बहुत सारे विधायक मन हे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- पम्मू, ओहा एक कनिक शिकायत करथे तो तुरंत 10 मिनट में कार्रवाई हो जथे।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- नहीं होए, भैय्या। का हे कि ओहा नहीं बोल सके। अइसे बहुत सारे विधायक साथी हे, जेमन बाहर में चाय पीथन तो बताथे। (हंसी) कसम से। मैं विधायक हो अऊ मोर एक झन पी.ए. हवे। ओखर ट्रांसफर बर अऊ पोस्टिंग के नाम से। चुड़ैल तक एक झन ला छोड़थे। ओखर ट्रांसफर ला 50 हजार रूपये के बिना नहीं करीस। ओला गरियाबंद भेज दे रीहिस हे। ओ जब तक जे.डी. ला 50 हजार रूपये नहीं दीस, तब तक नहीं करीस अउ ओहा टेबल लगा के वसूली करे बर बइठे हे। ए का हे? अइसे कई झन विधायक हे, जेमन खुद पइसा दे हे। ओला आप सुधार लो। ए सब बात ला ज्यादा पोल-पट्टी खोले से मतलब नहीं हे, लेकिन इतना जरूर तय हे कि ए सरकार पूरा भ्रष्टाचार में लिप्त हे। आने वाले समय में चाहे ए पार के सरकार आए, चाहे ओ पार के सरकार आए, लेकिन मैं आप सबसे इही निवेदन करत हो कि जेन अधिकारी मन पइसा खात हे अउ जनता ला लुटत हे, ओमन इहु कोती मजा मारथे अउ उहु कोती मजा मारथे। मैं फेर बोलते हो कि एमन बाजा वाले हरे। बारात कखरो रहाय, बाजा इही मन बजाही। आप ए मन ला पहली सजा देवो। ए मन इहु कोती बजाते, उहु कोती बजाथे। ए मन हो गिरगिरट से भी तेजी से रंग ला बदलथे। ए स्थिति हे।

उपाध्यक्ष महोदय :- अउ कोई दूसरा बाजा वाले हबे का ? (हंसी) चलिये, आप मुद्दे पर आइये।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मोर बोले के तात्पर्य ए हरे कि सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार ए अधिकारी मन करत हे। आप कम से कम ए अधिकारी मन ला कंट्रोल करो। मैं बिजली विभाग में टेण्डर के बारे में एक ठन शिकायत करे रहे हव।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपका समय समाप्त हो गया।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक मिनट। बाबा साहब के पास से ओ डहार से पर्ची आगे कि टेण्डर को निरस्त कर दिया गया है। ठीक हे, निरस्त होहे। माननीय मुख्यमंत्री जी तीर एखर पहुंचीस तो ओला सही में निरस्त करीस। लेकिन मैं ओ टेण्डर के बात नहीं करत हो। ओला सही में निरस्त करीस हे। ए अच्छा बात हे। एक अधिकारी के ओ टेण्डर ला एक आदमी ला दे के प्रोग्राम रहीस हे। मुख्यमंत्री जी करा शिकायत करीस, तब छत्तीसगढ़ के ठेकेदार ओला निरस्त कर दीस। मैं ओ टेण्डर के बात नहीं करत हो। आप ला बाबा साहब गुमराह कर दीस। मैं कांकेर के डेढ़ सौ करोड़ रूपये के टेण्डर के बात करे रहेव, जेन मा गलत तरीके से बिना बैंक गारंटी के ओला खोले गेहे। आप ओला निकाल के देख लो। अगर कोर्ट में केस लगा दुहु तो ओ मन जेल चल दीही। नियम के खिलाफ अइसे बहुत सारा चीज हवे, लेकिन का करबे ? छत्तीसगढ़ के सरकार ओला बढ़ावा देवत हे। कम से कम छत्तीसगढ़ के ला बचा लो। बहुत सारा विभाग हवे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं बिजली विभाग के बारे में चर्चा करत हो। बालको में दो बार से रमन सिंह जी के सरकार हा पॉवर प्लांट में जो बिजली में छूट मिलथे, ओला दो बार रिजेक्ट कर दे रीहिस हे। केप्टी पॉवर प्लांट के लिए उद्योग नीति के तहत् छूट दे जाथे। मैं विधान सभा में एखर प्रश्न लगाए रहे हव। ओला 3 हजार करोड़ रूपये के छूट मिलीस हवे अउ उहु गलत तरीके से। आप नियम में करेव। ठीक हे, कोई दिक्कत नहीं हे लेकिन जो 420 करके ओखरो छूट ला लेहे, जेन सन् में ओ उद्योग मंत्री से बिजली ला बेचे हे, ओखरो छूट लेहे। अइसे बहुत सारा प्रकरण हवे, जेखर विधान सभा में हमन ध्यानाकर्षण लगाए हन, प्रश्न लगाए हन। लेकिन मैं दुर्भाग्य के साथ कहात हो कि सही में कोई मतलब नहीं हे। इतना बड़े सदन से मोर विश्वास उठ गेहे कि यहां से तो कुछ नहीं हो सके। अब एखर भगवान मालिक हे। आने वाला समय के लिए सबला शुभकामनाएं। पता नहीं हम विधान सभा में पहुंच पाबो कि नहीं पहुंच पाबो, लेकिन एक बात कहाथौं कि यहां अतका जो गलत होवथे, कम से कम ओला सुधार लौ । कम से कम इतना जो गलत होवथे, भ्रष्टाचार होवथे, ओला आप रूकवा दौ । आपला बहुत-बहुत धन्यवाद । जय भारत, जय छत्तीसगढ़।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं इकर अविश्वास प्रस्ताव के विरोध करथौं अउ अविश्वास प्रस्ताव लाए हे, तेकर निंदा भी करथौं । अब आज के अविश्वास प्रस्ताव में मोला कबीर दास जी के एक ठी दोहा याद आ गे ।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय ।

ए मन हमर मन ऊपर ऊंगली उठाथे तो चार ठी ऊंगली इकरे तरफ रहीथे ।

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा सदन से बाहर जाने पर)

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, माननीय मंत्री जी का इतना खौफ है, देखिए सब सदस्य बाहर चले गए ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- ओ होथे कि उंहर मन **(XX)**[46], भाग जथे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप अपना भाषण जारी रखें ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अजय चन्द्राकर के **(XX)**, अब आना मत । उपाध्यक्ष जी, जल्दी समाप्त कर देवव ।

(श्री पुन्नूलाल मोहले सदन में उपस्थित रहने पर)

श्री रामकुमार यादव :- एक झन बबा ह बईठे हे ।

---

[46] (XX) अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- मंत्री जी, सब चल दिन त चल दिन, आपके ऊपर बबा के आशीर्वाद हवय ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- घासीदास बबा के पूरा आशीर्वाद हे, चिन्ता करे के बात नहीं हे ।

श्री रामकुमार यादव :- तैं सबके झोला ला राखत रहिबे ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, एमन भ्रष्टाचार के आरोप हमर मन के ऊपर लगाथे, 15 साल में रमन सिंह के सरकार में सिर्फ भ्रष्टाचार अउ **(XX)** के सरकार चलत रिहीसे । इकर 15 साल के कार्यकाल में 1 लाख करोड़ रूपिया से अधिक के घोटाला होए हवय । हमन मुख्यमंत्री जी भी इकर आय से अधिक सम्पत्ति के जांच करे बर ई.डी. ला अउ प्रधानमंत्री जी ला पत्र लिखे हे, लेकिन रमन सिंह जी के ऊपर कोनो कार्रवाई नहीं होवथे, काबर कि वही मेन **(XX)** हे अउ बाकी बैठे रिहीन हे, ओमन **(XX)** के साथी हे । ओ डर में भाग गे, ओमन बाहर में सुनत होहीं ।

उपाध्यक्ष महोदय, हमर मंत्री जी ह बतईस कि एमन 36 हजार करोड़ के नान घोटाला करे रिहीसे । ओमे रमन सिंह जी के जांच नहीं होवथे, ओकरो जांच होना चाहिए अउ चिटफंड घोटाला करे रिहीन हे, हमर गरीब जनता मन के पईसा ला लूट के खाये के काम करे रिहीन हे । एकर मुख्यमंत्री, मंत्री मन जाके उद्घाटन करत रिहीसे । गरीब मन के पईसा ला लूट के खाये के काम करिस । जो पईसा लूटे रिहीन हे, ओला हमर मुख्यमंत्री जी वापस करे के काम भी करत हवय । तो अईसे कई हजार करोड़ के घोटाला करिस । शराब घोटाला के बात करथें, सबसे ज्यादा घोटाला तो रमन सिंह जी के राज में होए हे । ओकरे समय में नीति बदले हवय । वो ह प्राईवेट दारू बनाने वाला मन संग मिलके रमन सिंह ह सबसे बड़े घोटाला करे हवय। ओकरो जांच होना चाहिए, उहूं ला **(XX)** [47] ह नहीं होवन देत हे । अउ कथे कि उत्पादक मन ला फायदा पहुंचाए बर 2012-17 के बीच में जतना शराब उत्पादक रिहीन हे, ओ मन ला फायदा पहुंचाए बर **(XX)** लेके काम ये भारतीय जनता पार्टी के नेता मन करे रिहीसे अउ बिना उद्देश्य के, बिना मापदण्ड के पालन करे ओ आई.एम.एफ.एल. (इंडियन मेड फॉरेन लीकर) के केटेगिरी ला शामिल करे के काम करिस अउ पूरा भ्रष्टाचार करे के काम, शराब घोटाला करे के काम तो रमन सिंह जी अउ ओकर सब मंत्री मन मिलके करे रिहीन हे । एकर से हमर राज्य ला 4400 करोड़ रूपया के आर्थिक क्षति होए रिहीसे । ओकर वसूली एकरे मन से करे जाये अउ हमन ला ई.डी., सी.डी. अउ का-का से डराए के कोशिश करथे, ओकर से हमर कांग्रेस पार्टी कभु डरे वाला नो हव । विदेश में भी खाता पाए रिहीन हवय, का **(XX)** नाम रिहीसे । ओकरो तो जांच हो जाये । गौ माता के नाम से पूरा भाजपा नेता मन घोटाला करे हे, 15 साल में 1677 करोड़ के घपला गौ माता के सेवा के नाम से ले हे। इकर सरकार में जतेक गौशाला रिहीसे, ओला अनुदान देवय अउ भाजपा वाला मन मोटा जाएं अउ गाय, गरूआ मन

---

[47] (xx) अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार विलोपित

Uncorrected and unedited/Not for Publication

दुबरा जाए । अईसे हाल इकर रिहीसे । गाय के नाम पर पईसा खाये के, घोटाला करे के काम भारतीय जनता पार्टी के मन करे हे अउ इंदिरा प्रियदर्शिनी बैंक के गुनेहगार भाजपा के नेता मन हे, सब जनता के पईसा ला खा गें अउ जब बैंक वाला से नार्को टेस्ट करिस त नार्को टेस्ट में ओकर मैनेजर ह 54 करोड़ रूपया के गबन के बात कबूलिस अउ नाम काकर लिस ? नार्को टेस्ट में रमन सिंह जी, बृजमोहन, राजेश मूणत, अमर अग्रवाल, रामविचार नेताम को **(xx)** । तो सबसे बड़े भ्रष्टाचार के जड़ तो येही मन हे। 15 साल मा जेतका घोटला करे हे, ओतका हिन्दुस्तान मा कोने सरकार नहीं करे रहिस होही। ये मन आरोप लगाथे, ये मन ला शर्म करना चाहिए। पनामा पेपर घोटाला, मोवा मा धान घोटाला। मोवा मा धान होबे नइ करय, फिर भी मोवा मा धान खरीद के पैसा ला खा गय। कुनकुरी मा चावल घोटाला, इनहरे समय के हे। ये बबा बैठे हे, येला सब पता हे। स्कूटर मा तको दूदी सौ क्विंटल डोहार दे रहिस हे। ये महाराज ला मालूम हे। तो ऐसे घोटाला ए मन करे हे। ओती ले एक झन आंख फोड़वा कांड के बारे में कहत रहिस हे। ओ हा पूर्व मंत्री रहिस हे। गर्भाशय काण्ड, नसबंदी काण्ड, डी.के.एस. में घोटाला, **(xx)** [48] के भतीजा मन के धान परिवहन मा घोटाला, अवैध पेड़ कटाई के घोटाला, **(xx)** के फर्जी प्रमाण-पत्र देय के घोटाला। **(xx)** के नाम पर दूसर कोई परीक्षा मा बैठकर **(xx)** ला पास कराय के घोटाला बस इनकहरे सरकार मा होइस। फर्नीचर घोटाला, विज्ञान उपकरण खरीदी घोटाला, 44 सौ करोड़ के आबकारी घोटाला, ये सब रमन सिंह के राज के हे। 1667 करोड़ रूपये के गौशाला के नाम पर चारा, दवाई निर्माण के बड़े घोटाला, बीज और दवाई के नाम पर यंत्र खरीदी के नाम पर बड़े-बड़े घोटाला, स्टेट वेयर हाऊस के निर्माण मा घोटाला। पूरा रमन सिंह के घोटाला के सरकार चलत रहिस हे। स्वास्थ्य विभाग मा मल्टी विटामिन सिरप, अजय चन्द्राकर भाग गय, ओ पार सुनत हे। इनकहरे समय मा मल्टी विटामिन सिरप जनता ला देना रहिस हे, लेकिन खुद सिरप पी गय, कई करोड़ के सिरप पी गय, स्वास्थ्य विभाग मा घोटाला करिस। जमीन में घोटाला, ये बृजमोहन अग्रवाल भाग गय, जलकी के जो जमीन के घोटाला होय हे, उहूं मा ये मन शामिल हावय। परिवहन चेक पोस्ट घोटाला, मोबाइल ला खरीदीस, ओहू मा घोटाला, मोबाइल चलिस नहीं अउ खरीद डरे रहिस तो ओखर पैसा ला जबर्दस्ती हमन ला देय लागिस। रतनजोत घोटाला, बगरंडा घोटाला, भदौरा के जमीन घोटाला, एखर मंत्री अमर अग्रवाल रहिस हे। ओ हा सब जमीन मन ला खरीद डारे रहिस हे। पुष्प स्टील घोटाला, चौबे कालोनी के जमीन घोटाला, इन्दिरा प्रियदर्शनी बैंक घोटाला, स्काई वाक के बड़े घोटाला, एक्सप्रेस वे घोटाला, एक्सप्रेस वे बनाय रहिस हे तेन हा 2 दिन मा भसक गय, लटपट बनाय हन, हमर मंत्री जी ध्यान देइस तो थोड़ा-बहुत काम होय हावय। बिलासपुर में सकरी के बायपास घोटाला, तेन्दूपत्ता खरीदी मा तीन सौ करोड़ के घोटाला करे रहिस हे। रतनजोत, झलियामारी मा, ये मन हमर आदिवासी मन के बात करथे। हमर आदिवासी बालिका मन के साथ जो

[48] (xx) अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार विलोपित

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अन्याय होय रहिस हे, इही मन करे रहिस हे। आपके जिला के मामला हे। तो जनता ला लूट के काम रमन सिंह अउ ओखर मंत्री मन करे रहिस हावय। ऐसे मत बोलत जाहूं तो लगभग 3 दिन लग जाही। अभी थोड़ा कम समय हावय।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमर सरकार, माननीय भूपेश बघेल जी के नेतृत्व मा सबसे अच्छा काम करत हे। हमर साढ़े चार साल मा हमर सरकार जन कल्याणकारी, गरीब मन के, हमर आधुनिक शिक्षा, स्वास्थ्य क्षेत्र मा जो अभूतपूर्व कार्य करे हे। भवन, सड़क, जतेक मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराय के काम करे हे, हमन जितना वादा करे रहेन, किसान मन के कर्जा माफ, बिजली के बिल हाफ, धान 2500 रूपया मा खरीदबो कहे रहेन, ये साल 2640 रूपया मिलत हावय, लगभग 2800 रूपया मिलही, सब ला राशन कार्ड, ए.पी.एल., बी.पी.एल. सब ला राशन कार्ड। जितना जनता के विकास के काम होवत हे, इखर समय हो रहिस हे का ? इनकहर समय मा भारतीय जनता पार्टी के राज में तो भ्रष्टाचार, घोटाला चलत रहिस हे। हमर सरकार पूरा देश मा सबसे अच्छा काम करत हे। हमर विभाग मा भी बढ़िया काम होय हावय। नगरीय निकाय मा इनकहर सरकार के समय कर्मचारी मन ला 8-8, 9-9 महीना तनख्वाह नहीं मिलत रहिस हे। ए.टी.एम. कार्ड बना-बना के दे रहिस हावय। उनखर ए.टी.एम. कार्ड ला दलाल धरे रहिस हे। तनख्वाह मिलय अउ तुरंत पैसा ला दलाल निकाल लेवत रहिस हे। हम ओ सब ए.टी.एम. मन ला बंद करायेन। आज हर कर्मचारी मन ला महीना के 7 तारीख के तनख्वाह मिलत हावय। नगर पालिका के अध्यक्ष घलो आय हे, ओला पता होही, बैठे हे । अऊ विकास के भी काम करथन, हमर मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में नगरीय निकाय में सबसे अच्छा काम होय हे, एको ठन घोटाला नई बता सकय । वो कथे जैम पोर्टल घोटाला, अरे जैम पोर्टल ला तो केन्द्र के सरकार नरेन्द्र मोदी चलावथे, सबले बड़े घोटाला करे के काम तो वही करथे, एमा काय घोटाला होय हे बता ना, जतका घोटाला करथे केन्द्र सरकार करथे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय मंत्री जी । आपका समय समाप्त हो गया है ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इंखर सरकार हा इंहा तो भ्रष्ट्राचार करिस, दिल्ली में भी भ्रष्ट्राचार में लगे हे, केन्द्र में मंत्री हा केहे रहिसे, न खाऊँगा न खाने दूंगा, अब कहाथे किसी को नई बचाऊंगा, अकेले खाऊंगा और मेरे मित्र लोग खायेंगे, दूसरा लोग को खाने नई दूंगा । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पूरा देश ला बेचे के काम करथे । का-का चीज ला नई बेच दिस, बाल्को ला बेच दिस, नगरनार ला बेचेके काम चलथे, हवाई अड्डा, रेल्वे स्टेशन, जतका सरकारी संपत्ति वोला बेचेके काम करथे, केहे रहिसे अच्छे दिन आयेंगे, कति अच्छे दिन ए, 15 लाख सबके खाते में आयेंगे, 2 करोड़ रोजगार युवाओं को दिलायेंगे, कहां मिलिस ? नीरव मोदी, मेहुल चौकसे, एमन धर के भाग गे । इंहा तो करत रहिसे, दिल्ली में भी उही काम चलथे । इंहा 2100 में धान खरीदबो कहे रहिसे, 300 बोनस देबो कहिन, लखमा ला केरे रहिसे कि तुमन ला एक-एक ठन जर्सी गाय दुहूं, लखमा गेरवा धरके खोजत

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रहिसे, जर्सी पता ही नहीं चलिसे । 500 बेरोजगारी भत्ता देबो कहिन, इंखर जो घोषणा रहिसे, 2003 के, 2008 के, 2013 के, एको ठन घोषणा ला पूरा नई करिसे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये समाप्त करें, माननीय पुन्नूलाल मोहले साहब ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इंखर सरकार में 15 साल में भ्रष्ट्राचार, कमीशनखोरी के अलावा कोई काम नई होय हे, हमर सरकार सबसे अचछा चलथे, इंखर अविश्वास प्रस्ताव ध्वस्त हो जाही । एखर केहे से जनता नई आने वाला हे । जनता के पूरा मैंडेट हमर भाई भूपेश बघेल जी के साथ हे, हमर सरकार फेर आही, अऊ 2024 में दिल्ली में भी हमर सरकार बनही । धन्यवाद ।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- मैं अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन करते हुये अपनी बात रखना चाहता हूँ । सरकार ने जो 36 वादे किये थे, उसमें नि:शुल्क आवास देने की योजना थी । प्रधानमंत्री जी ने 7 लाख आवास की राशि भेजी थी, एक प्रकार से उस राशि को सरकार ने वापस कर दिया और अपने हिस्से की राशि नहीं दिया । इस कारण गरीब लोगों का आवास नहीं बना और वर्षा ऋतु में उसकी क्या स्थिति है ? लोग बेघर हो चुके हैं, दु:खी है, उदास हैं, इसी कारण हम लाये हैं अविश्वास और जनता है उदास, इस कारण हम लाये हैं प्रस्ताव अविश्वास और लोगों नहीं मिल रहा है आवास और नहीं किये ये पास, इसी कारण हम लाये हैं अविश्वास, अविश्वास का मूल कारण है कि अपने हिस्से की राशि न देना, यही है किस्सा और नई दिये अपना हिस्सा । दूसरा अगर बात करें तो सरकार ने सर्वे कराया है, सर्वे में पिछली आवास की राशि नहीं दिये है, अब सरकार के कार्यकाल समाप्त होने की स्थिति में है, चुनाव आने वाला है, आवास कब बनेगा, यह लोगों के मन में है और नई है विश्वास सरकार के प्रति, इसलिये हम अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं । सरकार ने कहा था कि बिजली को करेंगे हम हाफ, बिजली का बिल नहीं किये हाफ, यहां तक 400 यूनिट किये हाफ, सरकार हो जायेगी अब हाफ, क्यों नहीं किये हैं माफ ? यह हमको जानने की जरूरत है । अगर हम बिजली की आगे बात करें, माननीय भूपेश जी बिजली मंत्री थे, मुख्यमंत्री जी ने अब हमारे माननीय टी.एस.साहब को दे दिया है, टी.एस.मतलब टेक्नीकल सेंक्शन होता है, तीन महीना बचा है ... ।

श्री रामकुमार यादव :- ए बबा । बिजली बिल होगे हे हाफ, झन लबारी न मार गा मोर बाप ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- तोला मालूम नई ए बाप, बिजली बिल नई ए हाफ । यह टी.एस.साहब को मिल गया है । टी.एस.साहब के समय ट्रांसफार्मर खराब हो रहे हैं । कौन सा ट्रांसफार्मर खराब है, मैं यह नहीं जानता । पूरे क्षेत्र में ट्रांसफार्मर खराब है । ट्रांसफार्मर बहुत ज्यादा खराब हो रहे हैं । गर्मी में हो रहा था और अभी वर्षा ऋतु में हो रहा है । मेरे क्षेत्र में 50 जगह ट्रांसफार्मर खराब है, अगर बिजली की बात तो चार से पांच घण्टे बिजली कटौती हो रही है, यह सिंहदेव साहब बोल रहे थे । जब से सिंहदेव जी आये हैं, बिजली कटौती हो रही है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- कोई जगह बिजली कटौती नई होत हे, तोर ट्रांसफार्मर खराब हे ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- तोर ट्रांसफार्मर खराब हे, समझ ले । बहुत समय हे तोर ट्रांसफार्म के टाईम बर, फिकर मत कर । हर बात म बोलना नइ चाही । ट्रांसफार्मर के कई बात अचंभा हे, कई गांव में बिजली के टूट गे हे खंबा, तार नइ हे, तार बेतार-बेतार हो गे हे, इस कारण हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं, अगर मैं बात करूं शराबबंदी की तो यह सरकार गंगाजल की कसम खाई थी और माननीय मुख्यमंत्री जी बोलते हैं कि हम गंगा जल की कसम नहीं खाये हैं। आप बता दीजिये कि आप किस चीज की कसम खाये हैं। गंगा जल की कसम इनके नेता खाये कि कौन खाये नहीं पता, तो खाये हैं कसम अउ वादा नहीं निभायेंगे तो हो जायेंगे भसम। अब शराबबंदी किये हैं तो शराबबंदी तो बंद है। यहां तक कि यह घर पहुंच शराब पहुंचा रहे हैं। अगर बिक्री केंद्र है, तो इनके प्राईवेट ठेकेदार काम कर रहे हैं और दूसरा अलग है तो एक का पैसा पॉकेट में जाता है और एक का पैसा सरकार के पॉकेट में जाता है।

सुश्री शकुंतला साहू :- बबा एक मिनट, तोर घर में शराब जाथे कि नहीं, तेला बता दे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- शकुंतला तै बैइठ जा नहीं तो हो जाही तोर बला। तोला करना हे भला तो बैइठ जा शकुंतला।

सुश्री शकुंतला साहू :- नहीं, तोर घर में जाथे कि नहीं, पहले तेला बता ना ?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- उपाध्यक्ष महोदय, शराब में घर पहुंच सेवा है। सरकार शराबबंदी करने के बजाय घर तक शराब पहुंचा रही है। यह सबको कर रहे हैं खराब और बेच रहे हैं प्राईवेट शराब। इस कारण हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। यदि हम शिक्षित बेरोजगार की बात करें। शिक्षित बेरोजगार भत्ता, पाये हैं सत्ता और नहीं दे पा रहे हैं शिक्षित बेरोजगारों को पूरा 2500 रूपये भत्ता। अभी आप ही ने कहा था 18 लाख शिक्षित बेरोजगारों का रजिस्ट्रेशन हुआ है। अब रजिस्ट्रेशन के बाद पूरा पैसा देना था। आपने जब वादा किया था तो यह तो नहीं कहा था, जब किये थे वादा तो वादा निभाना पड़ेगा नहीं तो सरकार को जाना पड़ेगा, नहीं तो पछताना पड़ेगा। इस कारण हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। अब भत्ता नहीं दे रहे हैं। आप ही ने कहा था कि रजिस्ट्रेशन कर रहे हैं और आपको रजिस्ट्रेशन कराने वालों को भत्ता देना चाहिए। अगर अब मैं कहूं कि राजीव मितान क्लब हे, वह लबालब है और बना है राजीव मितान क्लब हो रहे लबालब। शिक्षित बेरोजगारों के लिये पैसा नहीं है। लबालब में कितना पैसा दे रहे हैं, यह समझ लीजिये। एक है इलेक्टेड और एक है सलेक्टेड। पंचायत वाले इलेक्टेड है, ग्राम पंचायत वालों को काम ही नहीं मिल रहा है। इधर माननीय राजीव गांधी योजना, पड़ेगा सोचना। यह सब बात को आपको सोचना है। आप उस क्लब को कितना पैसा दे रहे हैं, पंचायतों से ज्यादा पैसा दे रहे हैं। पंचायती राज, हो रहा है कामकाज, सब लोग है नाराज, वह भी (व्यवधान)।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उपाध्यक्ष महोदय, वर्ष 2003 आपने अपने घोषणा पत्र में लिखा था कि 500 रूपये बेरोजगारी भत्ता देंगे। लेकिन 15 सालों में आपने एक भी बार बेरोजगारी भत्ता नहीं दिया है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आप लोगों में है दम, ऐसी हो जाओगे कम, बात मत करो हर दम। यह आपके लिये आवश्यक है। इस कारण राजीव मितान योजना है, अब राजीव मितान कैसे कर रहा है आपका ध्यान, बना दिये उनको शियान। पैसा दे रहे हैं, वहां उनके लिये पैसा है लेकिन ग्राम पंचायतों के लिये पैसा नहीं है। वह पछता रहे हैं, श्राप दे रहे हैं। इधर तो शराब पी रहे हैं और श्राप दे रहे हैं और लोगों का समय हो रहा है खराब। अब वह आंदोलन में लगे हुए हैं और सीधा-सीधा रायपुर तक पहुंच गये हैं। सरकारी कर्मचारी और अन्य लोग आंदोलन करते थे लेकिन अभी तक पंचायत के लोग आंदोलन नहीं करते थे। यह आपको और हमको सोचने की आवश्यकता है, मैंने इस कारण आपको यह बातें बताई है। यदि हम पानी की समस्या की बात करें। पानी की क्या कहानी है ? वह कमीशन चल रहा है, राजीव मिशन, उसमें है कमीशन, कौन दे हे उसका परिमशन ? यह आपको और हमको सोचने की आवश्यकता है। इस कारण हम लोग अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। सरकार के प्रति अविश्वास प्रस्ताव लाने का और मतलब बता देता हूं। अगर हम बात करें बिजली की कटौती हो रही है।

श्री अमरजीत भगत :- आप देख-देख के बोल रहे हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- भैया, ऐसा है कि आप इंग्लिस जानते हैं लेकिन मैं नहीं जानता हूं।

श्री नारायण चंदेल :- वह स्वप्रेरणा से बोल रहे हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- अब यह है कि आप शिक्षित बेरोजगारों को भत्ता नहीं दे सके। अब आप उतने लोगों को नहीं दे पाये भत्ता, तो चले जायेगी आपकी सत्ता।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तै चिंता मत कर, कतको कर ले एती-तेती, तब ला आही हमर सत्ता। (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- बबा, भई गे तोर लगा दे लाक, अउ कब दिहा तुमन 15-15 लाख।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- अब एक और बात बता दूं। यहां टी.एस. साहब है, अगर हम स्वास्थ्य विभाग की बात करें। मेरे क्षेत्र का मामला है। जब आप कह रहे हैं कि आप उस योजना में फायदा देंगे। एक आदमी बीमार पड़ा और बीमार पड़ने के बाद उसको ब्लड कैंसर हो गया और वह ब्लड कैंसर में मर गया क्योंकि उसके पास पैसा का अभाव था। उनको अपना खेत बेचना पड़ा और खेत बेचने के बाद उनकी मृत्यु भी हो गयी। यदि वह पैसा मिल जाता तो उसका जीवन बच जाता। वह उस क्षेत्र का रहने वाला है। वह भी है बघेल, पर वह सतनामी बघेल है। यह सरकार की योजना फेल और बघेल योजना है फेल।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- हम बघेल, बघेल हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- नहीं। आप बघेल, बघेल तो हैं, पर यह आपकी योजना है फेल। सुन ले जी बघेल। अगर उनको पैसा मिलता तो बड़े दु:ख की बात कह रहा हूँ कि उस योजना में ऐसे लोगों का भी नाम है। अभी आपको इन बातों पर सोचना चाहिए। मैं आपको और एक बात बता दूं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब लबारी मारकर तें मत कर खेल।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मेरा नहीं है खेल। आपकी योजनाएं हैं फेल। आप ज्यादा मत खेलिए खेल। आप बोल रहे थे आप देखिए आपके चावल काण्ड में क्या हुआ। वहां आप बहुत से चावल के पैसे की वसूली कर रहे हैं, आप ही उसकी वसूली कर रहे हैं। आप कितने लोगों से वसूली कर रहे हैं तो आप यह देखिए कि पी.डी.एस. के चावल का क्या हुआ? वह दिल्ली से आया और कहां गया? यह आपको सोचना है। अगर हम फिर एक दूसरी बात कहें। मैं योजना में कहना चाहूंगा कि किसी को भी स्वास्थ्य की योजनाओं में पैसा नहीं मिला है। उन्हें समय के अनुसार पैसा मिले। यहां बीमारी में जरूरत के समय बहुत से लोगों को पैसा नहीं मिलता। अगर मैं फिर दूसरी बात कहूं सुन ले जी बघेल, मुख्यमंत्री बघेल। ज्यादा मत खेलो खेल। नहीं तो आप हो जाएंगे फेल। अब आपको यह सोचने की जरूरत है इन परिस्थितियों में मैं सरकार से यह बोलना चाहता हूँ।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय मोहले साहब आपका समय समाप्त हो गया है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रेडी टू ईट सरकार की योजना नहीं है फिट।

श्री उमेश पटेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उनका समय समाप्त नहीं हुआ है।

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उनका समय समाप्त नहीं हुआ है। उनके बोलने का समय समाप्त कर दीजिए। (हंसी)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय मोहले जी माने तो। वह माने बर तैयार नइ हे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय,(व्यवधान) यदि प्रदेश में यह योजनाएं आतीं तो अच्छी चलतीं। इन सब बातों को बताने की आवश्यकता थी। इस कारण मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि हमने यह अविश्वास प्रस्ताव लाया है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

वाणिज्यिक कर (आबकारी) मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 4 सालों तक प्रतिपक्ष के लोग सोये हुए थे। आखिरी तक हम लोग दोस्ती, मजा के साथ रहे। सत्र के आखिर में माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी ने अविश्वास प्रस्ताव लाया है। इस बात की सबको खुशी होनी चाहिए कि इन 15 सालों में लोग छत्तीसगढ़ को भूल गये थे। जब से छत्तीसगढ़ प्रदेश में भूपेश बघेल जी की सरकार, कांग्रेस पार्टी की सरकार बनी तब से हमने गढ़बो छत्तीसगढ़ का नारा देकर, हमने हिन्दुस्तान में

ही नहीं, दुनिया में नाम कमाने का काम किया। हम लोग बस्तर से आते हैं। बस्तर का नारा अलग है। वह है विश्वास, विकास और सुरक्षा। आज बस्तर बदल रहा है। यह जो अविश्वास प्रस्ताव लाने वाले लोग हैं इनके कार्यकाल के 15 सालों में बस्तर में 700 गांव खाली हो गयें। तेलंगाना में लोगों ने पलायन किया। लोग आंध्रप्रदेश में पलायन करके जी रहे हैं। यह कौन है ? ताड़मेटला में 300 घरों को जलाया गया। यह भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने आदिवासी लोगों को बर्बाद करने का काम किया। आज नहीं तो कल आपका कभी यह बुरा काम खत्म नहीं होगा। उस समय हमारे बस्तर के 3 हजार स्कूलों को बंद कर दिया गया। लोकतंत्र में कोई भी विकास के लिए चुनाव लड़ते हैं। अपने क्षेत्र में स्कूल खोलने के लिए चुनाव लड़ते हैं। हिन्दुस्तान में यह पहली डॉ. रमन सिंह जी की सरकार थी जिन्होंने 3 हजार स्कूलों को बंद किया। मैं माननीय भूपेश बघेल जी को बधाई देता हूँ। आज जगरगुण्डा, आमापल्ली, उरसूर, अबूझमाड़ में स्कूलें चल रही हैं। वहां पर आत्मानंद स्कूल चल रहे हैं। आज हमारा बस्तर बदल रहा है। बस्तर में लोगों को जाने से डर लगता था। वहां ऊपर हवाई मार्ग से हेलीकॉप्टर में जाते थे। हमें आज इस बात की खुशी है कि बस्तर में केन्द्र के गृहमंत्री आते हैं वह पोटमपाल जाते हैं, जहां पर बिजली नहीं थी वह नक्सलाईट का गढ़ था। मैं माननीय गृहमंत्री जी को बधाई देता हूँ उन्होंने उस गांव में जाकर, सरकार की पोल खोलकर छत्तीसगढ़ को बदनाम करने की कोशिश की, लेकिन वहां जाने के बाद उनका दिल बदला है। उन्होंने पोटमपाल में जहां बिजली नहीं आती थी वहां आंध्रप्रदेश, तेलंगाना से बिजली आती थी उन्होंने गृहमंत्री जी ने उस गांव में जाकर सरकार को बधाई दी। वहां पर स्कूल चल रहे थे। वहां पर गुरूजी का क्वार्टर था, वहां पर लोगों को सोसायटी का चावल मिल रहा था। जब इनकी 15 साल सरकार थी तो जगरगुंडा, चिंतलनार, चिंतलगुफा, भेज्जी बाजार बंद कर दिये थे, क्या यह लोग आदिवासी विरोधी नहीं हैं? इनका आदिवासी विरोधी चेहरा नहीं है? आज बस्तर बदल रहा है। हमारी भूपेश बघेल की सरकार ने धान का रेट बढ़ा दिया, वहां तेंदूपत्ता, इमली, महुआ आदि वनोपजों का रेट बढ़ा दिया। लेकिन इनकी 15 साल की सरकार में महुआ झाड़ को काटने का प्रयास कर रहे थे। 2 रुपये किलो में महुआ बिका करता था। लोग महुआ को बाजार में फेक रहे थे। आज आप उस क्षेत्र में, ग्राम में जाकर देखिये चाहे वह बीजापुर, सुकमा हो, हर गांव में ट्रेक्टर हो गया है, मोटर साइकिल हो गई है, सड़क का निर्माण हो गया है। दोरनापाल से जगरगुंडा होकर आवापल्ली बीजापुर मार्ग तैयार हो जायेगा, अब वहां दो महीने बाद गाडी चलने लगेगी। वहां बस चलेगी। लेकिन कौन सी सरकार है जो बस बंद करती थी, बाजार बंद कर देती थी? हम लोग चिल्ला-चिल्ला कर बोल रहे थे कि बाजार बंद मत करो, आंगनबाड़ी बंद मत करो लेकिन हमारी एक बात नहीं सुने। आदिवासी लोगों को, बाजार जाने वाले लोगों को भीड़ में ले जाकर 4 गोली मारे, उसके कपड़े में छेंद नहीं हुआ। यह नकली आदिवासी लोगों को मारकर जेल भेजते थे। मैं माननीय भूपेश बघेल जी को बधाई देता हूं कि 1700 आदिवासियों को छोड़ा है। अब वहां के लोग बाजार, मेला, मड़ई कर रहे हैं। बस्तर बदल रहा है। हिन्दुस्तान में हमारे छत्तीसगढ़

के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी पहले नंबर पर आये, उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक जी 25 साल से हैं, पिछले समय पूरे देश में दूसरा नंबर पर आया था और इस बात की खुशी है कि इस साल में भूपेश बघेल जी पहले नंबर पर आये हैं और दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल दूसरे नंबर पर आये हैं। आपके जितने मुख्यमंत्री हैं, 17 साल से शिवराज मामा हैं, वह कहीं नहीं लगते हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बुल्डोजर वाले बाबा चौथे नंबर पर भी नहीं हैं। यह सरकार चल रही है। हम लोगों को इस बात की खुशी है कि आने वाले समय में लोगों को, मैं तो पढ़ा लिखा नहीं हूं, मैं तेंदूपत्ता तोड़ा हूं, गोदी खोदा हूं, जिस गरीब घर में पैदा हुआ हूं यहां कोई भी उस तरह से गरीब घर में पैदा नहीं हुआ होगा। हमारे बस्तर में स्कूल, आश्रम चल रहे हैं। कॉलेज बनाये हैं। वहां अंग्रेजी स्कूल खोले हैं। हमारे यहां कर्नाटक, राजस्थान, उत्तरप्रदेश से कलेक्टर आते हैं। भूपेश बघेल जी को लोग 20 साल बाद याद करेंगे कि यहां के बच्चे कलेक्टर बनकर कर्नाटक में जायेंगे। वह इंग्लिय मीडियम स्कूल में पढ़ रहे हैं। अभी हमारे बस्तर में सांसद लोग आये थे। माननीय मुख्यमंत्री जी से बोले कि हम लोग तीरथगढ़ देखने जायेंगे। मैं भी उनके साथ गया था। आपके उत्तरप्रदेश से, उड़ीसा से 20 सांसद आये थे। वह मेरे साथ तीरथगढ देखने गये। लोहण्डीगुडा में अंग्रेजी स्कूल को देखे। वहां बच्चे लोग अंग्रेजी में बात कर रहे थे। वह लोग वास्तव में बता रहे थे, अपने दिल के साथ बात रहे थे कि बस्तर बदल रहा है, छत्तीसगढ़ बदल रहा है, यह बच्चे इंग्लिश से बात कर रहे हैं। यह बात होती है। यह जो अविश्वास प्रस्ताव घोटाले के ऊपर घोटाले करने वाले लोग लाये हैं। इस देश में क्या हो गया है। एक दिन पेपर में आया कि शरद पवार जी का भतीजा इतना घोटाला किया और उसके बाद उनको उप मुख्यमंत्री बनाते हैं और सब घोटाला खत्म हो जाता है। हिन्दुस्तान में अगर कोई घोटाला करने वाली सरकार है तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। हमारी सरकार देवगुडी, गोटूल, पुजारी, पेरमा, गैंता, कोटवार, पटेल को पैसा देती है, किसान को पैसा देती है, राजीव गांधी किसान न्याय योजना के तहत पैसा देती है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार लगातार लूटने का काम कर रही है। डीजल-पेट्रोल का रेट क्यों बढ़ा है? आज आजादी को 70-75 साल हो गये। 75 साल में कांग्रेस की सरकार दिल्ली में 60 साल राज की होगी। गैस का रेट 60 साल में 400 रूपये था, लेकिन 9 साल में 1200 रूपये हो गया। यह कैसे हो गया? हर आदमी को जी.एस.टी. लगता है। बच्चे का दूध पीने में जी.एस.टी., आदमी के खाने में जी.एस.टी.। यह महंगाई कौन बढ़ा रहा है? शायद यह सरकार को देश में नहीं रहना चाहिए। आज हमारे नेता कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक भारत जोड़ो आंदोलन करता है। भारतीय जनता पार्टी का नारा था कि कांग्रेस मुक्त भारत बनेगा। आने वाला वर्ष 2024 में भारतीय जनता पार्टी मुक्त भारत बनेगा। (मेजों की थपथपाहट) यहां नौजवान देख रहे हैं। उनको नौकरी नहीं मिल रही है। बेरोजगार हो रहे हैं। पूरे भारत में कांग्रेस के नेता लोग कमा कर रखे थे। बड़ी-बड़ी फैक्ट्री, रेल लाईन, सबको बेचा जा रहा है। क्या हो गया? यह क्यों नहीं बताते हैं? आज जी.एस.टी. का पैसा नहीं मिल रहा है। यह यहां पर हमेशा शराब घोटाला कहते हैं। हमने यह शराब

घोटाला नहीं किया है। यह जो नीति है, उसको रमन सिंह जी ने बनाया, यह नीति बृजमोहन अग्रवाल जी ने बनाया। उस नीति में हम चल रहे थे तो घोटाला हो गया। हम लोगों ने यहां पर गोठान बनाया। हमने गोठान शुल्क 10 रूपये लिया। 10 रूपये लेने से 1 हजार 60 करोड़ रूपये प्राप्त हुआ। हमने उस पैसे को गोठान में लगाया।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, समाप्त करें।

श्री कवासी लखमा :- उपाध्यक्ष महोदय, 2 लाख 220 करोड़ रूपये खर्च किया। हम लोगों ने कोरोना शुल्क व अन्य शुल्क विकास के लिए बढ़ाया, उससे 20 करोड़ रूपये आया। उसमें से हम लोगों ने हमारे अंग्रेजी स्कूल को बनाने का काम किया। आपके 15 साल के कार्यकाल में जो बिल्डिंग टूटा-फूटा था, उसको मरम्मत करने का काम उस पैसे से कर रहे हैं। इनको घोटाला करने का आदत हो गया है। इन्होंने 15 साल घोटाला किया। धान का घोटाला किया।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, रजनीश सिंह जी।

श्री कवासी लखमा :- उपाध्यक्ष महोदय, हम लोग यहां विधान सभा में खड़े हैं। यहां पर भी इन लोगों ने धान का घोटाला किया था। महुआ घोटाला मोटर-सायकिल में ..।

श्री शिवरतन शर्मा :- मंत्री जी, आप स्कूल की खूब बात कर रहे हैं। मैं वहां 5 साल बैठ कर आपको समझाते रहा कि कुछ पढ़ लीजिये, पढ़ लीजिये। तैं हर कतेक बड़ नेता रइथे। आपने क्यों नहीं पढ़ा? उसके लिए जिम्मेदार कौन है?

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, मंत्री जी।

श्री रामकुमार यादव :- पढ़े नइ हे ता काय हो गे, ओहर गढ़े हे। तुमन कस नो है।

श्री कवासी लखमा :- शिवरतन जी, मेरे को भगवान ने पैदा किया। मेरे को बिना पढ़े-लिखे नहीं रहना। हमारा बाप ने पैदा किया है। मैं नकली पढ़ाई नहीं करूंगा। मेरे को तो बचपन से पढ़ने आता है, इसलिए तो आप जैसा बोलते न तो हम विदेश से सर्टिफिकेट लेकर आते। लेकिन मैं यह काम नहीं करूंगा। मैं ओरिजिनल आदिवासी हूं। अभी बाबा बोल रहे थे कि पंचायती राज में क्या हुआ? राजीव गांधी ने पंचायती राज लागू किया। आपने 15 साल में अपने वार्ड मेंबर का तनख्वाह बढ़ाये थे क्या? आप लोग वार्ड मेंबर को 200 रूपये देते थे, उसको भूपेश बघेल जी ने 500 रूपये कर दिया। (मेजों की थपथपाह) आप लोग 15 साल में जनपद सदस्य को 1200 रूपये देते थे, उसको भूपेश बघेल की सरकार ने 5,000 रूपये कर दिया। (मेजों की थपथपाहट) आपके नगर पंचायत के पार्षद लोग रात-दिन मेहनत करते हैं, उनको सिर्फ 7000 रूपये मिलता था। भूपेश बघेल जी की सरकार ने 15,000 रूपये कर दिये। (मेजों की थपथपाहट) हम लोग मांगते थे कि रमन सिंह जी हमारा बजट बढ़ा दीजिये, लेकिन 15 साल में रमन सिंह जी ने दो कार्यकाल में 70 लाख दिया और एक कार्यकाल में 1 करोड़ दिया। मैं बता देता हूं कि भूपेश बघेल जी ने ने 4 करोड़ रूपये दिया है। (मेजों की थपथपाहट) आपका तनख्वाह बढ़ा दिया। हमारे

भूतपूर्व विधायकों का तनख्वाह बढ़ा दिया। हर व्यक्ति का विकास करने वाला हिंदुस्तान का पहली सरकार भूपेश बघेल जी की सरकार है। आने वाले समय में आप लोगों को यह देखने को नहीं मिलेगा क्योंकि आज आदिवासी के पास, भूमिहीन किसानों के पास पैसा आया । व्यापार-बाजार में रौनक आयी है । आज वह मोटर साईकिल बेच रहा है, ट्रैक्टर बेच रहा है तो इसलिये हिंदुस्तान में अगर किसी ने विकास किया है तो भूपेश बघेल की सरकार में हुआ है । दुनिया में हम लोग कहीं भी जाते हैं, मैं एक-बार विदेश गया था । माननीय भूपेश बघेल जी भी गये थे । प्रेमप्रकाश पांडे जी उस समय अध्यक्ष हुआ करते थे । उस समय हम विदेश गये । मुझे वह बात अभी भी याद है, मैं विदेश गया था । वहां पर हम लोग घूम रहे थे । आस्ट्रेलिया में नयी दोस्ती हुई थी । वहां लोग घूमते-घूमते बोले कि तुम कहां के हो ? तुमने धोती पहनी है, क्या तुम हिंदुस्तान के हो ? मैंने कहा कि हां मैं हिंदुस्तान का हूं । मैंने उनको पूछा कि तुम लोग कहां के हो, उन लोग बोले कि हम गुजरात के हैं । तुम हिंदुस्तान में कौन सी जगह के हो ? उस समय वहां जाने से पहले छत्तीसगढ़ राज्य नहीं बना था । उन्होंने पूछा कि छत्तीसगढ़ तो हिंदुस्तान में नहीं है, मैंने दोबारा बताया कि झारखंड, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़ अटल बिहारी बाजपेयी की सरकार में अलग हुआ है तो बोले कि अच्छा-अच्छा वहीं जहां नेता लोगों की नहीं चलती है, छत्तीसगढ़ में अधिकारी राज चलता है, उसको आप बोल रहे थे । आज हिंदुस्तान के बाहर हमारी सरकार के द्वारा गोठान, गोबर खरीदी, गौमूत्र खरीदी पूरे देश में चल रहा है । आज माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार यह सब बना रही है, रीपा योजना बनाई है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, मंत्री जी समाप्त करें ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, तेंदूपत्ता का रेट 15 सालों में 3200 रूपये । जूटा बांटते थे, जूता । 15 नंबर वाले को 12 नंबर, 12 नंबर वाले को 20 नंबर । डउका का जूता डउकी को और डउकी का जूता डउका को ।

श्री सौरभ सिंह :- दादी, 15 नंबर का जूता नहीं आता । थोड़ा कम करो । (हंसी)

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरे पैर में लगता है न । मैं इस बात से खुश हूं कि तेंदूपत्ता का रेट 4000 रूपये हुआ है । 1000 गड्डी को 4000 रूपये । मेरे विधानसभा में सुकमा में इस समय 50 करोड़ 36 लाख रूपये बांटे हैं केवल कोंटा में तो इसलिये हम लोगों के हर क्षेत्र में विकास करने का काम माननीय भूपेश बघेल जी ने किया है । (मेजों की थपथपाहट) आने वाले समय में हमारा एक ही नारा है - हमारे भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में चुनाव होगा, तुम्हारा चेहरा खत्म होगा । यहां पर असत्य बोलने के लिये कोई बडी-बड़ी दाढ़ी वाले आ रहे हैं, उस बात पर विश्वास नहीं करेंगे । आपका 3000 रूपये जो किसान लोगों को पैसा मिल रहा था, आप सबको मालूम है कि नहीं ? वह हमारे बस्तर के विधायक को मालूम है । जितना 6000-6000 रूपये दिये थे उसको वापस करने के लिये बोला जा रहा है । सब परेशान हैं । वह इंकमटैक्स वाले गरीब नहीं हैं इसलिये पहले पैसा दिये । अभी

दिल्ली से नोटिस आ रहा है कि जल्दी पैसा पटाओ, लोग परेशान हैं तो इस प्रकार का कभी धोखा नहीं देना है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये मौका दिया । खासकर इस विधानसभा में सबसे कोई अगर, हम सब लोग बोलते हैं कि तुम्हारा चंद्राकर विद्वान है । ये विद्वान नहीं हैं, ये [xx] [49]आदमी हैं । सबको असत्य बोलते हैं । (हंसी) मैं इसको वापिस लेता हूं लेकिन ये खूब असत्य बोलते हैं । कभी गोबर खरीदी के लिये असत्य बोलते हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह हंसी-मजाक की बात नहीं है । अजय चंद्राकर जी से एक गलत शब्द निकला तो तत्काल उनहोंने खेद व्यक्त किया और माफी मांगी । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- उन्होंने वापस लिया । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- और यहां हंसी आ रही है । अगर किसी सदस्य को [xx] कहा जा रहा है तो हंसी आ रही है । यह दोहरा मापदंड है ।

श्री कवासी लखमा :- शिवरतन जी, मैं भी अपनी बात वापस ले लेता हूं । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये समाप्त करें । रजनीश कुमार जी ।

श्री कवासी लखमा :- मैं वापस लेता हूं, मैं भी माफी मांग लेता हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- हां ।

श्री कवासी लखमा :- लेकिन ये विधानसभा को गुमराह करने का काम करते हैं । हमेशा असत्य बोलने का काम करते हैं । ये बोलते हैं कि अगर कर्जा माफ होगा तो मैं इस्तीफा दूंगा । दुनिया ने देखा है । गोबर के बारे में बोलते हैं । हमारे देश के प्रधानमंत्री इसकी तारीफ करते हैं । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- साढ़े 3 लाख किसानों का अल्पकालीन ऋण माफ नहीं हुआ है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये मंत्री जी समाप्त करें । रजनीश जी आप बोलिये । शर्मा जी आप बैठिए ।

श्री कवासी लखमा :- देश में कितना माफ हुआ है, अडानी का, अंबानी का कर्जा माफ होता है, किसान लोगों का कर्जा माफ नहीं होता है । हिंदुस्तान की पहली भूपेश बघेल की सरकार है । 10 दिन के बाद हमारे राहुल गांधी साहब ने कहा था। कर्जा माफ करने वाली हिन्दुस्तान की पहली सरकार है। उपाध्यक्ष महोदय, नमस्कार, धन्यवाद।

श्री रामकुमार यादव :- बोले रहव, शेर ला मत जगाव, मत जगाव। ओदे देखव।

श्री रजनीश कुमार सिंह (बेलतरा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज पंचम विधान सभा के अंतिम सत्र हे अउ सत्र के आज आखिरी दिन हे। यदि ये सरकार ये पौने 5 साल में अच्छा काम कर

---

[49] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार विलोपित ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

देतिस तो निश्चित रूप से आज विदाई होके हम सब हा जाये के तैयारी करतन, लेकिन रात के साढ़े 9 बजे के बाद भी हम अविश्वास प्रस्ताव में चर्चा करथन। भारतीय जनता पार्टी अविश्वास प्रस्ताव के 109 विषय निकालकर अउ अन्य आरोप लगाकर आज जोन अविश्वास प्रस्ताव रखे हे, ओखर समर्थन में मैं बोल बर खड़े होये हों। उपाध्यक्ष महोदय, वर्ष 2018 में प्रदेश के जितना जिला रहिसे ओखर इहां आदरणीय बाबा साहब के नेतृत्व में 720 से ज्यादा अधिक संगठन मन करा जा-जाके घोषणा-पत्र लिये गे रहिस। ये घोषणा-पत्र 36 बिंदु के बनिस, ओखर बाद 151 बिंदु के अउ घोषणा-पत्र, जोन म अउ बहुत सारा चीज लिखाए हे और ओ घोषणा करे के बाद बहुत झन हमर विद्वान सदस्य, हमर मंत्री जी हैं नहीं, कृषि मंत्री जोन अभी बने हे, ओ कहिन कि 2 घंटा के अंदर में कर्जा माफ हो गया। आदरणीय शिवरतन शर्मा जी, जब अपन बात रखिन तो बताइन कि कतका लाख किसान आज भी जिनका कर्जा माफ नहीं होए हे, दू घंटा के अंदर कोई काम होइस यदि तो पहला काम होइस कि सी.बी.आई. ला इहां बैन किये जाये। अइसना का चीज रहिस जेखर कारण से सी.बी.आई. ला बैन करे के जरूरत पड़िस। अभी एखर बड़े-बड़े नेता मन कहिथे, मणिपुर के घटना के सी.बी.आई. जांच करवावौ। अइसनै का कारण रहिस। ये बात दर्शाथे कि कहीं न कहीं सरकार बने के साथ ही अंदर से ही इनका डर रहिस। आज इनकम टैक्स के रेड होथे। इनकम टैक्स के रेड दू साल पहली के दू साल पहली के प्रेस विज्ञप्ति में आथे कि 200 करोड़ की संपत्ति मिली है और ऐसे-ऐसे साक्ष्य मिले हैं जो आने वाले समय में आपराधिक प्रवृत्ति के हैं। ई.डी. के रेड होथे, ई.डी. के रेड म कई सौ करोड़ के संपत्ति अटैच होथे, कई झन जेल म हे। ओखर बाद भी लगथे कि कोन मेर भ्रष्टाचार होथे। कहां भ्रष्टाचार हे। माननीय कवासी लखमा जी, अभी अच्छा भाषण देत रहिसे। शराब घोटाला कहां होये हे मोर दू बार प्रश्न लगे हे। आसंदी से दूनो बार जांच के आदेश होये रहिसे अउ का चीज बर कि 15-20 दुकान जेमा लाखों-करोड़ों रूपया दू लाख, चार लाख नहीं करोड़ों रूपया प्लेसमेंट एजेंसी 2-2 महीना, 4-4 महीना जमा नहीं करे हे। दुकान म एफ.आई.आर. होए हे, माननीय मंत्री जी मोहम्मद अकबर हा जवाब दिहीन कि तत्काल जमा करने का नियम है, ओ पइसा जमा नहीं होइस। महीना- 2 महीना बाद नहीं होइस। एफ.आई.आर. होइस। एफ.आई.आर. में पूछेन कि किसके खिलाफ हुआ है तो अज्ञात के खिलाफ हुआ है। ये भ्रष्टाचार नहीं हे। अभी जोन शराब म प्लेसमेंट एजेंसी लाखों, करोड़ों रूपये लेकर महीनों तक अपन घर म रखथे, किराना दुकान समझ ले हे अउ अभी जो नया-नया तथ्य आये हे, ये शराब घोटाला हे। धान के खरीदी के अभी बात आइस कि 1 लाख 25 हजार मीट्रिक टन वर्ष 2023-24 में हमर लक्ष्य हे। एक तरफ सरकार अपन पीठ थपथपाथे कि 20 क्विंटल धान खरीदी ए साल किसान के करे जाही, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं 2 साल के आंकड़ा देथौं। वर्ष 2020-21 म अभी जोन धान खरीदी होइसे 92 लाख मीट्रिक टन, ओखर पहली 85 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी होए रहिस। 7 लाख मीट्रिक टन वर्ष 2021-22 में बढिस। अउ वर्ष 2022-23 म 1 लाख 7 मीट्रिक टन जोन ए साल के हे, एमा 15 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी 15 क्विंटल म बढ़े हे। सिर्फ 15

क्विंटल के दर म ओइ किसान ओई रकबा म थोड़ा 19-20 होकर के वर्ष 2021-22 अउ वर्ष 2022-23 म 15 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी होए हे, अब एमन कहिथे कि वर्ष 2023-24 म 20 क्विंटल के हिसाब से लौन अउ 1 लाख 25 हजार मीट्रिक टन होहे। कुल मिलाकर जेन पिछला खरीदी हे तेखर ले 18 लाख मीट्रिक टन अधिक। ये कइसे संभव हे? मैं जरूर जानना चाहिहौ कि किसान के हर साल जोन रकबा कुछ बढ़थे और धान के जोन मात्रा बढ़थे तो 15 क्विंटल में जब 1 लाख 7 हजार मीट्रिक टन धान खरीदी होथे तो 20 क्विंटल में कइसे 1 लाख 25 हजार मीट्रिक टन धान होही। निश्चित रूप से ए सरकार किसान मन के आंख म धूल झोके के काम करथे। जब दिसंबर म मालूम हे कि सरकार बनना नहीं हे। सरकार नहीं बनना हे तो कुछ भी घोषणा कर दो। आने वाले समय म देखे जाही जैसे अभी अभी करके 2018 में होए रहिस हे । लेकिन छत्तीसगढ़ के जनता जान चुके हे । मैं जरूर ए बात ला जानना चाइहौं कि ए सरकार 20 क्विंटल मा कईसे 1 लाख 25 हजार मेट्रिक टन मा धान खरीदी होही । उपाध्यक्ष महोदय, रेत घोटाला के बात बार-बार आत हे, कहां रेत घोटाला होए हे । दू दिन पहिली सदन मा भी चर्चा होइए । बिलासपुर मा लगातार, इहां सदन मा एक प्रश्न आए रहिस हे । माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह करना चाहूं कि घाट मा जो घटना होए हे, सेंदरी, कछार, लोखंदी, बिलासपुर मा अवैध रेत खदान चलत हे । ए मेर के खसरा हे, ए मेर के रकबा हे अउ 4 किलो मीटर ओ पार ले 10 नदी ला खोदे जात हे । जेकर परिणिति होए हे अउ आज भी अतका होए के बाद आज भी अधिकारी मन का फोन करे ला पड़त हे कि इहां से बड़े मात्रा मा, एक ट्रैक्टर, दू ट्रैक्टर वाला कोई सरपंच जाही अपन गांव मा सी.सी. रोड बर, कोई घर बनाए बर तो निश्चित रूप से ओला पकड़ लिहीं । लेकिन बड़े मात्रा में जोन खनन करथे तो ओला फोन कर दिए जात हे कि हमन आत हन ते गाड़ी निकाल ले । अउ बाद में बताही कि उहां तो कोई मिलिस नइ ।

उपाध्यक्ष महोदय, जमीन, यदि मैं बिलासपुर के ही बात करौं तो कोई दिन नइ हे जेमा अवैध कब्जा के घटना नइ होवत हे । शासकीय जमीन निजी हो जात हे, निजी जमीन दूसर के हो जात हे, पटवारी नापत हे, सीमांकन होते तो कहिते कि तोर जमीन खोजे ला पड़ही । जमीन हे तोर 15 साल, 20 साल के कब्जा हे लेकिन वो जमीन भू माफिया मन के हो जात हे, पइसा देकर कर लेत हें । अइसने रोज होत हे, पूरा छत्तीसगढ़ मा चलते हे । उपाध्यक्ष जी, भू-माफिया के बाद शिक्षा माफिया की बात करहूं । शिक्षा मंत्री जी अभी अभी बने हे, मैं ओला धन्यवाद जरूर देहौं । लेकिन बिलासपुर संभाग के बात करत हौं । आज जौन बात के जिक्र माननीय मंत्री जी करिन हे कि प्रश्न का सस्पेंड करे हैं, मैं ओला धन्यवाद अउ बधाई देव हौं । शिक्षक मन रो-रोकर बतात हें, रायगढ़ के शिक्षक आए हे ओला मरवाही मा रिक्त पद बताए जात हे । मरवाही के शिक्षक ला लैलूंगा मा रिक्त पद बताए जात हे । शिक्षा विभाग ले जो जारी करे गे रिहिस हे कि शिक्षक पदोन्नति के पश्चात पदस्थापना उनका अइसना जगह मा करना हे जोन आसपास हो, अगर उही स्कूल मा पद रिक्त हे तो उही स्कूल मा करना हे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लेकिन उन सबका दूर संभागीय स्तर के नाजायज फायदा उठाकर करे गिस, मजबूर होकर 4 लाख, 5 लाख दे बर पड़िस । अउ 10-5 शिक्षक नइ 700-800 शिक्षक । बहुत शिक्षक के पदस्थापना भी इन होए हे । माननीय मंत्री जी अभी हे, सस्पेंड करे हे । मैं एक बात के आग्रह कर देत हौं कि वो जतका पदस्थापना होए हे ओला निरस्त करे के घोषणा करके, ओमा नया पारदर्शी ढंग से ओमन ला आसपास के स्कूल का नियुक्ति दिए जाए ।

श्री धरमलाल कौशिक :- सस्पेंड कर दिए वहां तक तो ठीक है । रजनीश जी बोल रहे हैं उस पूरे आदेश को आप निरस्त कर दीजिए । वहां तक भी ठीक है लेकिन जिन्होंने दिया, वे वापस लेने के लिए किसके पास जाएं ? अब शिक्षा मंत्री बदल गए हैं । वे लोग आपके पास में आएंगे क्योंकि वहां तो सब यही बात कर रहे हैं । यदि आप पूरे चेंज कर देंगे तो नए सेटअप के हिसाब से पदस्थापना कर देंगे तो बहुत अच्छा होगा । आपने सस्पेंड किया उसके लिए धन्यवाद, उनकी पदस्थापना भी करवा दीजिए ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- पदस्थापना के साथ-साथ मैं निवेदन भी करिहौं कि एक बार थोड़ा सा आप अइसा कर दिहौ तो जौन सिस्टम से ले रहिस उही सिस्टम से वापस हो जाए, बहुत बड़ी राशि है । मोर आग्रह हे कि उही काम ला करवा देहू तो बहुत गुरूजी हे अउ बहुत परेशान हैरान हें । दूर दूर पदस्थापना होए रहिए हे तो जौन मन मा आइए मांगिन तो दे दिन ।

श्री नारायण चंदेल :- एक शिविर लगवा दीजिए कि जो जो लोग लिए हैं उनका वापस कर दीजिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं, मुख्य अतिथि आपको ही बनाकर ले जाउंगा (हंसी)।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, रजनीश जी समाप्त कीजिए ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- एक आखिरी शब्द बोलकर समाप्त करथों । उपाध्यक्ष महोदय, मैं धान के बारे में बताएंव कि कइसे 20 क्विंटल, 1 लाख 25 हजार मेट्रिक टन मा संभव होहै । अभी बार-बार ये विषय आथे कि धान के पइसा केन्द्र सरकार से नइ मिलय । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वर्ष 2019-20, 2020-21 खाली दो साल के मोरो प्रश्न रहिस हे, बहुत झन सम्माननीय मन के प्रश्न रहिस हे। ओखर हिसाब-किताब आज तक नई मिले हे कि ओ धान संग्रहण केन्द्र में हे कि मिलिंग हो गेहे कि चावल बन गेहे, ओ बहुत बड़े मात्रा में हे, यदि पईसा में देखही तो 6 हजार, 8 हजार करोड़ के आस-पास हे। ओखर बाद भी नई मिलत हे। लेकिन जब केन्द्र सरकार के बात के जब कमी रही तो जरूर कही कि केन्द्र सरकार सहयोग नई देत हे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यदि ए बार 65 हजार मीट्रिक टन चावल नई लिए जातिस तो आज भी एक लाख सात हजार मीट्रिक टन जोन खरीदे हे, ओ दो साल के जोन हस्र होय रतिस, उही रहिस, अउ ए सरकार सिर्फ धान खरीदी में ही अतका काम करे हे।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए समाप्त करें। माननीय उच्च शिक्षा मंत्री जी।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बस एक मिनट मा बात समाप्त करत हंव।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए आप समाप्त करिए।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का अवसर दिया, मैं ए अविश्वास प्रस्ताव के समर्थन में बोल के अपन बात समाप्त करत हंव, बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- सहयोग के लिए थैंक यू।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, श्री बृजमोहन अग्रवाल जी, माननीय अजय चंद्राकर जी सभी ने माननीय मोहन मरकाम जी और टेकाम जी के लिए यह कहा कि उन्हें हटा दिया गया, उन्हें जोड़ दिया गया, यह कर रहे हैं, वह कर रहे हैं। उसी से मुझे एक कहानी याद आई जो मेरी मां मुझे बचपन में सुनाती थी। उपाध्यक्ष महोदय, चार पंडित थे, बहुत होशियार पंडित थे, एक का नाम बृजमोहन था, एक का नाम अजय था, एक का नाम शिवरतन था और एक का नाम नारायण था। उसमें तीन बड़े भाई थे, तीनों के पास बहुत कला थी, गुण था। एक के पास यह गुण था कि वह कोई भी मरे हुए जीव की हड्डियों को इकट्ठा कर सकता है, एक जो मरा हुआ व्यक्ति है, उसके उपर मांस चढ़ा सकता है, तीसरा उस व्यक्ति को जीवित कर सकता है, चौथा इन तीनों के पीछे आराम से रहता था। यह चारों के चारों नेता प्रतिपक्ष बनने निकले, पहले आदमी आगे बढ़ा उन्होंने कहा कि एक शेर वहां मरा हुआ है, वहां उसने कहा कि मैं हड्डी को इकट्ठा कर सकता हूं, उन्होंने अपने पावर से हड्डी को इकट्ठा कर दिया। एक ने कहा कि मैं इस पर मांस चढ़ा सकता हूं, तीसरे ने कहा कि मैं इसको जीवित कर सकता हूं, चौथे ने कहा मालिक मुझे पेड़ पर चढ़ने दीजिए, तब आप लोग यह सब कर लेना। चौथा आदमी पेड़ पर चढ़ गया और तीनों ने अपनी कला का प्रयोग कर लिया। तीनों ने प्रयोग किया बाघ जीवित हुआ और तीनों को मार दिया और जीवित जो बचा वह नेता प्रतिपक्ष बन गया। नारायण चंदेल जी वो चौथे व्यक्ति हैं। यह तीनों ज्यादा होशियारी के चक्कर में ऐसी पीछे रह जा रहे हैं। (हंसी)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज अजय चंद्राकर जी ने भगवान राम के बारे में कहा, भगवान हनुमान जी के बारे में कहा, माता कौशल्या जी के बारे में कहा। हमारी सरकार राम मन गमन पथ बना रही है, हमारी सरकार माता कौशल्या की मंदिर बनाई है, हमारी सरकार ने रामायण महोत्सव कराया। माननीय मंत्री जी रामायण महोत्सव के बारे में कह चुके हैं। मैं इसके बारे में नहीं बोलूंगा। लेकिन जहां तक सम्मान की बात है, माननीय चंद्राकर जी ने कहा कि सम्मान, भाव क्या है ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी एक फिल्म आई थी, अजय चंद्राकर जी उसको देखकर आए होंगे। उस फिल्म का नाम आदिपुरूष है। मैं इसलिए उसका उल्लेख कर रहा हूं क्योंकि उसके डिस्क्लेमर में 5 मुख्यमंत्रियों का नाम लिखा गया था, जिनके मार्गदर्शन पर यह फिल्म बनी है और पांचों के पांचों मुख्यमंत्री भारतीय जनता

Uncorrected and unedited/Not for Publication

पार्टी के मुख्यमंत्री हैं। उसमें शिवराज सिंह चौहान जी, असम के मुख्यमंत्री और अन्य मुख्यमंत्रियों का नाम है। अजय चंद्राकर जी भी उस फिल्म को देखकर आए होंगे। उसमें किस तरह के डायलाग लिखे गये हैं पता है। हमारे प्रभु हनुमान जी, जिनकी हम आराधना करते हैं, जिनके लिए हुनमान चालिसा पढ़ते हैं, वे उस फिल्म में बोल रहे हैं कि कपड़ा तेरे बाप का, तेल तेरी बाप की और जलेगी भी तेरी बाप की। धर्मजीत सिंह जी, इस तरह के भारतीय जनता पार्टी के लोग हैं। उनकी मानसिकता भगवान श्री राम के लिए यह है। हम तो राम वन गमन पथ बना रहे हैं, माता कौशल्या छत्तीसगढ़ की बेटी थी, बेटी है और हम मानते हैं कि वह छत्तीसगढ़ की बेटी है। (मेजों की थपथपाहट) इसके लिए आप अगर अगर सत्र बनाएंगे तो मैं डिस्कशन के लिए भी तैयार हूं। मैं अलग सत्र में इसमें डिस्कश भी कर सकता हूं कि छत्तीसगढ़ की बेटी है। इसको कभी कोई नकार नहीं सकता है। ये हमारी भावनाएं हैं। चंद्राकर जी, जब आप इस बात को बोलते हैं तो आप इसको सोचकर बोलिये क्योंकि इसमें करोड़ों लोगों की भावनाएं जुड़ी हैं और आप उनकी भावनाओं को आहत मत करिये।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट, थोड़ा गंभीर विषय में बोलत हस। मैं सोचता था कि आप विषयों में लाइन में बोलते होंगे। आप अपनी स्थापित छवि को खण्डित मत करिये। उपाध्यक्ष महोदय, मैंने यह कभी भी नहीं कहा कि माता कौशल्या छत्तीसगढ़ की नहीं थी। मैंने यह कहा कि मुझे किसी साहित्यकार की ऐसी कोई साहित्य, कोई ऐसी माइथोलॉजिकल हिस्ट्री, लेखक, जन श्रुति, लोक श्रुति, कहावत, किस्से, कहानी में दिखा दीजिये, जिसमें माता कौशल्या की जन्मभूमि चन्द्रखुरी है। मैंने यह कहा है। जो माइथोलॉजिकल हिस्ट्री उपलब्ध है और उसको जिसने भी लिखी है, मैं किताब रख दूंगा। कोसला जनपद, पंच कोसल, सप्त कोसल, दक्षिण कोसल, उत्तर कोसल, तरह-तरह के समय में छत्तीसगढ़ के तरह-तरह के नाम थे। दक्षिण कोसल, कोसल का एक हिस्सा था। महाकोसल भी छत्तीसगढ़ का ही नाम था, तो दक्षिण कोसल के राजा भानुमंत की कन्या उत्तर कोसल।

श्री उमेश पटेल :- अजय जी, मैंने आपको कहा कि इस विषय पर बहस करने के लिए आप एक सत्र रखवा लीजिए। हम इस पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं। हम भी अपने सारे कागजात के साथ आएंगे।

श्री अजय चंद्राकर :- सुनिये, कोसल जनपद बिलासपुर में है।

श्री उमेश पटेल :- मैं समझ गया। आप इसके लिए एक सत्र बुलवाइये और इस पर चर्चा कीजिए। लेकिन इस तरह से यह मत बोलिये कि माता कौशल्या छत्तीसगढ़ की बेटी नहीं हैं।

समय :
9.47 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरण दास महंत) पीठासीन हुए)

श्री अजय चंद्राकर :- मैंने ऐसा कब कहा?

श्री उमेश पटेल :- अजय जी, आपने बोलते-बोलते इस बात को बोला है।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं, नहीं। आप लोगों के साथ यही तो बात है। मैं आपको अक्लमंद समझता था।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, बैठिये। कुछ नहीं समझना है। मंत्री जी, आप अपनी बात कीजिए और किसी की मत सुनिये।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी तरह से पूरे सत्र के दौरान जिस तरह से प्रदर्शन हुए उसकी तुलना माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी ने हमारे भगत सिंह जी से की। भगत सिंह जी हमारी आजादी की लड़ाई के लिए इतने कम उम्र में फांसी पर चढ़ गये। यह उनकी तुलना इस तरह के प्रदर्शनकारियों से करते हैं तो इससे हमें पीड़ा हुई है। मुझे लगता है कि भारत देश के प्रत्येक निवासी को इस बात से पीड़ा होगी क्योंकि शहीद भगत सिंह जी हम सबके आदर्श हैं और उनके बारे में हम पढ़ते हुए आये हैं। हम उनको श्रद्धा के स्वरूप में देखते हैं। इसलिए आप ऐसी तुलना करने से बचे।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, प्लीज।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या आज अविश्वास प्रस्ताव में हम कहानी भर सुनेंगे? अभी अविश्वास प्रस्ताव पर बहस चल रही है। यह कुछ भी बोलेंगे, उसको हम कैसे सुन लेंगे?

अध्यक्ष महोदय :- आप तो दिन भर बोल रहे हैं। आप सबको टोक रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- आप तो हमें बोलने ही नहीं दे रहे हैं।

श्री उमेश पटेल :- मैं वही बात बोल रहा हूं, जो आपने कही है।

श्री अजय चंद्राकर :- आप कुछ भी बोल देंगे।

श्री उमेश पटेल :- मैं कुछ भी नहीं बोल रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- क्या कुछ भी बोल रहे हैं?

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष जी, मैं आपको बताऊंगा कि वह गलत बोल रहे हैं या सही बोल रहे हैं।

श्री उमेश पटेल :- आपने तुलना की या नहीं की? माननीय अध्यक्ष महोदय, बृजमोहन अग्रवाल जी ने तुलना की है। यदि हमको उससे पीड़ा हुई है तो हम यहां पर अपनी बात को रखेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप पिछली बातों को छोड़िये। यदि इनको आपकी बातों से पीड़ा हुई है तो यह अपनी बात को यहां रखेंगे। इसमें दिक्कत किस बात की है?

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, आप हमें बोलने मत दीजिए। गाड़ी चलाइये और जितने बजे खत्म करना है कर दीजिये। हम नहीं बोलते। कोई दिक्कत नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- मैं तो सुबह बोल रहा हूं कि जल्दी खत्म कर दीजिए। हर बात की सीमा होती है।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं आपको अक्ल की बात बताता हूं।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उन्हीं बातों को दोहरा रहा हूं, जो इनकी तरफ से हुई हैं। मैं जो कह रहा हूं, यदि आपको उससे बुरा लग रहा है तो मैं उसमें कुछ नहीं कर सकता। लेकिन हमें जो पीड़ा हुई है, उसको तो मैं व्यक्त करूंगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपने विभाग की बात करता हूं और मेरे विभाग में सबसे ज्यादा बहस बेरोजगारी भत्ता को लेकर हुई है। ये लोग बेरोजगारी भत्ता में एक ही प्रश्न पूछ रहे थे कि आपने इतने लोगों को बेरोजगारी भत्ता दिया। 3 महीने से इसकी शुरूआत हो चुकी है और आपने कितने लोगों को कितने पैसे दिये? यह जो तुलना हो रही है तो मैं भी तुलना करके बताता हूं। जिस दिन यह प्रश्न लगा था, उस दिन भी मैं इसको बताना चाह रहा था। इन्होंने माननीय रमन सिंह जी के 15 साल के कार्यकाल में वर्ष 2003 से लेकर 2017 तक इस योजना को चलाया। अपने उस कार्यकाल में इन्होंने 1 लाख 74 हजार। लोगों को बेरोजगारी भत्ता दिया और इन्होंने कुल 94 करोड़, 88 लाख, 37 हजार रूपए वितरित किया । ये लगभग 15 साल का आंकड़ा है । हमने कितना किया ? हमारी कुल संख्या है, जो हमने तीन महीने में दिया है, वह हमने 1 लाख, 16 हजार, 891 लोगों को बेरोजगारी भत्ता दिया और हमने 80 करोड़, 72 लाख, 30008 रूपए दिए । इन्होंने जो 15 साल में दिया है, उसे हमने तीन महीने में दिया है और जब जुलाई का बेरोजगारी भत्ता बंटेगा तो हम लोग 100 करोड़ रूपए का आंकड़ा पार करेंगे, जो कि इनके 15 साल के कार्यकाल से ज्यादा होगा । (मेजों की थपथपाहट) हमने क्राईटेरिया बनाया कि हम इन-इन लोगों को बेरोजगारी भत्ता देंगे । इसके लिए हमने ओपन रखा । कोई भी बेरोजगार आकर अपना आवेदन दे सकता है, लेकिन हम चैक करेंगे कि हमने जो क्राईटेरिया बनाया, उसके अनुरूप वह आता है या नहीं । जितने लोग आ रहे हैं, हम सबको बेरोजगारी भत्ता दे रहे हैं और सबको ढाई हजार रूपए प्रतिमाह मिल रहा है । अध्यक्ष महोदय, आपने भी इसमें बहुत चिन्ता व्यक्त की थी कि आपने इतना बड़ा काम ले लिया है, इसको कैसे पूरा करेंगे ? तीन महीने पूरे हो गए और हम हर व्यक्ति को बेरोजगारी भत्ता दे रहे हैं और इस स्वरूप में दे रहे हैं कि इन्होंने जो क्राईटेरिया बनाया था, इनका एक और प्रश्न आया था कि आपने ऐसा क्राईटेरिया बना दिया कि कोई व्यक्ति उसमें पास ही नहीं हो रहा है । अगर आप चाहेंगे तो इन्होंने 15 साल में जिस क्राईटेरिया का जो बेरोजगारी भत्ता दिया, उसको मैं पटल पर रख देता हूं और हम लोगों ने जो क्राईटेरिया बनाया, उसको पटल पर रख देता हूं । आप दोनों का आंकलन कर लीजिए । इनके समय जो क्राईटेरिया बना था और हमारे समय में जो क्राईटेरिया बना था, उसमें कितना अंतर है । सिर्फ यही अंतर है कि ये लोग गरीबी रेखा के नीचे वालों को ही बेरोजगारी भत्ता दे रहे थे और हमने कहा कि

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जिसकी भी आमदनी ढाई लाख होगी या उससे कम होगी, हम उन सबको बेरोजगारी देंगे । इसी कारण से आज हम ज्यादा लोगों को बेरोजगारी भत्ता दे पा रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय, उच्च शिक्षा विभाग में जब से छत्तीसगढ़ बना है, तब से आजतक राष्ट्रीय स्तर का अवार्ड कभी छत्तीसगढ़ को नहीं मिला । यह पहली बार है, जब हमें राष्ट्रीय स्तर में स्कॉच सिल्वर एवार्ड हमको मिला क्योंकि हमारी रैंकिंग फर्स्ट थी, हमने नैक में सबसे प्रथम स्थान पर रहे । उस पूरे 6 महीने के अंतर्गत नैक ने ट्वीट किया था कि हमारी जो संख्या है, वह 97 है और जो दूसरे नम्बर पर उत्तरप्रदेश है, जिसकी संख्या 36 थी । पहले और दूसरे नम्बर के बीच में जो गैप था, उसमें भी भारी अंतर था । इससे पहले उच्च शिक्षा विभाग में कॉलेजों की रैंकिंग जारी होते थे । कॉलेजों की रैंकिंग जारी होते थे, लेकिन हमारा कॉलेज कभी उसमें आया नहीं, लेकिन एजुकेशन ऑफ ऑटोनामस कॉलेज रैंकिग 2023-24 में हमारे प्रदेश के 6 कॉलेजों ने टॉप 100 में जगह बनायी । (मेजों की थपथपाहट) और एक कॉलेज जिसने टॉप 10 में अपनी जगह बनायी । ये अंतर आया है । मैं जल्दी खत्म करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, हमारे सौरभ सिंह जी ने चिन्ता जाहिर की थी कि आईटीआई, पॉलीटेक्निक और इंजीनियरिंग में एडमिशन नीचे गिर रहा है, उसको ऊपर ले जाना पड़ेगा । हमने 36 आईटीआई में अभी टाटा टेक्नालॉजी के साथ एम.ओ.यू. कर लिया है, कल उसका एम.ओ.यू. साईन होगा और इसके साथ हम नई टेक्नालॉजी के साथ, नये प्रोसेस के साथ 36 आई.टी.आई. में पहले हम इसको करेंगे और आगे आने वाले समय में अगर यह सफल होगा तो हम अन्य आई.टी.आई. में भी इसको धारण करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय, मैं इसी के साथ खेल एकेडमी के संबंध में कहना चाहता हूं । इन्होंने सिर्फ दो एकेडमी बनाकर रखी थी । आज मुझे बताते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि हमारे कुल एकेडमी की संख्या है, उसमें खेलो इंडिया से भी है, केन्द्र पोषित एकेडमी भी है और राज्य पोषित एकेडमी भी है । दोनों को मिलाकर हम 30 की संख्या से ऊपर जा चुके हैं । इनके समय में 15 सालों में सिर्फ दो एकेडमी थी । हम पिछले साढ़े चार साल में उसको 30 की संख्या पर ले जा चुके हैं । इन्होंने जो अविश्वास प्रस्ताव रखा है, उसको देखेंगे तो ऐसा लगता है कि अविश्वास प्रस्ताव बहुत हड़बड़ी में बना दिया गया है । किसी तरह का कोई डिटेल नहीं है । सिर्फ विभाग का नाम लिख दिया है और घोटाला लिख दिया है। इसलिए मैं आपसे निवेदन करूंगा और विपक्ष के साथियों से भी निवेदन करूंगा कि इस अविश्वास प्रस्ताव को वापस लिया जाये और इस बात को यही समाप्त किया जाये। अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री ननकीराम कंवर (रामपुर) :- अध्यक्ष महोदय, मैं अविश्वास के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी को पहले ही सत्र में बोला था कि आप इतना भ्रष्टाचार मत करो।

अध्यक्ष महोदय :- आप तो अपना सगा-समाज समझ-समझकर समझाते हो, महाराज।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री ननकीराम कंवर :- आज इनका हर मंत्री और विभाग के हर अधिकारी इसमें लगे हुए हैं। मैं आपको एक उदाहरण बता रहा हूं। अभी आबकारी विभाग वाले मंत्री जी नहीं हैं। जितने भी आदिवासी के घर में दारू बनाने के विरूद्ध छापा पड़ा है, उनसे विभाग वाले 30 हजार, 40 हजार रूपये से कम नहीं मांगे थे। लोगों ने देकर भी पछताया कि हम लोग बेकार दिए। एक फरसवानी गांव है, फरसवानी गांव के एक मोहल्ले में आबकारी वाले गये और गांव वालों को पकड़ लिए और उसको घुमा रहे थे। पुलिस वाले आ गये, लेकिन उन लोग कुछ नहीं कर पाये। आदिवासी को दारू बनाने की छूट है। आबकारी वाले एक बोतल दारू में भी पकड़ रहे हैं, 30 हजार, 40 हजार लाओ, बोलते हैं। अध्यक्ष महोदय, आपको ताज्जुब होगा कि एक दुकान में कुछ आदिवासी लोग दारू पी रहे थे। उनको पकड़कर उरगा थाना ले आये। यह दारू बंद करने वाली सरकार की क्या स्थिति है? ई.डी. ने छापा मारा तो कितना पकड़ाया है ? वह अभी नहीं हैं नहीं तो वह सुनते। उसको थाना ले गये। साथ में एक वकील साहब भी गये, दो जमानतदार भी गये। उसके बाद मुझे सूचना दिए तो मैं कोरबा से उरगा थाना आया। मैंने कहा कि भाई दुकान में भी दारू पी रहे हैं तो किस जुर्म में इनको थाना लाये हैं ? तो पुलिस वाले बोले कि सार्वजनिक क्षेत्र में दारू पी रहे थे। मैंने कहा कि यह दारू बेचने की जगह सार्वजनिक क्षेत्र नहीं है। मैंने पूछा कि किसने कहा है तो वह बोला कि एस.पी. ने कहा है। ये हाल है। ये कुछ भी नियम बनायेंगे, कुछ भी करेंगे, सरकार के लिए, अधिकारियों के लिए माफ है। क्योंकि सरकार के पास पैसा पहुंचता है, मंत्री के पास पहुंचता है, मेरा आरोप है। वहां यही कहते हैं कि हमको देना पड़ता है। किसको देते हैं भाई ? अगर मामला कोर्ट भी जाता तो एक बोतल दारू का 30 हजार जुर्माना नहीं लगता। लेकिन वाह रे सरकार, हमने शिकायत भी किया, लेकिन सुनने वाला कौन है ? मैं अभी राजस्व मंत्री जी को बता रहा था, हमारे कोरबा के हैं। वह बोले कि कलेक्टर भी मेरी सुनता। मैंने कहा कि आज कलेक्टर हमको सुनता है। कोई भी अधिकारी सुनते हैं। उसको बाद में थाना से छोड़े। लेकिन बाद में उसका चालान पेश कर दिया गया, ये तो हाल है। तो यह भ्रष्टाचार नहीं है तो क्या है ? इसीलिए मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी को कहा था कि साले साहब, इतना भ्रष्टाचार मत करवाओ। आप कितना सीट जीते ? वहां उस समय भ्रष्टाचार का पैसा जाता था, खनिज न्यास का पैसा उस समय जा रहा था। आपको ताज्जुब होगा कि मैंने लिखकर दिया है कि खनिज न्यास का पैसा मेरे क्षेत्र का हिस्सा अभी भी नहीं मिला है। मैंने जितना लिखकर दिया है, कम से कम राशि देते, ज्यादा देते, लेकिन नहीं दिए। यह क्या है ? मतलब पक्षपात है। तो ऐसी सरकार चलेगी क्या ?

अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात, मैं राजस्व मंत्री जी को बोल रहा था। मैंने कहा कि राष्ट्रीय राजमार्ग कोरबा से चांपा सड़क बन रहा है। माननीय मुख्यमंत्री जी आपको ताज्जुब होगा। मैंने बोला कि जो गलत रिकार्ड बनाता है, उसको निलंबित करोगे या नहीं ? अभी कोई माननीय विधायक जी बोल रहे थे कि कोई सुनता नहीं है। राजस्व विभाग में कोई कार्यवाही नहीं होता है। तो कम से कम आप बैठे हैं, मैं तो यही

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कहूंगा कि केन्द्र सरकार को बदनाम करना चाहते हैं ? राष्ट्रीय राजमार्ग बन रहा है, उसमें 3 साल से पहले पैसा हमने बुलवाया, तीन साल से पैसा जमा है । ब्याज कौन खायेगा, वापस देंगे ? जमीन वालों को नहीं मिला है, मकान वालों को नहीं मिला है, बरसात में मकान तोड़ने के लिये चलेगा । और बताऊं, निजी जमीन को उन्होंने शासकीय लिख दिया और उसके बाद नोटिस दिया है । अगर इस सत्र के बाद नहीं होगा तो इसमें क्या-क्या होगा, मैं नहीं जानता । क्या कर सकता हूँ, जनता के लिये जीतकर आया हूँ । विधान सत्र में यह बात बोल रहा हूँ कि पटाड़ी, बरपाली, सरगबुंदिया, कोथाड़ी, सब निजी जमीन को उन्होंने नोटिस में दिया है, शासकीय जमीन और उस मकान का कीमत बनाया है । मतलब जमीन का कीमत नहीं है । जिस अधिकारी ने बनाया है, उसको भी सस्पेंड करना चाहिये, बल्कि टर्मिनेट करना चाहिये । सच में राजस्व मंत्री जी को तो मानते नहीं है, माननीय मुख्यमंत्री जी को मान ले तो मान लें । आप इसमें कार्यवाही करते हैं तो अच्छी बात है । यहां यह हाल है । दूसरी बात, शराब के बारे में है । आपको ताज्जुब होगा, मैंने कोयला घोटाला के लिये अफरातफरी करने के बारे में लिखा था या नहीं । वहां के मंत्री जी ने चीफ सेक्रेटरी को लिखा है कि उसको दिखवा लीजिए । नहीं तो यहां के आफिसर क्या काम करते हैं, केनद्र सरकार के मंत्री का नहीं मानेंगे तो हम लोगों का कौन मानेगा । शासन और प्रशासन दोनों इसमें इन्वाल्व है । शासन में कहीं न कहीं तो मंत्री भी हो सकता है, कहीं न कहीं विधायक भी हो सकता है, शासन के साथ में रहते हैं । दारू वाले में भी लिखा था कि कितना आपके यहां दारू का अफरा-तफरी हो रहा है ? वहां से ई.डी. को भेजा । कितना पैसा जमा हुआ ? कितना उन्होंने जब्त किया है ? मैंने इसके संबंध में केन्द्र को भी लिखा था और उन्होंने भी भेजा और जब्त किया । अंतिम बात बोल कर मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ । आप यह बताईये कि आपके कितने अधिकारी बंद हुये हैं और क्यों बंद हुये हैं ? आपने कभी सोचा कि आपके अधिकारी बेईमानी कर रहे हैं कि आप बेईमानी कर रहे हैं ? आप भ्रष्ट्राचार कर रहे हैं? बतला दीजिए । माननीय मुख्यमंत्री जी आप बतायेंगे कि कितने अधिकारी आज जेल में है ? यह भ्रष्ट्राचार नहीं तो क्या है ? बेईमानी नहीं है तो क्या है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- आपका बहुत-बहुत धन्यवाद । अनिला भेंडिया जी । कम से कम शब्दों का उपयोग करते हुये जल्दी से जल्दी समाप्त करें ।

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती अनिला भेंडिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विपक्ष के साथियों के द्वारा जो अविश्वास प्रस्ताव लाये गये हैं, वह काल्पनिक और निराधार है । हमारे विपक्ष के साथियों ने जो महिलाओं के साथ अनुसूचित जातियों के साथ, अनुसूचित जनजातियों के साथ जो अनाचार, अत्याचार के बारे में तो बात किये, परन्तु आज हमारे देश में किस तरह का माहौल है । हमारे आदिवासी युवतियों के साथ मणिपुर में क्या हो रहा है ? दिल्ली में क्या हो रहा है? उसके बारे में न किसी ने अफसोस जताया है, न किसी ने कुछ कहा है, इसी तरह पूर्व में झलियामारी में जो हमारे यहां

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कांड हुआ था, यह घटना आदिवासी बच्चों के साथ मेरे बालोद जिले में हुई थी, हमारी माताओं की कोख उजाड़ दिये गये थे । तब इन लोगों को कुछ शर्म नहीं आई, लाज नहीं आई, उस बात को आज क्यों नहीं दोहराते हैं ? यह आज हमारे छत्तीसगढ़ की अस्मिता की बात करने वाले लोग हैं। इन लोगों ने जो घोटाले की बात की है, केवल इसमें घोटाला, उसमें घोटाला। इनके पास न कोई सबूत है, न कोई प्रुफ है। इनके पास केवल घोटाला-घोटाला करने के अलावा किसी बात का तथ्य भी नहीं है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे विपक्षी साथियों ने आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता सहायिकाओं की साड़ी खरीदी में घोटाले की बात की है। यह लोग अपनी सरकार के समय में अपने चहेतों से, ठेकेदारों के माध्यम से साड़ी खरीदते थे। आज हमारी सरकार छत्तीसगढ़ के खादी ग्रामोद्योग, हैण्डलूम, हमारे हाथकरघा के लोग, हमारे साथी जो साड़ी बनाते हैं, उनके द्वारा साड़ी खरीदी जा रही है, उससे हमारे छत्तीसगढ़ के लोगों को सहयोग मिल रहा है। इसमें किसी दलाल या ठेकेदार की बात नहीं है। इन लोगों ने तो उस समय आंगनबाड़ी की कार्यकर्त्ताओं को सीधे उनके खाते में 500-500 रूपये डाले और 15 दिन में उसको फिर वापस ले लिये। इस तरह से इन लोगों ने कार्य किया है तो यह किस मुंह से हमारी सरकार के ऊपर भ्रष्टाचार के आरोप लगा रहे हैं। आप लोगों ने प्री स्कूल किट के बारे में जो भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है, मैं उस विषय में ही बोल रही हूं। आज तक किसी ने शिकायत नहीं की, न आपने आज तक विभाग को शिकायत की कि यह गुणवत्ताविहीन है या यह ठीक नहीं है। हमारे विभाग के द्वारा क्रय नियम के अनुसार ही इनमें खरीदी की गयी है, तो इसमें आप किस तरीके के घोटाले की बात कर रहे हैं। इसी तरह आप मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में भी घोटाले की बात कर रहे हैं। इसमें घोटाले की क्या बात है ? आपकी सरकार उस समय 15 हजार रूपये देती थे। 15 हजार रूपये में बेटियों के लिये क्या आयेगा ? आप एक बार 15 हजार रूपये बाजार लेकर जाओगे तो उसमें दो साड़ी भी नहीं आती है, यह स्थिति हो गयी थी परंतु हमारे मुख्यमंत्री जी ने संवेदनशील होकर, बहुत नम्रता से, बहुत सहानुभूति से हमारी उन कन्याओं के लिये इस योजना की राशि 25 हजार रूपये की, उसके बाद आज 50 हजार रूपये की घोषणा कर दिये हैं। हम बढ़ी हुई राशि 21 हजार रूपये को सीधे हितग्राही के खाते में डालेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आधा मिनट। आपने 50 हजार रूपये की घोषणा की है लेकिन क्या किसी हितग्राही को राशि मिली है ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अध्यक्ष महोदय, आदेश जारी हो गया है। अप्रैल से आ जायेगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, आप एक मिनट मुझे सुन लीजिये। मैं जब शादी में गया था तो पता चला कि कोटा फिक्स किये हैं कि 20 से ज्यादा शादी नहीं होगी। हम लोगों ने कभी कोटा फिक्स नहीं किया। जो जरूरतमंद है, हमने उनको लाकर सीधे शादी करवायी है। लेकिन आपने 20 लोगों का कोटा फिक्स किया है। बिल्हा ब्लॉक एशिया का सबसे बड़ा ब्लॉक है और उसमें आप लोगों ने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

20 लोगों का कोटा फिक्स किया है । उसके बाद मैंने कहा कि 50 हजार की घोषणा की गयी है तो वह बोले नहीं, इस साल केवल 25 हजार रूपये मिलेगा, वह 50 हजार रूपये का लाभ एक भी हितग्राही को नहीं मिला है। यह केवल घोषणा है।

नगरीय प्रशाशन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- आप पिछले साल गये थे इसलिये आपको ध्यान नहीं है।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अध्यक्ष महोदय, वे पुराने वित्तीय वर्ष में शादी किये होंगे इसलिये ऐसा हुआ है, यदि अभी इस वित्तीय वर्ष में शादी करेंगे तो उनको 50 हजार रूपये मिलेगा। 04 साल में 25857 कन्याओं का विवाह किया गया है और इसी तरह हमारे दिव्यांग जोड़ों को मुख्यमंत्री जी के द्वारा 01 लाख रूपये देने की घोषणा की गयी है और उसका फायदा हमारे छत्तीसगढ़ के लोगों को मिल रहा है। इसी तरह आप सुपोषण अभियान में घोटाले की बात कर रहे हैं। हमारे यहां मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान 2019 से चालू हुआ है, उसके बाद से हमारे यहां 2 लाख 65 हजार बच्चे कुपोषण से बाहर हुए हैं। आज इसमें हमारी महिला बहनों के द्वारा गर्म भोजन, नाश्ते की व्यवस्था, यह बराबर हर आंगनबाड़ियों में मिल रहा है। इसमें जो हितग्राही है, वह हमारी महिलाएं हैं, गर्भवती महिलाएं हैं, हमारी जो बहनें एनीमिया की शिकार हैं, उनको भी आंगनबाड़ी के माध्यम से गर्म भोजन और रेडी टू ईट प्रदाय किया जा रहा है। इसी तरह आप लोगों ने पोषण आहार में भी भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है। जो रेडी टू ईट की योजना है, आप लोगों ने इसके बारे में हर विधान सभा में प्रश्न लगाया है और मैं आपको बताना चाहूंगी कि यह रेडी टू ईट, जब हमारे यहां राज्य बीज निगम के प्लान के मानव हस्तक्षेप पर रोक लगाते हुए गुणवत्ता के लिये दिया गया है, उसमें आज बहुत बढ़िया रेडी टू ईट का वितरण हो रहा है और इससे बच्चे भी बड़ा स्वाद लेकर भोजन खा रहे हैं। आप लोगों के समय में क्या किया गया था ? आप लोगों ने अमृत दूध योजना चालू की थी और आप लोगों ने भी बीज निगम को दिया था, परन्तु उसमें हमारे कई आंगनबाड़ी के बच्चे बीमार भी हुए थे और एकाध की मृत्यु भी हो गई थी। कई गांवों में जैसे आंगनबाड़ी में नहीं देते थे, उसके बाद आप लोग पानी, नदी में बहा देते थे। आप लोगों के समय यह घोटाला हुआ है हमारे समय में ऐसा नहीं हुआ है। जब कि उस समय उस एजेंसी में जो ठेकेदार रहता था, उनको एडवांस में पैसा दे दिया जाता था। इसे आप लोगों के समय का घोटाला कहेंगे। यह हमारे समय में जब तक वितरण नहीं होता है हम लोग कहीं किसी को पैसा नहीं देते हैं। उसी तरह से आप लोगों ने बच्चों के कुपोषण में मौत होने की बात कही है जबकि कहीं भी बच्चों की मृत्यु होना, कुपोषण से प्रतिवेदित नहीं है। जो मेडिकल रिपोर्ट है स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट है उसमें कहीं न कहीं कोई कारण से भले मृत्यु हुई है, पर कुपोषण से किसी एक भी बच्चे की मृत्यु नहीं हुई है। वर्ष 2005 से 2016 के बीच 10 वर्षों के बच्चों की मृत्यु में जितनी कमियां आईं हैं इन 4 वर्षों में उससे अधिक कमी परिलक्षित हो रही है। इसी तरह एन.एफ.एच.एस. 5 के आंकड़े बताते हैं कि शिशु एवं बाल मृत्यु दर में लगातार

कमी आ रही है। विपक्ष का विरोध और तथ्य सही नहीं है। मैं तो कहना चाहूंगी कि आज आप लोगों को हमारे छत्तीसगढ़ के हर कोने, गांव में सुनाई देता होगा कि भूपेश है तो भरोसा है। इसीलिए आप लोगों को मिर्ची लगती है। इन्हीं भावनाओं के साथ मैं अपनी बात समाप्त करती हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- रंजना जी आप 5 मिनट में खत्म कर दीजिए।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू(धमतरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह तो नाइंसाफी है।

अध्यक्ष महोदय :- यह नाइंसाफी नहीं है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू : - माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार के खिलाफ जो अविश्वास आया है मैं उसके पक्ष में बोलने के लिए खड़ी हुई हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इन दो लाईनों के साथ इस सरकार को समर्पित है। जो अंग्रेज न कर पाये, वह काम यह कर देंगे।

कमीशन तो दे दो, छत्तीसगढ़ को पूरा नीलाम कर देंगे ।।

यह इनको समर्पित है।

श्रीमती अनिला भेंड़िया :- माननीय मोदी जी हा पूरा भारत ला नीलाम करत हे।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू:- माननीय अध्यक्ष महोदय, सच सुनने से न जाने क्यों कतराते हैं यह लोग। तारीफ चाहे असत्य ही क्यों न, सुनकर बड़ा मुस्कुराते हैं यह लोग।

अध्यक्ष महोदय :- वाह।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह इनको ही समर्पित है। यह सरकार के लिए समर्पित है। इस सरकार के खिलाफ अविश्वास आया है। हम इस सरकार पर क्यों भरोसा करें? जो सरकार छत्तीसगढ़ प्रदेश की बहन बेटियों को सुरक्षित नहीं रख पा रही है, हम इस सरकार पर क्यों भरोसा करें, जिसकी कानून व्यवस्था चरमरा गई है, इस सरकार पर क्यों भरोसा करें, जहां अवैध रूप से शराब का संचालन हो रहा है जो जुंआ और सट्टा ऐसे कार्यों को संरक्षण दे रही है। खुलेआम गुनाहगारों और आरोपियों को संरक्षण दे रही है। सत्ताधारी दल की मेरी विधायक बहनें कहां हैं, जिनको बड़ी लज्जा आ रही थी जब युवाओं के माध्यम से [50][XX] प्रदर्शन हो रहा था। इनको लज्जा आ रही थी कि हम तो महिला हैं युवा [XX] प्रदर्शन कर रहे हैं। आपको अब लज्जा नहीं आयी। समाचारपत्रों ने इसे बड़ी प्रमुखता के साथ छापा है। अंबिकापुर सेन्ट्रल जेल में महिलाओं के कपड़े उतरवाकर उनकी अश्लील वीडियो बनाई गई और उस वीडियो को वायरल किया गया। वहां के कर्मचारियों, महिला बंदियों ने यह आरोप लगाया कि वहां के जेलर उनसे दुर्व्यवहार करते हैं। यहां कानून व्यवस्था कहां है? इस प्रदेश में

[50] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कहां पर पुलिस प्रशासन है जहां पर महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। यह प्रदेश ऐसा है हम इसे कहते हैं कि छत्तीसगढ़ महतारी। मां के नाम से जिसे जाना जाता है। जब भी मां का नाम आता है तो लोग बड़े भावुक होते हैं। यहां न तो हमारी बहनें, बेटिया सुरक्षित हैं। कुछ समय पहले की घटना है। एस.ओ.एस. बाल आश्रम में महज 14 साल की नाबालिक बच्ची गर्भवती हो गई। इनके प्रशासनिक अधिकारी कहां हैं? क्यों उनको सजा नहीं हो रही है?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप झलियामारी काण्ड की बात कर रहे हैं क्या?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव:- माननीय अध्यक्ष महोदय, झलियामारी में क्या हुआ और दिल्ली में पहलवानों के साथ क्या हो रहा है? पहले उसको ठीक करिए।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसे गुनाहगारों को संरक्षण दिया जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- उनको डिस्टर्ब न करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसे गुनाहगारों को संरक्षण दिया जा रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कुछ समय पहले रायपुर राजधानी की घटना है। केवल 15 साल की एक बच्ची के बाल को पकड़कर सरे आम सड़क में घसीटा गया। लोग उसका वीडियो बना रहे थे। उस समय आपका पुलिस प्रशासन कहां था? जब उस बच्ची को गंडासे से पीटा गया। उस बच्ची का पूरा खून बह रहा था और उस बच्ची को पूरे सड़क में घुमाया जा रहा था। इस प्रदेश में कहां पर बिच्चयां सुरक्षित हैं, हम क्यों सरकार पर विश्वास करें। माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार पर विश्वास करने का तो सवाल ही नहीं उठता। यदि शराबबंदी के विषय में यह कोई बात कर दे तो इस सरकार को नैतिक अधिकार नहीं है। यह क्यों शराबबंदी के विषय में बात करेंगे? आपने तो कमेटी बनाई, कमेटी कहां-कहां भ्रमण में गई, उस कमेटी के माननीय अध्यक्ष जी बैठे हैं, उस कमेटी के सदस्यगण बैठे हैं। वह कमेटी कहां-कहां गई, शराबबंदी के कौन से आर्थिक और सामाजिक प्रभाव पड़ेंगे, इन्होंने क्यों सदन के पटल पर उसे नहीं रखा। हम भी जानना चाहते हैं, हम सदन के सदस्य हैं कि शराबबंदी से क्या फायदे हैं और क्या नुकसान हैं। आप सार्वजनिक रूप से सदन के बाहर जरूर बात करते हैं पर सदन में किसी में हिम्मत नहीं है कि शराबबंदी के विषय में बाद कर दे। क्या किसी की हिम्मत है? आप शराबबंदी के विषय में बात करिये। हमारी बहनों को धोखा दिया, हमारी छत्तीसगढ़ प्रदेश की ऐसी भोली-बहनों को शराबबंदी के नाम पर धोखा दिया जा रहा है। एक तरफ देखें तो शराब की घर पहुंच सेवा मिल रही है। मोटलों में शराब बिकना शुरू हो गई है जहां पर हम कभी पारिवार के साथ बच्चों को घूमाने के लिए लेकर चले जाते हैं। वहां पर शराब मिल रही है, मोटलों में, रेस्टारेंट में खुले आम शराब बिक रही है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल में छत्तीसगढ़ को शराबगढ़ बनाने वाले शराबबंदी की बात कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- डॉक्टर, प्लीज, आप मत बोलिये।

श्री देवेन्द्र यादव :- कौन से मोटल में अवैध शराब बिक रही है और क्या आपने उसकी जिला प्रशासन में शिकायत की?

अध्यक्ष महोदय :- देवेन्द्र यादव जी, कृपया बैठ जाईये, समय बहुत हो गया है, आप ख्याल रखिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, हम बच्चों को लेकर माल घूमने जाते हैं वहां पर बच्चे हमसे पूछते हैं कि मम्मी यह कौन सी दुकान है। हमको बताना पड़ता कि अब माल में भी शराब बिक रही है। हम हमारे बच्चों को क्या शिक्षा दें, उनको क्या जानकारी दें ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा विभाग के मंत्री बदले हैं, शिक्षा जैसे मंदिर में ऐसा घोटाला चल रहा है। आदरणीय रजनीश भैया ने उसका जिक्र आपसे किया। जिस प्रकार पदांकन को लेकर जिस प्रकार के घोटाले किये गये, पदोन्नति के पश्चात पदांकन काउंसलिंग प्रक्रिया से होनी थी, दिखाने के लिए काउंसलिंग प्रक्रिया की। जहां पर लोग अपने चुनिंदा स्थानों पर जाना चाहते थे, पोर्टल खोलते थे तो वहां पर वह स्थान दिखाता ही नहीं था। वह फुल भी नहीं दिखाता था, वह स्थान ही नहीं दिखाता। पूरे प्रयोजित तरीके से शिक्षा जैसे मंदिर के इस विभाग को कमीशनखोरी और घोटाले का अड्डा बना दिया गया और संशोधन के नाम से लाखों रुपये शिक्षकों से वसूले गये। यह बड़ी-बडी बातें करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- शिक्षा मंत्री जी कम से कम 1400 लोग एडवांश देकर घूम रहे हैं।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम आत्मानंद स्कूल की बड़ी तारीफ करते हैं और यह उधर से बड़ी-बड़ी बात कर रहे थे कि आत्मानंद स्कूल खुली तो ऐसा हुआ, वैसा हुआ। हम भी खुश हुए कि ठीक है, गरीब माता-पिता हैं, वह बच्ची जरूर उस स्कूल में जाये। मैं बता देना चाहती हूं कि आपने इस आत्मानंद स्कूल के चक्कर में ऐसे हमारे यहां 48000 सरकारी स्कूल हैं उसमें से 1900 स्कूल आज भी ऐसे हैं जो एकल शिक्षकीय हैं। मतलब पहली से पांचवीं तक की कक्षायें एक शिक्षक पढा रहा है। हम यदि मिडिल स्कूल में चले जायें तो तीन, चार कक्षायें एक ही शिक्षक पढ़ा रहा है। धोखे से कभी वह शिक्षक नही आयेगा तो उस स्कूल में या तो ताला लगेगा या उस स्कूल में यह स्थिति है कि वहां पर सफाई कर्मचारी पढ़ायेगा। या तो वहां की रसोईया बच्चों को पढ़ाती है या बच्चे स्वयं टीचर बनकर वहां पर पढाने लगते हैं। यह स्कूलों की स्थिति है। आप 05 सालों में शिक्षकों की भर्ती क्यों नहीं कर पाये ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, थोडा समय दीजियेगा। मैं आपके सामने एक बहुत महत्वपूर्ण विषय रखना चाहती हूं। राजपत्र में प्रकाशित हुआ, शिक्षा विभाग में माध्यमिक शालाओं में विषय विशेषज्ञ शिक्षकों की बाध्यता नहीं है। मतलब उस बाध्यता को खत्म कर दिया गया। यदि माध्यमिक स्कूल में छठवीं, सातवीं, आठवीं के जो बच्चे हैं यदि कला संकाय के शिक्षक वहां पहुंच गये, जो हिन्दी, विज्ञान या सामाजिक विज्ञान पढाना जानता हो। अब उसको आप कहेंगे कि तुम अंग्रेजी भी पढ़ा लो और उससे कहा जायेगा कि तुम गणित भी पढ़ा लो तो वह खुद कला संकाय का शिक्षक है तो वह अंग्रेजी और गणित माध्यमिक शिक्षा के बच्चों को कैसे पढ़ायेगा। यह जो आदेश निकला है यह निराधार आदेश है। ऐसे आदेशों का कोई मतलब नहीं है। यह बहुत चीख-चीख कर कहते थे कि चौकीदार चोर है। मैं ऐसे डेस-डेस, मैं बोलना नहीं चाहती, लेकिन ऐसे शब्दों का उपयोग इनके लिए करना चाहिए। यह चोर-चोर चिल्ला रहे थे। मैं इनको बता दूं कि मेरे प्रश्न के उत्तर में इन्होंने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने, केन्द्र की सरकार ने 2020-21 में 286 करोड़ रुपये प्रदेश की सरकार को दिया। 2021-22 में 423 करोड़ रुपये प्रदेश की सरकार को दिया, 2022-23 में 2942 करोड़ रुपये पूंजीगत व्यय निवेश हेतु विशेष सहायता राज्य को बिना ब्याज के केन्द्र की सरकार ने दिया है। यह कहते हैं कि मोदी जी चोर हैं। केन्द्र सरकार हमको कुछ नहीं देती। जो पैसा आपको दिया गया है। केन्द्र की सरकार राज्य को 50 सालों के लिए बिना ब्याज का पैसा दी है।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद। आप बैठ जाईये।

श्री देवेन्द्र यादव :- अध्यक्ष महोदय, हम भारत के नागरिक हैं। यह हमारा मौलिक अधिकार है। जो केन्द्र की सरकार ने नहीं दिया है, उसको भी तो स्पष्ट करिये। जो जी.एस.टी. का पैसा नहीं दिये हैं, उसको भी स्पष्ट करिये।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, शांत रहिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आपको जी.एस.टी. पता नहीं है। जी.एस.टी. दो प्रकार की है। राज्य सरकार भी जी.एस.टी. लेती है। पता करिये कि पैसा कहां है? आपका पैसा कहां गया?

अध्यक्ष महोदय :- रंजना जी। बहुत हो गया।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- अध्यक्ष जी, हम लोगों का समय काट लीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया। कहां काट लेंगे। 10 मिनट तो हो गया। आप लोगों ने ही तय किया था।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- अध्यक्ष जी, हम लोगों का समय काट लीजियेगा।

अध्यक्ष महोदय :- वह कैसे वहां अलग बात करते हैं, यहां अलग बात करते हैं। अब हो गया। जल्दी खत्म करिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, इन्होंने सुगम सड़क योजना की शुरूआत पहले साल की थी। माननीय पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री जी ने अपने भाषण में बहुत सुंदर कहा कि प्रदेश में जो युवा हैं, जो शिक्षित बेरोजगार हैं, उनको हम रोजगार देंगे। शुरूआत बड़ी अच्छी की, लेकिन एक रूपये का पैसा विभाग को नहीं मिला। मंत्री जी ने स्वंय स्वीकार किया। जब इन्होंने पहले साल सुगम सड़क योजना की शुरूआत की। जो युवा साथी हैं, उन्होंने दूसरे से पैसे उधार लिये और ठेकेदारी का कम शुरू किया, लेकिन आज पर्यन्त तक सुगम सड़क योजना में हमारे युवा साथियों को पैसे नहीं मिले। आज वे ब्याज चुका रहे हैं क्योंकि उन्होंने पैसे उधार लिये। यह सरकार की स्थिति है। आप सुगम सड़क योजना में क्यों पैसे नहीं दे पाये ? आपने एक साल शुरूआत की।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, वह बिल्कुल गलत बात कर रही हैं। पूरा पैसा पेमेंट कर दिया गया है। एक भी पैसा किसी का बकाया नहीं है। ऊपर हमारे पास आज भी सुरक्षित रखा है। अगर कहीं जरूरत है तो बतायें, हमारे पास आज भी सैकड़ों-करोड़ों रूपये है।

श्री रामकुमार यादव :- मनगढंत बात झन गोठिया वो मोर बिहनी।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अभी बिल आया है, पता कर लीजिये न।

श्री देवेन्द्र यादव :- आप क्यों असत्य बोलती हैं। वह वाला अच्छा था कि बच्चे पढ़ा सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, प्लीज-प्लीज।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- अध्यक्ष जी, युवाओं का पेमेंट बाकी है, मैं मंत्री जी को बता दूंगी।

श्री देवेन्द्र यादव :- अध्यक्ष जी, वह वाला अच्छा था कि टीचर नहीं आते तो बच्चे खुद ही पढ़ाने लग जाते हैं। वह वाला अच्छा था।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार एक बड़ा राजनीतिक फेरबदल हुआ कि हमको डिप्टी सी.एम. मिले। बड़ी प्रसन्नता हुई। माननीय डिप्टी सी.एम. साहब के दर्शन भी मिले।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, उनको बधाई देते हुए समाप्त करिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- एक अलग स्वरूप में दर्शन हुए। कुल मिलाकर उनको बहुत बढ़िया ऊर्जा विभाग मिला। हम लोग बड़े प्रसन्न हुए कि हमको डिपटी सी.एम. मिले हैं, ऊर्जा विभाग मिला है। माननीय अध्यक्ष जी, मैं बता दूं कि यह ऊर्जा विभाग एक ऐसा विभाग है, जहां पर सर्किट के फ्यूज तार बदलने के लिए पैसे नहीं है। यह टोटल खाली विभाग है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- ऐसा नहीं है। इतना असत्य मत बोलिये। असत्य बोलने के लिए नकल करती हो।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, 1 लाख से अधिक स्थाई पंप कनेक्शन लंबित हैं। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, केवल भाषणबाजी होगी तो हमको मौका नहीं मिला है। हम लोगों को भी मौका दे दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज-प्लीज। समय कम है। ख्याल रखिये। चलिये, आप भी ख्याल रखिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय डिप्टी सी.एम. साहब स्वास्थ्य मंत्री भी हैं।

अध्यक्ष महोदय :- उनको बधाई दीजिये न तो।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सर, मैं एक किस्सा बता रही हूं। एक संविदा स्वास्थ्य कर्मी मिलने आया। उनका बड़ा स्पष्ट विषय था कि साहब से मिलने गये तो उस समय साहब ने कहा कि मेरे हाथ में कुछ नहीं है। भले ही मेरे पास विभाग है, लेकिन मेरे हाथ में कुछ नहीं है। मैं माननीय मुख्यमंत्री तक आपकी बात पहुंचा दूंगा। लेकिन आज मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि आपके विभाग के जो अनियमित कर्मचारी हैं। अब तो आप पावरफूल हैं तो क्या आप उनको जरूर नियमित करेंगे। क्योंकि वह आस लगाकर बैठे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चार दिन तो हुए हैं। (हंसी) चार दिन में कौन पावर फूल हो जाता है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, यह डी.एम.एफ. की बड़ी-बड़ी बात करते रहे।

अध्यक्ष महोदय :- आप धन्यवाद दीजिये न। हो गया।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- अध्यक्ष जी, मेरा विषय थोड़ा सा है।

अध्यक्ष महोदय :- मेरी बात भी तो कभी सुन लीजिये।

संसदीय सचिव, समाज कल्याण मंत्री से संबद्ध (डॉ. रश्मि आशिष सिंह) :- अध्यक्ष महोदय, हहमारे पक्ष से सब महिला वक्ताओं का नाम काट दिया गया है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- अध्यक्ष जी, सरकार का इसी में नो कांफिडेंस है।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज-प्लीज।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- अध्यक्ष जी, इसी में सरकार के लिए नो कांफिडेंस है कि इन्होंन जो डी.एम.एफ. का घोटाला किया। कलेक्टरों को मोहरा बनाया। आत्मानंद स्कूल की बड़ी-बड़ी बात करते हैं।

श्री रामकुमार यादव :- तोर लबारी ला तरी-तरी लजा जात हौं वो।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- 9 करोड़ रूपये का आत्मानंद स्कूल बनाया।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अच्छा तो बनाया है, मैडम। जाकर देखिये।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- अध्यक्ष जी, 25 मिनट हो गया।

श्री ननकी राम कंवर :- यह खड़े हो गये, यह क्या तरीका है ? (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

संसदीय सचिव, महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबद्ध (डॉ. रश्मि आशीष सिंह) :- पहले भी तो बहुत सारे वक्ता बोल रहे थे ।

अध्यक्ष महोदय :- नींद आत हे । चलिये । माननीय मुख्यमंत्री जी ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रंजना जी काफी स्पीड से बोल रही हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत गुस्से में बोल रही हैं । उत्तेजित हैं ।

श्री भूपेश बघेल :- कुंअरहां पानी बरोबर गिरत हे फड़फड़- फड़फड़ । माननीय अध्यक्ष महोदय, उन्होंने बहुत सारी बातें कही । जब मुझे जवाब देना होगा तो मैं जवाब दूंगा लेकिन मैं पिछले सत्र से भी देख रहा था और अभी भी मैं देख रहा हूं कि स्वामी आत्मानंद जी का नाम कम से कम सम्मानपूर्वक लिया करें । उनके नाम से हमने स्कीम चलायी है और आप बार-बार आत्मानंद-आत्मानंद बोल रही हैं । यह पीड़ादायक है और इसलिये मैं आपसे कहूंगा कि जब बोलें तो पूरी स्कीम उसमें है । स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम या उत्कृष्ट अंग्रेजी या हिंदी माध्यम स्कूल है । मैंने आपको पिछले सत्र में भी देखा इसलिये मैं आपको खड़े होकर बोल रहा हूं ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं क्षमा चाहती हूं । स्वामी आत्मानंद स्कूल । मैं आपको एक बहुत साधारण सा उदाहरण बताती हूं कि नगरी की विधायक मेडम बैठी हैं । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग क्या चाहते हैं ? (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- नगरी का स्वामी आत्मानंद हिंदी इंग्लिश उत्कृष्ट ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं इतनी जल्दी-जल्दी कर रहा हूं, आप लोग मेरा सहयोग करिये ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 9 करोड़ रूपये में स्वामी आत्मानंद स्कूल बनाया । नगर पंचायत है, नगर पंचायत को एजेंसी न बनाकर ग्राम पंचायत को एजेंसी बनाया और ढ़ाई करोड़ रूपये डकार गये । यह स्वामी आत्मानंद स्कूल, माननीय मुख्यमंत्री जी अगर थोड़ा भी लगता हो तो जरूर इस विषय की आप जांच कराईयेगा क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है । डीएमएफ के पैसे का विधायक लोग तरसते हैं कि एक नाली, एक रोड हमको मिल जाये । डीएमएफ पैसे का यह उपयोग किया गया । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय प्रदान किया इसके लिये आपको इन शब्दों के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं कि - कुछ देर खामोशी है, फिर शोर आयेगा । तुम्हारा सिर्फ वक्त है और हमारा दौर आयेगा । धन्यवाद ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- मतलब अब भाजपा का यह कहना है कि सरकार बनेगी ।

अध्यक्ष महोदय :- डॉ. विनय जायसवाल । केवल 5 मिनट ।

डॉ. विनय जायसवाल (मनेन्द्रगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसा मत करिये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- कोशिश करिये ।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह पंचम विधानसभा का अंतिम सत्र का अंतिम दिन है ।

अध्यक्ष महोदय :- इसीलिये मैंने आपको अवसर दिया कि आप 5 मिनट में बहुत कुछ कह सकते हैं ।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने बहुत कुछ तैयारी की थी लेकिन समय की बाध्यता है ।

अध्यक्ष महोदय :- अगली बार कोशिश करना, ज्यादा समय देंगे ।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं यह बोलूंगा कि जब मैं पीएमटी की परीक्षा देकर एमबीबीएस कर रहा था तो खुशी हुई कि हम लोग पांच साल के बाद डॉक्टर बने और उस समय के डीन थे, इस समय के डीन आप बैठे हुए हैं, हमारे संरक्षक क्षेत्र में भी और यहां पर भी ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अजय चंद्राकर जी का गला बैठ गया है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह स्पष्ट करिये कि बिना चिट मारे बने हैं कि 5 साल में ही बने हैं ? या बिना चिट मारे ज्यादा समय में बने हैं ?

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके संरक्षण में हम लोगों को यहां बहुत अच्छा सीखने को मिला । चूंकि यह अंतिम सत्र है और यह जो अविश्वास प्रस्ताव आया है, मैं इसके विरोध में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं । निश्चित रूप से जैसे 5 साल में हम लोग अपने एमबीबीएस की पढ़ाई करते थे, सीखते थे । यहां पर भी हम लोगों को निश्चित रूप से बहुत कुछ सीखने को मिला है। कुछ बहुत ही कॉमन शब्द, क्या है कि मैंने अपना भाषण पूरा चेंज कर दिया ताकि मैं 5-0 मिनट में समाप्त कर दूं ।

अध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल 5 मिनट में खत्म कर दो ।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो बहुत सारे कॉमन शब्द हैं उन चीजों को हम लोगों ने सभी नये विधायकों ने सीखा है । खासकर के पुराने विधायकों की बात मैं नहीं करूंगा । हम सभी नये विधायकों ने एक शब्द सुना है - लेजिसलेशन, लेजिसलेशन, लेजिसलेशन । उसका अर्थ मुझे इधर के माध्यम से यह समझ में आया कि जैसे बल्लेबाज का स्ट्राईक रेट होता है न, क्रिकेट में किसी भी बल्लेबाज का स्ट्राईक रेट होता है तो वैसे ही अगर लेजिसलेशन का स्ट्राईक रेट बोलेंगे न तो हम तीसरे मिनट में माननीय अध्यक्ष महोदय । (हंसी) माननीय अध्यक्ष महोदय बोलने का 3 मिनट का स्ट्राईक रहता है । माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बात और कि इतना बड़ा वित्तीय प्रबंधन कैसे होगा, इतनी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बड़ी-बड़ी घोषणायें कर दिये । माननीय यशस्वी मुख्यमंत्री ने जो घोषणा की कि 2500 रूपये समर्थन मूल्य देंगे वह आज भी दे रहे हैं । आज भी शिवरतन शर्मा जी 13-14 रूपये का कुछ-कुछ हिसाब बता रहे थे। इन लोगों को लज्जा नहीं आई।

अध्यक्ष महोदय :- आप इन लोगों का नाम नहीं लेंगे, क्योंकि फिर आप नाम लेंगे तो लोग उठेंगे।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जल्दी खत्म कर रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आप इशारे में बता दो डैश-डैश करके।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बात और सीखी। इन 5 सालों में स्ट्राइक रेट जैसे माननीय अध्यक्ष महोदय का था, वैसे ही एक चीज और सीखे कि माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। (हंसी) तो पूरा का पूरा जब राजनीति में मुद्दे खत्म हो जाते हैं, जिस प्रकार से 5 साल की यह सरकार माननीय भूपेश बघेल की इस सरकार ने काम किया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कुछ चीजें और कहना चाहूंगा कि जो कान में जो पिघला हुआ शीशा होता है, उस तरह के कुछ शब्द हैं, जो आज विपक्ष को लगते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, शब्द क्या हैं? भौंरा की बात करें, गेड़ी की बात करें, गिल्ली-डंडा और फुगड़ी की बात करें, चिला, फरा और बोरे-बासी की बात करें तो ये जो सारे के सारे छत्तीसगढ़ के जितने शब्द हैं, पिघले हुए शीशे की तरह इनके काम में चूभते हैं। क्यों? क्योंकि इन शब्दों से छत्तीसगढ़ की मर्यादा, छत्तीसगढ़ का मान और छत्तीसगढ़ का सम्मान बढ़ाने का काम माननीय यशस्वी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल नहीं किया है। (मेजों की थपथपाहट) अजय चन्द्राकर जी बहुत सारी बातें करते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप नाम नहीं लेंगे। उनका गला खराब हो गया है।

डॉ. विनय जायसवाल :- इधर से बहुत सारी बातें होती हैं कि इस किताब में यह लिखा है। फलाने में ये है, ढेकाने में ये है, निश्चित रूप से आपके ज्ञान की तुलना हमारे ज्ञान से नहीं कर सकते, लेकिन जो काम हो रहे हैं, वो तो छत्तीसगढ़ में दिख रहा है न। कर्जा माफी की जो बात की थी, वो तो हमने किया न। हम समर्थन मूल्य दे रहे हैं न। 2800 रूपये देने का हमारा वायदा है न। 20 क्विंटल खरीदने का हमारा वायदा है न। ये बार-बार केवल एक प्रश्न करते हैं। अभी तो रमन सिंह जी नहीं हैं। ये इतना बड़ा वित्तीय प्रबंधन फिर वही जो शब्द मैंने बताया 4,5, 6 शब्दों को हमने सीखा है।

अध्यक्ष महोदय :- आप रिपीट मत करिए न।

डॉ. विनय जायसवाल :- जो काम इस सरकार में हुआ है, हिन्दुस्तान की किसी सरकार ने नहीं किया है। ये बात मैं बोलना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की आत्मा क्या है? जितने भी माननीय सदस्य हैं, वे सभी बोलते हैं कि छत्तीसगढ़ की आत्मा धान है। छत्तीसगढ़ की आत्मा है यहां का किसान, यहां का अन्नदाता। पुन्नूलाल जी ने भी बोला और मुझे उनका नाम याद नहीं आ रहा, हमारे ब.स.पा. के हाथी वाले विधायक हैं, ये भी बोले कि छत्तीसगढ़ के किसानों का यदि किसी ने मान-सम्मान बढ़ाने का काम किया है तो हमारे माननीय यशस्वी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इन बातों को नहीं बोलता। माननीय, मुझे 2-3 मिनट दे दीजिए। आप हमारे डीन हैं।

अध्यक्ष महोदय :- उन बातों को मत बोलिए, जो नहीं बोलना चाहते थे। (हंसी)

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके संरक्षण में हम लोगों ने एम.बी.बी.एस. पास किया है। हम लोग विधायक बन गये हैं, 5 साल में ऐसा लग रहा है। आज के बाद हम विधायक बन जायेंगे। हमने जब इलेक्शन फाइट किया था तो उस समय हम विधायक बने थे, लेकिन उस समय हमारा एडमिशन हुआ था। अभी पूरा 5 साल में आपके डीनशीप में आपकी अध्यक्षता में हम एक बहुत उत्कृष्ट विधायक बनकर निकल रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय,आप तो हमारे क्षेत्र में भी हमारा संरक्षण करते हैं और हमारा विधान सभा में भी संरक्षण करते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, निर्लजता और मानवता का असम्मान, मणिपुर में इतनी बड़ी घटना हुई।

अध्यक्ष महोदय :- वो सब जानते हैं, चाहे आप बोले या न बोले।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किस तरह से [XX][51] का प्रदर्शन किया गया? उसके बारे में एक शब्द नहीं बोलना। सबसे बड़ी बात हमारी हमारी जो रंजना जी प्रधानमंत्री जी की बात कर रही थीं। माननीय अध्यक्ष महोदय, इतनी असंवेदनशीलता कैसे हो सकती है कि देश के प्रधानमंत्री यह बयान देते हैं कि राजस्थान में यह घटना नहीं होनी चाहिए। छत्तीसगढ़ की घटना और मणिपुर की भी जो घटना है वो निंदनीय है और घृणित है। माननीय अध्यक्ष महोदय, बृजमोहन अग्रवाल जी एक बात कह रहे थे। मैंने फिर नाम ले लिया है, क्योंकि उनके भाषण की जो शुरूआत हुई थी, केवल और केवल आधे घंटे तक (xx), (xx), (xx) शब्द इस पवित्र सदन में बोलते रहे, जो कि इतने सीनियर सदस्य हैं । उन्होंने दो शब्द कहा था कि आदमी अपने बैडरूम में निर्वस्त्र होता है, बाथरूम में निर्वस्त्र होता है । ये शब्द मेरे नहीं है, आप रिकॉर्ड निकलवा लीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- जो बात आपको अच्छी नहीं लगी । उन्हीं बातों को क्यों दोहरा रहे हो ?

डॉ. विनय जायसवाल :- मेरी जो पीड़ा है, मैं अपने उद्गार आपके सामने व्यक्त कर रहा हूं ।

---

[51] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- मत व्यक्त करो । जो बात आपको अच्छी नहीं लगी, वह अच्छी नहीं थी । आपको फिर सबको क्यों बता रहे हो ?

डॉ. विनय जायसवाल :- अध्यक्ष महोदय, मैं यह बोलना चाहता हूं कि इस तरह का बयान देश के प्रधानमंत्री जी का मणिपुर के विषय में आया है, ऐसा बयान वही व्यक्ति दे सकता है जो बाथरूम में और जो माननीय बृजमोहन जी ने कहा है । केवल और केवल जिसके दिमाग में 24 घंटे केवल राजनीति, राजनीति, चुनाव और चुनाव रहेगा । अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का मौका दिया । यह अंतिम सत्र का अंतिम दिन है । मैं सभी को बहुत शुभकामनाएं देता हूं । खासकर आपको बहुत धन्यवाद देता हूं ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अध्यक्ष महोदय, डॉक्टर साहब ने बहुत अच्छी बातें कही । मैं उनके लिए कुछ कहना चाहता हूं - इस दौर के लोगों में वफा ढूंढ रहे हो, बड़े नादान हो डॉक्टर साहब, जहर की शीशी में दवा ढूंढ रहे हो ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत बढ़िया । डॉक्टर के लायक ही है । चलिए, रामकुमार जी, पांच मिनट में आप भी ऐसे ही हंसवाइए जैसे डॉक्टर ने हंसवाया है, कम से कम गुदगुदा दीजिए, सोने के मूड में थोड़ा मूड ठीक हो जाए ।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं विपक्ष के द्वारा जो हमर सरकार जो भारत मा एक नम्बर के राज ला चलात हे, अइसे सरकार के ऊपर अविश्वास प्रस्ताव लाए हे ओकर विरोध में खड़े हौं । हम तो कम पढ़े लिखे हन, हम आपके जिले में आपके गोद मा खेलकर यहां तक आए हन । देखत रहेन इहां बड़े बड़े पढ़े लिखे, पुस्तक ला पढ़कर ज्ञानी मन के बात ला सुनत रहेंव । अउ एमन अविश्वास लगाइए ता मैं मन मा ए बात ला गुनेंव । अउ ए छत्तीसगढ़ के तीन करोड़ जनता आज चुनकर भेजे हावय ओमन के ऊपर ए तेरह जिन मन अविश्वास लगाए हे ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- 13 नइ 15 झिन ।

श्री रामकुमार यादव :- तू कोनो मे नइ हा । तू दोनों के बीच में कहे रहा । बीच मा बइठे रहा । आज एमन अविश्वास लगाए हे । मैं ओ बात ला याद करथौं । 15 साल छत्तीसगढ़ के जनता एमन ला मइका दे रहिन हे । एमन ला कोन रोके रहिस हे, वो गरीब आदमी, वो किसान कर्जा मा पइदा होवे अउ कर्जा मा मर जाए । ओमन ला कर्जा माफी करे ले एमन ला कोन रोके रहिस हे । ए मन ला याद नइ आइस । वो गरीब आदमी जेमन के कह के हे - गांव मा घर नइ हे न खार मा खेत नइ हे । जेमन निर्धन व्यक्ति हे, रोज कमाथे, रोज खाथे । भारत मा पहला मुख्यमंत्री हे, ओखर मन भी योजना ला दिस । काबर के मैं भी भूमिहीन व्यक्ति हौं। मोर ददा के एक डिसमिल जमीन नइ रहिस, न मोरो एक डिसमिल जमीन नइ हे । हालांकि अब आप मन विधायक बना दे हौ, मोर वेतन भत्ता बना देव । लेकिन अगर जमीन के बात किए जाए तो मैं भूमिहीन व्यक्ति हौं । एखर खातिर ओ दर्द ला मैं समझथौं । अउ

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आज एमन, ए समझथैं कि भाषण दे देबो, झूठ बोल देबो तो सितो-पतिया जाही कहिके आज छत्तीसगढ़ के जनता आप मन ला देखत हे, कब निकल के जाहौ तो जवाब दिही । अध्यक्ष महोदय, एमन तरह तरह के बात सोचथे, कइसे झूठ बोलबो, कइसे आरोप लगाबो । वो जाकर गांव के महिला ला पूछ के देखौ । जे महिला मन काला रेक्सोना साबुन कथे, काला लाइफाब्वाय साबुन कथे, काला शैम्पू कथे, वो जंगल के मोर दीदी बहिनी मन नइ पावय चुपरे बर । काबर के ओमन गरीब आदमी हे, कहां ले पातिन । लेकिन धन्य हे मुख्यमंत्री गोबर ला खरीदे के काम करिस । हमन छोटे रहिन तो एक कहावत सुनन - जे कुछु काम के नइ राहय तो ओला का काहय, ये गोबर गादा हे, ये गोबर गणेश हे । मतलब गोबर से तुलना करयं लेकिन उही गोबर ला आय के साधन बना दिस तो जंगल मा रहने वाला मोर गरीब आदिवासी समाज के मोर बहिनी मन भी शैंपू ला चुपर के चुंदी ही फुरूर हो जावत हे। (हंसी) आज ऐ व्यवस्था हमर सरकार हा करे हे। ऐ मन ला ओ बात के दर्द होत हे। काबर ऐ मन ओ बात ला तो कर सकिस नहीं, ऐखर खातिर ए मन के दर्द होत हे। ए मन के मन में पीड़ा होत हे। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज ऐ पहली सरकार ए जेन गरीब से गरीब अउ अमीर के अमीर सब के बरोबर समतामूलक समाज बना के चलत हे। आप कबीर साहब के मानने वाला अव, मैं आपे के द्वारा कई ठन चौपाई ला सुनथव, मैं पढ़े-लिखे नई हंव, मोर ददा कवासी लखमा जी भी हा पढ़े-लिखे नई हे (हंसी) लेकिन ओला कोचक के जगा दिस, एमन ओला भस्म करे बर अइसे भाषण दे हे, ए मन के उपर में आग के गोला छोड़ दे हे। आज मे ए बात ला कहना चाहत हंव, कबीर साहब कहे रहिस हे-

"कबीरा जब हम पैदा हुए, जग हंसे हम रोए।
ऐसी करनी कर चलो, हम हंसे जग रोए।"

अध्यक्ष महोदय :- वाह, धन्यवाद।

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष महोदय, कबीर साहब के बात ए, ओखर बाद रविदास जी हा काय कहे रहिस हे-

"ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिले सबन को अन्न।
छोट-बडो सब सम रहें, रविदास रहे प्रसन्न।"

आज हमर सरकार हा ए विचार मा चलत हे। तुहर सरकार हा सिर्फ अउ सिर्फ धोखाबाज सरकार रहिस हे। मोला मोर अध्यक्ष महोदय जी हा मोला कम शब्द बोलबे कहे हे, दोहा ज्यादा पारबे कहे हे। मैं एक दो ठन दोहा भी पार देत रहेव, काबर मैं पहली मोर ददा के संग मा गरवा चरात रहेव ता मोर इहिच तो बुता रहाय। हमन राउत नाचे बर शक्ति जावत रहेन। मोर ददा हा कहे रहिस हे, काबर ए मेरे मैं भगवान से ए विनती करथव सब के लंबी उम्र हो। यहां पे 13 झन चुन के आए हव भगवान करे आप मन ला 13 झन फिर लान देवय। (हंसी) ओखर एक ठन उदाहरण हे, जीना मरना कोई नई लिखे हे, ऐखर खातिर मैं कथव कि ए संसार में बहुत सारा फल हे लेकिन हमर मन के मुख्यमंत्री अउ चरणदांस

महंत जी के कोला मा फलथे, ओला कथे बिही, बढ़िया बढ़िया गोठयावव आज लास्ट दिन ए, तुमन के शब्द ला मे सुनत रेहेव, मैं लजा जाता रेहेव, इ दिन के आत ते कोन जिही, कोन मरही। (मेजों की थपथपाहट) कभी भी आदमी ला ए समझ के चलना चालिए, हमेशा अच्छा शब्द लेके जाना चाहिए चूंकि जीवन अउ ए पद चार दिन के ए। हम बड़े बड़े धूर बीज ला देखेन, बड़े बड़े धुर बीज ला चुनाव हारत देखे हन, कोई काखरो रजिस्ट्री करा के नई आए हे, अइसे मत समझिहा, ओखर खातिर मोर आप से निवेदन हे, काखरो अइसे बात मत करव जेखर से मन में पीड़ा पहुंच जाए। मैं पुन: एक बार मोर भूपेश बघेल जी के सरकार ला, पूरा मंत्रिमंडल ला निवेदन करत हंव, प्रार्थना करत हंव, इसी प्रकार से आप छत्तीसगढ़ के बागडोर ला संभाले रईहा, आप ला तनिक नई घबराना चाहिए, ए मन आप ला कतको भी कुछ कहय, छत्तीसगढ़ के तीन करोड़ जनता आप के साथ हे आप ला घबराना नई हे। (मेजों की थपथपाहट) अधिकारी मन बर ए मन नाना प्रकार के गोठयात रहिन हे, ओमन सब ला नोट करत रहिन, भोरहा मा मत रईहा, उही अधिकारी ए, जेला तुमन ऐती तेती करिहा, चुनाव में जईहा ता, बाकी ला तो कुछु नई कहाय, जे गलती करही आंख दिखाही तेला तीन डंडा घलो लगाही। तुमन भोरहा में मत रईहा। (हंसी) मैं ओखर खातिर कथव, मोर छत्तीसगढ़ के सरकार में एक ठन अंतिम दोहा हे। छत्तीसगढ़ के तीन करोड़ जनता ला मोर भूपेश बघेल सरकार कहात हे, अउ कहा कह के मांगत हे-

"जैसे मालिक लेहे देहे, अउ जईसन झोखो सिसा।

अउ अन्नी धरे घर भरे, जुग जुग जिहा।।" (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, बहुत बहुत धन्यवाद। अउ इसी आशा अउ विश्वास के साथ सही बात हे...।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- बाबा रामकुमार यादव की जय। (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- भैया पहली बार हमू चुन के आयेन, भगवान करे, अगर आप मन के आशीर्वाद रही तो दोबारा आ जबोन, नहीं तो फिर शर्मा तुहरे हमर कहानी ए। काबर गरीब आदमी अन, गरीब के उपर सब रिस करथे। ओला सब मसके के कोशिश करथे। लेकिन मोला विश्वास हे, छत्तीसगढ़ में ऐखर ले अउ मजबूती के साथ सरकार आही अउ छत्तीसगढ़ के भला होही। इही आशा अउ विश्वास के साथ आप ला बहुत बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद। सौरभ सिंह जी। आप बहुत अच्छे वक्ता हैं, बहुत सुंदर वक्ता हैं।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष जी, आप जितना समय देंगे, आप घंटी बजा दीजिएगा, मैं चुप हो जाऊंगा। बहुत सारे आरोप हैं।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने पहले आपको 20 मिनट देने का सोचा था, मगर अब 15 मिनट दे रहा हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे बहुत सारे आरोप हैं और मैं अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। छत्तीसगढ़ में जो सबसे बड़ा घोटाला हुआ है, वह लीकर का घोटाला हुआ है।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले दो लोग बोले, वह इधर सुन रहे हैं तो भाग गये। ठाकुर साहब के लिए दुआ है कि आप बढ़िया-बढ़िया बोलिये। यह आखिरी विधान सभा सत्र है। आप ठीक-ठाक बोलना। आप उनके चक्कर में फंसना। वह भाग गये।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। आप उनको उचकाना नहीं। इन्होंने आपसे पहली बार कुछ कहा है।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में जो सबसे बड़ा घोटाला हुआ है, वह लीकर का घोटाला है। हम इस सदन में जो बात बोलते आ रहे थे कि 2 पेटी चल रही है। अवैध शराब जा रही है, उसको ई.डी. और आई.टी. के छापों ने प्रूफ कर दिया। मैं एक बात से अपनी बात को चालू करूंगा। वर्ष 2019 व 2020 में आपने अपने आबकारी विभाग का लक्ष्य 5,200 करोड़ रूपये का रखा। आपकी आय कितनी हुई? 95 प्रतिशत। 4,952 करोड़ रूपये की आय हुई। आपने अगले साल वर्ष 2020 व 2021 में अपने लक्ष्य को 5,000 करोड़ रूपये कर दिया। ऐसी कौन सी सरकार है जो अपने आबकारी विभाग के लक्ष्य को पीछे कर देती है? उसके बाद वर्ष 2020 व 2021 में आपने 5,500 करोड़ रूपये का लक्ष्य रखा। मैं आपको विधान सभा का जवाब पढ़कर बता रहा हूं। उसमें भी आपकी सिर्फ 92 प्रतिशत की वसूली हुई। तीसरी बात यह है कि आपने अंतिम वर्ष में पुन: 5,500 करोड़ रूपये का लक्ष्य रखा। मतलब, आप 4 साल में अपने लक्ष्य को 5,000 करोड़ रूपये से लेकर 5,500 करोड़ रूपये तक घुमाते रहे। आप इसलिए घुमा रहे थे क्योंकि डिस्टेरियल से जो अवैध शराब दुकानों में बिक रही थी, उसका हिसाब सरकार के खाते में नहीं आ रहा था। अक्टूबर माह में ई.डी. की रेड पड़ी और आप आखिरी 6 महीने की वसूली देख लीजिए। 5,500 करोड़ रूपये का टारगेट, जो एक भी साल पूरा नहीं हुआ, वह 126 प्रतिशत पहुंच गया। यही भ्रष्टाचार है। यह ई.डी. की रेड है और यही शराब का घोटाला है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी वित्त विभाग के मंत्री हैं। मुख्यमंत्री जी यह जवाब दें कि इस टारगेट को बढ़ाया क्यों नहीं जा रहा था? यह वित्त विभाग की जिम्मेदारी है कि टारगेट बढ़े। यदि टारगेट की पूर्ति नहीं हो रही है तो मुख्यमंत्री जी ने आबकारी अधिकारियों को कितने बार नाटिस दिया? वित्त विभाग से कितने बार आबकारी अधिकारियों को स्मरण पत्र दिया गया कि आपने अपना टारगेट फूलफिल क्यों नहीं किया? आबकारी विभाग के जो जिम्मेदारी अधिकारी थे, जिन्होंने टारगेट फूलफिल नहीं किया, उनके ऊपर कार्रवाई क्यों नहीं हुई? उनके ऊपर कार्रवाई इसलिए नहीं हुई क्योंकि त्रिपाठी जी, जो अभी जेल में हैं और जो होलोग्राम की फैक्ट्री चला रहे थे, वह इसके डायरेक्टर थे। इसलिए उनपर कार्रवाई नहीं हुई।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आबकारी नीति की बात कर रहे थे। हमारे समय में जो आबकारी नीति बनी थी, उसमें अंग्रेजी शराब डायरेक्ट बेवरेजेस कॉर्पोरेशन के गोदाम में आती थी और फिर बेवरेजेस कॉर्पोरेशन के गोदाम से शराब के दुकानों में डिस्ट्रीब्यूशन के लिए जाती थी। इन्होंने एक नया कानून लाया-FL-10 लाइसेंस। यह FL-10 लाइसेंस क्या है? अपने लोगों को अनुकृत करने के लिए आपने FL-10 लाइसेंस लाया। FL-10 लाइसेंस किसको दिया गया है? मैं आपको पढ़कर बता देता हूं। दि शीतल वैंचर्स प्राइवेट लिमिटेड, नैक्सोन पॉवर इन्ट्रा प्राइवेट लिमिटेड, ओम सांई बेवरेजेस प्राइवेट लिमिटेड। ये जितने लोग हैं, ये सब अंदर हैं।

श्री अमरजीत भगत :- वह बोरे बासी नहीं खाये हैं।

श्री सौरभ सिंह :- आप जिनकी बात कर रहे हैं, यह कोई बोरे बासी खाने वाले लोग नहीं हैं। यह 10 प्रतिशत का FL-10 लाइसेंस का खेल क्यों चालू हुआ? दो बड़ी कंपनियां थीं। यूनाइटेड बिरविरिस और यूनाइटेड स्पीरिट्स और डीयाजियो इंडिया। जो जॉनी वॉकर से लेकर दुनिया की सारी सबसे बड़ी शराब बनाती है। ये मल्टी नेशनल कंपनियां हैं। दूसरी कंपनी पनॉर्ड रिकार्डो है। जब इनकी सरकार आई तो उस कंपनी ने हाई कोर्ट में केस किया कि यह छत्तीसगढ़ में हमारी शराब को बिकने नहीं दे रहे हैं। फिर इन्होंने उसका रास्ता निकाला। ये मल्टी नेशनल कंपनियां कुछ नहीं दे सकती हैं। इन्होंने कहा FL-10 लाइसेंस। अपने बीच के आदमी को अनुकृत करने के लिए 10 प्रितशत लेने लगे। जब शराब सीधे बेवरेजेस कॉर्पोरेशन जाती थी तो FL-10 कहां से आ गया? यह भ्रष्टाचार है। आज आप प्लेसमेंट एजेंसी के बारे में कुछ नहीं बोल रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- सरकार ने यह नीति बनाई है। आप यह बताइये कि उस समय कितनी बिक्री होती थी ?

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- कवासी लखमा जी, क्या आपको कुछ समझ में आ रहा है? यह बोरे बासी खाने वाले लोग नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, बैठ जाइये।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज कार्रवाई की बात कर रहे हैं और माननीय मुख्यमंत्री जी बोलते हैं कि 3 शराब दुकानें हैं, जो शराब को बनाने वाले मैनिफैक्चरर हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। उनको पता नहीं चल रहा था। मैंने इसी सत्र में प्रश्न लगाया था। जो आबकारी अधिकारियों की पोस्टिंग होती है, आप भी आबकारी मंत्री रहे हैं, आदरणीय सत्यनारायण शर्मा जी भी आबकारी मंत्री रहे हैं, प्रत्येक डिस्टलरी में आबकारी विभाग के अधिकारियों की पोस्टिंग होती है । जब अवैध शराब जा रही थी तो आपके आबकारी अधिकारी क्या कर रहे थे ? आप उसको स्वीकार कर रहे हैं कि अवैध शराब जा रही थी और उन लोगों के खिलाफ तीन लोग जो ई.डी. में जाकर उधर के गवाही बन गए और आपका राज हो गया । उनके खिलाफ आप क्या कर रहे हैं ? आपके आबकारी अधिकारी क्या

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कर रहे थे, आप उनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं कर रहे थे ? सब मिलीभगत थी इसीलिए कार्रवाई नहीं हो रही थी । जो होलोग्राम लगता था, अवैध शराब निकलती थी, आबकारी अधिकारी मुंह बंद करके रखे थे । होलोग्राम नकली लगता था, डबल होलोग्राम बन रहा था और होलोग्राम बनाने का काम त्रिपाठी जी की कम्पनी कर रही थी, उनकी बीबी के नाम पर होलोग्राम बनाने का काम हो रहा था । वह होलोग्राम वहां बन रहा था और उसके बाद जो होलोग्राम बनकर जा रहा था, जो हम बार-बार इस पवित्र सदन में बोलते थे कि दो पेटी चल रही है, वह दो पेटी चल रही थी, उसे ई.डी. ने प्रुफ करके बताया कि दो पेटी चल रही है ।

अध्यक्ष महोदय :- अब छोड़, बहुत देर होगे, शराब के बात मत कर । शराब की बात को छोड़ दो, उसी के नाम से सबको नींद आ रही है ।

श्री सौरभ सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैं दूसरे विषय में आ जाता हूं । माईनिंग दूसरा सबसे बड़ा घोटाला । डी.ओ. के पीछे 25 रूपए टन लिया जाता है । जिस चीज को हम बोलते थे, उसको ई.डी. ने प्रुफ करके बता दिया, यह दस्तावेज है और जिन लोगों ने कोरबा में आपके यहां जाकर वाशिरी खरीदी, वे आज अंदर हैं, बाहर नहीं निकल रहे हैं । बहुत सारे मुख्यमंत्री निवास के लोग भी हैं, मुख्यमंत्री के कार्यालय के लोग हैं, जो अंदर हैं और ई.डी. एक इंवेस्टीगेशन एजेंसी है । वह इंवेस्टीगेशन एजेंसी ने चार्ज शीट फाईल की और चार्जशीट फाईल करने के बाद जो कोर्ट है, उस कोर्ट ने उसको आजतक बेल नहीं दी । वह कोयला कहां जा रहा था ।

अध्यक्ष महोदय :- ई.डी. की एजेंसी भारत सरकार की है । इसलिए ई.डी. के बारे में बात मत करिए ।

श्री सौरभ सिंह :- अध्यक्ष महोदय, एम.डी.ओ. (मिनरल डेव्हपलमेंट एण्ड आपरेशन) ये गारे पलमा का जो कोल ब्लॉक है, उसके मिनरल डेव्हपलमेंट एण्ड आपरेशन का कौन करता है ? वही व्यक्ति करता है, जिसको बार-बार राहुल गांधी जी कुछ-कुछ बोलते रहते हैं । उसको यहां पर काम क्यों दे रहे हैं ? उसकी ट्रांसपोर्टिंग के लिए कैसे जा रहा है, उसको एक्स्ट्रा रेट क्यों दिया जा रहा है ? और वह जो कोयला जा रहा था, आज वह कोयला मड़वा के प्लांट में जा रहा था, जो रद्दी कोयले की सप्लाई हुई है, मैं उसका फार्मूला बता देता हूं । कोयले की क्वालिटी 4200 जी.सी.बी. के नाम से उनका बॉयलर डिजाईन्ड है और एक बॉयलर उड़ गया, वह अभी तक नहीं बना है । क्योंकि रद्दी कोयला डाला जा रहा है । रद्दी कोयला कहां से आ रहा था? वह रद्दी कोयला कैसे गारे पालेमा से आ रहा था, बिना क्वालिटी के कोयला कैसे आ रहा था । अध्यक्ष महोदय, इस ढंग से छत्तीसगढ़ की जो लूट हुई है, वह लूट का यह उदाहरण है, यह हमने बताया है ।

श्री अमरजीत भगत :- बहुत अनुभव है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सौरभ सिंह :- अध्यक्ष महोदय, अनुभव की बात कर रहे हैं तो मैं एक चीज और बता देता हूं। अकबर साहब यहां बैठे नहीं हैं, वे के.एस.के. प्लांट के बारे में बड़ा जिक्र करते हैं । उस के.एस.के. प्लांट में जो कोयला सप्लाई करता था, वह भी जेल में है और वहां भी कम्पनियां आई थीं । वहां भी बहुत कुछ हुआ है । उस बात को छोड़िए, पवित्र सदन है, बहुत सारी बातों को मत बोलिए ।

अध्यक्ष महोदय, कोयले के बाद दूसरी चीज ऐश । मै बोल रहा था कि एन.जी.टी. ने कोरबा में 19 सितम्बर, 2022 को एक निर्णय दिया कि सबसे ज्यादा पॉल्यूशन कोरबा में हो रहा है । गलत स्थानों पर डम्पिंग हो रही है । ननकीराम जी के क्षेत्र में सबसे ज्यादा डम्पिंग हो रही है । अध्यक्ष महोदय, आप भी जाते हैं तो हंसदेव के किनारे डम्पिंग हो रही है और जो एन.जी.टी. ने निर्देश दिए, उसमें से एक भी निर्देश का पालन नहीं किया गया । कौन इतना ताकतवर आदमी है, जिसके खिलाफ इस निर्देश का पालन नहीं करते । वह व्यक्ति कौन है, जो राखड़ की ट्रांसपोटिंग का काम कर रहे हैं, जिनके खिलाफ कार्रवाई नहीं होती । कार्रवाई करने में क्यों डर लग रहा है ? इनके खिलाफ कार्रवाई करे न, कार्रवाई क्यों नहीं हो रही है? जो लोग प्रदेश की जनता के भविष्य को खराब कर रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय, डी.एम.एफ. । भ्रष्टाचार का पर्यायवाची डी.एम.एफ. हो गया है। यहां कभी आडिट नहीं हुआ, कभी इंटरनेट में लोड नहीं हुआ कि डी.एम.एफ. में क्या हुआ ? डी.एम.एफ. में कलेक्टरों ने जो धांधली मचाई और यह कहकर धांधली मचाई कि हाऊस से आया है । अब हाऊस ने भेजा या नहीं भेजा, यह तो किसी ने नहीं देखा है, पर हाऊस का नाम लेकर जो खेल हुआ, वह बहुत ज्यादा था । मैं अपने जिले का उदाहरण दूंगा । कोरोना कॉल में सिटी स्कैन की मशीन खरीदी गई, वह आजतक नहीं चल रही है । जिस रेट में सिटी स्केन की मशीन खरीदी गई, उस सिटी स्कैन की मशीन का रेट 25 से 30 प्रतिशत ऊपर है । जो वेंटीलेटर खरीदे गए , एक ही कम्पनी से तीन अलग-अलग रेट के वेन्टीलेटर खरीदे गये। जो 17 करोड़ रूपये की कोचिंग हुई, माननीय मंत्री जी ने यहां से भेजा तो 9 हजार बच्चों की कोचिंग हुई है, लेकिन वे पकड़ में नहीं आ रहे हैं कि कहां गये। बात थी कि कलेक्टर लोग डी.एम.एफ. के चक्कर में कहां-कहां घूम रहे हैं। डी.एम.एफ. के पैसे की बात होती थी, यह जो डी.एम.एफ. के पैसे का दुरूपयोग हुआ, जनता के पैसे का दुरूपयोग था और इस दुरूपयोग को रोकने के लिए क्या कदम उठाये गये ? कार्यवाही क्यों नहीं की गई ? क्यों उन कलेक्टर्स को उपकृत किया गया ? एक कलेक्टर थे, जिनके बारे में एक प्रश्न लगाया। जांजगीर के कलेक्टर ने एक दिन में, जब उनका आदेश पहुंचा, उन्होंने उसके 2 घंटे के अंदर 28 करोड़ बुक कर दिया, दूसरा कलेक्टर आकर कुछ नहीं कर पाया।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- [xx][52]

---

[52] [xx] अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठिये, आपकी बात रिकार्ड में नहीं आयेगा।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोरबा के एक कलेक्टर ने इन्टरेस्ट के पैसे को एयरस्ट्रीप के डी.पी.आर. के लिए खर्च कर दिया है। इन्टरेस्ट का पैसा कानून के हिसाब से खर्च नहीं हो सकता, इन्टरेस्ट का पैसा वापस जाकर समायोजित होता है। विधानसभा में जवाब है कि उस कलेक्टर ने इन्टरेस्ट के 25 लाख रूपये कोरबा में एयरस्ट्रीप बनाने के लिए डी.पी.आर. में बुक किया है। ये है ? क्यों कार्यवाही नहीं होती है ? उनको क्यों अनुग्रहित किया जाता है ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, धान की बहुत बात हुई। चावल की बहुत बात हुई। कल धान और चावल में कितना रेड पड़ा ? किसके-किसके यहां आई.टी. गई ? उनका नाम लूं ? राइस मिल के अध्यक्ष, कहां के अध्यक्ष, इसके अध्यक्ष, उसके अध्यक्ष।

अध्यक्ष महोदय :- उसको छोड़ो, उसको भी छोड़ दो।

श्री सौरभ सिंह :- आप बोलते हैं तो छोड़ देता हूं। मैं आगे नहीं बोलना चाहता कि मिलिंग में कितना क्या होता है, कितना क्या मिलता है, मैं उस पर नहीं बोलना चाहता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप जिस पर चाहेंगे, मैं उस पर बोलूंगा, अगर आप बोलेंगे कि नहीं बोलिये, तो मैं छोड़ दूंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सुबह गोबर, गौठान की बात हो रही थी। मंत्री जी जवाब ही नहीं दे पाये। नये-नये मंत्री बने हैं, उनके हाथ में पावर आया है, वह कुछ नहीं है। 227 करोड़ रूपये का हिसाब ही नहीं है। रोज फार्मला बदल रहा है। आपने गोबर खरीदी की, सही रास्ते पर तो चलाईये। यह 227 करोड़ रूपये जनता का पैसा है। आप उस जनता के पैसे को क्यों ऐसा कर रहे हैं ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अंत में एक बात बोलूंगा। प्रीमिटिव ट्राइब, यह आपकी रूचि का विषय है। छत्तीसगढ़ में 5 लिस्टेड प्रीमिटिव ट्राइब हैं। पंडो, कितने पंडो लोगों की मृत्यु हुई ? बैगा लोगों के डेवलपमेंट के लिए क्या किया गया ? बिहोर लोगों के डेवलपमेंट के लिए क्या किया गया ? कमार लोगों के डेवलपमेंट के लिए क्या किया गया ? केन्द्र सरकार से पैसा आया था, उसमें 100 प्रतिशत पैसा आता है, कोई राज्यांश नहीं होता। उनके डेवलपमेंट के लिए आज के विधानसभा के प्रश्न के जवाब में है, उस पैसे को यह सरकार खर्च नहीं कर पाई है। इस सरकार की संवेदनशीलता होनी चाहिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब राम वनगमन पथ, आप हंस रहे हैं। आप बोलिये तो मैं बैठ जाता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- उस पर सभी लोगों ने बोल दिया, उसी के साथ समाप्त कर दो।

श्री सौरभ सिंह :- मैं कुछ नहीं बोलता। आपने घंटी बजा दी। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- आपका नाम नहीं था, इसलिए आपका नाम नहीं लिया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्रीमती इन्दू बंजारे (पामगढ़) :- था सर, प्लीज बोलने दीजिये। मैं आपके जांजगीर जिला की महिला विधायक हूं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, 5 मिनट में अपनी बात बोलिये।

श्रीमती इन्दू बंजारे :- वहां से एक महिला, यहां से एक महिला तो मैं भी एक महिला हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं तोला देखत हव, तोर नाम नइ आय हे, नोनी।

श्रीमती इन्दू बंजारे :- नाम दिए रहेव, लेकिन काट देइस लागत हावय।

अध्यक्ष महोदय :- नइ आय रहिस हे, तोर नाम नइ लिखाय हावय।

श्रीमती इन्दू बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- लेकिन तै 5 मिनट मा ही खतम करबे न।

श्रीमती इन्दू बंजारे :- बस 5 मिनट मा अपन क्षेत्र के समस्या ला रखहूं। सम्माननीय अध्यक्ष महोदय जी, मैं अपना वक्तव्य रखने से पहले दो लाईन छत्तीसगढ़ सरकार के लिए और दो लाईन अपने छत्तीसगढ़ प्रदेश की आम जनता के लिए बोलना चाहूंगी।

अध्यक्ष महोदय :- पक्ष में बोल रहे हो या विपक्ष में बोल रहे हो ? यह पहले बता दो।

श्रीमती इन्दू बंजारे :- बीच में खड़ी हूं, पता नहीं किस तरफ हूं।(हंसी) हमन तो इहू कोती के अन अउ उहू कोती के अन।

श्री सौरभ सिंह :- ये दोनो मत ओसनहे हावय, एखर लिए ऐके संग बैठे हे।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- ये 90 झन मा हम दूनो मिनी विधायक हन।

अध्यक्ष महोदय :- तुम दोनों झन मिल-जुल के ..।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- बढ़िया, अब ऐके जगह बढ़िया बैठा भी देहा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- ये दारी ऐ कोते आ जा, इन्दू।

श्रीमती इन्दू बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी,

"शिक्षा के जहाज को बड़े शौक से डुबाये जा रहे हैं,
स्कूल बंद कर बच्चों को रैलियों में बुलाये जा रहे हैं।"

अध्यक्ष महोदय :- वाह बढ़िया।

श्रीमती इंदू बंजारे :- कब तक फ्री के चावल का मजा लेंगे, तेरे बच्चे जिसम से नहीं, दिमाग से अपाहिज बनाये जा रहे हैं । सम्माननीय अध्यक्ष महोदय जी, शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है । भले ही हम भूखें रहें, लेकिन अपने बच्चों को अवश्य पढ़ाईये । बाबा भीमराव आम्बेडकर साहब ने भारतीय संविधान में लिखा है कि जो भी प्रदेश में निवासरत् लोग हैं उनको शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, पानी, राशन और आवास की व्यवस्था करना उस सरकार की जिम्मेदारी होती है, लेकिन दु:खवश यह कहना पड़ रहा है कि छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा आम जनता को सुविधा देनी चाहिये, वह सुविधा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आम जनमानस को नहीं मिल पा रहा है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान आकर्षित कराना चाहूंगी कि जल जीवन मिशन बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें अरबों और खरबों रूपये खर्च किये जाते हैं, लेकिन लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारियों की मिलीभगत ठेकेदार के साथ सांठगांठ के कारण ठेकेदार को अपने माध्यम से संरक्षण दे देते हैं, अब वह निम्न स्तर के सामान को खरीदकर पानी टंकी निर्माण, पाईप निर्माण, सरिया, सीमेंट, जो भी सामान खरीदते हैं, वह निम्न स्तर के होते हैं, आप जांच करा सकते हैं । हमारे आदरणीय गुरू महोदय जी ने अपने वक्तव्य में बोला है कि जितने भी जल जीवन मिशन के कार्य हैं, वह पूर्ण हो चुके हैं, बृजमोहन जी को उन्होंने यह कहा था । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगी कि वे अपने अधिकारी को मेरे पामगढ़ क्षेत्र में भेजें । वह स्वयं देखें कि किस तरह से निम्न स्तर का कार्य मेरे क्षेत्र में हुआ है और घोटाला अपने चरमसीमा पर है।

लोक स्वास्थ्य मंत्री (श्री गुरू रूद्र कुमार) :- निश्चित रूप से ईएनसी खुद आपके विधान सभा में आयेगा ।

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे अत्यन्त दु:ख हो रहा है कि...।

अध्यक्ष महोदय :- मैं भी माननीय गुरूजी को बोलूंगा कि तुम्हारे विधान सभा में जांच के लिये जरूर जायें ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- लेकिन अधिकारी मन जावय नई ना ?

अध्यक्ष महोदय :- खुदे जाही, घुमे हे वोहा । मैं बोल देंहव ।

श्रीमती इंदू बंजारे :- अध्यक्ष महोदय, रोड को खोद दिये हैं, बरसात में चलने में दिक्कत हो जाती है । ठेकेदार बनाकर भाग गये हैं, रोड इतना जर्जर हो गया है कि लोग चल भी नहीं पा रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- आपके विधान सभा क्षेत्र में वे दौरे में जायेंगे ।

श्रीमती इंदू बंजारे :- जी सर ।

अध्यक्ष महोदय :- भईगे ना ।

श्रीमती इंदू बंजारे :- जो भ्रष्ट्राचार की सीमा है, उसी को बोल रही हूँ । दूसरा है रीपा का, सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने इसके संबंध में ध्यानाकर्षण भी लगाया था, रीपा कार्य कार्य मेरे पामगढ़ क्षेत्र में लोहरसी और मुलमुला में हुआ है । वहां पर इतनी अनियमितता बरती गई है कि जिले के अधिकारियों और ठेकेदार के संरक्षण से निम्न स्तर का कार्य किया गया है, जिसके संबंध में मैंने जांच के लिये आवेदन भी लिखा था । हमारे आवेदन का कोई जवाब नहीं मिला है, मुझे मजबूरी में विधान सभा में ध्यानाकर्षण लगाना पड़ा है । मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहती हूँ कि यह आपके लिये ही है, अगर आप इसे सुधार लेंगे तो पुन: आने वाले समय पर इसी स्थान पर बैठ जायेंगे । चौबे मंत्री जी नहीं है, उनसे मैंने जमुनिया नाला के संदर्भ में प्रश्न किया था, विधान सभा से जांच के

लिये आदेश गया था, मुझे बिना बताये कमेटी बनाई गई, जांच होने के बाद आज तक जांच रिर्पोट हमें प्राप्त नहीं हुई है । इस तरह से मंत्रियों के आदेश का अधिकारियों के द्वारा पालन नहीं किया जाता है । माननीय रविन्द्र चौबे जी जैसे कद्दावर नेता का अधिकारी पालन नहीं कर पा रहे हैं, यह बहुत दु:ख की बात है । इसके साथ ही हमारे जो नये उर्जा मंत्री हैं, उनसे मेरा निवेदन है कि जैसे ही टी.एस.सिंहदेव साहब प्रभार लिये हैं, 17 घण्टे मेरे गृह ग्राम में लाईट गोल रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- वाह ।

श्री टी.एस.सिंहदेव :- यह आपने स्वागत किया ।

श्रीमती इंदू बंजारे :- उसी दिन आपने इस विभाग का प्रभार लिया था । जैसे ही मैं विधान सभा सत्र में आई हूँ, मेरे 5-6 गांव में ट्रांसफार्मर उड़ गया है, हफ्ते-दो हफ्ते हो गये हैं, वहां पर लाईन नहीं है । जब अधिकारियों से बात करते हैं तो वहां पर ट्रांसफार्मर नहीं है, ऐसा कहकर गांववालों को वापस भेज देते हैं । मेरा आपसे निवेदन है, चूंकि अभी बरसात का समय है, बच्चों को सांप-बिच्छू काट लेते हैं, हर जगह ट्रांसफार्मर उपलब्ध रहे, ताकि लोगों को आसानी से मिल जाये । ऐसा मेरा आपसे निवेदन है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं ध्यान रखूंगा । बैठ जाओ ।

श्रीमती इंदू बंजारे :- अध्यक्ष महोदय, स्वास्थ्य के विषय में एक प्रमुख विषय है जो मेरे क्षेत्र में घटना घटी थी । सम्माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी का ध्यान आकर्षित कराना चाहूंगी कि सिम्स में एक बच्चे का जन्म हुआ जो पुरेना समाज से आता है, वह बच्चा जब हुआ तो स्वस्थ हुआ था, उसके बाद जैसे उसको छुट्टी देकर घर भेजा गया, उसके हाथ में स्टेचेस लगे थे, स्टेचेस को निकाला नहीं गया था, जैसे ही वह घर गया तो उसका पूरा हाथ सड़ गया। सिम्स के डॉक्टरों की लापरवाही के कारण उस बच्चे के साथ यह घटना हुई और वह बच्चा पूरे जीवन भर अपाहिज रहेगा। इस तरह की घटना किसी भी तरह न हो। उस 7 दिन के बच्चे ने किसी का क्या बिगाड़ा था कि उसके हाथ को काटना पड़ गया।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद, बैठ जाईये।

श्रीमती इंदू बंजारे :- अध्यक्ष महोदय, यह जो घटनाएं हो रही है, इसमें लगाम लगाने की आवश्यकता है। अंत में शराबबंदी के बारे में सबने बोला है इसलिये मैं दोबारा नहीं बोलूंगी। मेरा यही निवेदन है कि शराब को बंद कर दें क्योंकि महिलाएं एक टक नजर लगाकर बैठी हुई है।

अध्यक्ष महोदय, माता कौशल्या की जन्मभूमि के बारे में बहुत से लोगों ने अपनी बात कही है, मैं भी अपने क्षेत्र की बातों को रखना चाहूंगी कि मेरे पामगढ़ क्षेत्र में ग्राम पंचायत कोसला है। वहां बहुत बुद्धिजीवी लोग रहते हैं। वहां की यह मान्यता है कि माता कौशल्या जी का जन्म कोसला ग्राम पंचायत में हुआ है तो इस तथ्य को जानने की भी आवश्यकता है, ताकि यदि माता कौशल्या जी का जन्म हमारे पामगढ़ विधान सभा में हुआ है तो वह हमारे लिये बहुत गौरव की बात होगी। इसके साथ ही मैं अपने मान-सम्मान के लिये एक प्रश्न पूछना चाहूंगी। एक विधायक जो अपने क्षेत्र से 02 लाख मदों से चुनकर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आता है, उनका प्रोटोकॉल ज्यादा है या एक मनोनित सदस्य, जिसे किसी भी आयोग का अध्यक्ष बना देते हैं, केबिनेट मंत्री का दर्जा देते हैं, उनका प्रोटोकॉल ज्यादा है ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये बैठ जाईये। बहुत धन्यवाद्।

श्रीमती इंदू बंजारे :- अध्यक्ष महोदय, किसी भी कार्यक्रम में हमारा बहुत अपमान होता है। हम उनके सामने कुछ नहीं होते हैं और आपकी पार्टी से जो प्रत्याशी लड़े हैं, वह छाया विधायक के रूप में बढ़िया मंच में बैठे रहते हैं और हम लोग विधायक होकर साईड में बैठे रहते हैं। यह हमारी अस्मिता का सवाल है तो इसमें भी मुझे आपसे मार्गदर्शन मिले, मेरा आपसे ऐसा निवेदन है। अंत में आपने मुझे बोलने का मौका दिया उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद्। माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल जी। (मेजों की थपथपाहट) वैसे मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने अपना अधिकतर समय लोगों को दे दिया है (हंसी)। फिर भी आप चाहे तो कुछ बात कर सकते हैं।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- अध्यक्ष महोदय, मैंने भी समय दिया है और माननीय मुख्यमंत्री जी ने भी उधर दिया है।

अध्यक्ष महोदय :- हां, वह भी उसी हिसाब से बात करेंगे।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, विदाई की बेला है, आप ज्यादा चिंतित न रहे।

समय:
11.07 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री सन्तराम नेताम) पीठासीन हुए)**

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमने छत्तीसगढ़ के माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार के खिलाफ, इस कांग्रेस के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। हमने इस सदन में 109 बिन्दुओं का अविश्वास प्रस्ताव रखा है और इसलिये रखा है कि छत्तीसगढ़ में श्री भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में जो सरकार चल रही है, वह सरकार दिशाविहीन हो गयी है, वह अपने कर्तव्यों से विमुख हो गयी है। इन्होंने संविधान की शपथ ली थी। उस संविधान की शपथ को इन्होंने तार-तार कर दिया है। आज पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश में क्या वातावरण है, क्या माहौल है। चुनाव के पहले बड़े-बड़े होर्डिंग्स लगे थे कि वक्त है बदलाव का। आज जब हम लोग गांव में जाते हैं तो छत्तीसगढ़ की जनता कहती है कि वक्त है पछताव का। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं मुख्यमंत्री जी को समर्पित करना चाहता हूं।

"बुलंदी देर तक किसी शख्स के हिस्से में रहती है,
बुलंदी देर तक किसी शख्स के हिस्से में रहती है,
बहुत ऊंची इमारत हर घड़ी खतरे में रहती है।"

यह मुख्यमंत्री जी को समर्पित है। हमने इसलिये अविश्वास प्रस्ताव लाया क्योंकि इस प्रदेश में प्रशासन का राजनीतिकरण हो गया और राजनीति का अपराधिकरण हो गया है। अब प्रशासन का राजनीतिकरण कैसे हो गया है ? यह सारे प्रशासन के लोग डरे और सहमे हुए हैं। राजनीति का अपराधीकरण कैसे हो गया है ? कल कौन-सी घटना प्रकाश में आयी थी ? कि बिलासपुर में रेत माफियाओं के कारगुजारियों के कारण, रेत माफिया कौन है, किससे जुड़े हुए हैं, किसके बंदे हैं, किसकी परमिशन से रेत खोदते हैं ? वे नदियों का चीर हरण कर रहे हैं। सत्ता पक्ष के लोग हैं, इनका संरक्षण है। अरपा नदी में 12 फीट गड्ढा खोद दिया गया। वहां 3 बच्चियों की मौत हो गई। वह काल के गाल में समा गये। इनके किसी मंत्री को फुर्सत नहीं है कि उन बच्चियों के घर चले जाएं, उनको मुआवजा दे दें। उनकी पीड़ा को पूछ लें। यह प्रशासन का राजनीतिकरण और राजनीतिकरण का अपराधिकरण है। अभी 20 दिनों के पहले क्या हुआ ? मैं घोटाले की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं अपराध की बात कर रहा हूँ। बिलासपुर न्यायधानी में सत्ताधारी दल के युवक कांग्रेस के अध्यक्ष किसान के खेत में जाता है और यह कहता है कि आप जानते नहीं कि मैं युवक कांग्रेस का अध्यक्ष हूँ। जैसे उसे अपराध करने का बड़ा तमगा मिल गया हो। यह प्रशासन का राजनीतिकरण और राजनीतिकरण का अपराधिकरण है। हमने अभी इसलिए आपके खिलाफ में अविश्वास प्रस्ताव लाया है। पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश में अपराध की बाढ़ आ गई है। नित नये किस्म के अपराध हो रहे हैं। यह किसके संरक्षण में हो रहे हैं? इन अपराधियों को कौन संरक्षण दे रहा है ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ऐसी सरकार को एक मिनट भी अपने पद में रहने का नैतिक अधिकार नहीं है, जिसके राज में कानून और व्यवस्था ठीक नहीं है। यह पूरे छत्तीसगढ़ में क्या हो रहा है ? मेरे पास अभी कुछ लोग बस्तर, सरगुजा से आएं हैं। मैंने आपको नारायणपुर की एक घटना बतायी। एक महीने पहले जगदलपुर के थाने में घुसकर, आपके एन.एस.यू.आई. के कार्यकर्त्ता, कांग्रेस के लोग, सत्तापक्ष के लोग एक आई.पी.एस. अफसर के गिरेबान में हाथ डालते हैं। यह थाने के अंदर होता है। माननीय मुख्यमंत्री जी यहां जब थाना सुरक्षित नहीं हहै तो आप इस प्रदेश की रक्षा कैसे करेंगे ? हमने इसलिए अविश्वास प्रस्ताव लाया है। आपने इस जनता का विश्वास खो दिया है। जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ की जनता ने आपके ऊपर भरोसा किया। आपको उन्होंने तीन चौथाई से ज्यादा बहुमत दिया। आपने उसके विश्वास में कुठाराघात किया। आज आप कहीं भी चले जाएं। आज राजधानी, न्यायधानी, बस्तर सुदूर क्षेत्र, जशपुर में क्या हो रहा है। मैं जशपुर गया था। मैं बगीचा गया था। जो हमारे माननीय राष्ट्रपति महोदय के दत्तक पुत्र हैं। वहां भूख के कारण चार-चार लोग फांसी के फंसे में झूल गये। उनकी भूख के कारण मौत हो गई, मेरे पास यह जानकारी है। माननीय मुख्यमंत्री जी आपको वहां जाने की फुर्सत नहीं थी। मैं वहां 7 तारीख को गया और आप 6 तारीख को जशपुर में थे। उसी गांव से आपका चॉपर उड़ गया। आपको लोग टकटकी निगाहों से देख रहे थे कि हमारे भरोसे का मुख्यमंत्री उतरेगा, वहां चॉपर का धूल उड़ेगा, मुख्यमंत्री जी आएंगे और हमारे

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

आंसू पोछेंगे, हमें कुछ देकर जाएंगे, लेकिन आपका चॉपर पुलिस लाईन के मैदान में आता है। उन पण्डों के पास में नहीं जाता है। इसलिए हमने आपके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया है कि आपने सुदूर उन दत्तक पुत्रों का भी विश्वास खो दिया है। मैं आपको पढ़कर बताता हूँ। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह हमसे कहते हैं कि आपने अविश्वास प्रस्ताव क्यों लाया? आप यह सुन लीजिए । यदि यहां अधिकारी बैठे हों तो सुन लीजिए। बगीचा थाना क्षेत्र के सामर बहार पंचायत के झुमरा डूमर बस्ती श्री राजू राम कोरवा धर्म पत्नी श्रीमती बिनसारिन बाई, दो बच्चे 4 साल की बेटी देवती और एक साल के बेटे देवन राम के साथ उन्होंने 2 अप्रैल 2023 को रोजगार के अभाव में एवं भूख के कारण पेड़ पर लटक कर, घर के बाहर फांसी लगा ली। आप आदिवासियों, हमारे वनवासी भाईयों की बात करते हैं। जितने हमारे आदिवासी विधायक हैं क्या वह माननीय मुख्यमंत्री जी से जाकर नहीं मिले कि ऐसी घटना क्यों हुई? आप लोगों को क्या हो गया था? आप लोग क्यों चुप थे?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- भईया, आप धमका क्यों रहे हैं?

श्री नारायण चंदेल :- माननीय मुख्यमंत्री जी, यह वर्ष 1992 की घटना है। वाड्रफ नगर में एक बार रिवाई पण्डों नाम का एक व्यक्ति के असत्य मौत की खबर फैल गई, माननीय पटवा जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में सरकार थी। उस समय देश के प्रधानमंत्री माननीय नरसिंह राव जी थे। आपके लोगों ने असत्य खबर फैला दी कि रिवई पण्डों की मौत हो गई, यह वर्ष 1992 की बात है। एक असत्य खबर के कारण माननीय पटवा जी को भोपाल से यहां आना पड़ा और उसके बाद में प्रधानमंत्री जी का विजिट हुआ। रिवई पंडो अपने सामने में बेच लगा करके घूम रहा था कि मैं रिवई पंडो अभी जिंदा हूं। वह असत्य साबित हुआ। लेकिन आपके चापर को उतरने का मौका नहीं मिला। आपकी यह संवेदनहीनता, इस सरकार की संवेदनहीनता का जीवत्व प्रमाण है। इसलिए हमने आपके खिलाफ में अविश्वास प्रस्ताव लाया है। यह सारे पेपर्स की कटिंग हैं, मैं आपको समर्पित कर दूंगा। माननीय उपाध्यक्ष जी, अभी-अभी मुझे सूचना मिली है राजकुमार यादव ग्राम बेबदी, पुलिस चौकी बलंगी, जनपद पंचायत वाड्रफनगर जिला बलरामपुर रामनुजगंज के परिवार ने भेजा है। परिवारिक विवाद में भाभी द्वारा रिपोर्ट किये जाने पर मामले को रफा-दफा करने के एवज में चौकी प्रभारी अब्दुल्ला मुनाफ द्वारा 50 हजार रुपये की रिश्वत के लिये तीन-चार दिनों से लगातार परेशान किया जा रहा था। पैसे की व्यवस्था न होने से परेशान होकर राजकुमार यादव ने आज फांसी लगा करके अपनी इहलीला समाप्त कर दी। यह लज्जाजनक घटना है इसलिए हमने आपके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया है। यह क्या हो रहा है? कानून और व्यवस्था की स्थिति बद से बदतर हो गई है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बांगो थाने के बैरक में मिली ए.एस.आई. की लाश, उसकी हत्या की आशंका है। जयसिंह जी आप हैं, ननकीराम कंवर जी हैं, क्या हुआ था? बांगों थाना में पदस्थ सहायक उपनिरीक्षक नरेन्द्र सिंह परिहार की लाश आज सुबह बैरक में देखी गई। बैरक के पास जाकर देखा गया तो दरवाजे पर टूटी हुई उपनिरीक्षक नरेन्द्र सिंह परिहार के शरीर में जख्म के

निशान थे। प्रथम दृष्टया माना जा रहा है कि उनकी किसी ने हत्या कर दी होगी। यह जांच का विषय है। बैरक का दरवाजा टूटा हुआ था। थाना सुरक्षित नहीं है। यह कोरबा जिले की घटना है। गृहमंत्री जी आप बैठे हुए हैं, खैर आपकी तो कोई पूछ परख है नहीं, हम आपसे क्या बात करें। इस सरकार के जमाने में बैरक टूटा हुआ है, थाने के अंदर हत्या होती है। हमने इसलिए अविश्वास प्रस्ताव लाया है।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- आप कम से कम पूछ परख कर लिया करिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम तो पूछ रहे हैं।

श्री ताम्रध्वज साहू :- पूछ रहे हैं न। मेरा ख्याल रखना।

श्री शिवरतन शर्मा :- जी, गृह मंत्री जी रोज आपको पूछ रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैंने पहले कहा कि प्रशासन का राजनीतिकरण और राजनीति का अपराधीकरण हो गया है। कवर्धा जिले के पांडातराई से आज सूचना आई है, मैं सूचना के आधार पर बात कर रहा हूं। इनके ही पार्टी के पांडातराई के नगर पंचायत अध्यक्ष फिरोज खान जो कांग्रेस के हैं, उनकी पत्नी और कुल पार्षद सहित 9 लोगों के खिलाफ धारा 420 का प्रकरण पंजीबद्ध किया गया है और उनको जेल भेज दिया गया है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी-अभी मुझे सूचना मिली है कि आपके प्रदेश अध्यक्ष माननीय दीपक बैज जी के कौन सांसद प्रतिनिधि हैं, वह बस्तर में परसेंटेज मांगते घूम रहे हैं। इस पर लगाम लगाईये। आप 08 दिन पहले प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने हैं और अभी से वह काम शुरू कर दिये। मेरे पास पूरी जानकारी है। मैं जानकारी के आधार पर आपसे बातचीत कर रहा हूं।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय उपाध्यक्ष जी, माननीय सांसद के ऊपर आरोप लगाना ठीक नहीं है। बस्तर के सांसद का प्रतिनिधि कोई नहीं मांग रहा है।

श्री नारायण चंदेल :- अब बताईये वहां डी.एम.एफ. का बंटवारा है, 30 करोड रुपये के काम दिये जा रहे हैं और डी केटेगरी का ठेकेदार है, ए, बी, सी केटेगरी का ठेकेदार भी नहीं है।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, लगातार असत्य परोसा जा रहा है, जितनी भी बातें बोल रहे हैं उसमें अभी इन्होंने कहा कि प्रशासन कार्रवाई कर रहा है और प्रशासन कार्रवाई कर रहा है तो कहां प्रशासन का अपराधीकरण हो गया।

श्री नारायण चंदेल :- आप बैठिये, आप क्या बात करेंगे। पैर के नाखून से सिर के बाल तक भ्रष्टाचार में डूबे हुए व्यक्ति हैं।

श्री राजमन बेंजाम :- बस्तर में हम लोग रहते हैं। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी जो आरोप लगा रहे हैं यह पूरा असत्य है।

श्री नारायण चंदेल :- यदि आरोप असत्य है तो उसकी जांच कराओ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री द्वारिकाधीश यादव :- नेता जी, मैं आपको टोक नहीं रहा हूं। मैं निवेदन करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता जी बोल रहे हैं। आप समय का ख्याल रखियेगा।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मैं निवेदन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं टोक नहीं रहा हूं। नेता जी, मैं उपाध्यक्ष जी के माध्यम से आपसे निवेदन करना चाह रहा हूं कि आप जिस दल से हैं। स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी की सोच के हिसाब से आज के अंतिम सत्र में आप कुछ बोले तो अच्छा होगा। एक अटल बिहारी बाजपेयी जी थे जो हमारे स्वर्गीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी के अच्छे कामों के लिए सदन में उन्होंने धन्यवाद ज्ञापित किया था और मैं आपसे भी यही निवेदन कर रहा हूं कि हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी छत्तीसगढ़ के किसान, मजदूर, व्यापारी, सभी वर्गों के हित में काम किया है। एक अच्छे परंपरा के लिए आप दो मिनट के लिए तो कुछ बोलिये।

श्री नारायण चंदेल :- भाई, मुख्यमंत्री कोई अच्छा काम बता देंगे तो हम निश्चित रूप से प्रशंसा करेंगे। हम मुख्यमंत्री जी को थोड़ी बोल रहे हैं। देखिये हम व्यक्ति के ऊपर प्रहार नहीं कर रहे हैं। हम व्यवस्था के ऊपर प्रहार कर रहे हैं। यह मुखिया जिम्मेदार हैं। हम व्यक्तिगत कहां बात कर रहे हैं। हम तो व्यवस्था की बात कर रहे हैं। वे व्यवस्था के मुखिया है और उनका पूरा मंत्रिमण्डल, इसलिए हमने मुख्यमंत्री और उनके मंत्रिमण्डल के खिलाफ में अविश्वास प्रस्ताव लाया हैं क्योंकि उन्होंने जनता का विश्वास खो दिया है। माननीय उपाध्यक्ष जी, स्वास्थ्य मंत्री जी बैठे हैं। राजा साहब, थोड़ा सिर ऊंचा करिये।

समय :
11.22 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अध्यक्ष महोदय :- महूं आ गय।

श्री नारायण चंदेल :- हाँ, आप आ गये। अभी आपके गृह नगर अम्बिकापुर में में ब्लड प्रेशर की अमानक दवाई का वितरण हो गया । आपको मालूम है? उसके खिलाफ में कोई जांच कर रहे हें? मेरे पास सरगुजा से ही सूचना आई है। यह समाचार पत्रों की कटिंग है। अब आपका स्वास्थ्य विभाग का तो यह हाल है। आपके गृह नगर में, संभागीय मुख्यालय में अमानक दवाई का जिनको-जिनको वितरित हो गई है, उनका क्या होगा? कौन जिम्मेदार रहेगा ? आपने कोई जांच की घोषणा की है? वहां पर ऐसा कौन सा सरगना घूम रहा है?

चिकित्सा शिक्षा मंत्री (श्री टी.एस. सिंहदेव) :- अध्यक्ष महोदय, उसमें दवाई की एक बैच की शिकायत आई थी। जांच में यह पाया गया कि chemical content में पहले उसको poly certification मिला था। poly certification मिलने के बाद दवाई वितरण में गई । वितरण में पाया गया कि दवाई की गोली

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चूर हो रही थी। उसका दोबारा टेस्ट कराया गया। टेस्ट में यह पाया गया कि chemical content में कहीं भी कोई कमी नहीं है, लेकिन गोली में जो कड़ाई रहनी थी, वह नहीं पाई जा रही थी। उसको withdraw कर लिया गया था।

श्री नारायण चंदेल :- चलिये ठीक है। मैंने तो आपके ध्यान में लाया कि इस प्रकार का कृत्य इस प्रदेश में हो रहा है। कौन सरगना है? जो आम आदमी के जीवन से खिलवाड़ कर रहा है? यह किसके संरक्षण में हो रहा है? यह सारी चीजें थीं तो मैंने आपके ध्यान में लाया। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कह रहा था कि छत्तीसगढ़ अपराध का गढ़ बन गया। चौबे जी नहीं हैं। चौबे जी का क्षेत्र है।

अध्यक्ष महोदय :- चौबे जी मेरे कक्ष में बैठ कर सुन रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- अच्छी बात है।

अध्यक्ष महोदय :- वह आने वाले हैं।

श्री नारायण चंदेल :- ठीक है। वह पूरी सूक्ष्मता के साथ में सुनें।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सबका ख्याल रखता हूं।

श्री नारायण चंदेल :- वह एयरफोन लगा लें। माननीय अध्यक्ष महोदय, बेमेतरा के बिरनपुर ग्राम में भुनेश्वर साहू की हत्या अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों के द्वारा कर दिया गया था। एक साहू परिवार का व्यक्ति है। माननीय गृह मंत्री जी, बिरनपुर ग्राम की घटना है। मैं बिरनपुर गया था। सरकार के संरक्षण के कारण अपराधियों के विरूद्ध आज तक कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। उनके पिता जी ने वहां के थाने के प्रभारी को, एस.पी. को 22 लोगों का नाम बताया है, लेकिन वहां का एक भी व्यक्ति पकड़ा नहीं गया जो उस घटना में शामिल था। सरकार केवल दिखावे के लिए पीड़ित परिवार को 10-10 लाख एवं नौकरी देने की बात कह रही है। अब देखिये, उस गरीब परिवार का जो आत्मसम्मान है। सरकार के पैसे को उन्होंने वापस कर दिया, रिफ्यूज कर दिया, ठुकरा दिया कि हमको आवश्यकता नहीं है । हमारे बेटे की हत्या का अपराधी पकड़ा जाना चाहिए । मुख्यमंत्री जी कानून का राज होना चाहिए और घटना इनके विधानसभा क्षेत्र की है । साजा विधानसभा क्षेत्र के बहुत वरिष्ठ मंत्री हैं, हम उनका बहुत सम्मान करते हैं । दुर्भाग्य है ।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उन्होंने अपने बयान में, दलेश्वर साहू के पिता ने अपने बयान में जिन लोगों के नाम का उल्लेख किया । तत्काल उनको गिरफ्तार करके तत्काल जेल भेज दिया गया । कहीं पर भी उनके बयान के बाद और कोई नाम सामने नहीं आये हैं और न ही जांच में कोई बात आयी है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, उस पूरे घटनाक्रम का चश्मदीद गवाह मृतक का छोटा भाई है और उसके छोटे भाई ने 41 लोगों का नाम दिया है । उसमें 12 की गिरफ्तारी हुई, 29 की गिरफ्तारी नहीं हुई । मैं स्वयं बिरनपुर गया था ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री ताम्रध्वज साहू :- आप लोग गये थे । वह बयान दे रहा है तो फलाना घलो रिहिस का ? यह आप लोग बोल रहे हैं तब हां-हां बोल रहा है । फलाना घलो रिहिस हे का, हां-हां । यह आप लोग बोल-बोलकर बोलवा रहे हो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- उसने लिखकर के दिया है, थाने में 41 नाम लिखकर के दिये हैं ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- उसने अपने होकर नहीं बोला है, आप गलतबयानी मत कीजिये ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, समय का ख्याल रखिये । बहुत देर हो गयी है ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, समय का ध्यान है । पूरा समय का ध्यान है । देखिये, प्रदेश में जो अव्यवस्था का आलम है । गरीबों के साथ जो अन्याय हो रहा है, अत्याचार हो रहा है, हत्या हो रही है क्या उसके बारे में हम अविश्वास प्रस्ताव में चर्चा नहीं करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- करिये न, बिल्कुल करिये ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी सदन में उपस्थित हैं और सवाल यह है कि इनके संभाग का मामला है । हमारे माननीय संवेदनशील मुख्यमंत्री जी को जाने की फुर्सत नहीं मिली । गृहमंत्री जी नहीं जा पाये। माननीय रविन्द्र चौबे जी वहां के विधायक हैं । वे वहां आजतक नहीं गये, उस परिवार से मिलने नहीं गये । हो सकता है कि जिन्होंने [xx][53] ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- यह कहकर के आप वातावरण को और दूषित करना चाह रहे हैं ।

श्री नारायण चंदेल :- नहीं करना चाह रहे हैं ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- यह कहने का और क्या मतलब है कि हत्या करने वालों को यहां बुलाकर मिल लिये हों । यह कहने के पीछे आपकी मानसिकता क्या है ?

श्री नारायण चंदेल :- मैंने आशंका व्यक्त की ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- कोई कर्तव्य नहीं है । आप कह रहे हैं उसका अर्थ क्या है उसको पहले समझ लीजिये न ।

श्री नारायण चंदेल :- आप क्यों नहीं गये ? आपको भी तो जाना चाहिए न, आप उसी संभाग के हैं ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- यानी हत्या करने वालों को बुलाकर मुख्यमंत्री जी यहां मिल लिये या गृहमंत्री मिल लिये या रविन्द्र चौबे मिल लिये मतलब हत्या करने में मुख्यमंत्री, गृहमंत्री और रविन्द्र चौबे का हाथ है, क्या आप यह शो करना चाहते हैं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप बोल रहे हैं, हम थोड़ी न बोल रहे हैं ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- नहीं-नहीं आप बोल रहे हैं ।

---

[53] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार विलोपित ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह तो आप स्वीकार कर रहे हैं ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- मैं स्वीकार नहीं कर रहा हूं, आप बोल रहे हैं ।

श्री नारायण चंदेल :- जाना चाहिए ।(व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- एक नौजवान की हत्या हो गयी । वहां क्यों नहीं गये? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज-प्लीज । चलिये, बैठ जाईये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- छत्तीसगढ़ का एक नौजवान होनहार उसकी 40 लोग गिरोह बनाकर हत्या कर देते हैं और मुख्यमंत्री जी को फुर्सत नहीं है । (व्यवधान) गृहमंत्री को फुर्सत नहीं, वहां के स्थानीय मंत्री को फुर्सत नहीं कि वहां चले जायें । (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- ऐसे ही भड़काने का काम तो कर रहे हो । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हत्या हो जाती है, किसी का बेटा, किसी का भाई मारा जायेगा । (व्यवधान) वहां उनसे मिलने नहीं जायेंगे । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप बोलिए न । चलिये, बैठिये-बैठिये । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- गृहमंत्री को बोला जाता है तो हम समझते हैं ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक लड़के की हत्या होती है । (व्यवधान) साहू समाज इतना कमजोर नहीं है । (व्यवधान) जो ये बात कह रहे हैं । (व्यवधान) साहू समाज के बच्चे की हत्या हुई । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यूपी में हत्या होती है तो मुख्यमंत्री जी जाते हैं लेकिन 50 किलोमीटर दूर बिरनपुर कोई नहीं जा सकते । (व्यवधान)

संसदीय सचिव, संसदीय कार्यमंत्री से संबद्ध (सुश्री शकुंतला साहू) :- पहले एक काण्ड हुआ था । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- एक नौजवान किसी का बेटा, किसी का भाई उसकी हत्या हो गयी । निरपराध की हत्या हो गयी लेकिन वहां कोई नहीं जा सकता । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चंदेल जी, स्वयं सक्षम हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इतना ही नहीं है । जब समाज के लोग गृहमंत्री जी से मिलने के लिये और समाज के लोगों ने जाकर इस बात को बताया तो गृहमंत्री जी ने कहा कि यह छोटी घटना है और छोटी घटना के लिये आप लोग आ गये । इन्होंने कहा और समाज के लोगों ने हम लोगों से बात की है।

श्री नारायण चंदेल :- यह तो बहुत लज्जाजनक बात है। (व्यवधान)

श्री ताम्रध्वज साहू :- ये बिल्कुल गलत बात है। आप बिल्कुल गलत बात बोल रहे हो। बिल्कुल गलत बात है। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- जब समाज के लोग मुझे ऐसा कह रहे हैं। ये जो कह रहे हैं, उसे मैं आपके सामने प्रस्तुत कर दूंगा। (व्यवधान)

सुश्री शकुंतला साहू :- उस समय कहां गये थे, जब बच्चों को रौंदा गया था। (व्यवधान)

श्री ताम्रध्वज साहू :- छत्तीसगढ़ साहू समाज के अध्यक्ष को हमने खुद भेजा है। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- (व्यवधान) और ले जाकर हत्या करके गली में फेंक दिया। ये क्रूरतापूर्वक उसकी हत्या की गई है। (व्यवधान)

श्री ताम्रध्वज साहू :- सम्माननीय अध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष को हमने खुद भेजा है, वे गये हैं। कोई 36 हमारे पदाधिकारी मेरे पास नहीं आये हैं, जो आये हैं, मैंने उनकी बात की है। साहू समाज के अगर लड़के की हत्या हुई थी तो छत्तीसगढ़ बंद साहू समाज के लोग करा लेते, इतनी बड़ी संख्या है। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल को छत्तीसगढ़ बंद कराकर आग में झोंकने की क्या आवश्यकता थी साहू समाज को? ये साहू समाज की बात कर रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ये बंद ने बता दिया कि छत्तीसगढ़ में 12 घंटे की सूचना पर छत्तीसगढ़ बंद रहा और ऐसा बंद हुआ कि आज तक छत्तीसगढ़ में ऐसा नहीं हुआ है। (व्यवधान)

सुश्री शकुंतला साहू :- उस समय आप लोग कहां थे, जब कांड हुआ था, तब कहां थे? आप बोल रहे हैं। साहू समाज को रौंदे थे, तब आप लोग कहां थे कसडोल में? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- शकुंतला, प्लीज। माननीय मुख्यमंत्री जी।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता प्रतिपक्ष ने जो बात कही कि वहां बिरनपुर में न चौबे जी गये, न साहू जी गये, न मैं गया, लेकिन दूसरी लाइन बहुत आपत्तिजनक है। [XX][54], यह जो लाइन है, इसे विलोपित करें। नेता प्रतिपक्ष जी बहुत जिम्मेदार व्यक्ति हैं। विपक्ष के नेता हैं और इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि आपके पास ऐसे तथ्य हैं तो जानकारी रखिए और बिना तथ्य के भाई, जो घटना घटी, जो अपराधी थे, उसका नाम एफ.आई.आर. में दर्ज हुआ, उसे जेल भेज दिया गया। अध्यक्ष महोदय, जो लोग जेल में हैं, उसे निकवाकर हम लोग क्या मिलेंगे? ये इस प्रकार की बात कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, यह बहुत आपत्तिजनक है।

अध्यक्ष महोदय :- ऐसे आपत्तिजनक सभी शब्द मैं विलोपित करता हूं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये तो कानून व्यवस्था सरकार का है, हम लोग तो ध्यान दिला रहे थे।

श्री भूपेश बघेल :- आप तो बढिया बोल रहे थे। हम लोग तो बढिया सुन रहे थे, लेकिन अचानक क्या हो गया?

[54] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- नहीं, कुछ नहीं हुआ है।

श्री भूपेश बघेल :- अचानक लाइन से बेलाइन हो गये।

श्री नारायण चंदेल :- क्या है मुख्यमंत्री जी, आप यू.पी. गये थे न। माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी यू.पी. गये थे। हम लोगों ने बड़े-बड़े समाचार-पत्रों में पढ़ा, वहां पर कोई घटना हुई। राहुल जी के कहने से, प्रियंका जी के कहने से वहां के किसानों को 50-50 लाख रूपये दे दिये। तो ये जो हमारे साहू समाज का किसान है, वह कौन है? आप तो छत्तीसगढ़ के बड़े हिमायती हैं न। आप तो कहते हैं कि मैं छत्तीसगढिया मुख्यमंत्री हूं। तो यहां पर क्यों नहीं दिये।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर ये राहुल जी और सोनिया जी की बात करेंगे तो हम भी फिर मोदी जी की बात करेंगे। ये बाहर की बात क्यों कर रहे हैं?

श्री नारायण चंदेल :- ये हुआ है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, केन्द्रीय मंत्री अजय मिश्र टेनी के बेटे ने एक किसान को रौंदा था, इस कारण से गये थे और इस कारण से 50 लाख रूपये दिये थे। आपके पूर्व मुख्यमंत्री नहीं गये और न आपके प्रधानमंत्री गये और न ही उस मंत्री को बर्खास्त किये। इस कारण से गये थे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री नारायण चंदेल :- मुख्यमंत्री जी, उतनी दूर जाने की क्या आवश्यकता थी? यहां तो आपका बेटा किसान का बेटा खत्म हो गया। ठीक है। लेकिन हमें जो जानकारी है कि आप नहीं गये हैं। इसलिए हमने व्यक्त किया। आपके ध्यान में लाये ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। हमने आपकी संवेदनशीलता को जगाने का प्रयास किया है।

श्री अमितेश शुक्ल :- आपने ये भी तो बोल दिया कि वे आकर मिले।

अध्यक्ष महोदय :- छोडिए न, जो खत्म हो गया, आप फिर उसकी बात मत करिए।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे देश में छत्तीसगढ़ की जो क्राइम रिपोर्ट है, उसका ग्राफ तेजी से बढ़ रहा है। चाहे वह हत्या हो, डकैती हो, लूट हो, फिरौती हो, चैन स्कैनिंग हो, साइबर क्राइम हो। इन्होंने छत्तीसगढ़ को अपराध का गढ़ बना दिया। पता नहीं क्यों? छत्तीसगढ़ शांति का टापू है। आज रात को 10-11 बजे के बाद इस राजधानी में परिवार सहित लोगों को निकलने में दिक्कत होती है।

श्री कुलदीप जुनेजा :- आप चलिए, कई बच्चियां, लड़कियां शहर में घूमती हैं। आप चलिए। अभी 12 बज रहा है। आप मेरे साथ चलिए।

श्री नारायण चंदेल :- बाइकर्स घूमते हैं, बाइकर्स कौन हैं ? वे कौन लोग हैं ?

श्री कुलदीप सिंह जुनेजा :- पूरे शहर में मां, बहनें अकेले घूम रही हैं । लगता है बाजू में पूर्व विधान सभा अध्यक्ष जी बैठे हैं इसलिए आपको बोलने का ज्यादा जोश आ रहा है ।

श्री नारायण चंदेल :- पूरे देश में डकैती में हमारा प्रदेश 14वें स्थान पर है, हत्या में तीसरे स्थान पर, आत्महत्या में तीसरे स्थान पर, अपहरण में छठवें, फिरौती के लिए पांचवे स्थान पर ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- धान का दाम तो बताइए, उसमें देश में कौन से नम्बर पर है ।

श्री नारायण चंदेल :- उसको भी बताते हैं । हमारे सुकमा से मंत्री बहुत बड़ी बड़ी बातें कर रहे थे । क्या हालात हैं बस्तर में ? हम लोग भी गए थे, ये हमारे आगे आगे चल रहे थे डेढ़ घंटा पहले । बद् से बद्तर स्थिति है वहां ।

डॉ. विनय जायसवाल :- वहां कितने स्कूल खुल गए ?

श्री नारायण चंदेल :- बद् से बद्तर स्थिति । अध्यक्ष महोदय, जिस दिन हम बस्तर गए थे, इंद्रावती के उस पार, सुदूर गांव में लोग इलाज के अभाव में मर रहे थे और मंत्री जी क्या कर रहे थे ? मंत्री जी उनकी खोज खबर लेने भी नहीं गए । उनकी जानकारी लेने नहीं गए । अरे, उनको दवाई तो पहुंचवा देते । अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस सरकार बनने के बाद नक्सल समस्या में बढ़ोतरी हो रही है । सरकार ने विधान सभा में स्वयं जानकारी दी है । (व्यवधान)

श्री राजमन बेंजाम :- ये झीरम कांड, रानीबोदली आपके समय कितने कांड हुए थे ।

श्री नारायण चंदेल :- झीरम कांड का अपराधी कौन है ? कौन है अपराधी ? कौन स्टार्ट मोटर साइकिल में भागा था ? कौन स्टार्ट मोटर साइकिल में भागा था ? कौन हैं वो लोग जो मोटर साइकिल स्टार्ट करके वहां पर थे ? कौन था वो ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- कौन षड्यंत्र करके जाते हैं, उनको देखो ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- (xx) ने किसको मारा था ?

श्री नारायण चंदेल :- वो आसंदी पर हैं इसलिए नहीं बोलूंगा । कौन था मोटर साइकिल स्टार्ट करके रहने वाला व्यक्ति ?

श्री अमितेश शुक्ल :- नेता जी, केन्द्र सरकार ने खुद माना है कि यहां पर नक्सलाइट कम हो गए हैं ।

श्री कवासी लखमा :- सरकार ने वहां सुरक्षा क्यों नहीं दी, पुलिस क्यों नहीं भेजी ? झूठ बोलना बंद करो, ऊपर वाला तुमको माफ नहीं करेगा ।

श्री नारायण चंदेल :- असली चेहरा उजागर हो जाएगा, दिक्कत में फंस जाओगे।

श्री कवासी लखमा :- तुम फंस जाओगे ।

श्री नारायण चंदेल :- नक्सलवाद की समस्या बस्तर के लोग खौफ में हैं । मैं आपको बताना चाहता हूं नक्सल मुठभेड़ में तीन वर्षों में 48 राज्य पुलिस के अधिकारी, 31 केन्द्रीय पुलिस और सहायक आरक्षक सहित कुल 105 सुरक्षा कर्मी शहीद हुए हैं । 139 नागरिक मारे गए जो निरीह थे, जो जानकारी में आया है । बिना जानकारी के पता नहीं कितने लोग मारे गए होंगे । नक्सलियों के आत्म समर्पण

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करने वालों की संख्या में निरंतर कमी आ रही है । किसके संरक्षण में नक्सलवाद पल रहा है ? कौन उनका मनोबल बढ़ा रहा है । आज नक्सली कहते हैं कि छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार चल रही है । हमारा कोई कुछ नहीं कर सकता । क्या स्थिति है । वे बेचारे चिट्ठी लिखकर छोड़कर जा रहे हैं, वहां जाओगे तब तो पता चलेगा ।

श्री रामकुमार यादव :- ये लबारी ला सुनकर लबारी घलो लजा जात होही । जयादा होवत हे नेता जी, थोड़ा कम करो लबारी ला ।

श्री नारायण चंदेल :- यही नहीं, नेश्नल क्राइम ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार पूरे भारत वर्ष में नक्सलियों के द्वारा सबसे अधिक 55 सुरक्षाधारी की मृत्यु छत्तीसगढ़ में हुई है । आज वहां पर हमारे जो जवान ड्यूटी कर रहे हैं वे आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहे हैं । किस कारण आत्महत्या हो रही है ? मुख्यमंत्री जी ने कभी जानकारी ली । गृहमंत्री जी के तो वहां जाने का मामला ही नहीं है । वे बेचारे इन सब चीजों से दूर रहते हैं । क्यों आत्महत्या कर रहे हैं, उन्हें ड्यूटी करने में क्या ग्लानि है ? ऐसी परिस्थितियां कभी छत्तीसगढ़ में पैदा हुई थी ? अपने जिस बंगले में ड्यूटी कर रहे हैं....।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, हर एक घटनाक्रम की जानकारी मैं भी लेता हूं, माननीय मुख्यमंत्री जी भी लेते हैं, कैम्पों में बराबर जाते भी हैं, चर्चा भी करते हैं, कई बार अलग-अलग जिलों में चले गये हैं। सभी जगह कैम्पों में जाकर बात करते हैं, हमारे छत्तीसगढ़ फोर्स से भी बात करते हैं, केन्द्रीय फोर्स से भी बात करते हैं। हम लोगों ने उनके मनोरंजन के साधन, खेल की सारी व्यवस्थाएं कर दी है। वहां पर किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं है। नेता प्रतिपक्ष जी जितनी भी नक्सली घटना की बात बोल रहे हैं। 15 साल में बस्तर के 300 स्कूल इनके कार्यकाल में बंद थे, वह हमारे कार्यकाल में खोले गये हैं। (मेजों की थपथपाहट) हम लोगों ने अंदर तक राशन पहुंचा दिया, हम लोग अंदर तक स्वास्थ्य सुविधा पहुंचा दिए, अंदर तब बिजली पहुंचा दिए, अंदर तक पानी की सुविधा पहुंचा दिए, हाट बाजार खोल दिए, माननीय मुख्यमंत्री जी ने वनवासियों को सिंगल और सामूहिक पट्टा दे दिया। लघु वनोपज का समर्थन मूल्य दे दिया गया, आज बस्तर अंचल में बैंक खोलने की मांग हो रही है। आदिवासियों के हाथ में पैसा आ गया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- गृह मंत्री जी, साढ़े चार साल में झीरम घाटी का एक सबूत बस नहीं मिल सका। इस सदन में माननीय मुख्यमंत्री जी कहते थे, मेरी जेब में झीरम घाटी का सबूत है। साढ़े चार साल में एक सबूत नहीं निकला कब निकलेगा यह बता दीजिए।

श्री ताम्रध्वज साहू :- आपको उस विषय में कुछ भी मालूम नहीं है। आप भाटापारा तक की बात कीजिए।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष जी, इस विधानसभा का आज आखिरी सत्र है, आखिरी क्षण है, माननीय मुख्यमंत्री जी हैं, अगर वह सबूत कहीं जेब में होगा तो निकाल लें। अउ गवां गे तेला

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बता दे। कई बार मुख्यमंत्री जी का बयान आया और इस सदन में भी शायद माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा ......।

श्री ताम्रध्वज साहू :- मैंने अपने वक्तव्य में पूरी बात की एक-एक जानकारी रखी है, शायद आप उस समय सुन नहीं रहे थे।

श्री अरूण वोरा :- नेता जी, आपने कहा कि सबूत जेब में रखे हैं, उस समय 31 नेताओं की शहादत हुई थी तब तत्कालीन मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि इस घटना में थोड़ी चूक हो गयी।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भारतीय जनता पार्टी के हमारे नेताओं को हमारे कार्यकर्ताओं को जो बस्तर क्षेत्र में रहते हैं, नक्सली उनको लगातार धमकी दे रहे हैं, दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी के कार्यकर्ता को, नक्सली कहते हैं, आप भाजपा के कार्यक्रमों में नहीं जाओगे, आप पार्टी के किसी पदों में नहीं रहोगे। कार्यक्रम तो दूर, आप बैठक में शामिल नहीं होगे। यह स्थिति बस्तर की है। हैं। क्या वहां पर उनकी हुकूमत चल रही है ? क्या उनको प्रशासन का कोई खौफ नहीं है ? क्या वहां प्रशासन की पुलिस की पहुंच नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बता रहा हूं। 16 जनवरी, 2023 को भाजपा नेता पूर्व सरपंच बुधराम करताम की हत्या नक्सलियों द्वारा की गयी।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं इस विषय में एक मिनट बोलना चाहता हूं। मेरे को एक मिनट समय दीजिए। नेता जी, जिस विषय को उठा रहे हैं, वह मेरे क्षेत्र का मामला है। अध्यक्ष महोदय, मुझे एक मिनट बोलने दीजिए। मैं आपसे समय मांग रहा हूं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष जी, 5 फरवरी को बीजापुर जिले के आमापल्ली ईलाके में भाजपा मंडल अध्यक्ष नीलकंठ कत्येन की हत्या नक्सलियों द्वारा की गयी।

अध्यक्ष महोदय :- आप डिस्टर्ब मत करिए, मैं आपको बाद में समय दे दूंगा। पहले उनको बोलने दीजिए।

श्री कवासी लखमा :- वे असत्य बोल रहे हैं, उनको बता रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- आपके पास कौन सा थर्मामीटर है, मैं सच बोल रहा हूं या असत्य बोल रहा हूं । मेरे पास पेपर है, जो बस्तर के लोगों ने भेजा है। मेरे पास आंकड़े हैं।

श्री राजमन बेंजाम :- अध्यक्ष जी, जो एक्सीडेंट हुआ है, पुलिस ने उनकी गाड़ी पकड़ी है। सबूत के साथ गाड़ी अंदर किया है। आप उस घटना को नक्सली घटना बता रहे हो। पुलिस पूरे साक्ष्य के साथ उसकी गाड़ी को पकड़ा है। ड्राईवर ने खुद कबूला है कि मेरे द्वारा एक्सीडेंट हुआ है। आप उसको सरकार द्वारा नक्सली हत्या बता रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, यह परिस्थितियां छत्तीसगढ़ के इस शांत टापू बस्तर में है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को रोका जाता है कि आप राजनीति नहीं कर सकते। इसलिए

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हमने इस सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया है। 10 फरवरी को नारायणपुर के छोटेडोंगर में भाजपा उपाध्यक्ष सागर साहू की उसके घर में जाकर हत्या की जाती है। मेरे पास सूची है।

ननकीराम कंवर :- एको झन कांग्रेस के मारे हे का।

श्री चंदन कश्यप :- अध्यक्ष जी, क्यों मारा गया, यह आपने पता किया है ?

श्री राजमन बेंजाम :- कांग्रेस के तो कितने लोग मरे हैं, मेरे क्षेत्र में मोहन को मारा है, बहुत लोगों को मारा है। घर से उठाकर ले गये, आपके पास कोई सबूत नहीं है, हमारे कितने सरपंच लोगों को मारे पता हीं नहीं है। आपके शासनकाल में घर से उठाकर एनकाउंटर करते थे।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, 11 फरवरी को भाजपा नेता रामधार अलामी की निसर्स हत्या की दी जाती है। 21 जून, 2023 को शाम 6 बजे बीजापुर के अर्जुन काका की उसके घर में जाकर जघन्य हत्या की जाती है। प्रशासन मौन है, पुलिस मौन है। पुलिस प्रशासन तो स्वयं नक्सलियों की खौफ में है। वह बेचारी तो अपनी सुरक्षा में लगी है तो वह क्या करेगी? छत्तीसगढ़ की पुलिस का यह हाल है। पूरे बस्तर में भा.ज.पा. कार्यकर्ताओं को पार्टी के कामों से दूर रहने की धमकी दी जा रही है और उनको पार्टी छोड़ने के लिए विवश किया जा रहा है। मैंने इस बात को आपके ध्यान में इसलिए लाया है कि बस्तर के क्या हालात हैं? अभी मेरे पास जगदलपुर से जानकारी आई है और वह जानकारी मैं आपको बता रहा हूं। बस्तर के आदिवासी बेटियों की तस्करी एवं हत्या के संबंध में।

श्रीमती देवती कर्मा (दंतेवाड़ा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वहां से खबर आई है। आप वहां जाकर हकीकत में देखकर यहां भाषण दीजिए। यहां कागज में देखकर बोलने से नहीं होता है। (मेजों की थपथपाहट)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे बहुत जिम्मेदार लोगों ने यहां पर भेजा है। वह भी कभी जनप्रतिनिधि रहे हैं, कभी विधायक रहे हैं, कभी सांसद रहे हैं। जो लोग यहां पर माखौल उड़ा रहे हैं, यह तो खुद अंदर नहीं जाते हैं। वैसे भी जनता उनको इस बार अंदर नहीं जाने देगी। इसके बाद यह विधान सभा के अंदर भी नहीं आ पाएंगे। बस्तर संभाग के नारायणपुर विधान सभा क्षेत्र के अंतर्गत बाकेल और कोगेगेरा के आदिवासी बेटियों की तस्करी एवं बंधक बनाकर काम करवाने और हत्या कर घर के सामने फेंकने और भगाने का मामला प्रकाश में आया है।

श्री चंदन कश्यप :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह असत्य है। वह अपनी बहन के साथ हैदराबाद काम करने के लिए गई थी ।...(व्यवधान) आप किस मामले को बता रहे हैं?

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह एकाध बात तो सच बोल दें। आप असत्य बोलते हैं। आप एकाध बात तो सत्य कहिये। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री राजमन वेंजाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कितना असत्य बोलते हैं। यह बोलते हैं कि हम अंदर नहीं जाते हैं। यहां बस्तर के ऐसे कितने जनप्रतिनिधि बैठे हैं। ऐसी कोई ग्राम पंचायत नहीं है, जहां पर हम लोग नहीं गये हैं। (व्यवधान)

श्री चंदन कश्यप :- आप केवल असत्य बोलते हैं। ऐसा कुछ नहीं हुआ है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बस्तर, जशपुर और सरगुजा में इस तरह के कृत्य हो रहे हैं। बस्तर, जशपुर, सरगुजा, कोड़िया और आपके विधान सभा क्षेत्र में भी इस प्रकार के कृत्य हो रहे हैं। यह पूरा गिरोह है।

श्री राजमन रेंजाम :- यह आपके शासनकाल में होता था कि जनप्रतिनिधि अंदर नहीं जाते थे। हम लोग अंदर तक जाते हैं। ऐसा कोई गांव नहीं है। आप हमारे चित्रकोट विधान सभा क्षेत्र, दंतेवाड़ा क्षेत्र का बता दीजिए कि ऐसी कौन सी ग्राम पंचायत है, जहां पर हम नहीं जा पा रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री चंदन कश्यप :- आप असत्य बोल रहे हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- असत्य की हद हो गई है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- जुबान पर ताला लग गया है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी चले गये। कोई दिक्कत नहीं है। ग्राम-बाकेल, तहसील-भानपुरी, जिला-बस्तर की आदिवासी बेटी-कविता कश्यप। सुन लीजिए, मैं आपको नाम बना रहा हूं। आप उसके घर में जाकर जानकारी ले लेना। बेटी-कविता कश्यप, उसकी चचेरी बहन-सीमा कश्यप को बस्तर में घूम रहे किसी एजेण्ट द्वारा अच्छी जगह काम दिलाने और ज्यादा पैसे देने के नाम पर, मैं तारीख बता रहा हूं, दिनांक-12 जून, 2023 को हैदराबाद ले जाकर उनकी तस्करी की गई। बस्तर में यह हो रहा है। क्या आप उनके घर में गये हैं? आपको वहां जाने की फुर्सत नहीं है। उनकी तस्करी करके ले जाकर किसी बड़ी फैक्ट्री के मालिक को उनको सौंप दिया गया। बड़ी फैक्ट्री में बंधक बनाकर उनसे काम लिया जा रहा है। दिनांक 17 और 18 जुलाई, 2023 की दरमियानी रात को कविता कश्यप की हैदराबाद में हत्या कर घर बाकेल, बस्तर में फेंककर आरोपी भाग निकले। क्या यह भी गलत है?

श्री चंदन कश्यप :- जब मैं आपको बता रहा हूं कि वह अपने बहन के साथ काम करने गई थी।

श्री नारायण चंदेल :- क्या आप कभी उनके घर पर गये हैं?

श्री चंदन कश्यप :- मेरा बेटा गया था। क्या केदार कश्यप वहां नहीं गये थे?

श्री नारायण चंदेल :- नहीं गये।

श्री कवासी लखमा :- वह गये थे।

श्री नारायण चंदेल :- मैं तो आपको तारीख और समय बता रहा हूं। छत्तीसगढ़ के ये हालात हैं और इसलिए हमने इस सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया है।

श्री चंदन कश्यप :- आप असत्य बोल रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- पहले आप उनके घर जाकर पता लगा लीजिए। उसके घर वाले आपका स्वागत करेंगे।

श्री चंदन कश्यप :- मैं वहां का हूं। मैं जानता हूं। उनका घर 6 कि.मी. दूर है। श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आरोपी उसके शव को घर के सामने फेंककर भाग गये। स्थानीय शासन और प्रशासन को चकमा देकर आरोपी तीन जिले, सुकमा, दंतेवाड़ा और बीजापुर को पार कर बस्तर पहुंच गये। वे भाग गए और सरकार की पुलिस सोती रही । चचेरी बहन सीमा कश्यप और दशो कश्यप अभी भी लापता हैं । आप जाकर पता लगा लीजिए । परिजन व्याकुल हैं और इस सरकार के विधायक और जनप्रतिनिधि अभी तक परिजन से मिलने नहीं गए, यह उन्होंने पत्र में लिखा है ।

श्री चंदन कश्यप :- जनपद सदस्य मेरा बेटा वहां तक पहुंचा है, केदार कश्यप नहीं गया ।

श्री नारायण चंदेल :- बेटा गया होगा, आप थोड़ी गए हो ।

श्री चंदन कश्यप :- मैं विधान सभा में हूं, आपको मालूम होना चाहिए ।

श्री नारायण चंदेल :- हां तो कल चले जाईए । परिजन सरकार से मुआवजे की गुहार लगा रहे हैं । माननीय मुख्यमंत्री जी उत्तर प्रदेश में 50 लाख दे सकते हैं, लेकिन हमारे प्रदेश की गरीब आदिवासी बेटी को अभी तक 50 हजार रूपये देने की घोषणा नहीं की है । यह इस सरकार की संवेदनहीनता का जीवंत परिचायक है इसलिए हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है ।

अध्यक्ष महोदय, दूसरा मामला नारायणपुर विधान सभा क्षेत्र के अंतर्गत कोण्डागांव जिला के ग्राम कोगरा का है । गांव में रोजगार नहीं मिलने और घर की आर्थिक तंगी से परेशान कमशीला 2021 को तस्कर के माध्यम से हैदराबाद के बैगनपल्ली में काम करने चली गई । बैगनपल्ली के ईंट भट्ठी में काम कर रही थी, काम करने के दौरान उसे जहरीले सांप ने काट दिया, जिसका ईलाज स्थानीय हॉस्पिटल में हो रहा था । उसके ईलाज का खर्च 2 लाख रूपये आया । 2 लाख रूपए की वसूली के लिए ईंट भट्ठी के मालिक ने कमशीला की छोटी बहन कक्षा नवीं के छात्रा छबीला को बैगनपल्ली बुलाकर बंधक बनाया और कमशीला को छोड़ दिया । छबीला अभी भी बैगनपल्ली के ईंट भट्ठी में बंधन बनकर काम करने को मजबूर है। वहां का विधायक कौन है, वहां के माननीय विधायक तो हमारे कांग्रेस पार्टी के हैं। वे क्यों नहीं गए, उस बंधक को कब छुड़ाकर लाएंगे ? वह गरीब परिवार की बिटिया हैदराबाद में बंधक है । प्रशासन सो रहा है, पुलिस आधी नींद में है । सरकार का क्या कर्तव्य होता है ? यह छत्तीसगढ़ की कानून और व्यवस्था का दृश्य है । इसलिए हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है । माननीय अध्यक्ष जी, उसकी बहन कमशीला सरकार और स्थानीय विधायक से अपनी बहन को छुड़ाकर लाने की गुहार लगा रही है, लेकिन इन बेचारों को जाने की फुर्सत नहीं है । वह परिवार गुहार लगा रहा है और वह परिवार विधायक जी के दर्शन करने को आतुर हैं कि कब आओगे ? ऐसे ही अनेक मामले बस्तर के

अनेक गांव में हैं, जो बस्तर की बेटियों की तस्करी कर हैदराबाद, बैंगलौर, कर्नाटक, चैन्नई, केरल, मुम्बई जैसे बड़े राज्यों में बंधक बनाकर काम ले रहे हैं, उसके बाद उनकी हत्या की जा रही है ।

अध्यक्ष महोदय :- आपने आधा घंटा बोला था ।

श्री नारायण चंदेल :- ठीक है, कोई दिक्कत नहीं है । अभी तो इनका जो ड्रीम प्रोजेक्ट है-नरवा, गरूवा, घुरूआ और बारी, भ्रष्टाचार की चार चिन्हारी ।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी, जांजगीर-चांपा में एक घटना हुई थी, बोरवेल में एक बच्चा गिर गया था । जब तक वह बच्चा नहीं निकला था, तब तक पूरी सरकार, मुख्यमंत्री जी सांस नहीं लिये और सब लोग बैठकर उसके लिए पूरा प्रयास करते रहे । आपने एकदम से सब चीज को इग्नोर कर दिया, यह उचित नहीं है ।

श्री नारायण चंदेल :- मैं गया था, गलत जानकारी मत देना । हम उसके लिए मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देते हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप गए थे तो उसको कितना सहयोग दिए ?

श्री नारायण चंदेल :- हम गए थे, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं । माननीय मुख्यमंत्री जी, अभी मेरे क्षेत्र में तीन लोग जहरीली शराब से मर गए । यह घोर आपत्तिजनक है।

अध्यक्ष महोदय :- आपने कल उसकी बात कर ली थी न ।

श्री नारायण चंदेल :- घोर आपत्तिजनक यह है कि मंत्री जी ने तीन लोगों की मौत को इतने हलके में लिया, उसमें एक सेना का जवान शामिल था और आजतक सरकार की तरफ से उनके परिवार से मिलने न तो शासन का कोई व्यक्ति गया, न प्रशासन का कोई व्यक्ति नहीं गया । यह इस सरकार की संवेदनहीनता का जीवंत परिचायक है ।

श्री कवासी लखमा :- वह चूहे की दवाई पीकर मरा है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- नेता जी, पी.एम. रिपोर्ट को तो चैलेंज मत करो। आप डाक्टर तो हो नहीं, कोई पी.एम. तो किए नहीं हो। जो पी.एम. किये हैं, उसको मंत्री जी बता रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज ही सुबह के प्रश्न में जिस प्रकार से सरकार का जवाब आया, हम पहले कहते थे कि नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी, इसमे इतना फर्जीवाड़ा है, इसमें इतना फर्जीवाड़ा है कि बिहार के लालू के फर्जीवाड़े को फेल कर दिए हैं। आज क्या बताये हैं, आपको मालूम है ? 229 करोड़ रूपये का गोबर कहां गया या पैसा कहां गया तो मंत्री जी मौन थे।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं बिलकुल मौन नहीं था। मैंने बिलकुल पूरा हिसाब दिया है। गोबर खरीदी और कम्पोस्ट का हिसाब दिया है। जितना फायदा हुआ है, उसका भी विवरण रखा हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री नारायण चंदेल :- काहे का हिसाब दिया है ? आपने 86 लाख रूपये का हिसाब दिया है। 229 करोड़ रूपया कहां है, यह हम जानना चाहते हैं ? गोबर घोटाला हुआ है, गोबर घोटाला हुआ है।

श्री ताम्रध्वज साहू :- अध्यक्ष जी, इनके दिमाग में गोबर घुस गया है।

श्री नारायण चंदेल :- आपने छत्तीसगढ़ को गुड़-गोबर कर दिया है। भूपेश बघेल जी ने पूरे छत्तीसगढ़ को चोरो-बोरो कर दिया है। (हंसी) जत-खत कर दिया है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- जत-खत नइ करे हे साहब, सिस्टमेटिक हे।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय किसान के बेटे हैं, यह हम भी जानते हैं। लेकिन मुख्यमंत्री जी नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी में भ्रष्टाचार हो रहा है, जो आपका ड्रीम प्रोजेक्ट है। आप पूरे देश में विज्ञापन लगा दिए हो, गोबर का विज्ञापन, नरवा का विज्ञापन, घुरवा का विज्ञापन लगा दिए हो और उसमें हमारे मुख्यमंत्री जी खुमरी पहने हैं। गौठानों में गौ-माता मर रही हैं, मैं तो एक गौठान में गया था। अमोरा का जो आदर्श गौठान है, आपको भी मालूम है, मुख्यमंत्री जी गये थे। वहां गौठान में लिखा था- गायों का प्रवेश बंद है। तो क्या वहां आदमी रहेंगे ? (हंसी)

श्री ताम्रध्वज साहू :- इसीलिए ये गये थे। वहां गायों का आना बंद है, इसलिए ये गये थे। (हंसी)

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, गौ माता सड़कों पर हैं। गौठान में ताले लगे हैं। मुख्यमंत्री जी, मेरा आपसे निवेदन है कि आपने पूरे देश में जितने का विज्ञापन दिया है, अगर अपना फोटो छपवाने के बदले उतने से गौ माता के लिए चारे की व्यवस्था कर देते..।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- गीता के कसम खा कि जो कहा है, सच कहा है।

श्री नारायण चंदेल :- आपके शराब का क्या हाल है ? कहां-कहां गये थे ?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप गीता की कसम खाकर कहो जो कहा सच कहा है।

श्री नारायण चंदेल :- नहीं-नहीं, आपके शराब का क्या हाल है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, शराब घोटाले का विषय आ गया है, मैं उस पर नहीं बोलता। लेकिन इस छत्तीसगढ़ सरकार के जमाने में सत्यनारायण जी, असत्यनारायण मत बनिये। माननीय अध्यक्ष महोदय, शराब का ये हाल है। आज गांव-गांव में कहते हैं, गांव-गांव में हाका पड़ रहा है कि -

"दूध के बंधा गय हे चंडी,
शराब के गांव-गांव में खुल गया है मंडी"

माननीय अध्यक्ष महोदय, ये हाल है। जिस करोना काल में छत्तीसगढ़ की गरीब जनता को दवा की जरूरत है, उस करोना काल में इस सरकार ने घर-घर में दारू की होम डिलिवरी कर दी। उन्होंने कहा कि यह अच्छा मौका है। सब लोग चुप हैं, दारू बुलका दो घर-घर में, उस समय दवा की जरूरत थी। सत्यनारायण जी, आप उस कमेटी के अध्यक्ष हो।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री कुलदीप जुनेजा :- नेता जी, माननीय मुख्यमंत्री जी ने उस समय छत्तीसगढ़ में जो किया है, सब गरीब लोगों की मदद की है, हिन्दुस्तान में किसी मुख्यमंत्री ने नहीं किया था। जितने लोग, जो दूसरे प्रदेश से आये थे, सबकी मदद की है।

श्री अमितेश शुक्ल :- राजिम के मेला और धार्मिक स्थल में हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने वहां पर शराबबंदी की है और शासन को करोड़ों रूपये का नुकसान हुआ है, उसके बाद भी शराबबंदी की है।

अध्यक्ष महोदय :- चलो, अब समाप्त करो।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, हम और आप स्वामी आत्मानंद स्कूल गये थे। आप एकाध स्वामी आत्मानंद स्कूल का नया बिल्डिंग तो बनवा दो। पुराने स्कूल को रंग-रोगन कर दिए हैं। किसमें ? डी.एम.एफ. के फंड कर दिए हैं। भ्रष्टाचार का एक नया अडडा बन गया है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- हमारे यहां नया बिल्डिंग बना है। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, ऐसा नहीं है। थोड़ा असत्य कम बोलिये।

श्री कुलदीप जुनेजा :- आप कल हमारे साथ चलिये, हम आपको दिखाते हैं। कल आप रायपुर में चलिये, आपको दिखाते हैं।

श्री नारायण चंदेल :- मैं कल गया हूं।

श्री कुलदीप जुनेजा :- आप मेरे साथ चलिये न। चलिये न, आपको अच्छे से दिखाते हैं।

श्री नारायण चंदेल :- आपके साथ जाने की जरूरत नहीं है, मैं गया हूं। माननीय अध्यक्ष जी, ये हर पुरानी चीज को रंग-रोगन करके क्या कर रहे हैं ? उसका लोकार्पण कर रहे हैं। उसके लिए तो पैसा नहीं दिए हैं। उसका कभी भूमि पूजन नहीं हुआ। हर पुरानी चीज को रंग-रोगन करके उसका लोकर्पण कर रहे हैं। अध्यक्ष जी, क्या होता है कि रेडीमेड के दुकान में जाते हैं और वहां कपड़ा लेकर दूसरे के बच्चे को रेडीमेड का कपड़ा पहनाकर कहते हैं मोर लइका ये, मोर लइका ये। अरे, भईया तोर लइका नो हे। (हंसी) एहा भारतीय जनता पार्टी के सरकार के समय के हे।

डॉ.श्रीमती लक्ष्मी ध्रुव :- इतना अति मत मारिये ।

श्री नारायण चंदेल :- हर भवन का उद्‌घाटन कर रहे हैं, लोकार्पण कर रहे हैं, पुल-पुलिया का उद्‌घाटन कर रहे हैं, कुछ काम करो । रेडीमेड के सहारे यह सरकार नहीं चल सकती ।

श्री रामकुमार यादव :- ए नेताजी, भौजी सुन डारही तोला घर ले निकाल दिही ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज पूरे प्रदेश की, समाज की, हर वर्ग की जनता, चाहे वह किसान हो, व्यापारी हो, नवजवान हो, अधिकारी हो, कर्मचारी हो..।

श्री ताम्रध्वज साहू :- ऐसा कहना कब से शुरू किये हो ?

श्री नारायण चंदेल :- समाज का हर वर्ग इस सरकार से पीड़ित है । समाज का कोई भी तबका हो, इस सरकार से हैरान है, परेशान है । यह सरकार आखंड भ्रष्ट्राचार में डुबी हुई सरकार है, लोगों को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लूट रही है, इसलिये राजधानी का जो धरना स्थल है, वह छोटा पड़ गया तो उन बेचारों को नया रायपुर भेज दिये । 20-25 किलोमीटर दूर, जाव चिल्लात रहिहव, इसलिये आज इस छत्तीसगढ़ प्रदेश का नवजवान चाहे वह पीएससी में परीक्षा दिया हो, गांव-गांव में लाऊड स्पीकर चल रहा है, मालूम है । कका हमू ला पास करा देते ना, हमरो बनौती बना देते ना, हमु ला डिप्टी कलेक्टर बना देते ना, मैं गया तो महिला लोग गाना गा रहे थे । मैं केहेंव अऊ तुमन का नवा गाना ले आयव । त कथे, नई कका ले गोहार करथन ।

श्री रामकुमार नेताम :- वोहा मध्यप्रदेश के ये नेता जी, मध्यप्रदेश के हे ।

श्री नारायण चंदेल :- अरे भईया, जयस्तंभ चौक में रेट लिस्ट टांग दो ना, कौन रोका है ? एक लाख से ज्यादा नवजवानों के भविष्य के साथ में इस सरकार ने खिलवाड़ किया है । पीएससी घोटाला, गरीब लड़के, जो मजदूर का लड़का है, सामान्य आदमी का लड़का है, अब भर्तियों में कोई आवेदन नहीं कर रहा है, उनको लगता है नाउम्मीद, इस सरकार से कोई उम्मीद नहीं है, इसलिये अध्यक्ष महोदय हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है । मैं आपको कहना चाहता हूँ कि आज समाज का हर वर्ग यह कह रहा है कि-

तुमने हमको ऐसे लूटा, इस भरी बाजार में
चुनरी तक का रंग उड़ गया, फागुन के त्यौहार में

धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी । जरा इनकी चुनरी का ख्याल रखियेगा । (मेंजो की थपथपाहट)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- बिल्कुल । चुनरी का भी ध्यान रखूंगा, जुल्फों का भी ध्यान रखूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव के चर्चा में भाग लेने वाले वक्ता सर्वश्री बृजमोहन अग्रवाल जी, माननीय रविन्द्र चौबे जी, माननीय धरमलाल कौशिक जी, मोहम्मद अकबर जी, कृष्णमूर्ति बांधी जी, माननीय ताम्रध्वज साहू जी, श्री अजय जी, माननीय टी.एस.सिंहदेव जी, माननीय शिवरतन शर्मा जी, माननीय मोहन मरकाम जी, माननीय धरमजीत सिंह जी, माननीय केशव प्रसाद चंद्रा जी, माननीय अमरजीत भगत जी, माननीय प्रमोद कुमार शर्मा जी, माननीय डॉ.शिवकुमार डहरिया जी, माननीय पुन्नूलाल मोहले जी, श्री कवासी लखमा जी, माननीय रजनीश कुमार सिंह जी, माननीय उमेश पटेल जी, माननीय ननकीराम कंवर जी, माननीया अनिला भेंडिया जी, माननीया श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू जी, माननीय डॉ.विनय जायसवाल जी, माननीय श्री रामकुमार यादव जी, माननीय सौरभ सिंह जी, माननीया श्रीमती इंदू बंजारे जी और अंत में नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल जी । मैं

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभी वक्ताओं का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने अविश्वास प्रस्ताव में पक्ष में, विपक्ष में, आप सब ने अपनी बात कही है । माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रजातंत्र में विपक्ष का अधिकार होता है कि वह सरकार पर अविश्वास व्यक्त करे और अविश्वास व्यक्त करने के लिये आरोप पत्र भी देते हैं, सदन में अपनी बात भी कहते हैं । अध्यक्ष महोदय, वहीं सत्ता पक्ष को अपने शासन के उपलब्धियों के बारे में कहने का अवसर मिलता है और इस मामले में विपक्ष के साथियों ने बहुत तीखे हमले किये हैं, वहीं उतनी ही शालीनता से और उतनी ही दृढ़ता से हमारे साथियों ने, कभी विभागीय मंत्रियों ने जवाब भी दिये हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो आरोप पत्र है, मैं उसमें देख रहा था कि इन्होंने 109 आरोप लगाये हैं और इसमें कोई तथ्य नहीं दिये गये हैं। इससे 5 साल पहले जब आदरणीय महाराज साहब नेता प्रतिपक्ष थे और उन्होंने जब अविश्वास प्रस्ताव लाया था तो उनके आरोप पत्र में तथ्यात्मक जानकारी दी गयी थी। वह दोनों अविश्वास प्रस्ताव मेरे हाथ में है। लेकिन इसमें केवल घोटाला-घोटाला, यही लिख दिये हैं। मुझे यह लगता है कि नेता प्रतिपक्ष के पास इतना अकाल पड़ गया है कि उनके पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो आरोप पत्र बनाया है उसमें तथ्य डाल दें। उनके पास ऐसे स्टॉफ नहीं है, ऐसे साथी नहीं है। मुझे तो यह लगता है कि नेता प्रतिपक्ष जी के प्रति अविश्वास विपक्षी दलों में है (मेजों की थपथपाहट)। नहीं तो इतना लचर अविश्वास प्रस्ताव बनाते हैं, जिसमें कोई तथ्य नहीं है । हालांकि एक लाईन लिख सकते हैं कि हम सरकार पर अविश्वास व्यक्त करते हैं। यदि इतना भी लिख देते तब भी अविश्वास प्रस्ताव लाया जा सकता है। यह 90 सीटों की विधान सभा है। यदि दशांश सदस्य मतलब इसमें से 9 लोग भी खड़े होंगे तो भी अविश्वास प्रस्ताव लाया जा सकता है। लेकिन यह अपने आप को दुनिया की नंबर 01 पार्टी कहते हैं।

श्री नारायण चंदेल :- हम हैं।

श्री भूपेश बघेल :- हां, मिस्ड कॉल वाले। जिसमें आप महाराज साहब को भी सदस्य बना दिये थे। इनके पास भी कॉल आया था। पिछली सदन में बात हुई थी, आप उस समय नहीं थे। आपकी पार्टी फर्जी सदस्यता के आधार पर पूरे विश्व की सबसे बड़ी पार्टी है। लेकिन उसके पास इतना अकाल है कि वे एक अविश्वास प्रस्ताव ठीक से नहीं बना सके।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे सदस्यों ने, जितने पक्ष में और विपक्ष में बोले। नहीं तो हम छत्तीसगढ़ की विधान सभा में यही देखते रहे हैं कि जब से छत्तीसगढ़ बना है, अविश्वास प्रस्ताव हो, स्थगन हो, यदि कोई पहला वक्ता पहले विषय में बोलेगा तो बस्तर के नक्सलवाद के बारे में बोलेगा। यह पहला अवसर है, वह तो नेता प्रतिपक्ष जी ने बोला नहीं तो किसी सदस्य ने नक्सलवाद के बारे में एक शब्द भी नहीं बोला। यदि किसी ने बोला भी तो सारे सदस्य खड़े होकर उसका खण्डन किये कि आप गलत बोल रहे हैं (मेजों की थपथपाहट)। यह बस्तर में हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है। नेता जी ने अपने भाषण में कहा कि वह इंद्रावती के उस पार गये थे। क्या 2018 के पहले यह संभव था कि कोई इंद्रावती

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नदी के उस पार चला जाये ? किसी की हिम्मत थी ? झीरम घाटी में दिन में नहीं जा सकते थे और आज रात में 10 बजे भी सैकड़ो गाड़ियां जाती हैं, (मेजों की थपथपाहट) यह परिवर्तन आया है। नक्सलवाद घटना में धर्मजीत भैया, सत्तू भैया, धरम भैया, सब लोग गये। मैं कई बार विधायकों के साथ जाता था। वहां की आम जनता कहती थी कि भैया आप उद्घाटन करने आये हो, नारियल फोड़ दिये, फीता खींच लिये, फीता काट लिये, पर्दा खींच लिये, हो गया उद्घाटन, अब जाओ। मतलब कोई अपने आये हुए मेहमान को यह बोलेगा कि आप यहां से जाओ। कभी मिलने चल दो तो यह कहते थे, वहां की बात तो छोड़ दो, एक बार मैं दशहरा के दिन देवभोग गया था और वहां दशहरा में भाषण कर रहा था तो वहां के लोग निमंत्रण दे दिये। मैं भाषण देने के लिये खड़ा हुआ और मेरे पास जो सूची थी, मैं उसमें से नाम भी नहीं पढ़ पाया था कि पीछे से आयोजक लोग मेरा कुर्ता खींच रहे थे कि भाषण बंद करो और जाओ। वह दौर था। लेकिन अब जो परिवर्तन आया है अभी भेंट मुलाकात कार्यक्रम में बस्तर संभाग के सभी विधान सभा क्षेत्रों में रात रूका हूँ। (मेजों की थपथपाहट) मैं सभी समाज, संगठन के लोगों से मिलता रहा। मुझे सबसे बढ़िया जो कमेंट मिला, जिसने मेरे दिल को छुआ है। वह मैं इस सदन के सामने रखना चाहता हूँ। मैं सुकमा में रात रूका। सभी समाज के लोग मिलने आये थे। आखिरी में व्यापारी संगठन जिसमें जैन समाज के अधिकांश लोग थे, अब आदिवासियों की शादी तो वही हो जाती है वह बड़ी संख्या में वहीं रहते हैं। वे लोग बाहर जाकर शादी नहीं करते, लेकिन जैन समाज तो ऐसा है कि पूरे हिन्दुस्तान में उनकी रिश्तेदारी है। मैंने कहा कि इन 4 सालों में पहले और अब में क्या परिवर्तन हुआ ? वहां पर एक बुजुर्ग आदमी खड़े होकर बोलें कि अब हमें रिश्ता करने में कोई तकलीफ नहीं होती।(मेजों की थपथपाहट) यह कितना बड़ा शब्द है कि हमें लड़की लेने, देने, शादी का रिश्ता करने में कहीं कोई तकलीफ नहीं होती। यह सरकार के लिए सबसे बड़ा सर्टीफिकेट है। (मेजों की थपथपाहट) जब हम वहां जाते थे तो सड़कें नई बनतीं थीं, वह कट जाता था 8 दिन नहीं बीतता था, सारी सड़कें 30-30, 50-50 फीट में कटी हुई मिलती थीं। आज आप बस्तर में चल दीजिए। कुछ गांव वाले एक भी सड़क काटते नहीं हैं। (मेजों की थपथपाहट) यह क्यों हैं? क्योंकि वहां परिवर्तन हुआ है। वहां पर जब पहले गाड़ी जाती थी तो लोग कहते थे कि यह सड़क पैरा मिलिट्री फोर्स, पुलिस के लिए बनी है, अब वह सड़क उसकी जरूरत हो गई है क्योंकि उसके पास मोटर साईकिल, टेक्ट्रर, कार, जीप है। अब उसकी आवश्यकता हो गई, उसे कोई काटता नहीं। बस्तर में अब यह परिवर्तन देखने को मिला है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके कार्यकाल में 600 गांव उजड़ गये। माननीय लखमा जी, इसके बारे में बोल चुके हैं। मैं रिपिट नहीं करूंगा। उस समय सरकार ने स्कूल बंद करवाया, नक्सलियों ने तो बंद करवाया ही था। उनहोंने बिल्डिंग को बम से उड़ा दिया था। पिछली सरकार ने भी स्कूल को बंद करवा दिया था। हम वह सब स्कूल शुरू कर रहे हैं। अब स्कूलों में पढ़ाई हो रही है। माननीय केन्द्रीय गृहमंत्री जी खुद इंटिरियर में गये थे। उस समय जब ताड़मेटला की घटना घटी। मैं सड़क मार्ग से गया और

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हमारे ननकीराम कंवर जी हेलीकॉप्टर से गये थे, लेकिन कैम्प से बाहर नहीं गये थे। अब भारत सरकार के गृहमंत्री उस गांव में उतरें, न केवल वहां के स्कूल का भ्रमण किया, वहां की पी.डी.एस. को भी देखने गये। वहां लोगों को राशन मिल रहा है या नहीं मिल रहा है? एक जमाना था जब आपकी सरकार थी तो जवानों के लिए भी राशन पहुंचाना टेढ़ी खीर थी। आज तो वहां आम जनता के लिए राशन, चना, दाल, शक्कर, मिट्टी तेल और चावल है। (मेजों की थपथपाहट) अब यह परिवर्तन आया है। जो आपने कानून व्यवस्था की बात की है तो मैं देख रहा था कि आपके आरोप पत्र के 60 नंबर पर कानून व्यवस्था है। आपकी प्राथमिकता क्या है? इस आरोप पत्र में नक्सल के बारे में कुछ नहीं है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सत्तापक्ष को यह कहने का मौका मिलता है। सारे मंत्रियों ने हमारे विभाग के बारे में बहुत विस्तार से चर्चा हो चुकी है। मैं उन बातों पर नहीं जाऊंगा। अभी समय भी काफी हो चुका है। अब तारीख बदल चुकी है। माननीय नेता जी कह रहे थे कि हमने अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा दो दिनों के लिए रखी थी तो अब हो तो गया। आज दूसरा दिन आ गया। अब तारीख बदल गई। आपने सभी को भरपूर समय दिया। खासकर आपने विपक्ष के लोगों के प्रति कृपापूर्वक समय दिया। उनको बोलने का ज्यादा समय मिला। हमारे में से कोई साथी नहीं होगा जो एक घण्टे भी बोल पाये हों। यहां तो एक-एक, डेढ़-डेढ़ घण्टा बोलने वाले बहुत सारे साथी हैं। आपने कृपापूर्वक विपक्ष को भरपूर मौका दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद् देता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जब हमारी सरकार बनी। तब हम परिवर्तन की बात, गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ का सूत्रवाक्य लेकर सत्ता में आएं थें। मैं इस अवसर उन महापुरूषों को याद करना चाहूंगा, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के निर्माण के लिए संघर्ष किया। मैं उन महापुरूषों को भी नमन करता हूँ, उन साहित्यकारों, कलाकारों को नमन करता हूँ, सभी राजनीतिक दलों के लोगों को जिन्होंने छत्तीसगढ़ निर्माण के लिए योगदान दिया, मैं सबको नमन करता हूं। अध्यक्ष महोदय, लेकिन इनकी 15 साल सरकार रही, लेकिन एक भी आदमी को नहीं लगता था कि सरकार हमारी है। यह महसूस ही नहीं होता था कि सरकार हमारी है, अपनी सरकार है। लेकिन मैं 2013 की घटना को स्मरण करना चाहूंगा, उस परिवर्तन रैली में आप भी थे, चौबे जी उस समय नेता प्रतिपक्ष थे, आदरणीय बाबा साहब उस कार्यक्रम के संयोजक थे, शहीद नंदकुमार पटेल जी की अगुवाई में हम लोग परिवर्तन यात्रा निकाले थे। वह अपने भाषण में कहा करते थे कि परिवर्तन केवल सत्ता के लिए नहीं होना चाहिए, परिवर्तन किसानों के जीवन में, नौजवानों के जीवन में, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जाति के लोगों के जीवन में, यहां की माताओं, बहनों के जीवन में होना चाहिए। इसलिए परिवर्तन की मशाल लेकर हमारे नेता लोग निकले थे, लेकिन वह यात्रा अधूरी रही। लेकिन अब मौका मिला तो मुझे इस बात की खुशी है, जब 05 साल बीतने जा रहा है, इस सत्र का आखिरी समय है, मुझे इस बात का संतोष है कि हां हमने किसानों की जिंदगी में परिवर्तन किया है। वह ऋण से उऋण हो गये। (मेजों की थपथपाहट)। आज वह संपन्नता की ओर आगे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बढ़ रहे हैं। हमारे बस्तर और सरगुजा के आदिवासियों के जीवन में परितर्वन हुआ है कि आज उनके घरों में संपन्नता आ रही है। महिलाओं के जीवन में परिवर्तन हुआ है, आत्मविश्वास से भरी हुई हमारी बहनें चाहे वह खेत में काम कर रही हों, गौठान में काम कर रही हों, सब जगह वह आत्मविश्वास हमारी माताओं और बहनों में दिखाई देता है। सबसे बडी खुशी की बात है कि हमारे जो बच्चे हैं, जो हमारे भविष्य हैं जिसके लिए चाहे वह शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, रोजगार की व्यवस्था हम लोग कर रहे हैं। जब स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी स्कूल के बच्चे फर्राटेदार अंग्रेजी बोल रहे हैं। मैं बस्तर में था, कवासी लखमा जी अपने भाषण में कहा करते थे। मैं तो अनपढ़ हूं, वह अभी भी बोलते हैं। लेकिन आज लोग जब पढकर निकलोगे तो आपसे में बस्तर का कोई आदिवासी एस.पी., कलेक्टर, कोई सी.ए. बनेगा, कोई डॉक्टर, इंजीनियर बनेगा। आप लोगों ने बना क्या रखा था? आज पुलिस की भर्ती कर रहे हैं, बस्तर फाइटर की भर्ती कर रहे हैं, मुझे बीजापुर, दंतेवाडा, सुकमा में पांचवीं पढ़े हुए बच्चे नहीं मिल रहे हैं। हम लोग उनको भर्ती कर रहे हैं, 1 हजार लोगों की भर्ती की है। आप लोगों ने क्या स्थिति बना रखी थी। पांचवीं पढे बच्चे को चपरासी की नौकरी नहीं मिलती। लेकिन बस्तर फाइटर में पांचवीं पढे बच्चों को हम भर्ती कर रहे हैं। इससे ज्यादा लज्जाजनक बात क्या हो सकती है। हमने अपने बच्चों के साथ क्या न्याय किया है। 15 साल का लंबा गेप, वह 15 पीढ़ी, 15 बैच निकला गया जिसको कुछ नहीं मिला। आज वह परिवर्तन आया है। चाहे बस्तर, सरगुजा, मानपुर मोहला, सरईपाली, देवभोग हो, कहीं भी गये हैं तो मुझसे केवल दो मांगे की है। एक हमारे यहां बैंक खुलवा दो और दूसरा स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी स्कूल खोल दो। (मेजों की थपथपाहट) हमने 700 हिंदी और अंग्रेजी स्कूल खोल दिया है। हमारे पास हाईस्कूल तो 4 हजार ही हैं। लेकिन उसमें से इन दो-तीन सालों में एक चौथाई के आसपास हम पहुंच रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, हम बढ़ रहे हैं। अभी बोलते हैं कि बिल्डिंग नहीं है। पुन्नूलाल मोहले जी से पूछ लीजिए कि उनके विधान सभा में बिल्डिंग बनी है या नहीं बनी है। भारतीय जनता पार्टी की बनाई हुई स्कूल को हम लोग रंगरोगन कर रहे हैं। शहीद स्मारक, आर.डी. तिवारी स्कूल, पुजारी स्कूल आपने बनवाया था, हमारे पुरखों ने बनाया था। हम सब के पुरखों ने बनाया है। वहां स्थिति क्या थी। जब मैं कुलदीप जुनेजा की के साथ गया तो उन्होंने कमेंट किया कि मैं इस शहीद स्मारक स्कूल से पढ़ा हूं। उस समय आपके मुख्यमंत्री नहीं बने नहीं तो मैं भी अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ा होता। आर.डी. तिवारी स्कूल की इतनी बड़ी बिल्डिंग, इतना बड़ा परिसर है, वहां हम गये, वहां कितने बच्चे पढ़ रहे थे? वह शहर के बीचो-बीच है, वहां 56 बच्चे थे। उतने से ज्यादा वहां कमरे हैं। आज वहां 1 हजार से ऊपर बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) यह परिवर्तन है। आज गरीब घर के, लोवर मिडिल क्लास के बच्चे प्राईवेट स्कूल जहां केवल टाई पहना देते थे और पालकों को केवल लूटने का काम होता था, उसकी दुकानें बंद हो गईं। जो अच्छी स्तर के हैं, वह चल रहे हैं। लेकिन जिसका स्तर नहीं था, केवल इंग्लिश मीडियम स्कूल के नाम से खोल दिये थे, वह सारे शटर गिर गये। आज यदि एक सीट है तो उसके विरूद्ध में 10-

15 आवेदन आ रहे हैं। यह परिवर्तन आया है। आपको मौका मिला था। आपको किसने रोका था? आप नहीं कर पाये। मैं इसीलिए बस्तर की बात कहता हूं। कुछ लोग बोलते हैं कि बस्तर के किसानों के साथ अन्याय हो रहा है। मुझे याद है जब मैं दंतेवाड़ा गया था, तब मैंने कहा कि बस्तर के लोगों को सुपोषित तो कर दो। सबसे ज्यादा कुपोषण तो बीजापुर, दंतेवाडा, सुकमा, आदिवासी अंचलों में हैं। बच्चों को कुपोषण से बाहर कर दो, महिलाओं को एनीमिया से बाहर कर दो। आर.बी.आई. की वर्ष 2018 की रिपोर्ट निकाल दीजिये। पिछले मुख्यमंत्री जी का बयान देख लीजिये। उस आरोप पत्र में है जो टी.एस. सिंहदेव जी ने बनाया है। उसका उल्लेख है। वह 47 प्रतिशत लोगों के बारे में बोले। अध्यक्ष महोदय, हमने कहा कि इसको शिक्षा दे दो, इसको ताकतवर बना दो। वह अपनी लड़ाई खुद लड़ेंगे। उसको किसी दूसरे की जरूरत नहीं है। बस्तर के लोग, सरगुजा के लोग अपनी लड़ाई खुद लड़ सकेंगे। उनको शिक्षित कर दीजिये और उनको सुपोषित कर दीजिये। (मेजों की थपथपाहट) हमने किया। वह सारे पैरामीटर। आप आंकड़े निकालकर देखें। मैं बताऊंगा तो बहुत लंबा हो जायेगा। मैं उन आंकड़ों में नहीं जाऊंगा। नीति आयोग से हमको कितने सर्टिफिकेट मिले, हमको कितना रैंकिंग मिला, चाहे कोण्डगांव, चाहे बीजापुर, चाहे नारायणपुर की कहे, सभी जगहों पर हमको रैंकिंग में नंबर मिला है। नीति आयोग ने हमको रैंकिंग दी है। अध्यक्ष महोदय, आप खेती-किसानी की बात में देखेंगे, आज चाहे बस्तर में हो, चाहे सरगुजा में हो, सारे जगहों पर ट्यूबवेल खुदाई हो रहे हैं। आपके समय में कितने पंप लगते थे? मात्र 10 पंप लगते थे, 15 हजार पंप लगते थे। आज कभी 33 हजार पंप लगते हैं। इस साल तो 50 हजार पंप, हम लोगों ने बजट में 300 करोड़ रूपये दिया है। अभी कनेक्शन के लिए 300 करोड़ रूपये और दिया है। क्यों ? धर्मजीत भैया ने दो साल पहले इस मामले को उठाया था। कहीं परमानेंट कनेक्शन नहीं मिल रहा है। हमने सारे क्लियर किया। उसके कारण से सरकार को आज सरकार पर भार अधिक पड़ रहा है, क्योंकि आपको सब्सिडी देनी है। जितने पंपों की संख्या बढ़ेगी तो सब्सिडी बढ़ेगी, लेकिन हम पीछे नहीं हटे। किसानों के बिजली में अभी तक हमने 11 हजार करोड़ का सब्सिडी दिया है। बीस हजार करोड़ रूपये तो राजीव गांधी इनपुट सब्सिडी दिया है। घरेलू उपभोक्ताओं को 3800 करोड़ रूपये की छूट मिली है। एक तरफ लागत में कमी कैसे हो और उत्पादन में उसकी कीमत कैसे मिले, यह दोनों को साधने का काम हम लोगों ने किया है और इस कारण से आज छत्तीसगढ़ का किसान खुशहाल हैं। इस गर्मी फसल में भी 1900 रूपये से लेकर 2400 रूपये क्विंटल तक का धान बिका है। आपके भाटापारा में 2200 रूपये क्विंटल बिका है। 2400 रूपये तक गया है। लेकिन दुर्भाग्य है कि कल ही भारत सरकार ने कहा कि गैर बासमती चावल का एक्सपोर्ट बंद। अब फिर धड़ाम से गिरेगा। अब भारत सरकार एक्सपोर्ट करेगी। क्यों? क्योंकि अब चीन में चावल नहीं है, बांग्लादेश में चावल नहीं है, यूरोप में गेहूं नहीं है तो अब चावल की डिमांड बढ़ रही है। चावल की डिमांड बढ़ रही है। सरकार खरीदेगी और भारत सरकार पैसा कमायेगी। किसानों को पैसा नहीं मिलेगा। इस प्रकार की उनकी रणनीति है। उन्होंने झीरमघाटी के बारे में चर्चा की। मेरे जेब में पर्ची

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है। आपने स्वर्गीय भीमा मंडावी जी की हत्या की जांच एन.आई.ए. से करवाया। फायनल रिपोर्ट बन गया। फिर क्या हुआ ? झीरमघाटी में कोर्ट ने कहा कि गुडसा उसेण्डी और रमन्ना, दोनों के बयान लिये जायें। क्यों नहीं लिये? जब प्राथमिकी दर्ज हुआ, उसमें इन दोनों का नाम था तो एन.आई.ए. की फाईनल रिपोर्ट में ये दोनों नाम कैसे कटे, एन.आई.ए. पर यह हमारा आरोप है ? (शेम-शेम की आवाज) वह नाम कैसे हटे जब प्राथमिकी में दर्ज है, उससे पूछताछ क्यों नहीं की गयी ? सवाल तो इस बात का है । आप कहते हैं तो मैं पर्ची दे दूं । मुझे मालूम है कि कैसे षड़यंत्र हुआ । दूंगा तो जांच कौन करेगा ? जो नाम ही हटा दे, अब गुरसा उसेंडी कहां है ? रमन्ना कहां है ? मुझे तो यह भी पता चला है कि रमन्ना की मृत्यु हो गयी । उसके परिवारवाले बोल रहे हैं कि गुरसा उसेंडी यह बात कितनी सच है, मैं यह नहीं जानता । लेकिन उसके परिवारवाले बोल रहे थे, गुरसा उसेंडी के बच्चों को तो नौकरी मिल गयी, हमारे परिवार को नहीं मिली । कहां मिली ? कैसे मिली ? किसने दिया ? झीरमघाटी का जो अपराधी हो, उसको इस प्रकार से संरक्षण । उसकी जांच कौन करेगा ? हमने तो एफआईआर करायी । एक बार उमेश पटेल जी ने कराया, एक बार उदय मुदलियार जी के चिरंजीव ने जीतू मुदलियार ने कराया । कोर्ट में खड़ा हो गया और कोर्ट में खड़े होकर कहते हैं कि राज्य सरकार जांच नहीं कर सकती है । हम कोर्ट में गये और वहां लड़े लेकिन न तो वे जांच कर रहे हैं और न ही हमको जांच करने दे रहे हैं । यदि हमको जांच करने के लिये दे देते तो निश्चित रूप से हम तह तक जाते । लेकिन हमारा दुर्भाग्य है और इस बात की पीड़ा भी है कि हम सत्ता में बैठकर भी उन शहीदों को, उन परिवारों को हम न्याय नहीं दिला पा रहे हैं । कितनी बार गृहमंत्रालय, कितनी बार एनआईए को, कितनी बार विभाग के अधिकारियों को पत्र लिखा, उन्होंने कह दिया कि अब पत्र लिखना बंद कर दीजिये क्योंकि हम आपको जांच करने देंगे नहीं तो किन षड़यंत्र के आरोपियों को आप बचा रहे हैं ? क्यों बचा रहे हैं ? अगर राज्य सरकार जांच करना चाहती है तो आप अनुमति दे दें न । क्यों रोक रहे हैं ? आप बार-बार यह कहना बंद कर दीजिये कि आपकी जेब में है या गिर गया । इसका मजाक मत उड़ाईये । अब हाथ बांध भी दिये, मुंह में टेप लगा दिये और बोले कि खाओ । आपकी स्थिति यह है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सारे विभागों के बारे में बात हुई । शराब के बारे में धरमलाल कौशिक जी, माननीय और सदस्य, सौरभ सिंह जी, शिवरतन जी बहुत लोगों ने बात की । 2000 करोड़ रूपये से ज्यादा का घोटाला । 2168 करोड़ बहुत अच्छी बात है, ईडी ने जांच की और 2168 करोड़ रूपये का उन्होंने चालान प्रस्तुत कर दिया, अब सवाल इस बात का है कि कितनी संपत्ति जब्त हुई, कितने बैंक खाते सीज हुए, किनके-किनके हुए और नहीं हुए तो क्यों नहीं हुए ? उन्होंने कहा कि यह होलोग्राम में नकली होलोग्राम लगाकर, दूसरी बात कि जो टैक्स है उसकी चोरी की । एक पेटी में करीब 3000 होता है । 3000 है तो कहां होगा ? फैक्ट्री में, जहां बनेगी वहां तो उसमें शामिल कौन है ? फैक्ट्री मालिक और वहां पदस्थ अधिकारी । उसके बिना तो निकल नहीं सकता । अब सवाल यह उठता है कि जो

डिस्टलर हैं वह आरोपी क्यों नहीं हैं ? उनकी संपत्ति जब्त क्यों नहीं की गयी ? यह किसकी सांठ-गांठ है ? यह क्या मिली-भगत है ? आखिर डिस्टलर के खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं? उसके बैंक खाते क्यों सीज नहीं हुए ? उसकी संपत्ति क्यों जब्त नहीं की गयी ? और वह जेल से बाहर क्यों है ? जब हमने नोटिस दिया तो कुछ सदस्य उनके पक्ष में बात करने के लिये खड़े हो गये । ये कौन लोग हैं ? उनको क्यों बचाया जा रहा है ? अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ छोटा सा राज्य है। 3 करोड़ की आबादी है। 90 विधान सभा है। 11 लोक सभा है। 9 लोक सभा तो आपके पास है, लेकिन हिन्दुस्तान में जितने राज्य हैं, सबसे ज्यादा सेन्ट्रल एजेंसियां यदि छापा डाली है और अभी भी बैठी हुई है तो केवल छत्तीसगढ़ में। क्यों? (शेम-शेम की आवाज) ई.डी., आई.टी.,डी.आर.आई. और सी.बी.आई. को हमने बैन कर दिया तो वे नहीं आ रहे हैं, लेकिन सारे लोग यहीं हैं। उसी-उसी घर में जा रहे हैं। उसी अधिकारी के पास जा रहे हैं। उसी ठेकेदार के पास जा रहे हैं। अभी वो पॉवर प्लांट वाले के पास तीसरी बार जाते हो गया है। पता नहीं, ये क्या खोजते हैं? ये बैठे रहते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, कोयला घोटाला हुआ, 500 करोड़ का कोयला घोटाला हुआ, कितनी संपत्ति जब्त किये? 3 साल तो हो गये। आई.टी. ने रेड डाल दिया। ई.डी. ने जांच कर लिया। कितनी संपत्ति जब्त किये? तो आप 500 करोड़ का आरोप लगा रहे हैं तो 500 करोड़ की संपत्ति तो दिखाओ। वो कहां है? दो ही उद्देश्य हो सकते हैं। कोयला के बारे में सौरभ सिंह जी ने बहुत विस्तार से बात की। ये बहुत जानकार आदमी हैं और बहुत विद्वान सदस्य हैं। उनका अध्ययन देखकर अच्छा लगता है। लेकिन पिछले समय भी आपको जवाब दिया कि जितने भी खदान हैं, वो अधिकांश केन्द्र सरकार के हैं, एस.ई.सी.एल. के हैं। 52 खदान तो उसी के हैं। 1-2 जिसके बारे में धर्मजीत भैया बोल रहे थे, जिसको राजस्थान गवर्नमेंट को मिला है, छत्तीसगढ़ गवर्नमेंट को मिला है। दूसरा, 1-2 मिला है, उसे भारत सरकार शुरू नहीं करने दे रहे हैं। जिंदल से तो आपकी पुरानी बैर है। कितने बार 1 नंबर आते हैं, एल-1 आते हैं, उसके बाद भी उसे देते नहीं हैं। मत दे, हमें क्या करना है? क्योंकि आपने ही कहा था कि सी.वी.सी. की रिपोर्ट के आधार पर कोयला में 10 लाख 87 हजार करोड़ का घोटाला। अध्यक्ष महोदय, क्या निकला? दूसरी बात, आज आप क्या कर रहे हैं? आपने उसे नीलाम किया, बहुत अच्छा लगा। हिंडाल्को ने लिया, बाल्को ने लिया, लेकिन स्टील प्लांट वालों ने नहीं लिया। गैर स्टील सेक्टर है, वही लोग लिये, लेकिन अब वे सब सरेंडर कर रहे हैं, क्योंकि 3-3, 4-4 हजार प्रीमियम में लिये हैं। कहां से पैसा पटायेंगे, उस समय समझ में नहीं आया था और अब सरेंडर कर रहे हैं। यदि उसकी गणना की जाये और आज जो आप राज्यों को दे रहे हैं, अब सब राज्यों को बांट दिये। राजस्थान को दे दिये, मध्यप्रदेश को दे दिये, छत्तीसगढ़ को दे दिये। छत्तीसगढ़ ठीक है, हमारा स्टेट है, लेकिन आंध्रप्रदेश को दे दिये, गुजरात को दे दिये, महाराष्ट्र को दे दिये। उसमें तो केवल हमें 100 रूपये की रॉयल्टी मिलती है। रॉयल्टी भी वर्ष 2013 के बाद से बढ़ा नहीं है। रॉयल्टी भी बढ़ानी चाहिए। हम लोग हर समय डिमांड करते हैं, लेकिन रॉयल्टी बढ़ती नहीं है। दूसरा, उससे नुकसान क्या हुआ? यदि

प्राइवेट को जाता तो हमें प्रीमियम मिलता, जो अधिकतम 2100 है। यदि इस हिसाब से गणना करें तो 30 साल में छत्तीसगढ़ को 9 लाख करोड़ रूपये का नुकसान होगा और इसके लिए कोई दोषी है तो केन्द्र सरकार दोषी है। क्यों उसे राज्यों को दे रहे हैं। नीलामी करनी थी। आपने नहीं किया। अब जैसा कि इन्होंने कहा कि चोरियां होती हैं। पहले भी चोरियां होती थीं, अभी भी कहीं-कहीं चोरियां हो रही हैं। कहीं नदी के किनारे, कहीं नाले के किनारे, कहीं ऊपर में आ गया, खोद लेते हैं। हम लोग भी आपके साथ महाराष्ट्र देखने के लिए गये थे तो वहां भा.ज.पा. मंडल के अध्यक्ष निकलें। खोद रहे थे। हमने शिकायत भी की, पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। यहां कार्यवाही भी हुई है। माननीय अध्यक्ष महोदय, अब सवाल उठता है कि कोयला में घोटाला हुआ है और केन्द्र सरकार का है तो केन्द्र सरकार के बैठे हुए अधिकारी हैं और उनके सुरक्षा अधिकारी हैं, उसके खिलाफ भारत सरकार ने क्या कार्यवाही की? या ई.डी. ने या आई.टी. ने क्या कार्यवाही की? मुझे बतायें। केवल आप सरकार को बदनाम करना चाहते हैं। उद्देश्य केवल ये है। अध्यक्ष महोदय, मैं दूसरी बात कहना चाहता हूं कि जितना भी कोयला खदान हो, चाहे लोहा खदान हो, चाहे बैलाडीला का खदान हो, बैलाडीला के बारे में शिवरतन शर्मा जी खनिज विकास निगम के अध्यक्ष थे, 17 सितंबर, 2018 मतलब उसके 15 दिन बाद, 20 दिन बाद आचारसंहिता लगा, उस दिन उन्होंने कहा कि एन.सी.एल.। अरे, भई, जब एन.एम.डी.सी. हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा लौह उत्पादक कंपनी है और वह एम.डी.ओ. करे, यह हास्यास्पद नहीं है अध्यक्ष महोदय । हमको 10 बार चिट्ठी लिखते हो गया, यह एन.सी.एल. खत्म करो और खुद आप खुदाई करो । वहां के कर्मचारी भी चाहते हैं कि खुदाई हम ही लोग करें । लेकिन एन.एम.डी.सी. और भारत सरकार टस से मस नहीं हो रही है । क्यों, उसका एम.डी.ओ. कौन है ? यही नाम राहुल जी ने लोक सभा में पूछा था तो सदस्यता चली गई । अध्यक्ष महोदय, आज जितनी भी सेंट्रल एजेंसीज़ छत्तीसगढ़ में हैं, उसकी खदान नहीं चलने दे रहे हैं, उनको नहीं दे रहे हैं बैलाडीला, उनको नहीं दे रहे हैं कोयला खदान, उनकी नजर है वहां पर । हमने उसको एलीफेंट कॉरीडोर बना दिया । उसके बगल में जो खदान है, उसको लेना चाहते हैं । मध्यप्रदेश में अंदर ड्रिल करके गैस निकाल रहे हैं, वही निकालने का षड्यंत्र इनका था। मैं षड्यंत्र तो नहीं कहूंगा लेकिन उनकी मंशा थी । उस मंशा पर पानी फिर गया और इसी कारण इतने छोटे से राज्य में ई.डी., आई.टी. सारे लोग बैठे हुए हैं । केवल एक कारण है कि मित्र को हम लोग मौका नहीं दे रहे हैं । इस कारण से गिरीश देवांगन जी के यहां रेड पड़ी, क्या मिला ? सन्नी अग्रवाल के यहां रेड पड़ी, क्या मिला ? देवेन्द्र यादव के यहां रेड पड़ी, क्या मिला ? क्या आप केवल बदनाम करना चाहते हैं। क्योंकि हम सूट नहीं कर रहे हैं, कांग्रेस की सरकार है इसलिए बदनाम करने की कोशिश । यह षड्यंत्र हो रहा है ।

अध्यक्ष महोदय, डी.एम.एफ. के बारे में चर्चा हुई । इसमें घोटाला हो रहा है, उसमें घोटाला हो रहा है, हाऊस से फोन आ रहा है । अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री का पद संभाला, हम तीन लोग मंत्री बने । आदरणीय महाराज साहब, आदरणीय ताम्रध्वज जी, हमने मीटिंग ली। सारे अधिकारी थे, डी.एम.एफ.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

की मीटिंग ली । उन्होंने बताया कि हमने यह बनाया, वह बनाया, ऐसा ऐसा किया । क्योंकि जितनी खदानें है सब आदिवासी अंचल में हैं । चाहे वह कोरबा कहें, चाहे बस्तर कहें, चाहे रायगढ़ कहें, सब आदिवासी अंचल में हैं । मैंने अधिकारियों से एक ही सवाल पूछा चार साल से चला रहे हो उन आदिवासियों के जीवन में, वहां रहने वालों के जीवन में क्या परिवर्तन आया, केवल इतना ही बता दीजिए ? सारे अधिकारियों ने सिर नीचा कर लिया और कहा कि कोई परिवर्तन नहीं आया है । क्यों, क्योंकि उसे आप स्वीमिंग पूल बनवा रहे थे, उससे कलेक्टोरेट में लिफ्ट लगवा रहे थे, बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्स बनवा रहे थे । तो आदिवासियों के जीवन में कहां से परिवर्तन आएगा ? हमने कहा कि यह उनका पैसा है, उनको नगद बांट दो, तब भी उनके जीवन में परिवर्तन आ जाएगा । चार साल मेहनत किये लेकिन कोई परिवर्तन नहीं आया । वही कुपोषण है, वही एनीमिया है, वही अशिक्षा है, इलाज की व्यवस्था नहीं है, रोजगार की वही स्थिति है । नहीं तो वहां के लोग आकांक्षी जिले में क्यों रहते ? हमने कहा कि इससे स्कूल बनाओ, छोटे-छोटे पुल-पुलिया बनाओ, एप्रोच रोड बनाओ, उनके लिए सुपोषण का अभियान चलाओ, मलेरिया मुक्त बस्तर का अभियान चलाया। आज क्या स्थिति है, पांच परसेंट मलेरिया परजीवी था, आज दशमलव में रह गया है, आधा परसेंट भी नहीं रह गया है । अध्यक्ष महोदय, परिवर्तन क्या आया? परितर्वन यह आया कि आज जुलाई का महीना बीतने जा रहा है । जब मध्यप्रदेश की विधान सभा में चौबे जी और आप लोग थे तो वहां जो स्थगन लगता था, ध्यानाकर्षण लगता था तो यही लगता था कि बस्तर में मलेरिया से, उल्टी दस्त से इतने लोग मारे गए । आप सीनियर लोग बता दीजिए, यही सवाल रहता था । आप लोग मध्यप्रदेश विधान सभा में थे, यही सवाल उठाते थे । आज पांच साल बीत रहा है विधान सभा में एक भी सवाल बस्तर में मलेरिया से मौत का नहीं लगा (मेजो की थपथपाह) । उल्टी दस्त का एक भी सवाल विधान सभा में नहीं लगा । यह हमारी उपलब्धि है, क्योंकि जो बेसिक काम हम लोग लगातार करते रहे और उसकी मॉनीटरिंग भी करते रहे । आज मुझे खुशी है कि बस्तर का एक भी विधायक मुझे डॉक्टर या नर्स स्टाफ के लिए कोई आवेदन नहीं करता, क्योंकि सारे स्टाफ स्वास्थ्य विभाग में सब भरे पड़े हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- विशेषज्ञ डॉक्टरों की लंबी लाईन है।

श्री भूपेश बघेल :- अब तो उल्टा हो गया है, महाराज साहब के जिले के लोग बलरामपुर में ईलाज कराने जाते हैं। झारखंड के लोग ईलाज कराने आते हैं, यह परिर्वतन आया है। ब्लड बैंक खुल गया है, हमने डी.एम.एफ. के पैसे का यह काम किया है। उस समय जब डी.एम.एफ. शुरू हुआ, महाराज साहब नेता प्रतिपक्ष थे, रमन सिंह जी को कह-कहकर, हाथ जोड़कर निवेदन किया कि कम से कम विधायकों को सदस्य बना दीजिए। कई बार कहा, जब वह बिल लाया गया तो कितनी बार कहा लेकिन नहीं माने। आज सारे विधायक उसके सदस्य हैं, मंत्री उसकी अध्यक्षता कर रहे थे, आपने शिकायत की तो फिर कलेक्टर अध्यक्ष बन गये। सांसद उसका सदस्य बना लेकिन उसमें सारे विधायक सदस्य हैं, पंचायतों के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सरपंच, जनपद सदस्य वे लोग भी सदस्य बन गये हैं। जो भारत सरकार ने गाईडलाईन दी है, उसका पूरा पालन हो रहा है। अब कहीं इक्का दुक्का स्वीकृति करने में कहीं शिकायत है, मैं तो डी.एम.एफ. में देख रहा था, शकुंतला के क्षेत्र में कम स्वीकृति है, शिवरतन और पम्मू के क्षेत्र में ज्यादा है। सही बात है ना शकुंतला जी।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आपको गलत जानकारी है।

श्री भूपेश बघेल :- मैं आपको कल पत्र भिजवा दूंगा, आप चिंता मत करिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- बिल्कुल-बिल्कुल, सबको एक बराबर हुआ है।

श्री भूपेश बघेल :- हां ठीक है। आंकड़ों के ऊपर है।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आपने ही कहा है।

श्री भूपेश बघेल :- आपके यहां भी है, आप चिंता मत करिए।

श्री सौरभ सिंह :- आपने ही कानून बनाया है, खनिज प्रभावित क्षेत्रों में ज्यादा स्वीकृति होगी। उनका और मेरा क्षेत्र खनिज प्रभावित क्षेत्र है, इसलिए ज्यादा स्वीकृति हुई है।

श्री भूपेश बघेल :- रामकुमार का कम है, आपका ज्यादा है।

श्री नारायण चंदेल :- मुख्यमंत्री जी भाई बंटवारा हुआ है, समान बंटवारा हुआ है। कहीं ज्यादा कम नहीं हुआ है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो विपक्ष को धन्यवाद दूंगा कि आपने अविश्वास प्रस्ताव लाया और हमको सरकार के पक्ष में बात रखने का मौका दिया, इसलिए मैं सभी विपक्ष के साथियों को हृदय से धन्यवाद देता हूं। दूसरी बात, हम गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ का संकल्प लेकर यात्रा में निकले थे, बहुत सारी बाधाएं आई, बहुत सारी परेशानी आई, कोरोना जैसे महामारी आई लेकिन हमारी दृढ़ इच्छाशक्ति को हमने कमजोर होने नहीं दिया, हमारे तमाम मंत्रीगण, तमाम साथी और अधिकारीगण इनकी कार्य कुशलता से वे सारे संकल्प जो किसानों से मजदूरों से नौजवानों से गरीबों से किया, हमने उसे पूरा किया है। इसलिए मैं सबको बधाई देता हूं। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, हम आलोचना कर देते हैं, हम भी विपक्ष में थी, अधिकारियों की आलोचना हम भी करते थे, अभी आप विपक्ष में हैं तो आप आलोचना कर रहे हैं लेकिन क्रियान्वयन करने का काम कौन कर रहा है, इन्हीं अधिकारियों के भरोसे कर रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- क्रियान्वयन करते हुए जेल भी जा रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- जा रहे हैं। ई.डी. में तो व्यवस्था ऐसी है कि एक बार गये तो जमानत ही नहीं होना है। यह लोअर कोर्ट, हाईकोर्ट तो छूते तक नहीं। स्थिति यह है।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपके समय में भी लोग नान घोटाले में जेल गये थे और प्रियदर्शिनी में भी है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री भूपेश बघेल :- अजय जी, आप कह रहे थे ना, मैं बाहर में आकर स्पीच दे रहा था।

श्री अजय चंद्राकर :- पहले जो नान घोटाले वाले लोग हैं, वह आपकी सरकार चला रहे हैं। उसकी किलोल पत्रिका छप रही है, पढ़िए।

श्री भूपेश बघेल :- सुनिए, आप उधर मत बोलिए, मेरे से बात करिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- हम लोगों ने प्रियदर्शिनी बैंक का भी वीडियों देखा है।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत ज्यादा आरोप प्रत्यारोप में नहीं जाऊंगा। लेकिन यह कहना चाहूंगा, ई.डी. को जो इतना अधिकार मिला है, वह उचित नहीं है। अभी जो और आदेश निकला है, वह पूरे देश के व्यापारियों और व्यवसायियों के लिये सबसे ज्यादा खतरनाक है। यदि जी.एस.टी. की भी चोरी करते हैं तो ई.डी. के तहत कार्रवाई की जायेगी। कौन व्यापारी बचेगा? यह जो भ्रष्टाचार कर रहे हैं, वह चंदा उगाही का माध्यम बन जायेगा। अभी आपने देखा होगा कि दुर्ग में एक घटना हुई। मैं ई.डी. का अधिकारी बोल रहा हूं, बोलकर करोड़ों रूपये लेकर भाग गये। यह धंधा शुरू हो जायेगा और मैं इसका विरोध करता हूं क्योंकि जी.एस.टी. में भी ई.डी. जांच करेगी। जी.एस.टी. के लिये कानून है। आई.टी है। यदि कर चोरी होती है, कर अपवंचन होता है तो वह उसकी भरपाई कर लेगा। लेकिन यदि ई.डी. घुसेगी तो आदमी सीधे जेल ही जायेगा और जेल जाने के बाद लोवर कोर्ट, हाई कोर्ट में कुछ नहीं होना है। सीधे सुप्रीम कोर्ट में कुछ होगा। अगर सुन सकते हैं तो वहीं सुन सकते हैं। यदि वजह देखेंगे तो कुछ नहीं है। आप ऐसा कानून बनायेंगे। आप व्यापार करो तो वह अपराध है। यदि काम करते-करते गलती हो जाये तो ठीक है, लेकिन यदि वह जानबूझकर कर रहा है तो उस पर कार्रवाई करें।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यापार करना निश्चित रूप से अपराध हो गया है। मैं भी इस बात से सहमत हूं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह अभी दो घण्टे सोकर आये हैं और फिर से परेशान कर रहे हैं। लेकिन यह अभी दो घण्टे सोकर आये हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- देखिये, यदि आप ज्यादा असत्य बोलेंगे तो गले का यही हाल होगा।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यापार करना निश्चित रूप से अपराध हो गया है। राईस मिल में मल्टी लेयर वसूली है और उसको ई.डी. नहीं कर रही है। सी.एम.आर. राईस के लिये 01 हजार रूपये का बजट है और 01 हजार रूपये के बजट में जिन लोगों के पास गया, उन सबके खाते आ गये हैं। पहला किश्त 60 रूपये दो और 20 रूपये रखो। दूसरा किश्त 60 रूपये दो और 20 रूपये रखो। यह व्यापार करना, छत्तीसगढ़ के लोग जिस व्यापार को कर रहे हैं। उसमें सर्वाधिक वसूली ई.डी. नहीं कर रही है बल्कि इधर के लोग कर रहे हैं। जो वसूली कर रहे हैं, मैं कांग्रेस के उन एक-एक कार्यकर्ताओं का नाम ले दूंगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री भूपेश बघेल :- रूकिये, अब आप सुनिये। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह तो ई.डी. के प्रवक्ता है। ई.डी. का प्रेस बाद में जारी होता है, इनके नेताओं का प्रेस पहले जारी होती है। हूबहू। पहले यह हल्ला करते हैं और फिर छापा पड़ता है। फिर इस नेता के यहां जाओ, उस नेता के यहां जाओ। ई.डी., आर.आइ.टी. वाले धोखे से एकाध बार भारतीय जनता पार्टी के नेता के यहां चले जाते। क्यों नहीं जाते हैं? ये लोग ही बता रहे हैं। कुछ नहीं मिल रहा है। मैंने बताया कि 500 करोड़ रूपये के घोटाले को कहते-कहते 3 साल हो गये। लेकिन कुछ नहीं हुआ। 2,168 करोड़ रूपये का शराब घोटाला हुआ। आपने कितना जब्त किया और कितना खाता सीज किया? कुछ नहीं। जो जिंदगी भर की कमाई है, यह बोलते हैं कि वह एफ.डी.आर. उसका पैसा है। रहने दीजिए। आप लोग फिर बताएंगे और फिर छापना पड़ेगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- किसान की कर्जा माफी आपका ड्रीम था और आपने उत्तर में स्वीकार किया है कि किसान का कर्ज माफ नहीं हुआ। आपने गंगाजल उठाकर कसम खाया था। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- शिवरतन शर्मा जी, आप ही की सरकार ने आपके परिवार..। (व्यवधान) आपके समय में मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में 106 करोड़ रूपये का हुआ था। आप क्या स्थिति बताते हैं? आपने भी ऋण माफी की घोषणा की थी। हमारे यहां तो साढ़े 9,000 करोड़ रूपये की ऋण माफी हुई है। (मेजों की थपथपाहट)

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने गंगाजल उठाकर कसम खाई थी।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं उन आंकड़ों को इसलिए नहीं दोहरा रहा हूं क्योंकि उसको पहले बोल चुके हैं। मैं तो उन सारी चीजों को बोल रहा हूं, जो मुझसे सदन और प्रदेश अपेक्षा कर रहा है। अब चूंकि काफी समय हो चुका है और तारीख भी बदल चुकी है तो पांच साल में जो आंकड़ों में परिवर्तन हुआ है, उसके बारे में आपको थोड़ी सी जानकारी देना चाहता हूं। पहले राजस्व जिले 27 थे, अब 33 हो गये। तहसीलों की संख्या 150 थी, 233 हो गयी, अनुभाग की संख्या 101 थी, 120 हो गयी। नगर निगम 12 थे, अब 14 हो गये। यह जी.एस.डी.पी. की बात करते हैं। वर्ष 2017-2018 में जी.एस.डी.पी. 2 लाख, 91 हजार, 681 था, अब 3 लाख, 50 हजार, 270 करोड़ हो गया है। वर्ष 2017-2018 में प्रति व्यक्ति आय 92,000 रूपये था, अब 1,33,898 रूपये हो गया। वर्ष 2017-2018 में धान खरीदी 56 लाख, 89 हजार हजार मीट्रिक टन था, अब 107 लाख मीट्रिक टन हो गया । किसान जो पंजीयन कराये थे, जिन्होंने धान बेचा, वह 12 लाख, 60 हजार थे, अब 24 लाख, 98 हजार हो गये । धान का पंजीकृत रकबा 24 लाख, 46 हजार हेक्टेयर था, अब बढ़कर 32 लाख 19 हजार हेक्टेयर हो गए । कृषि ऋण 3546 करोड़ था, अब बढ़कर 6610 करोड़ हो गया । वृहद ऋण माफी योजना में तो आपको बता दिया कि हमने साढ़े 9 हजार करोड़ का ऋण माफ किया । के.सी.सी. आपके समय में केवल 14 लाख थे, अब बढ़कर 21 लाख हो गए । धान खरीदी केन्द्र 1989 थे, अब बढ़कर 2497 हो गये । प्राथमिक स्वास्थ्य कृषि साख समिति 1333 थे, अब बढ़कर 2058 हो गये । मछली उत्पादन 3,75,000 मीट्रिक टन था,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अब बढ़कर 5 लाख, 91 हजार मीट्रिक टन हो गया । उद्यानिकी फसल 101 लाख मीट्रिक टन था, अब बढ़कर 112 लाख मीट्रिक टन हो गया । राजीव गांधी किसान न्याय योजना तो आपके समय में था ही नहीं, अब हम दे रहे हैं । राजीव गांधी भूमि श्रमिक न्याय योजना तो आपके समय था ही नहीं, वह हम लोग शुरू किये । गोधन न्याय योजना में हमने 245 करोड़ रूपए का गोबर खरीदा, 291 करोड़ की सामग्री हमने बेची । घाटे का सौदा नहीं है, फायदे का सौदा है । सुराजी गांव 30 हजार गावों में चिन्हित करके हम लोगों ने 12 हजार का उपचार किया । हमने 10 हजार से अधिक गौठान हमने बनाए । घुरूवा, बारी और उसके बाद पिछली सरकार में प्रति व्यक्ति विद्युत खपत 1724 यूनिट था, वह बढ़कर अब 2516 यूनिट हो गया है । विद्युत खपत मिलियन यूनिट 19162 था, अब बढ़कर 25161 हो गया है। ऊर्जीकृत विद्युत पम्पों की संख्या 3 लाख, 92 हजार थी, वह अब बढ़कर 4 लाख, 98 हजार हो गयी है । घरेलू विद्युत उपभोक्त 47 लाख, 43 हजार थे, अब 60 लाख, 24 हजार हो गया है । एकल बत्ती कनेक्शन पहले 15 लाख था, अब 17 लाख हो गया है । उच्च दाब विद्युत उपकेन्द्र 96 था, अब वह 127 हो गया है । उच्च दाब विद्युत लाईन 11534 सर्किट किलोमीटर था, अब 13446 सर्किट किलोमीटर हो गया। 400 के.व्ही. लाईन 1916 सर्किट किलोमीटर था, अब 1918 हो गया । 200 के.व्ही. लाईन के 3431 सर्किट किलोमीटर था, अब वह 4132 सर्किट किलोमीटर हो गया । बिजली बिल हाफ योजना में अभी तक करीब 38 सौ करोड़ की राहत हम लोग दे चुके हैं । सार्वभौम पीडीएस जहां 2 करोड़, 9 लाख लोग उसमें कवर होते थे, अब 2 करोड़, 55 लाख लोग कवर हो रहे हैं । आपके समय में राशन कार्डधारी 57 लाख थे, अब 72 लाख, 71 हजार हो गए हैं । उचित मूल्य 12298 था, अब 13507 हो गए हैं । बैंक मित्रों की संख्या 18323 थे, अब 35 हजार हो गए है । मातृ मृत्यु दर 1लाख में 173 थे.

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मुख्यमंत्री जी, आपने रेत के बारे में कुछ नहीं कहा कि बरसात के दिनों में खुदाई बंद हो जाएगी ।

श्री भूपेश बघेल :- मैं बोल देता हूं । एक चीज कम्पलीट हो जाने दो न, मैं बोलता हूं न ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अवैध प्लाटिंग हो रही है, रायपुर में कब्जा कर रहे हैं, आपके द्वारा पोषित माफिया हैं । कहां की कहानी पढ़ रहे हो (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- मैं बोल रहा हूं, उसको सुन तो लो । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- सुन तो लो । अगर मुख्यमंत्री जी बोल रहे हैं तो सुनिए । (व्यवधान)

डा. लक्ष्मी ध्रुव :- अब मुद्दा उठाये हो तो बैठकर सुनिए न । सुनने में क्या जा रहा है (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बरसात का समय है, रेत माफियाओं को बोलिए कि बरसात के दिनों में खुदाई बंद कर दे । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- वे बोल तो रहे हैं कि जवाब देंगे । (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- सूचकांक .31 था, अब वह .4 हो गया है । (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, 1,30,152 सीमांत कृषक का कर्ज आजतक माफ नहीं हुआ । 87,198 बड़े किसान के कर्ज माफ नहीं हुए । वह अल्पकालीन है । आप किसानों के बारे में कुछ बोल ही नहीं रहे हैं (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- जो-जो घोषणा पत्र में वायदा किया गया था, वह एक भी पूरे नहीं हुए । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- वे जवाब दे रहे हैं । (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- श्रमिक योजना में 6 हजार से अधिक शिविर लगाए गए, 52 लाख से अधिक लोग लाभान्वित हुए । स्वास्थ्य के क्षेत्र में धनवंतरी योजना चालू की गई है । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- किसानों का कर्ज माफ करो । (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- तेंदूपत्ता संग्राहकों का 25 सौ रूपए का 4 हजार किया। (व्यवधान)

(सत्ता पक्ष एवं भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय मुख्यमंत्री जी जनता (व्यवधान) बहिष्कार करते हैं।

समय
12.56 बजे

बहिष्कार

मुख्यमंत्री के जवाब से असंतुष्ट होकर

(नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा मुख्यमंत्री जी के जवाब से असंतुष्ट होकर सदन का बहिष्कार किया)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- हिम्मत जुटाओ। सुनने की भी हिम्मत रखो।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो परिवर्तन आया है, ये आकड़ें चीख-चीखकर बता रहे हैं कि इन्होंने छत्तीसगढ़ के साथ छल किया है। छत्तीसगढ़ के लोगों को लूटा है, खसोटा है। ये केवल मतदाता बनाकर रखना चाहते हैं। ये चाऊर वाले बाबा बने थे, चाऊर चोरी करते थे। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जितनी भी चीजें हैं। आज कोई फर्जी राशनकार्ड नहीं बना पा रहा है। हमने राशन कार्ड बनाना बंद नहीं किया है। यदि परिवार बढ़ा है तो उसके नाम से फिर से राशनकार्ड बन रहा है। आज 98 प्रतिशत लोग सीधा चावल उठा रहे हैं, कोई फर्जीवाड़ा नहीं हो रहा है। ये तो चाऊर को डकार गये। खुद जांच करवाये, सी.एम. मैडम और सी.एम. साहब का पता नहीं चल पाया है। ये गाय

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बांटने की बात किये थे, आप बस्तर चले जाओ एक भी जर्सी गाय नहीं दिखेगा। ये लोग बोले थे खाड़ी से नहीं, डीजल मिलेगा बाड़ी से। एक नहीं सैकड़ों करोड़ रूपये खत्म, डकार गये। ये चप्पल खरीदते थे, उसमें कमीशन। राशन कार्ड बनाते थे, उसमें कमीशन। गरीबों का चावल, मोबाइल बांटे, उसमें कमीशन, टिफिन बांटे, उसमें कमीशन, सब में कमीशन। कोई चीज नहीं छूटा था। पुस्तक-कापी तक में कमीशन खाते थे। यह हमारी सरकार है, राशि सीधा खाते में जा रहा है। ये तो बेरोजगारों को नहीं छोड़े थे। 15 साल में गरीबों को 98 करोड़ रूपये बांटे। जाकर जनपद में, नगर पालिका कार्यालय में खड़ा होकर चेक लेते थे। कैसे मिलता था, वह बेरोजगार जानते हैं। उन लोगों को देना बंद कर दिये। हमारे यहां सारे आयोजन ऑनलाईन हो रहा है। सीधे उनके खाते में जा रहा है। किसका-किसका पैसा सीधे जा रहा है, जितने लघु वन संग्राहक हैं, जितने राजीव गांधी किसान न्याय योजना में जुड़े हैं, जितने भूमि श्रमिक न्याय योजना से जुड़े हैं, गोबर विक्रेता हैं, स्व-सहायता समूह है, गौठान समिति है। बेरोजगार, गुनिया, सबके खाते में सीधा पैसा जा रहा है। एक लाख साठ हजार करोड़ रूपये से अधिक सीधा ट्रांसफर हुआ है, कहीं कमीशन की बात नहीं है। पहले कमीशनखोरों की सरकार थी, इसी कारण से रमन सिंह को बोलना पड़ा था कि एक साल कमीशन लेना बंद कर दो। अभी जितनी भी योजना है, सीधे हितग्राहियों के खाते में जा रहा है और उनको इसी बात की पीड़ा है। आज हमने छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़िया संस्कृति को उभारा है। ये लोग हमेशा डिवाइड एण्ड रूल की बात करते थे। ये हमेशा समाज को बांटने का काम करते थे। समाज में नफरत और घृणा फैलाने की बात करते थे। इन्हीं की नीति के चलते आज मणिपुर जल रहा है। वहां के राज्यपाल ने टी.व्ही. में इन्टरव्यू दिया है, वह बेहद दिल दहलाने वाला है। संस्था प्रमुख इस प्रकार से बयान दें, तो कितनी बड़ी बात है।

अध्यक्ष महोदय, हम जोड़ने वाले लोग हैं,

समाज को जोड़ने वाले लोग हैं।

दिल से दिल जोड़ने वाले लोग हैं।

इसीलिए नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोलने वाले लोग हैं। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, यही हमारे नेता कर रहे हैं और यही हमारे कार्यकर्ता कर रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) ये छत्तीसगढ़ में कितना भी नफरत फैलाने की कोशिश कर लें, लेकिन छत्तीसगढ़ शांति का टापू है। (मेजों की थपथपाहट) इस धरती में कबीर के गीत गूंजे हैं, इस धरती में गुरू घासीदास जी का पंथी गीत गूंजा है। यह शांति का टापू है, ये कितनी भी कोशिश कर लें, लेकिन छत्तीसगढ़ में एक अच्छा वातावरण बना है, पहली बार छत्तीसगढ़ के 3 करोड़ लोगों को लगा है कि यह सरकार हमारी है। (मेजों की थपथपाहट) चाहे वह मजदूर हो, आदिवासी हो, अनुसूचित जाति के लोग हो, नवजवान हो, महिला हो, व्यापारी हो, उद्योगपति हो, सबको लग रहा है कि हां, यह सरकार हमारी है, हमारी बात सुनी जाती है। नहीं तो इनके यहां छोटे-मोटे व्यापारी को कभी मिलने नहीं देते थे। आज मंत्रियों और मुख्यमंत्री का

दरवाजा हमेशा खुला रहता है। कोई भी व्यापारी संगठन के लोग वह 9 मांग लेकर आते हैं, इस सरकार ने 10 घोषणायें की है, लागू किया है। यह कांग्रेस की सरकार है । अध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव लाकर इन्होंने अपने पैर में कुल्हाड़ी मारा है, मैं तो कहता हूँ कि इन्होंने कुल्हाड़ी में पैर मारा है, क्योंकि अपनी बात कहने की हमको मौका मिला है । इस प्रदेश का यह सबसे बड़ा पंचायत है । यहां से बात 3 करोड जनता के बीच में जाती है । आज हमको अवसर प्रदान किया है, विपक्ष के लोगों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ । मैं आपके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ कि हमको अपनी बात रखने करा आपने पूरा अवसर दिया और इसलिये इस सदन को धन्यवाद देता हूँ और सभी लोगों का आभार व्यक्त करते हुये अपनी वाणी को यहीं विराम देता हूँ । धन्यवाद, जयहिन्द, जय छत्तीसगढ।

(सत्ता पक्ष के सदस्यों के द्वारा नारे लगाये गये)

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि यह सदन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और उनके मंत्रिमंडल के विरूद्ध अविश्वास व्यक्त करता है ।

अविश्वास प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद । इस पूरे सदन ने विश्वास व्यक्त किया है और छत्तीसगढ़ की जनता भी विश्वास करेगी । मैं समझता हूँ कि वर्ष 2023 में हम संख्या जितने हैं, उससे और आगे बढ़ेंगे । बहुत-बहुत धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- इंखर विश्वास हा चोरो-बोरो हो गे हे । (हंसी)

समय
1.02 बजे

<u>जुलाई, 2023 सत्र के अपूर्ण उत्तरों के पूर्ण उत्तर को सभा के पटल पर रखा जाना</u>

अध्यक्ष महोदय :- श्री रविन्द्र चौबे, संसदीय कार्य मंत्री दिनांक 18 जुलाई, 2023 एवं 20 जुलाई, 2023 को प्रश्नोत्तरी सूची में मुद्रित अपूर्ण उत्तरों के पूर्ण उत्तर सभा के पटल पर रखेंगे ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दिनांक 19 जुलाई, 2023 को सदन में शून्य काल के दौरान आसंदी द्वारा दिए गये व्यवस्था के अनुपालन में आज दिना 21 जुलाई, 2023 तक प्राप्त दिनांक 18 जुलाई 2023 एवं 20 जुलाईं 2023 की प्रश्नोत्तरी सूची में मुद्रित तारांकित प्रश्न संख्या-20 (क्रमांक-105) परिवर्तित अतारांकित प्रश्न संख्या-08 (क्रमांक-97) परिवर्तित अतारांकित प्रश्न संख्या-12 (क्र-85) परिवर्तित अतारांकित प्रश्न संख्या-16 (क्र.-134) अतारांकित प्रश्न संख्या-28 (क्रमांक-136) अतारांकित प्रश्न संख्य-57 (क्र-339) एवं तारांकित प्रश्न संख्या-23 (क्र.407) का पूर्ण उत्तर सभा के पटल पर रखता हूँ ।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सत्र समापन

अध्यक्षीय उद्बोधन

अध्यक्ष महोदय :- पंचम विधान सभा का यह चार दिवसीय सत्र दिनांक 18जुलाई 2023से 21 जुलाई 2023के मध्य आहुत रहा, सामान्य तौर पर एक दृष्टि से यह पंचम विधान सभा का अंतिम सत्र भी है। इस सत्र में कुल 4बैठके हुई । इस सत्र के सुव्यस्थित संचालन के लिए मैं सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को, माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री चंदेल जी को, एवं आप सभी माननीय सदस्यगणों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

मुझे स्मरण है कि 4जनवरी 2019को जब आप सबने सर्व सहमति से मुझे इस आसंदी पर बैठाया था, तब मैंने अपने पहले उद्बोधन में पूज्य कबीर साहेब जी के इस दोहे का उल्लेख किया था कि

कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर ।।

मैंने विधानसभा अध्यक्ष के अब तक के कार्यकाल में उपरोक्त पंक्तियों को आत्मसात् करते हुए, आपके द्वारा प्रदत्त दायित्वों का पूर्ण ईमानदारी के साथ निर्वहन करने का प्रयास किया है। मुझे आपने सदन के अध्यक्ष की महती जवाबदारी सौंपी थी, मेरी यह पूरी कोशिश रही कि मैं आपके इस विश्वास को बनायें रखूं । मैं स्वयं का मूल्यांकन करूं यह उचित नहीं है, इसलिए मेरे कार्यों का मूल्यांकन आप सभी कर सकते हैं, और मेरे कार्यों के प्रति जो आपका दृष्टिकोण होगा, जो मूल्यांकन होगा, उसे ही मैं अपना वास्तविक मूल्यांकन मानूंगा।

पंचम विधानसभा के अपने विधानसभा अध्यक्षीय कार्यकाल को मैं अपने राजनैतिक और संसदीय जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि मानता हूँ। इस अवधि में राज्य के 89जनप्रतिनिधियों से मुझे उनके ज्ञान और अनुभव से लाभांवित होने का अवसर प्राप्त हुआ। छत्तीसगढ़ की पंचम विधानसभा के कार्यकाल की मैं इसलिए भी प्रशंसा करता हूँ, और स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि लगभग अपने पूरे कार्यकाल में इस विधानसभा ने छत्तीसगढ़ के विकास के लिए उसके सम्मान और स्वाभिमान के लिए आप सभी ने सामूहिक रूप से अपना अधिकतम योगदान दिया है।

यह उल्लेखनीय है कि पंचम विधानसभा के कालखंड में ही कोरोना जैसी महामारी की त्रासदी को हम सभी ने देखा। विषम परिस्थितियों में भी आप माननीय सदस्यगणों ने अपने संसदीय दायित्वों को बड़े ही साहस के साथ पूर्ण किया। लगभग 06 सत्रों में कोरोना महामारी की सुरक्षा गाईडलाईन का पालन करते हुए, हमने बैठकें सम्पन्न कीं, जनसेवा के प्रति आपकी प्रतिबद्धता का यह जीवंत उदाहरण है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पंचम विधानसभा के कार्यकाल में कुछ हमारे लिए दुखद स्मृतियां भी जुड़ी जब इस सदन के सदस्य माननीय श्री भीमा मण्डावी जी, माननीय श्री अजीत जोगी जी, माननीय श्री देवव्रत सिंह जी, माननीय श्री मनोज मण्डावी जी एवं माननीय श्री विद्यारतन भसीन जी का असमय निधन हुआ। मैं इन सभी स्वर्गीय माननीय सदस्यगणों को एक बार पुनः स्मरण करते हुए, अपनी ओर से और इस सदन की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

छत्तीसगढ़ विधानसभा के पंचम विधानसभा का कार्यकाल इतिहास में अपनी उपलब्धियों के लिए स्मरण किया जायेगा। इस कार्यकाल में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर विशेष सत्र आहूत हुआ, 26 नवम्बर संविधान दिवस के अवसर पर विशेष चर्चा हुई, महिला दिवस के दिन सभा की कार्यवाही में सदन की महिला सदस्यगणों को चर्चा हेतु विशेष अवसर दिया गया। कोरोना महामारी के समय, विधानसभा में विशेष कंट्रोल रूम स्थापित किया गया। इस कार्यकाल में विधानसभा के पदाधिकारी एवं माननीय मंत्रिगणों के कक्षों को गरिमा अनुरूप स्वरूप दिया गया। झीरम नक्सली घटना में आहत एवं प्रभावितों के पारिवारिक सदस्यगणों का सम्मान विधानसभा में किया गया। यह उल्लेखनीय है कि इस विधान सभा के कार्यकाल में आदिवासी बाहुल्य हमारे छत्तीसगढ़ राज्य में आदिवासियों के अधिकारों को संरक्षित करने के उद्देश्य से विशेष सत्र आहूत हुआ । इस प्रकार की बहुत सारी ऐसी उपलब्धियां हैं, जिनसे पंचम विधानसभा के कार्यकाल को हमेशा सम्मान से स्मरण किया जायेगा।

संसदीय लोकतंत्र का यह रथ पक्ष और प्रतिपक्ष रूपी दो पहियों के सहारे चलता हैं, बिना सजग प्रतिपक्ष के लोकतंत्र की कल्पना अधूरी है, मैं प्रशंसा करता हूँ हमारे प्रतिपक्ष के माननीय अनुभव सम्पन्न संसदीय ज्ञान से परिपूर्ण माननीय सदस्यगणों का जिन्होंने लगभग सभी सत्रों में सजग और जीवंत प्रतिपक्ष के भाव को बनाएं रखा । पक्ष के माननीय सदस्यगणों को इस बात के लिए बधाई देता हूँ कि आप संख्या बल में प्रभावी होने के बावजूद आपने सभी सत्रों में सहृदयता और सद्भावना का भाव बनायें रखा।

आज सत्र के अंतिम दिवस अविश्वास प्रस्ताव पर लगभग 12 घंटे 15 मिनट चर्चा हुई। अब मैं आपको इस मानसून सत्र में सम्पादित हुए संसदीय कार्यों के संक्षेप में सांख्यिकीय आंकड़ों से अवगत कराना चाहूंगा।

इस सत्र के कुल 4 दिवसों में लगभग 25 घण्टे 55 मिनट चर्चा हुई । 4 बैठकों में 27 प्रश्न सभा में पूछे गए जिनके उत्तर शासन द्वारा दिए गए। इस प्रकार प्रतिदिन प्रश्नों का औसत लगभग 7 प्रश्नों का रहा। इस सत्र में 274 तारांकित प्रश्न एवं 276 अतारांकित प्रश्नों की सूचनाएं प्राप्त हुईं, इस प्रकार कुल 550 प्रश्नों की सूचनाएँ प्राप्त हुईं। यहां यह सूचित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि वर्तमान सत्र में हमारे जागरूक माननीय सदस्यों द्वारा लगभग 94 प्रतिशत प्रश्न ऑनलाईन माध्यम से लगाए गए । इस सत्र में ध्यानाकर्षण की कुल 140 सूचनाएं प्राप्त हुई, जिसमें 40 सूचनाएं ग्राह्य हुईं । इस सत्र

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में कुल 42 स्थगन की सूचनाएं प्राप्त हुई। नियम 267-क के अंतर्गत शून्यकाल की 25 सूचनाएँ प्राप्त हुईं जिसमें 9 सूचनाएं ग्राह्य एवं 1 सूचना ध्यानाकर्षण में परिवर्तित हुई । वर्तमान सत्र में 43 याचिकायें माननीय सदस्यों द्वारा प्रस्तुत की गई, जिनमें 13 ग्राह्य, 24 अग्राह्य एवं 6 विचाराधीन रहीं। इस सत्र में विनियोग विधेयक सहित 4 विधेयकों की सूचनाएं प्राप्त हुईं और सभी विधेयक चर्चा उपरांत पारित हुए।

वित्तीय कार्यों के अन्तर्गत प्रथम अनुपूरक अनुमान पर 3 घंटे 41 मिनट चर्चा हुई।

जैसा कि आपको विदित है, कल दिनांक 22 जुलाई 2023 को उत्कृष्टता अलंकरण समारोह एवं पंचम विधानसभा के माननीय सदस्यगणों का विदाई समारोह माननीय राज्यपाल श्री विश्व भूषण हरिचंदन जी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न होगा। आप सभी से मेरा यह सादर अनुरोध है कि इस आयोजन में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनावें। इस वर्ष का उत्कृष्टता अलंकरण समारोह इसलिए भी विशेष है कि छत्तीसगढ़ विधानसभा के अब तक के इतिहास में यह प्रथम अवसर जब पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों ही ओर से माननीय महिला सदस्यों का चयन किया गया है। अर्थात् दूसरे अर्थों में यह मातृशक्ति का सम्मान समारोह भी है। इसलिए इस कार्यक्रम में आप सभी की उपस्थिति सादर अपेक्षित है। मंचीय कार्यक्रम के उपरांत माननीय विधायकगण अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुति भी देंगे।

जैसा कि मैंने पूर्व में ही उल्लेख किया कि यह संभावित रूप से पंचम विधानसभा का अंतिम सत्र है । मैं आप सभी सदस्यों के उज्जवल, सफल संसदीय राजनैतिक भविष्य की शुभकामनाएं देता हूँ।

मैं इस अवसर पर माननीय उपाध्यक्ष एवं सभापति तालिका के माननीय सदस्यों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने सभा की कार्यवाही के संचालन में मुझे सहयोग दिया। मैं सम्माननीय पत्रकार साथियों एवं प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने सदन की कार्यवाही को बड़ी गंभीरता से प्रचार माध्यमों में प्रमुखता से स्थान देकर प्रदेश की जनता को सभा में सम्पादित कार्यवाही से अवगत कराया।

सत्र की पूर्णता के अवसर पर राज्य शासन के मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन सहित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ । सुरक्षा व्यवस्था में संलग्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी बधाई देता हूं जिन्होंने सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था पूरे सत्र में कायम रखी।

मैं विधान सभा के सचिव श्री दिनेश शर्मा, सहित विधानसभा सचिवालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भी प्रशंसा करता हूँ, जिन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण कुशलता एवं निष्ठा के साथ किया। हम सब छत्तीसगढ़ के विकास के लिए कृत संकल्पित हों, इन्हीं भावनाओं के साथ।धन्यवाद

जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह अंतिम सत्र है और अंतिम दिवस है और आपके नेतृत्व में 5 सालों पहले जब यह सदन सम्वेत हुआ, तब से लेकर आज तक आपका कुशल नेतृत्व, आपका मागदर्शन हम सबको मिलता रहा। जैसे की कबीर के दोहे आपने शुरूआत की थी और

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हम लोगों को लगता था कि हम लोगों के साथ कुछ-कुछ अन्याय हो रहा है। उधर विपक्ष के लोगों को ज्यादा प्रेम देते हैं और यह होना भी चाहिए। विपक्ष संख्या बल में कम होता है तो उनको ज्यादा अवसर मिलना भी चाहिए। अभी 71 संख्या के बाद भी जितना समय हम लोग बोले हैं उतने से ज्यादा 15 लोगों ने बोल दिया। हम लोगों से ज्यादा उन लोगों ने बोला। आसंदी की तरफ से विपक्ष को बराबर सम्मान दिया गया। यह लोकतंत्र की खूबसूरती भी है। विपक्ष के साथियों खासकर, मैं नेता प्रतिपक्ष को भी बधाई दूंगा कि संसदीय परम्पराओं का ध्यान रखते हुए और सबको साथ में लेते हुए, बहुत सारे उतार चढ़ाव आयें। कई बार उत्तेजना के भी अवसर आये, लेकिन छत्तीसगढ़ विधान सभा की अपनी परंपरायें हैं। दूसरी विधान सभाओं में हम देखते हैं कि आज कल कितने दिन सत्र चलता है, जिस प्रदेश से हम लोग अलग होकर आये हैं, जहां से हम लोग सीखे हैं, बहुत सारे साथी चाहे पुन्नूलाल मोहले जी, रामपुकार सिंह जी, बृजमोहन अग्रवाल जी, रविन्द्र चौबे जी, मोहम्मद अकबर जी, ननकीराम कंवर जी हम सब लोग पुराने मध्यप्रदेश में थे। यह सब वरिष्ठ लोग थे।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं भी था।

श्री भूपेश बघेल :- आप भी थे, हॉ आप भी थे। अब मैं सबका नाम नहीं ले पाऊंगा। धर्मजीत भैया का पहले नाम लिया न। हम लोग वहीं से सीखकर आये हैं। अध्यक्ष महोदय, आप भी वहां गृह मंत्री, आबकारी मंत्री थे और जनसंपर्क विभाग के भी मंत्री रहे। हम लोग वहां से सीखे, पढे-लिखे हैं। लेकिन आज मध्यप्रदेश में पूरा सत्र नहीं चल पाता है। लेकिन आपके नेतृत्व में और पूरे सदन के सदस्यों के सहयोग से ट्रेजरी बेंच से भी और विपक्ष से भी, सबके सहयोग से बहुत अच्छा संचालित हुआ। बहुत सारे विषय हमारे विपक्ष के साथियों ने शासन, प्रशासन की जो कमियां, खामियां हैं, शासन की योजनाओं के बारे में उल्लेखित करते चले। उससे बहुत कुछ जो फील्ड में हो रहा है, हम लोग नीतियां बनाते हैं, उन नीतियों का क्रियान्वयन हो रहा है, नहीं हो रहा है, जो बताते हैं उसके हिसाब से उसमें सब सुधार भी होता है। सबका उद्देश्य यही रहता है कि छत्तीसगढ कैसे आगे बढ़े, हम सब मिलकर उसे आगे बढ़ायें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा में जिस प्रकार से आपने उल्लेख किया कि हमने बहुत सारे साथियों को खोया है। आदरणीय भीमा मंडावी जी, आदरणीय अजीत जोगी जी, आदरणीय देवव्रत जी, आदरणीय मनोज मंडावी जी हमारी विधान सभा के उपाध्यक्ष और अंत में विद्यारतन भसीन जी। अध्यक्ष महोदय, बड़ा नुकसान हुआ है। मैं उनके परिवार के प्रति संवेदना भी व्यक्त करता हूं और मृतक आत्मा को सद्गति मिले, ऐसी प्रार्थना भी करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में हमको दो विधान सभा उपाध्यक्ष मिले। विधान सभा के उपाध्यक्ष आपके पूरे विश्वासपात्र रहे और आपके मार्गदर्शन में बहुत अच्छा संचालित किये, इसलिए उपाध्यक्ष जी को भी बहुत-बहुत बधाई। सभापति तालिका में जिन साथियों ने अपना सहयोग दिया,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उनको भी हृदय से धन्यवाद देता हूं। इस सदन में एक नई चीज हुई है, उपाध्यक्ष दो बार बने, बनवारी लाल अग्रवाल जी और उसके बाद धर्मजीत भैया बने थे। लेकिन नेता प्रतिपक्ष दो बने, यह पहली बार हुआ। आदरणीय धरमलाल कौशिक जी पहले नेता प्रतिपक्ष थे, बाद में नारायण चंदेल जी बने। इस सदन में पहली बार उप मुख्यमंत्री बने। आदरणीय टी.एस. सिंहदेव जी उपमुख्यमंत्री के रूप में बने।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वरिष्ठ साथियों का बहुत अच्छा परफारमेंस रहा। उन्होंने बहुत सारी ज्ञानवर्धक बातें भी कहीं। संसदीय परंपराओं के बारे में लगातार बातें होती रही हैं। नये सदस्यों को सीखने का अवसर मिलता है। अध्यक्ष महोदय, यह कार्यकाल समाप्ति की ओर है तो ऐसे में जो नये सदस्य हैं, उनका परफारमेंस बहुत बढ़िया रहा। बहुत से हमारे नये सदस्य हैं, ऐसे भाषण भी दिये, प्रश्न भी लगाये, ध्यानाकर्षण लगाये जिससे उनकी जागरूकता का परिचय मिलता है। मैं सभी नये सदस्यों को, वरिष्ठ सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं, धन्यवाद देता हूं। हमारे ट्रेजरी बेंच के जितने सदस्य हैं उनको भी धन्यवाद और बधाई देता हूं कि मेरे सहयोगी, साथी के रूप में उन्होंने पूरी मेहनत, शिद्दत से शासन की योजनाओं को लागू करने में सफल रहे। विधान सभा में शासन का पक्ष रखने में उन्होंने कोई कोताही नहीं बरती। इसलिए सभी हमारे माननीय ट्रेजरी बेंच के साथियों को, संसदीय साथियों को भी बधाई देता हूं कि वह संसदीय सचिव बन तो गये, लेकिन वह न प्रश्न कर सकते थे, न कुछ कर सकते थे लेकिन सदन में बराबर उपस्थित रहते थे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप उन संसदीय सचिवों को भी अधिकार दे दीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- वह आप ही लोग डरा-डराकर रखे हैं नहीं तो उनको अधिकार मिल ही जाता। अकबर जी तो आपको बार-बार घेर लेते थे, वह आपको अंग्रेजी में पढकर सुनाते थे। अगली बार कर लेंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, विधान सभा सचिवालय को बहुत-बहुत धन्यवाद कि दिन-रात मेहनत करके विधान सभा सचिवालय के माध्यम से सत्तापक्ष, विपक्ष के साथियों के सारे चाहे वह प्रश्न, ध्यानाकर्षण, स्थगन, याचिका, शून्यकाल की सूचनायें हों, उन्होंने सबको लगवाया भी। क्योंकि नये सदस्य बहुत हैं तो किस प्रकार से लगाना है। अध्यक्ष महोदय, हम लोग भी इन्हीं के ऑफिस में जाकर सीखते थे। कैसे लगाना है, वह पूछते भी थे। प्रश्न लंबा हो जाता था तो शार्ट करने की बात होती थी। सारी प्रक्रिया सिखाने में विधान सभा सचिवालय का बड़ा योगदान रहता है। आदरणीय दिनेश शर्मा जी के नेतृत्व में विधान सभा के सभी सदस्यों को और यहां के जो मार्शल हैं, कर्मचारी हैं, पुस्तकाल के जो लोग हैं, सबको हृदय से धन्यवाद देते हुए और अंत में हमारे मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन जी और उनकी पूरी टीम ने विधान सभा की कार्यवाही में, शासन की योजनाओं को लागू करने में बड़ा योगदान रहा है। पूरा सचिवालय दिन-रात मेहनत करके, कोरोना जैसे काल में भी जहां 30 प्रतिशत कर्मचारियों की उपस्थिति में मंत्रालय का काम होता था। वर्क फ्राम होम भी रहा। ऐसी परिस्थिति में भी सदन की कार्रवाई को बाधित नहीं होने दिया। अध्यक्ष महोदय, आपको बीच-बीच में बार-बार इसलिए धन्यवाद देता

हूं क्योंकि बीच-बीच में बातें आती हैं। अध्यक्ष महोदय पार्टीशन लगा दिये थे। न कोई इधर आ सकता था, न उधर जा सकता था। झांक कर बात करते थे। हाथ को ऐसे करके बात करते थे। लेकिन आप हमारे सुरक्षा का कितना ध्यान रखे, स्वास्थ्य का कितना ध्यान रखे। लेकिन एक बात का अफसोस रह गया है। आप तो एक बार विदेश यात्रा कर लिये, लेकिन विधान सभा सदस्यों को विदेश यात्रा करने का मौका नहीं मिला। मैं बार-बार निवेदन करता था । अब तुमन ला चुनाव मा जाना हे फाल्तू ऐती-ओती के बात मत करा। (हंसी) अध्यक्ष जी चाहे तो ले जा सकते हैं। कोई दिक्कत नहीं है। यदि विपक्ष के साथी जाना चाहे तो, शासन की ओर से कोई दिक्कत नहीं है। धर्मजीत भैया। धर्मजीत भैया तो अपने दल के नेता थे, लेकिन यह भी परिवर्तन आया। वह अपने दल के नेता नहीं रहे। चंद्रा जी तो वहां के स्थायी नेता हैं। पिछले समय भी थे और अब भी हैं। केशव चंद्रा जी को भी धन्यवाद। पक्ष और विपक्ष के बीच में इंदू बंजारे जी ने जो बात कही न, वह न अविश्वास के पक्ष के बोलीं न विपक्ष के बारे में बोलीं बल्कि वह अपने क्षेत्र के बारे में चर्चा करती रहीं। तो ऐसे भी सदस्य हैं जो न इधर हैं, न उधर हैं, वे बीच में हैं। उनका भी योगदान रहा। मैं पत्रकार साथियों को भी धन्यवाद देता हूं। आज डेढ़ बज रहा है, फिर भी पत्रकार दीर्घा में सब साथी लोग डटे हुए हैं। हम लोग जो बात कहते थे कि पूरे सदन की बात को पूरे प्रदेश एवं देश में लोगों के बीच में पहुंचाने का काम उन लोगों ने किया। मैं पत्रकार मित्रों को भी हृदय से धन्यवाद देते हुए पुन: सबके प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद देते हुए और सबके जीवन में मंगल कामना करते हुए अपनी वाणी को यहीं विराम देता हूं। अध्यक्ष महोदय जी, धन्यवाद। जय हिंद। जय छत्तीसगढ़। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- नेता प्रतिपक्ष जी।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सब लोग विदाई के क्षण में हैं। इस विधान सभा का यह अंमि सत्र है। माननीय अध्यक्ष होदय, मैं सबसे पहले तो आपको बधाई देता हूं। माननीय उपाध्यक्ष जी को बधाई देता हूं कि उन्होंने बड़ी सजगता के साथ, कुशलता के साथ, नियमों से बंध करके सदन का संचालन किया। मैं सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी, मंत्रिमण्डल के सभी माननीय सदस्यगण, पक्ष और विपक्ष के सभी माननीय सदस्यों को मैं मन के अंत:करण से हार्दिक बधाई देता हूं, शुभकामनाएं देता हूं। हम उस समय विधायक थे, जिस समय मध्यप्रदेश का विभाजन हुआ, छत्तीसगढ़ नये राज्य में प्रवेश किया। राजकुमार के जशपुर हाल से यह यात्रा शुरूआत हुई थी। वहां टेंट में विधान सभा लगी थी। अध्यक्ष जी, परम संसदीय ज्ञाता पंडित राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी आसंदी पर विराजमान थे। नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ राज्य की संसदीय यात्रा वही से प्रारंभ हुई थी। हमारे जितने भी विधान सभा अध्यक्ष रहे, पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल से लेकर अभी तक बड़ी कुशलता के साथ उन्होंने सदन का संचालन किया। हम सबको स्मरण करते हैं। आसंदी एक ऐसी चीज है। न पक्ष, न विपक्ष। आसंदी का भाव जब वहां पर कोई व्यक्ति बैठता है तो निष्पक्ष भाव रहता है। हमारे संसदीयविदों ने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कहा है कि आसंदी पर व्यक्ति नहीं बैठता, आसंदी पर व्यवस्था बैठती है । आपने सदन का कुशल संचालन किया । विपक्ष के प्रति स्नेह रखा, आशीर्वाद रखा । हमें सभी अवसरों पर आपने बोलने का अवसर दिया । माननीय अध्यक्ष महोदय, हममें तकरार होती है, तीखी बहस भी होती है । हास्य भी होता है, विनोद भी होता है । यह प्रजातंत्र का पावन मंदिर है, यह छत्तीसगढ़ प्रदेश की सबसे बड़ी पंचायत है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, विपक्ष और पक्ष के बीच में तकरार यही तो लोकतंत्र की खूबसूरती है । इसी से प्रजातंत्र पुष्ट होता है, मजबूत होता है । हमारे जितने भी नये सदस्य चाहे वे पक्ष के हों, हम सब लोग एक परिवार के सदस्य हैं । चाहे विपक्ष के हों, चाहे जोगी जी की पार्टी के हों या बसपा के हमारे माननीय सदस्य हों । जब बाहर निकलते हैं तो एक परिवार के भाव से मिलते हैं । यहां पर तकरार जरूर होती है लेकिन लॉबी में हम सब चाय की चुस्की लेकर के एक-दूसरे का हालचाल पूछते हैं और छत्तीसगढ़ की विधानसभा जिन उंचाईयों को इन्होंने स्पर्श किया है । आप सबके नेतृत्व में, आप सबके दिशा-निर्देश में । अभी मुंबई में हम आपके नेतृत्व में गये थे । पूरे देश के विधायकों का कांफ्रेंस था । पहली बार वहां पूरे देश के करीब 2200 विधायक उपस्थित थे और सब लोगों से जब मिले-जुले । विधानसभाओं के नियम-प्रक्रियाओं के बारे में जब बातचीत हुई और हम लोगों ने छत्तीसगढ़ विधानसभा के बारे में जब उनको जानकारी दी तो उन्होंने कहा कि आपकी विधानसभा बहुत अच्छी है और इसलिये हमारी विधानसभा पर हमको गर्व है । पक्ष-विपक्ष चलते रहता है । मैं आज इस विदाई के समय आपको और माननीय मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं, मंत्रिमण्डल के सभी सदस्यों को, माननीय उपाध्यक्ष जी को, विधानसभा के सचिव महोदय को, बाकी सब चीज बदली । मुख्यमंत्री जी, दो सचिव भी बदल गये । पहले गंगराड़े जी थे, अब शर्मा जी आ गये तो विधानसभा में सचिव भी बदले और माननीय सचिव महोदय के पूरे परिवार को यानी स्टॉफ को, यह विधानसभा का हमारा परिवार है । दिन-रात एक करके इन्होंने परिश्रम किया और प्रजातंत्र को और अधिक मजबूत बनाने का प्रयास किया । जहां पर कोई गलती होती थी तो इनका मार्गदर्शन भी मिलता था, इनके अनुभवों का लाभ भी मिलता था । विधानसभा के सभी अधिकारियों को, कर्मचारियों को, अधिकारी दीर्घा में बैठे हुए चूंकि डेढ़ बजे रात को भी वे बैठे हैं उन सभी अधिकारियों को भी हम धन्यवाद देते हैं, साधुवाद देते हैं और सबसे बड़ा लोकतंत्र का चौथा सतम्भ । प्रिंट मीडिया के लोगों को, हमारे भाईयों को, बहनों को, प्रिंट मीडिया-ईलेक्ट्रानिक मीडिया । सभी के प्रति हम बहुत-बहुत आभार व्यक्त करते हैं, धन्यवाद ज्ञापित करते हैं । विधानसभा में जितने हमारे भृत्य हैं, विधानसभा के जितने हमारे सफाईकर्मचारी हैं । जितने वाहनचालक हैं, विधानसभा के जितने सुरक्षाकर्मी हैं और यहां के स्थानीय पुलिस के जवानों को भी हम बहुत-बहुत बधाई देते हैं, साधुवाद देते हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, विदाई के समय निश्चित रूप से अगर हम लोगों से कोई गलती हुई हो, अज्ञानता में हुई हो, आवेश में हुई हो तो उसके लिये भी हम सिर झुकाकर क्षमाप्रार्थी हैं और मैं पुन: सभी लोगों के मंगलमय जीवन की कामना करता हूं । धन्यवाद ।

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस दिन आप आसंदी पर विराजमान हुए, उसी दिन हमने कहा था कि आपका जो दीर्घ अनुभव है, आपका जो संसदीय ज्ञान है, निश्चित रूप से इस विधान सभा को ऊंचाइयों पर ले जायेंगे और आज पूरे 5 वर्ष का हम यह कहें कि अंतिम सत्र और अंतिम दिन, कल सम्मान समारोह और विदाई, मैं इसके लिए आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी को साथ ही नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल जी को और हमारे विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री संतराम नेताम जी को, साथ ही हमारे सभा तालिका में बैठकर जिनहोंने आपको संचालन में सहयोग किया, मैं इन्हें भी धन्यवाद देना चाहता हूं। हमारे इस संख्या की दृष्टिकोण से आप देखेंगे तो काफी असमानता है, लेकिन उसके बावजूद भी हम लोगों ने प्रयास किया है कि विधान सभा में जो विषय आयेंगे, उन सारे विषयों पर हम चर्चा करेंगे। और मुझे इस बात की खुशी है कि इस 5 वर्ष में हम लोग कभी पीछे नहीं हटे। न समय को लेकर, न दिन को लेकर, आपने जब सत्र आहूत किया तो हम लोग आये और जितनी रात तक बैठना पड़े, उन सारे विषयों में हम लोगों ने भाग लिया है। मैं नये सदस्यों को बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं। वास्तव में इस 5 वर्ष के कार्यकाल में देखेंगे तो बहुत मुखर होकर अपनी बातों को रखने का प्रयास किये हैं। चाहे वह सत्ता पक्ष के हों, चाहे हमारे साथी हों या हमारे सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष के बीच में जो लोग काम कर रहे हैं, उन सारे विषयों को रखने का प्रयास किया है। आदरणीय हमारे धर्मजीत सिंह जी, बहुत ही अच्छा पूरे 5 वर्ष का और उसके पहले भी हम लोगों ने साथ में काम किया है। एक साथ काम करने का अवसर मिला है। इस विधान सभा की गरिमा को बढ़ाने का काम इनके द्वारा किया गया है और मुखर होकर अपनी बातों को रखते हैं। आज हमारे इस दीर्घा में प्रमुख सचिव जी बैठे हुए हैं, डी.जी. साहब बैठे हुए हैं, साथ ही हमारी आवाज को पहुंचाने वाले इस सदन के बाहर प्रेस के साथी यहां बैठे हुए हैं, जिन्होंने कभी घड़ी नहीं देखी और समय की चिंता नहीं की और उनके माध्यम से हमारे क्षेत्रों तक हमारी आवाज पहुंची है। मैं उन्हें भी धन्यवाद देना चाहता हूं। साथ ही हमारे सुरक्षाकर्मी जो हमारी सुरक्षा में लगे हुए हैं और जो भी हमारे साथी हैं, मैं उन सबको इस अवसर पर बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष में संख्या का अंतर है, लेकिन सहृदयता दोनों में होनी चाहिए और मैं यह कह सकता हूं कि इस पूरे 5 साल के कार्यकाल में दोनों ने सहृदयता दिखाया, जिसके कारण यह संभव हुआ कि हम बहुत सारे विषयों पर यह चर्चा कर सकें। गतिरोध उत्पन्न हुआ, लेकिन उसका समाधान भी हुआ और समाधान होने के बाद में इस विधान सभा की गरिमा आपके नेतृत्व में बढ़ी है, मैं उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं। मैं सभी सदस्यों को शुभकामना देना चाहता हूं कि माननीय अध्यक्ष महोदय,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हमारे यहां पर चंद्रा जी अभी हैं नहीं, मैं उन्हें भी और इंदू जी को भी धन्यवाद देता हूं और सारे साथियों को खासकर के संसदीय कार्य मंत्री जी को जिनका काम यह है कि पक्ष और प्रतिपक्ष के बीच में संतुलन बनाना और एक कड़ी के रूप में काम करना। कई बार हम लोग नाराज होकर चले जाते थे, तब वे मनाने के लिए आते थे और सभा की कार्यवाही में हम फिर भाग लें, ये उनका हमेशा प्रयत्न रहा है। आज के इस अवसर पर मैं पुन: सभी को धन्यवाद देते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक लाइन छूट गया था और यदि वह लाइन न कहूं तो मेरा धन्यवाद ज्ञापन पूरा नहीं होगा और वह है संसदीय कार्य मंत्री। जो आपके और विपक्ष के बीच में जोड़ने का काम, हम लोगों की भावना पहुंचाने और उन लोगों के साथ observer के रूप में लगातार काम करते रहे और कितने ही नामों से विभूषित करते रहे, मिश्री लाल, जलेबी और पता नहीं क्या। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मिश्री भैया।

अध्यक्ष महोदय :- मिश्री भैया।

श्री भूपेश बघेल :- कितने आक्रमण हुए, लेकिन कैसे मुस्कुराकर वे माहौल को बिल्कुल शांत कर लेते थे, फिर सदन की कार्यवाही आगे बढ़ती थी।

श्री नारायण चंदेल :- मुख्यमंत्री जी, कई बार तो पता नहीं चलता था कि वे किधर के हैं? (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- चौबे जी का योगदान और विधान सभा में सत्ता पक्ष और विपक्ष का सुदीर्घ अनुभव रहा है । चौबे जी विधान सभा में होते हैं तो मैं बड़ा निश्चिंत हो जाता था, चौबे जी संभाल लेंगे । ऐसे संसदीय कार्य मंत्री का होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है । जैसे आप अध्यक्ष मिले, वैसे ही सारे मंत्री और सभी विधायक साथियों से बड़ा स्नेह, प्यार मिला । संसदीय कार्य मंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त नहीं करता तो बात अधूरी रह जाती । पुन: संसदीय कार्य मंत्री जी के प्रति आभार ।

अध्यक्ष महोदय :- चंद्राकर जी ।

(श्री अजय चन्द्राकर, सदस्य के खड़े होने पर)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अब, हो गया ।

श्री भूपेश बघेल :- अजय जी, यही आपकी लोकप्रियता है, आप इसको अन्यथा क्यों लेते हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- सारे प्रमुख लोगों ने, आपने, आपने और आपने सबके प्रति बहुत अच्छी भावनाएं व्यक्त कीं । मैं सबके प्रति उच्चतम् भावनाएं प्रकट करता हूं, जिन-जिन अवयवों के प्रति, आपके प्रति, आपके प्रति, आपके प्रति । किंतु मैं दूसरे कारणों से खड़ा हुआ हूं । हम सब पंचम विधान सभा के सदस्य हैं । लोकतंत्र में हमारा यहां आना, जनता के हाथ में निर्भर करता है । राजनीतिक दलों के हाथ में निर्भर करता है । यह संयोग बना है कि हम 90 साथी या 89 साथी यहां एकत्र हैं । जितने राजनीतिक मतभेद रहे हैं, वैचारिक मतभेद रहे हैं, कार्य के मतभेद रहे हैं, कार्यप्रणाली के मतभेद रहे हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उसके बाद भी हम सब या मैं व्यक्तिगत रूप से हम सबकी ओर से, आपकी ओर से, आप सब के दीर्घायु, यशस्वी जीवन, सफल राजनीतिक, सामाजिक जीवन के लिए स्वास्थ्य के लिए और सिर्फ राजनीतिक दल के हमारे सहयोगी साथी ही नहीं, वरन् हमारे जो अवयव रहे हैं । उन सबके एक सफल, सुदीर्घ यशस्वी जीवन की कामना करें, भगवान आप सबको एक सफल यशस्वी जीवन प्रदान करें । हम सबके बीच में एक भाईचारा और परस्पर प्रेम, हमारी स्प्रिच्युवल्टी में सबसे महत्वपूर्ण शब्द है, प्रेम । हम आपस में प्रेम करें तो हम सबके बीच में यह विद्‌यमान रहे । अध्यक्ष महोदय, एक बात मैं राजनीतिक बोलता हूं । कभी जीवन में राजनीतिक कार्यों से फुर्सत मिली, आज मैंने अविश्वास प्रस्ताव पर अपने वक्तव्य की शुरूआत संसदीय कार्य विभाग से की थी । पंचम विधान सभा में अपने अनुभवों के बारे में किताब जरूर लिखूंगा और फिर से सबके प्रति एक बेहतर सद्‌भावना व्यक्त करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगान होगा । माननीय सदस्यगण राष्ट्रगान के लिए अपने स्थान पर खड़े हो जाएं ।

(राष्ट्रगान जन-गण-मन का गायन किया गया)

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित् ।

(रात्रि 01 बजकर 40 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित् की गई)

दिनेश शर्मा
सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

रायपुर (छत्तीसगढ़)
दिनांक 21 जुलाई, 2023

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं